भाषा के अध्यात्मिक रहस्य

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

शून्यो

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

भाषा के अध्यात्मिक रहस्य

शून्यो

डॉयरी नम्बर :

वेबसाइट : **www.shunyo.in**

ई-मेल : **info@shunyo.in**

प्रकाशक : डॉ0 किसलय गौड़
कोतवाली रोड
देवरिया - 274001
उत्तर प्रदेश

फोन नं0 : 7084598114

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

भूमिका

व्याकरण अर्थात व्याख्या का साधन। व्याकरण अर्थात 'ग्रामर'। व्याकरण भाषा को वैज्ञानिक रूप देता है। मन अपनी भावनाएँ व्यक्त करने के लिए भाषा का सहारा लेता है। साथ ही भाषा इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्यूँकि ये हमें 2000 साल पहले के क्राइस्ट काल, 2500 साल पहले के बुद्ध काल, 5000 साल पहले के कृष्ण काल, 7000 साल पहले के वशिष्ठ व राम काल व उससे भी पहले के ऋषि काल व उनकी अध्यात्मिक संपदा जोड़ती है। भाषा के माध्यम से अध्यात्मिक संपदा प्रवाहित होती है और अतीत से लेकर भविष्य तक के आत्म-पिपासुओं तक पहुँचती है। वो रहस्य जो भाषा में संजोये गए, आज भाषा रूपी नदी के माध्यम से ही हम तक पहुँचते हैं। यह ठीक उस बोतल के समान है, जिसमें व्यक्ति अपने संदेश को लिखकर समुद्र में प्रवाहित कर देता है और कई वर्षों बाद वह संदेश किसी खोजी के हाथ लग जाता है तथा उसके माध्यम से दुनिया तक पहुँच जाता है। भाषा के साथ ही अध्यात्मिक संदेश भी एक भौगोलिक क्षेत्र से दूसरे भौगोलिक क्षेत्र, एक सभ्यता से दूसरी सभ्यता, एक भाषा से दूसरी भाषा व एक पीढ़ी से अनेक पीढ़ियों तक पहुँचे। भाषा का एक सिरा भविष्य की ओर जाता है तो दूसरा सिरा अतीत की ओर जाता है। परंतु भाषा स्वयं वर्तमान को अभिव्यक्त करती है। भाषा यदि सुविधा है तो रहस्य भी है।

सभी भाषाओं के मूल में वे अक्षर हैं जो कंठ से लेकर ओष्ठ तक उत्पन्न किये जाते हैं। कारण है ऊर्जा, स्वर है कृति और भाषा है उन स्वरों की क्रमबद्धता। स्वर सभी जगह एक समान हैं लेकिन उनके उपयोग से निकलने वाली भाषाएँ अलग-अलग हैं। अक्षर से बने शब्द, शब्द से बने वाक्य, वाक्यों से बनी भाषा। शब्दों में अर्थ छिपे हुए हैं और वाक्यों में सूचना। वाक्यों में छिपी सूचनाएँ ही, भाषा के खजाने को बढ़ाती चली जाती हैं। वाक्यों में विज्ञान गुँथा है। स्मृति, अनुभव, समझ, इच्छा, बोध, दर्शन, अध्यात्म भी पिरोया गया है। भाषा उस ट्रेन की तरह है, जिसमें अलग-अलग डिब्बे हैं। वे डिब्बे अलग-अलग विषयों का प्रतिनिधित्व करते हैं। जिसे जिस विषय में रुचि हो, वो उस डब्बे में बैठकर, उस विषय के बारे में जान सकता है।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

भाषा के
अध्यात्मिक रहस्य

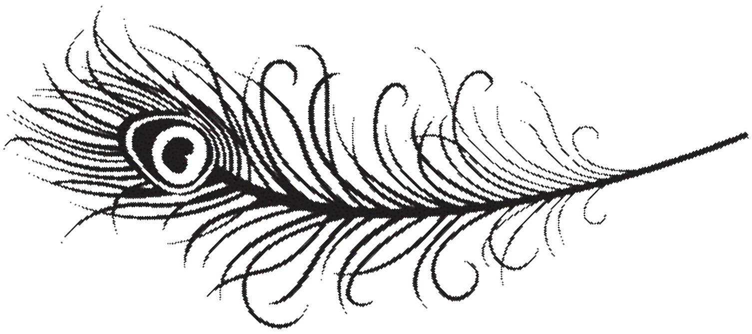

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

द्वंद

द्वंद अर्थात् भीतर दो पक्षों का होना, दोनों का अपनी-अपनी बात का कहना। जिसके कारण भ्रम की स्थिति का उत्पन्न होना। एक तरफ समझ तो दूसरी तरफ विवेक, एक तरफ स्थिरता तो दूसरी तरफ अस्थिरता, एक तरफ अनिच्छा तो दूसरी तरफ मजबूरी। भीतर द्वंद की स्थिति होना अर्थात् खींच-तान होना। अनिर्णय की स्थिति होना। अस्पष्टता का होना। द्वंद बतलाता है कि भीतर कोई दो हैं। एक है मन और दूसरी है चेतना। मन खींचता है पदार्थ की ओर, इच्छाओं की ओर, तो चेतना उठती है अनंत की ओर, परम की ओर। मन बाँधता है करण से। 'करण' अर्थात् साधन। 'साधन' अर्थात् इंद्रियाँ, शरीर। वहीं चेतना गमन करती है कारण की ओर। 'कारण' अर्थात् परमात्मा। मन को साधन चाहिए, चेतना जानती है कि साधन में बँधना अर्थात् बँधन में आना। अशुद्ध स्वभाव ही द्वंद का मूल कारण है। स्वभाव के शुद्ध होने के साथ भ्रामक रास्ता धूमिल होने लगता है, मूल रास्ता स्पष्ट होने लगता है।

तृप्ति

तृप्ति + ई अर्थात् शक्ति।

शक्ति ही तृप्ति अथवा संतृप्ति का कारण बनती है। संतुष्टि के लिए कर्म करना पड़ता है, प्रयोग करने होते हैं। उन प्रयोगों में डाला गया ध्यान और प्राप्त परिणाम संतुष्टि का कारण बनते हैं। लेकिन **प्रयोगों का कोई अन्त नहीं क्योंकि विभिन्नताओं का कोई अन्त नहीं**। हर एक विभिन्नता के साथ, हर एक पहचान के साथ, हर एक व्यक्तित्व के साथ, प्रयोग किया जा सकता है। इस प्रकार व्यक्ति चाहे तो जीवनभर नए-नए प्रयोगों में

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. -L-100161/2021
Date 05/03/2021

खुद को व्यस्त रख सकता है। एक ही प्रयोग को बार-बार करते हुए, व्यक्ति उनसे ऊबने लगता है। एक समय के, पश्चात् वही प्रयोग व्यक्ति के ध्यान को पूरी तरह बाँध नहीं पाते और इस कारण अब व्यक्ति खिन्नता की शिकायत करता है। अतः व्यक्ति धीरे-धीरे बाहरी दुनिया में अपनी रुचि को सीमित कर, अपनी शक्ति को खुद तक सीमित कर, संतृप्ति या तृप्ति का अनुभव प्रारंभ करता है।

मनुष्य

मनुष्य अर्थात् यम के माध्यम से मन को उषा अर्थात् प्रकाश से भरना।

बुद्ध कहते हैं अप्प दीपो भव अर्थात् अपना प्रकाश प्रज्ज्वलित करो। दूसरे कई गुरु ये बात बतलाते हैं कि जीव मनुष्य बनकर, अपनी उन्नति के नए द्वारों को खोल देता है। **व्यक्ति यम के माध्यम से शक्ति का संवर्धन करता है**। यही शक्ति व्यक्ति के भीतर प्रकाश के उपस्थित होने का कारण बनती है। जैसे दीये में उपस्थित तेल, प्रकाश के होने का कारण बनता है। प्रकाश से नहाया मन, प्रयोजन सिद्धि के काम में लग जाता है। व्यक्ति अपने प्रयोजन को जान, मन के माध्यम से ही उसे पूर्ण करता है। अंधकार में डूबा मन, महत्वाकांक्षा की सिद्धि में लगा रहता है। वहीं प्रकाशित मन, जीवन के प्रयोजन को पूर्ण करने में मदद करता है। मनुष्य के तामसिक गुण उसे जानवरों जैसा बर्ताव करने के लिए विवश करते हैं। राजसिक गुण मनुष्य को महत्वाकांक्षी बनाते हैं, वहीं सात्विक गुण प्रकाश प्राप्ति में मनुष्य की सहायता करते हैं।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

समय

समय = सम + य। यम के साथ समत्व में आना।

यम के साम्य में आने पर व्यक्ति वर्तमान को आज को जान जाता है। वो जान जाता है कि जीवनभर उसे आज ही प्राप्त होता है। भले ही व्यक्ति उस आज का उपयोग, बीते हुए कल को याद करने में या आने वाले कल को सोचने और उससे सम्बन्धित योजनाएँ बनाने में करता रहे। वर्तमान सदैव अपने साथ व्यक्ति के लिए, कुछ न कुछ जानकारियाँ लाता है। वर्तमान से चूकते जाने पर, हम उन उपहारों से भी चूकते जाते हैं। जिस प्रकार नदी सागर में जाकर मिल जाती है, वैसे ही भविष्य वर्तमान में जाकर मिल जाता है। **व्यक्ति भविष्य में कितनी ही लम्बी यात्राएँ क्यों न तय कर ले, भविष्य के अन्त में उसे प्राप्त होता है वर्तमान**। आज या वर्तमान में स्थित होना अर्थात् समय के केन्द्र में स्थित होना। वर्तमान में आकर ही व्यक्ति अपने उस आयाम से परिचित होता है, जिससे वह अतीत और भविष्य में अनभिज्ञ रहता है। वो आयाम है 'स्व' का, 'सेल्फ' का। इस 'स्व' से ही व्यक्ति के अतीत में रह चुके सभी व्यक्तित्व जन्मे और भविष्य के सारे व्यक्तित्व भी इसी स्व से उत्पन्न होते हैं। जैसे वर्तमान 'भविष्य और अतीत' का कारण है उसी प्रकार स्व भी व्यक्ति के सभी व्यक्तित्वों और पहचानों का कारण है।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

संयम

संयम अर्थात यम के साथ सम में आना।

यम के पाँच स्तम्भ हैं – अहिंसा, सत्य, अपरिग्रह, अस्तेय और ब्रह्मचर्य। ये सभी स्तम्भ जब आपके स्वभाव से परिलक्षित या प्रदर्शित होने लगें, तब आप यम के साथ सम में हैं। इन स्तम्भों के अनुसार जीवन जीने की कोशिश करने का तात्पर्य है कि यम के साथ सम में आने के लिए निकल पड़ना। प्रारंभ में यह प्रयास हो सकता है लेकिन धीरे-धीरे ये स्वतः ही घटित होने लगेगा। तब ये आपका स्वभाव बन चुका होगा। संयम का व्यवहारिक अर्थ है, अपने मन की क्रियाओं पर नियंत्रण रखना। आप यम के साथ सम में होते हैं, जब अहिंसा आपका स्वभाव हो जाए। सत्य में स्वभाविक उत्कण्ठा जाग जाए। बुद्धि द्वारा प्राप्त धन और सम्मान में आपकी कोई स्वभाविक रुचि न हो। किसी दूसरे की वस्तु में और उसे प्राप्त करने में कोई रुचि न हो और जीवन पर्यावरण के साथ साम्य में आ जाए।

संयम जीवन में ठहराव देता है वरना **मन उस एक्सिलरेटर की भाँति कार्य करता है जो जीवन रूपी गाड़ी को लेकर द्रुत गति से दौड़ता रहता है**। संयम ब्रेक के समान है, जो यात्रा में स्थिरता और सुरक्षा प्रदान करता है। पौधे स्थिर भूमि में ही विकसित होते हैं। धरती की स्थिरता वृक्ष को विकास की स्वतंत्रता देती है। उसी प्रकार संयम, जीवन रूपी या चेतना रूपी पौधे को विकसित होने की स्वतंत्रता देता है।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

गोदान

गोदान अर्थात् प्रकाश दान

जब कभी भी प्रकृति या शक्तिदान होगा, उसके साथ प्रकाश दान होगा ही। क्यूँकि प्रकाश शक्ति से घिरा है। दान अर्थात् सुपुर्द करना। **गोदान अर्थात् अपनी शक्ति को वापस अस्तित्व के सुपुर्द करना**। यह दान जीवनकाल में ही संभव है। गोदान के रूप में गाय दान करना रीतिरिवाज का हिस्सा है। रीतिरिवाजों के स्पष्टीकरण अध्यात्मिक तल पर छिपे हैं। हर व्यक्ति के भीतर संभावना है, अपने भीतर के दीप को प्रज्जवलित करने की। जैसे ही यह दीप जलता है, इसके प्रकाश का दान स्वतः ही हो जाता है। जैसे रोशनी के जलते ही उसका प्रकाश चारों ओर फैलने लगता है।

विज्ञान

विज्ञान = विजातिय का ज्ञान

विज्ञान पदार्थ और उससे सम्बन्धित सूचनाओं पर कार्य करता है। विज्ञान पदार्थ जगत को विभिन्न भागों में बाँटकर उसका अध्ययन करता है। जैसे भौतिक, रसायन, जीव, वनस्पति, चिकित्सा, यांत्रिकी, इतिहास, भाषा इत्यादि।

ज्ञान और विज्ञान अलग-अलग है। ज्ञान स्वयं को जानना है और विज्ञान अपने चारों ओर उपस्थित जगत को। विज्ञान मन का क्षेत्र है। विज्ञान के बारे में जानने को मन और मन का विस्तार अर्थात् बुद्धि आवश्यक है। वहीं ज्ञान मन और बुद्धि से परे है।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

तीर्थ

तीर्थ = तृप्ति + अर्थ (तृप्ति का अर्थ)। तृतीय आयाम का अर्थ

देवालय जाना और तीर्थ करने जाने में भेद है। देवालय इच्छाओं की पूर्ति के लिए और तीर्थ इच्छाओं से मुक्ति के लिए। इहलोक से सम्बन्धित समस्याओं के समाधान के लिए तीर्थ करने का कोई प्रयोजन नहीं। देवालय है संतुष्टि के लिए, तीर्थ है संतृप्ति के लिए। देवालय है मोह के लिए, तीर्थ है ओम के लिए। देवालय है पाने के लिए, तीर्थ है खोज के लिए। तीर्थयात्रा कर्म से धर्म की ओर यात्रा है। धर्म से मर्म की यात्रा है। अर्थ से समर्थ की यात्रा है। तीर्थ का तात्पर्य जीवन को मन से परे और परम् की ओर मोड़ना है।

सम्प्रदाय

सम्प्रदाय = सम + प्रदाय = (जो समत्व प्रदान करे।)

जिसकी गतिविधियाँ समत्व की ओर प्रेरित करे। समाज के उलट जहाँ पदक्रम या सीढ़ीदार या छोटे से बड़े की ओर बढ़ने की व्यवस्था है, सम्प्रदाय न सिर्फ मनुष्यों को वरन् सभी जीवों को समान दृष्टि से देखने हेतु है। सम्प्रदाय वस्तुतः मनुष्य की दृष्टि पर काम करता है। यह बोध दृष्टि को जगाने हेतु है। सम्प्रदाय के लिए जीवन, आंतरिक दृष्टि को जगाने का अवसर है। सम्प्रदाय एक गुरु के मार्ग का अनुसरण करता है, जिस मार्ग पर चलकर उन्होंने समदर्शिता पाई। आंतरिक दीप जलाया, जिसकी रोशनी ने भेद गिरा दिये। जिसकी वजह से गुरु का जीवन रूपान्तरित हुआ।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. -L-100111/2021
Date 05/03/2021

सम्प्रदाय वह है जो विषमता में रहते हुए, समता में रुचि व्यक्ति करे। जो दुनिया में रहते हुए, भीतर की ओर देखने को प्रेरित करे। जो छलांग तो ले लेकिन आंतरिक। जो उसकी बात करे, जिसे दुनिया में सबसे ज्यादा अनदेखा किया जाता है, वो है शक्ति। जो संयम अर्थात् संचय से सिद्धि की ओर चलने की बात करे। दुनिया का जो भी ध्येय है वो परिवर्तनशील है। वहीं सम्प्रदाय का अराध्य अपरिवर्तनशील व स्थाई है। दुनिया अनुभवों की बात करती है, तो सम्प्रदाय अनुभूतियों की। दुनिया कर्म की बातें करती है तो सम्प्रदाय यज्ञ की। दुनिया मोह के चारों ओर घूमती है तो सम्प्रदाय ओम की ओर। दुनिया सफलता और संतुष्टि की प्रयोगशाला है तो सम्प्रदाय एकांत की प्रयोगशाला। दुनिया चयन करती है तो सम्प्रदाय स्वीकार। दुनिया परस्पर सहयोग को प्रेरित करती है तो सम्प्रदाय आत्म सहयोग की।

मंगल

मंगल = मन + गल

मंगल का अभिप्राय मन के गलने से है। चेतना पदार्थ से सम्बन्धित अनुभव सीधे नहीं ले सकती। इसके लिए माध्यम बनता है मन। पदार्थिक अनुभवों से आगे, पुनः आत्मिक अनुभव की ओर जाने के लिए, मन को ही गलकर धीरे-धीरे विलीन होना होता है। मन की कई परते हैं जैसे शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक, अहंकार, मनोवैज्ञानिक। इन सभी परतों पर धीरे-धीरे काम करते हुए व्यक्ति, आत्मिक अनुभव की ओर बढ़ता है।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

दर्पण

दर्पण = दर्प + करण

दर्प अर्थात् प्रतिबिंब, छवि, इमेज, प्रतिछाया। करण अर्थात् साधन। दर्पण अर्थात् प्रतिबिंब को दिखाने का साधन। दर्पण हमें दिखाता क्या है और हम उसमें देखना क्या चाहते हैं, ये दो अलग-अलग बाते हैं। दर्पण जो दिखाता है वो है शरीर की वास्तविकता। इस वास्तविकता में हमें जो पसंद नहीं, उसे हम बदलने में लग जाते हैं और बदलाव के साथ हम फिर दर्पण के सामने उपस्थित होते हैं। मजनून यह है कि यदि हम अपने मन और शरीर की वास्तविकता को नहीं बदल सकते तो अपनी इमेज को ही बदल दें। रहते हम अपनी वास्तविकता के साथ हैं लेकिन दुनिया के सामने जाते समय, अपनी इमेज साथ ले जाना चाहते हैं।

वैर

वैर = वैराग

वैरागी वह है जो अनुभव से ही राग छोड़ दे। व्यक्ति से सम्बन्ध छोड़ना परंतु अनुभव से सम्बन्ध बनाए रखना वैराग नहीं। प्रेम सम्बन्ध नहीं, प्रेम स्वभाव है। सम्बन्ध या तो जैविक होते हैं या मोह जनित।

वैरी होना शत्रु होना नहीं, बस अनुभव से ऊपर उठ जाना है। जो आपसे मोह का सम्बन्ध लगाए बैठा है, वो आपका अनुभव से मुँह मोड़ना स्वीकार न करेगा। वो आपको वैरी कहेगा।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

ओऽम्

ॐ = ऊ + ँ

ओऽम् अर्थात् सृष्टि में न आरंभ है और न अंत। मात्र चक्र है। ऊर्जा का न आरंभ है और न ही अंत है। मात्र परिवर्तन है। ओऽम् अर्थात् न कोई आरंभ है, न कोई अंत है। हर जगह मात्र प्रकृति का चक्र देखता हूँ। प्रयोगों के साथ आरंभ और अंत अवश्य है और मन प्रयोगी है। अतः इसके हर प्रयास के साथ आरंभ और अंत सम्बन्धित है। हर अनुभव के साथ ही आरंभ और अंत जुड़ा है, अतः अनुभव सनातन नहीं है। जीवन अनुभव है और महाजीवन अनुभूति।

ऊर्जा का ओम हो जाना अर्थात् अशुद्ध ऊर्जा का शुद्ध हो जाना। ऊर्जा का शक्ति हो जाना। काम का सोम हो जाना। बंधन का मुक्ति हो जाना। व्यर्थ का अर्थ हो जाना। धारा का राधा हो जाना। पतित का पावन हो जाना। स्थूल का सूक्ष्म हो जाना। चंचलता का स्थिर हो जाना। मैं का 'स्व' हो जाना। जीव का चेतना हो जाना। गीत का संगीत हो जाना। खोज का पहचान हो जाना। ऊर्जा सबमें उपस्थित है तो ओम सभी में छिपी संभावना है। ऊर्जा का ओम में रुपान्तरण संभव है। योग इसी रुपान्तरण की क्रियाविधि का विज्ञान है। ऊर्जा मन को उपलब्ध है तो ओम आत्मा को। ऊर्जा का ओम में रुपान्तरण, मन का आत्मा में रुपान्तरण है। ऊर्जा भोग है, तो ओम योग है।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

जोड़ी बनी रहे

जोड़ी बनी रहे अर्थात् संतुष्टि मिलती रहे।

पुरुष व स्त्री की जोड़ी भविष्य के लिए है, संतुष्टि के लिए है, खुशी के लिए है। यह जोड़ी जन्म देती है, एक नए शरीर को। जो आगे चलकर व्यक्तित्व के रूप में विकसित होता है। शरीर के भीतर उपस्थित शिव व शक्ति की जोड़ी वर्तमान के लिए है। संतृप्ति के लिए है, सुख के लिए है। यह जोड़ी जन्म देती है चेतना को, जो आत्मा में रूपान्तरित होती है।

स्थित व उपस्थित में अंतर

जो इन्द्रियों से परे है, वह स्थित है अर्थात् सत्य है। जो इन्द्रियों द्वारा पहचाना जा सके, वह उपस्थित है।

परमात्मा स्थित है, व्यक्ति उपस्थित है।

स्थित स्थाई है, उपस्थित अस्थाई है।

स्थित कारण है, उपस्थित कृति है।

स्थित गंतव्य है, उपस्थित यात्री है।

स्थित खोज है, उपस्थित खोजी है।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

हवन

हवन ही साधना है।

अनावश्यक ऊर्जा, पदार्थ, इच्छाओं को त्याग देना ही हवन है। अनावश्यक मोटापे को त्याग देना स्वास्थ्य साधना है। अपनी आवश्यकतानुसार भोजन को अपनी जठराग्नि व आवश्यकता से ज्यादा भोजन को दूसरे की जठराग्नि के सुपुर्द कर देना हवन है।

अपने ध्यान को भगवान में हवन कर देना भक्ति साधना है। अपनी महत्वाकांक्षा को संतोष की अग्नि में हवन कर देना विवेक साधना है। अनावश्यक ऊर्जा को श्रम की अग्नि में हवन कर देना शरीर साधना है। ली जाने वाली श्वास और छोड़ी जाने वाली श्वास को एक दूसरे में हवन करना, प्राणायाम साधना है।

समाप्त

समाप्त = सम + व्याप्त

समाप्त अर्थात् समत्व से आप्त होना। समाप्त अर्थात् चक्र की पूर्णता। जैसे सूर्य से निकलने वाली ऊर्जा का कालान्तर में पुनः सूर्य हो जाना। किसी चक्र के एक छोटे हिस्से को देखिये। कुछ आरंभ होते और कुछ समाप्त होते दिखेगा। वास्तव में कुछ भी प्रारंभ और कुछ भी समाप्त नहीं हो रहा, बस रूपान्तरण की प्रक्रिया घटित हो रही है। क्यूँकि मन एक छोटे से कालखण्ड में ही प्रभावी होता है। जो होश सँभालने से लेकर जीवन रहने तक है। इस कारण इस यात्रा को वह आरंभ और अंत के रूप में देखता है और अपनी उपस्थिति और समाप्ति के रूप में देखता है।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

विश्व

विश्व = वि + श + व

जहाँ विजातिय के शमन से वर्तमान की प्राप्ति होती है। जहाँ विजातिय, शक्ति तथा चेतना उपस्थित है और इनके समागम से जीवन का चक्र चलता रहता है। वह स्थान जहाँ प्रकृति के माध्यम से जीवन की उपस्थिति रहती है। अर्थात् जड़ और चेतन का संयोग होता है। जो जीवन कहलाता है। विश्व जीवन के लिये उर्वरा भूमि है।

विश्वनाथ

विश्वनाथ = प्रकृति के नाथ

जो इस विश्व के मोह से परे हैं, वो विश्व के नाथ है। वो विश्व से ऊपर उठा हुआ है। जो विश्व के मोह से ग्रसित है, वो विश्व के अधीन है।

अशुद्ध प्रकृति भारी हो नीचे स्थित हो जाती है। शुद्ध प्रकृति ऊपर उठती है। शुद्ध प्रकृति प्रवाहित होती रहती है। यही कारण है कि पार्वती को कठिन तपस्या करनी पड़ी, शिव को पाने हेतु। शुद्ध ही शिव तक पहुँच सकता है। अशुद्ध शिव से दूर है। शुद्ध प्रकृति भी उसे ही स्वीकार करेगी, जो सत्य के सबसे निकट है। इसी कारण से वह सुंदर है।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

विवश

विवश = विजातिय के वश में। पदार्थ के वश में। पदार्थ के आकर्षण के वश में। पदार्थ की द्विध्रुवीय व्यवस्था के वश में। विभिन्नता के वश में। मन के वश में। विश्व के वश में। जीवन के वश में।

अटक

अटक = अ + टक (दिशा) = दिशाहीन

दिशाहीन, भ्रमित, शक्तिहीन हो जाना। अटक जाना अर्थात् एक ही तल पर ठहर जाना। आदतों व अंदेशों में उलझ जाना। दिग्भ्रमित हो जाना। सही मार्ग का न प्राप्त होना। ऊर्जा का व्यर्थ होना। लक्ष्यहीन व उद्देश्यहीन हो जाना।

विभिन्नता

विभिन्नता = वि + भिन्नता

विजातिय में भिन्नता प्राप्त होती है। जहाँ विभिन्नता है, वहाँ ध्यान बँट जाता है। भिन्नता व वर्गीकरण पदार्थ कर गुण है। इसी कारण दृश्य जगत् विभिन्नता का जगत् है। यह विभिन्नता मन को विचारों की खाद उपलब्ध कराती है। मन विभिन्नता को वास्तविकता कहता है। विभिन्नता जीवन की वास्तविकता है। जिसे व्यक्ति को स्वीकार करना पड़ता है।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

निर्विकल्प व निर्वाण

निर्वाण अर्थात् जिसे ‘कुछ भी नहीं’ प्राप्त हो। जिसे शून्य प्राप्त हो। जिसके भीतर शून्य उपस्थित हो आया हो, जो शून्य में स्थित हो गया हो। जैसे धनवान के पास धन है वैसे ही निर्वाण के पास है ‘कुछ भी नहीं’। और जहाँ कुछ भी नहीं है, वहाँ कुछ अवश्य है और वह है परमात्मा। मन ‘बहुत कुछ’ और ‘थोड़े’ को जानता है लेकिन वह शून्य को नहीं जानता है। निर्वाण अर्थात् निवृत्ति। द्वैत से निवृत्ति।

सुंदर

सुंदर = सु + अंदर

जो भीतर से अच्छा हो। जिसका स्वभाव निर्मल हो। जिससे प्रेम की रसधार बहे। जो शांत हो, निरपेक्ष हो, वैरागी हो। जिसकी वाणी से बोध की सरिता बहे। बोध हर काल में सुंदर है। अतीत से भविष्य तक। कबीर ने जो कहा, वह सदैव सुंदर ही रहेगा। क्रोध कुरूप है और बोध सुंदर।

ढक्कन

ढक्कन = ढक + करण (ढकने का साधन)

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

रूपवान

धनवान वो है, जिसे धन प्राप्त हो। रूपवान वह है, जिसे रूप प्राप्त हो। जिसका चेहरा आकर्षक है। अंग्रेजी में कहावत है – 'फार्म इज़ टेम्परारी, क्लास इज़ परमानेंट'। इसे रूप पर लागू करें तो कहेंगे कि रूप का क्षरण हो जाता है लेकिन सुंदरता स्थायी है। रूप ढलता है, सुंदरता निखरती है क्यूँकि वह समय के साथ तपती है। ठीक वैसे ही जैसे कुंदन तप कर निखरता है।

मंदिर

मंदिर = मन के अंदर

मंदिर में जाना अर्थात् अपने मन के भीतर जाना। शरीर के भीतर है मन और मन के भीतर है सारी संपदा। बोध वर्तमान व स्थिरता की संपदा और परमात्मा की सारी संपदा भी मन के आवरण के भीतर ही है। मन की सारी संपदा उसके बाहर है। शरीर और शरीर के माध्यम से भोगे जाने वाले सभी भोग, मन की संपदा है। मंदिर में प्रेम हो और ध्यान हो। भक्ति भी प्रेम ही है।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

मंदिर में ब्राह्मण

यदि अपने मन के भीतर आप जाएँ तो आपको वहाँ ब्राह्मण मिल जाएगा। ब्राह्मण है आपकी चेतना, जिसे ब्रह्म की झलक मिली है। जिससे आप ब्रह्म से सम्बन्धित बोध प्राप्त कर सकते हैं। ब्राह्मण वह है, जो मन और ब्रह्म के मध्य है। ब्राह्मण वह है, जो मन और ब्रह्म दोनों को ही जानता है। ब्राह्मण होना जीवनकाल में प्राप्त की गई सिद्धि है।

मंदिर में ईश्वर

मन के भीतर सबसे गहराई में स्थित है आत्मा, जो आपमें परमात्मा का अंश है। यह आत्मा ही कारण है जीव का, जीवन का और व्यक्तित्व का। आपके भीतर मंदिर सदैव विद्यमान है। बस आवश्यकता है, उसमें जाने की। जैसे स्वभाव, वास्तविक घर है लेकिन हम बाहर भी एक घर बनाते हैं। वैसे ही वास्तविक मंदिर भीतर है लेकिन हम बाहर भी मंदिर बनाते हैं। जैसे चित्र चित्रकार के भीतर है लेकिन उसे उतारा जाता है आँखों के सामने।

सजग

सजग = सम के प्रति जगा हुआ

जो प्रकृति, मन, बुद्धि, व्यक्तित्व, धर्म, आत्म और आत्मा को पहचान सके। जो मन के [illegible] पड़ने वाले प्रभाव व जीवन के प्रयोजन के प्रति जाग्रत हों।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

मंदिर में शांति

जहाँ शांति मिल जाए उसे मंदिर जानिए। शांति तब होती है, जब भीतर की शक्ति संघनित हो जाए। शक्ति संघनित होने की संभावना तब बढ़ जाती है, जब आसपास अनुकूल वातावरण मिल जाए। मंदिर का तात्पर्य ही है कि आपको अनुकूल वातावरण उपलब्ध करा दे, ताकि आप भक्ति, प्रेम और ध्यान में उतर सकें व अपने भीतर प्रवेश कर सकें।

मंदिर में पूजा

पूजा के पीछे छिपी है नियमितता। मंदिर के खुलने-बंद होने, आरती और भोग लगने का समय नियमित होता है। इससे दिनचर्या अवचेतन मन के नियंत्रण में चली जाती है। सबकुछ यंत्रवत चलता है। इस दशा में चेतन मन मुक्त हो जाता है। अपने स्वाभाविक काम में लगा चेतन मन शांत होने लगता है। यदि व्यक्ति नियमित हो और अपना स्वाभाविक काम न करे, तो चेतन मन ही समस्या बन जाएगा। हम अनियमित ही इसलिए होते हैं कि मन को व्यस्त रख सकें। मन स्वयं व्यस्त रहकर दिनचर्या अनियमित रखता है। अनियमित दिनचर्या और खानपान धीरे-धीरे समस्या बन जाते हैं।

मंदिर की दिनचर्या नियमित है और ध्यान लगता है भगवान की ओर। जीवन में भी बस यही करना है। दिनचर्या को नियमित कर, ध्यान अपने स्वाभाविक कर्म की ओर लगा देना है। क्यूँकि स्वाभाविक कर्म ही ध्यान बन जाता है और लगा हुआ ध्यान ही सुख का हेतु

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

ब्रह्मचर्य

ब्रह्मचर्य = ब्रह्म + चर + यम

यम के माध्यम से ब्रह्म की ओर चलना ब्रह्म उपस्थित भी है, तो अदृश्य भी है। ब्रह्म इस जगत का अंश है, लेकिन उसे ही सबसे कम जाना जाता है। ब्रह्म पूर्णतः समर्पित है जगत के लिए लेकिन वह जगत से अपेक्षा भी नहीं रखता। ब्रह्म सबमें मात्र स्वयं को ही देखता है। वो न जीवों में विभिन्नता देखता है, न व्यक्तित्व देखता है। ब्रह्म अपनी स्वाभाविक सूक्ष्म स्थिति में बना रहता है।

अपरिग्रह

अपरिग्रह अर्थात् मन व बुद्धि का परिग्रहण न करना।

चेतना के चारों ओर मन और बुद्धि को बढ़ावा न देना। मन और बुद्धि से चेतना के जुड़ाव को न बढ़ाना।

जगत से सारे सम्बन्ध मन और बुद्धि के माध्यम से ही होते हैं। जगत से सम्बन्ध सीमित करने के लिए, अपने मन और बुद्धि से सम्बन्ध सीमित कर लेना उचित है। जितनी भी वस्तुओं का व्यक्ति संग्रह करता है, मन के माध्यम से ही करता है। मन के संतृप्त होते जाने पर संग्रह की प्रवृत्ति भी क्षीण होती जाती है।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

संतुलन

संतुलन = सम + तुलना

दोनों पक्षों को समान रखना।

- जैसे साइकिल चलाते समय दोनों तरफ ज़मीन से बराबर दूरी बनाकर रखना।
- जैसे तराजू से तौलते समय, काँटे का मध्य में होना।
- सम सदैव मध्य में होता है। सम की अनुभूति भी मध्य में पहुँचने पर संभव है। सम की अनुभूति होने पर व्यक्ति, मध्य में पहुँचने का प्रयास प्रारंभ कर देता है।

संसिद्धि

संसिद्धि = सम + सिद्धि (सिद्धि अर्थात् प्राप्ति)

संसिद्धि अर्थात् सम की प्राप्ति। संसिद्धि में प्रकृति और प्रकाश दोनों ही सम हैं। वे सबमें हैं और सबके लिये हैं। तथा वे व्यक्ति के उस पक्ष के लिये समर्पित हैं, जो सम है। व्यक्ति जब अपने भीतन के इसी सम तत्व को प्राप्त करता है तो वह संसिद्ध कहलाता है।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

समृद्धि

समृद्धि = सम + ऋद्धि

सम में आने पर बोध की उपलब्धता को समृद्धि करते हैं। वृद्धि अर्थात् बढ़ना। जो बढ़ता है वो घट भी सकता है। वहीं बोध या तो उपलब्ध होता है या नहीं होता। जब भी वह उपलब्ध होता है, वह वितरित होता है क्यूँकि बोध सामूहिक निधि है।

❀ ❀ ❀

अपरिहार्य

अपरिहार्य = अ + परि + हार + य (आवश्यक)

परिहार की अनुपस्थिति में मात्र यम

बाहर यम तो भीतर वह है, जो अपरिहार्य है। अर्थात् परमात्मा, प्रकृति। जीवन के लिये अपरिहार्य वह तत्व है, जिसकी अनुपस्थिति में जीवन की संभावना नहीं रहती। आत्मा व प्रकृति दोनों ही जीवन के लिये अपरिहार्य हैं।

❀ ❀ ❀

वियोग

वियोग = विजातिय से योग

[illegible] ड़ना अर्थात् वियोग का होना। भक्त का जब भगवान से वियोग रहता है, तो भक्त [illegible] है। वियोग योग का ठीक विपरीत है। योग का तात्पर्य है ब्रह्म से जुड़ना। वहीं

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

वियोग का तात्पर्य है, ब्रह्म से निकटता खो जाना। अर्थात् व्यक्ति का अपने मूल स्रोत से कट जाना। सामान्यतः वियोग शब्द का उपयोग किसी प्रिय व्यक्ति या वस्तु से दूरी बन जाने में करते हैं।

संकल्प शक्ति

संकल्प शक्ति = संकल्प अर्थात् कल्पना को पूर्ण करने की शक्ति ही संकल्प शक्ति है। शक्ति वह ईंधन है जिसकी उपस्थिति में ही कार्य का होना संभव है। क्यूँकि जड़ और चेतन का बंधन शक्ति के माध्यम से ही है। अतः कल्पना की पूर्णता हेतु ऊर्जा के साथ शक्ति का होना आवश्यक है।

चैन = चयन

चैन मिलना अर्थात् चयनित विकल्प उपलब्ध होना। विद्यार्थी सोचता है कि पाठ याद हो जाए, सवाल हल हो जाए तो चैन मिले। यात्री सोचता है कि गंतव्य पर पहुँच जाऊँ तो चैन मिले। आंतरिक स्थिरता चैन है और आंतरिक अस्थिरता बेचैनी की हेतु है। व्यक्ति की चेतना का चयन है आंतरिक स्थिरता क्यूँकि वही सुख है।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

अपराधी

अपराधी = अपर + अधिकार

दूसरे के अधिकार को छीनने वाला। दूसरे की वस्तु पर अधिकार करने वाला। सिर्फ अपनी रुचि की पूर्ति के लिये, किसी की स्वतंत्रता का हनन भी अपराध है। दूसरों के कार्य में अनावश्यक हस्तक्षेप, चोरी, निजता का हनन इत्यादि अपराध है।

जगदम्बा

जगदम्बा = जगत् + अम्बा

सम्पूर्ण जगत् को संतृप्त करने वाली। सभी आवश्यकताओं को पूर्ण करने वाली। सभी जीवों को आश्रय देने वाली। अम्बा से बनता है अम्बर अर्थात् आकाश और अम्बा से ही बनता है अम्बु अर्थात् जल। जल तृप्त करता है, तो आकाश देता है हल्कापन या सूक्ष्मता। प्रकृति ही माँ जगदम्बा हैं।

विकल्प

विकल्प = विजातिय की कल्पना

विजातिय की कल्पना अर्थात् मन की कल्पना। विभिन्नता ही विकल्प है। मन की कल्पना है भिन्नता खुशी ही दे सकती है। खुशी हल्की उत्तेजना है। जितनी विभिन्नता उतने ही

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

विकल्प। अतः पदार्थ और मन के तल पर विभिन्नता और विकल्पों के मध्य प्रक्रियाएँ चलती रहती हैं। मन विभिन्नताओं को स्पष्ट देख सकता है। अतः वह विकल्पों को जन्म देता रहता है और विकल्प, कर्मों को जन्म देते रहते हैं।

सम की व्यवस्था है सुख। सम कहता है कि 'सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामया, सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चित दुःख भाग भवेत'।

जिसने सम को पाया, उसकी प्रार्थना यही हो सकती है। उसे अब अपने मन की खुशी नहीं बल्कि सबका सुख चाहिए। जिसने अशांति को भोगा और फिर शान्ति को पाया, उसने प्रार्थना की कि 'सर्वेशां शान्तिर भवतु'। जिसने अपूर्णता देखी और जो पूर्ण हुआ, उसने प्रार्थना की कि 'सर्वेशां पूर्णम् भवतु'।

जिसने मन के पार जाकर देखा, वह चाहेगा कि 'सर्वेशां मंगलम् भवतु'।

मस्तक

मस्तक = मन + अस्त + करण=(म के अस्त का साधन)

ललाट क्षेत्र को मस्तक कहते हैं। मस्तक क्षेत्र में स्थित सुषुम्ना नाड़ी, चेतना को मन से ऊपर ले जाती है। सूर्य के ऊपर आने पर, रात्रि को विदा होना होता है। सूर्य के क्षितिज से नीचे जाने पर, रात्रि पुनः उपस्थित हो जाती है। कमल की ऊर्ध्व दिशा में उठती वर्तिका, उसे कीचड़ से ऊपर ले जाती है।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

आय तथा व्यय

यम की आमद अर्थात् शुद्धि की आमद 'आय' तथा यम अथवा शुद्धि का खर्च 'व्यय' है। व्यक्ति के लिए आय धन है तो जीव के लिए आय है आंतरिक शुद्धि। इसी शुद्धि के साथ वह आगे बढ़ता है। जीव के लिए मौका है अगला जन्म, जीवन के लिए मौका है भविष्य। और दोनों ही संभावना से भरे हैं। संभावना अर्थात् सम में आने का मौका।

स्वस्थ

स्वस्थ = स्व + स्थिति

स्वास्थ्य का सीधा सम्बन्ध है, स्वाभाविक कर्म से। स्वस्थ होना और स्वस्थ होने का अनुभव करना दो अलग-अलग बाते हैं। अस्वाभाविक कर्म में रत होकर, स्वस्थ होते हुए भी, कदाचित व्यक्ति स्वस्थ होने का अनुभव न करें। क्रोध, झुँझलाहट, भय, अस्वाभाविक कर्म की देन है।

स्वास्थ्य दो तल पर है शारीरिक और मानसिक। शारीरिक स्वास्थ्य के लिए नियमित दिनचर्या व आवश्यकतानुसार भोजन (न की इच्छानुसार) व मानसिक स्वास्थ्य के लिए स्वभावगत कर्म उर्वरक, औषधि और भोजन का कार्य करता है।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

संजय

संजय = सम + जय

जय होती है स्व की। जब स्व की जय होती है तो पराजय किसी की नहीं होती। अपने मन की भी नहीं। मन 'स्व' का उपकरण बन जाता है। संजय अर्थात् जय के साथ सम में होना। समत्व की उपस्थिति में व्यक्ति की जय होती है अर्थात् जीवन पूर्णता को प्राप्त करता है।

ईश्वर

ईश्वर = ई + श + वर

ईश्वर अर्थात् चैतन्य। जो शक्ति, शांति और वर्तमान में स्थित है। जहाँ शांति वहाँ प्रेम और वहीं ईश्वर।

ईश्वर = ई + श्व + रत

जो स्व में रत है और जिसके चारों ओर परा शक्ति का आवरण है। जो मन से परे हो व अपनी शक्ति को अपने नियंत्रण में रखता हो। जो द्वैत से मुक्त हो अर्थात् प्रकृति के बंधन से मुक्त हो। जो काम, क्रोध, लोभ, मोह से परे हो। जो सभी के लिए एकरूप से उपस्थित हो। जो भेद रहित हो।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

उदय

उदय = उद + य

यह चेतना रूपी सूर्य के उदय का सूत्र है। यम के अनुसार जीवनचर्या व उद अवस्था में बने रहने के लिए स्वभावगत कर्म का पालन। स्वभावगत कर्म करते हुए, मन सबसे कम आवेशित होता है। इसी से वह उदासीन या अनावेशित बना रह सकता है। इस अवस्था में चेतना का विकास होता है और प्रकाश की स्थिति उपलब्ध होती है।

योग

योग = य + उ + ग

यम के माध्यम से ऊर्ध्व गमन।

पौधे का उगना और उस पर फूल आना वनस्पति जगत के लिए सामान्य घटना है लेकिन मनुष्य जगत के लिए ये दुर्लभ है। योग के पौधे पर चेतना का फूल आता है।

योग में जो घटित होता है, वह है रुपांतरण। क्यूँकि इस सृष्टि के मूल कारण से न तो शरीर के और न मन के ही माध्यम से जुड़ा जा सकता है। योग के माध्यम से हम अपनी चंचलता के भीतर उपस्थित स्थिरता को, चर के भीतर उपस्थित अचर को प्राप्त करने का प्रयास करते हैं। योग आत्म रुपांतरण का मार्ग है। योग 'स्व' के विकास का विज्ञान है। अपनी रक्षापंक्ति को मजबूत करने और अपनी गहराइयों में उतरने की विधि है। योग आवश्यक और मूल्यवान को पास रखते हुए, अनावश्यक और व्यर्थ को त्यागने का मार्ग

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

'ख़ुद को खोदा तो ख़ुदा मिला'

धरती को खोदते हुए हम भीतर तक चले जाते हैं तो स्वयं को संयम की कुदाल से खोदते हुए, हम अपने शिखर तक चले आते हैं।

नहाना

नहाना = न हाँ, न ना।

गंगा नहाना अर्थात् चयन की समाप्ति। मात्र स्वीकार व समर्पण। गंगा स्नान अर्थात् अपनी आंतरिक शक्ति द्वारा मन को स्नान कराना।

शिखा

शिखा = शिखर + खालीपन

अर्थात् शिखर पर शून्यता है अर्थात् खालीपन। खालीपन या अनुपस्थिति उसकी, जिसे अपनी उपस्थिति दर्ज कराने की आदत है। वह है चेतन मन। जो हर खाली जगह को अवसर समझता है और उसे भरना चाहता है। अंतस को वह विचारों से भरा रखता है और अपनी दुनिया को वस्तुओं से। दुनिया के उस भाग को जिसे वह अपना नहीं समझता, उसे कूड़े-कचरे से भरने में गुरेज नहीं करता।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

चिन्मय

चिन्मय = चिन + मय

वर्तमान में लय (ज्ञान में लय, बोध में लय)। वह जो अपनी आंतरिक पहचान को प्राप्त कर, उसमें स्थिरतापूर्वक स्थिर हो जाता है।

चिंता

चिंता = चिन + ताप = (चेतन मन द्वारा प्रज्जवलित अग्नि में जलना)।

मन द्वारा आज का उपयोग भावनात्मक या मानसिक अग्नि से प्रताड़ित करने हेतु करना। जब मन विचलित होता है, तो उसका सीधा प्रभाव शरीर पर भी पड़ता है। चिंता में व्यक्ति का चैन भी ताप में भस्म हो जाता है।

सचिन

सचिन = स + चिन = (वर्तमान सहित) या वर्तमान में स्थित।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

Hippie

Hippie = Happy

अनावश्यक युद्ध शारीरिक, मानसिक और मनोवैज्ञानिक तल पर घाव देता है और तब समझ जागती है कि संसाधनों और महत्वकांक्षा से बड़ी है प्रसन्नता। हिप्पी होना भी प्रसन्नता को पाने और उसमें रहने का प्रयास था। हिप्पी अपने पर्यावरण अनुकूल रहन-सहन के लिए भी जाने गए। संदेश साफ था कि मेरा रहन-सहन पर्यावरण के लिए बोझ न बन जाए। हिप्पी का तात्पर्य है, प्रसन्नता के खोजी।

Bless

Bless = Bliss

Bless अर्थात् ईश्वर का आशीर्वाद

Bliss अर्थात् आत्मिक आनंद।

Less होने का तात्पर्य सूक्ष्मता से है। सूक्ष्मता का सम्बन्ध आनन्द से है।

सनम

सनम = स + न + म

जिसके साथ रहने पर अहंकार आड़े नहीं आता। जिसके साथ स्वाभाविक मेलजोल हो। जो नम्र हो।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

विषय

विषय = विष + यम

यम व्यक्ति के भीतर की शुद्धता है। यम की अशुद्धि या स्वाभाविक अशुद्धि जिसमें रुचि लेती है, उसे विषय कहते हैं। शुद्धि अशुद्धि में बदल सकती है तो अशुद्धि शुद्ध भी हो सकती है। गति दोनों ही दिशाओं में हो सकती है।

चैतन्य

चैतन्य = चेतन + यम

यम अर्थात् अपरा शक्ति। अपरा शक्ति द्वारा आच्छादित चेतना, चैतन्य कहलाती है। जैसे परम, परा द्वारा आच्छादित है। कृष्ण कहते हैं कि सच्चिदानंद ब्रह्म में स्थित योगी, मेरी पराभक्ति को प्राप्त हो जाता है। अपरा शक्ति द्वारा आच्छादित चेतना की मन से अत्यंत दूरी बन जाती है।

वीर्य

वीर्य = वीर (निर्भयता) + यम (शक्ति)

वह द्रव जिसमें बल और शक्ति दोनों का मेल है। शक्ति आलस्य को दूर भगाती है। वीर्य का अनावश्यक क्षय, शक्ति का ह्रास कर आलस्य को निमंत्रित करता है। अनावश्यक

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

अर्थात् कामेच्छा के वशीभूत हो किया गया क्षय। मन के वशीभूत हो किया गया, शक्ति का द्वारा शक्ति ही व्यक्ति को निर्भयता की ओर आगे बढ़ाती है।

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

True & Truth

True अर्थात् वास्तविकता या reality

Truth अर्थात् सनातन या शाश्वत।

चरम

चरम यदि जगत या पदार्थ का सर्वोच्च बिन्दु है तो परम चेतना का सर्वोच्च बिन्दु है। मन भी शिखर को छूना चाहता है और चेतना भी। मन के लिए शिखर बिन्दु है एवरेस्ट। वहीं चेतना कैलाश अर्थात् कैवल्य आकाश को सर्वोच्च मानती है। उसके ऊपर है मुक्ताकाश। एवरेस्ट बस एक है दुनिया में। अतः जिसे भी उस पर चढ़ना हो, उसे नेपाल जाना होगा। वहीं कैवल्य आकाश हर एक के भीतर है। कैलाश पर्वत इसी कैवल्य आकाश का प्रतीक चिह्न है। इसी कारण वह तीर्थ है।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

अजय

अजय अर्थात् जिसकी दृढ़ता को जीता न जा सके।

दृढ़ता जिद् नहीं है। जिद् सम्बन्धित है मन से। दृढ़ता सम्बन्धित है स्वभाव से। राम ने वनवास को स्वीकार किया और वन की ओर गमन कर गए। लक्ष्मण ने राम और राज्य में से राम को चुना। यह थी उनकी दृढ़ता। उस समय भरत अयोध्या में न थे। अयोध्या लौटने पर भरत ने राजगद्दी अस्वीकार कर दी। यह थी भरत की दृढ़ता और वन में जाकर राम से राजगद्दी स्वीकार करने की प्रार्थना की। राम ने यह प्रार्थना अस्वीकार कर दी। यह थी राम की दृढ़ता। यह दृढ़ता आती भी स्वभाव से ही है।

चिन

*(गँवई भाषा में चिन का उपयोग पहचान के लिए किया जाता है।)

पहचान

पहचान = पह + चान= पहन + वास्तविकता

पहचान अर्थात् अपनी वास्तविकता के ऊपर पड़ा पर्दा। पर्दे अलग-अलग हैं इसी कारण पहचान भी अलग-अलग है लेकिन वास्तविकता सबकी एक है। जब तक व्यक्ति अपनी एक अलग पहचान रखता है, वह उसे नहीं पहचान पाता, जो सत्य है।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

विजय

विजय → जय → य (यम) → यश → यशस्वी

विजय से 'वि' (विजातिय या विभिन्नता) हटाने पर प्राप्त होता है जय। जय से 'ज' अर्थात् जीव हटाने पर प्राप्त होता है 'य' अर्थात् यम। यम का तात्पर्य है चेतना। चेतना के साथ जुड़ी है 'श' अर्थात् शक्ति। चेतना से जुड़ी शक्ति का प्रभाव ही यश कहलाता है।

आकांक्षा रहित जीवन स्वीकार भाव लाता है। यही स्वीकार भाव ही यशस्वी होने का कारण है। राम ने वनवास को स्वीकार किया। यही स्वीकार भाव ही राम की यशस्विता का कारण है।

तपस्वी

तपस्वी = तप + स्व + ई

तपस्वी वह है जो अपनी शक्ति का उपयोग स्वयं को तपाने के लिए, स्वयं के शुद्धिकरण के लिए करता है। अपने आंतरिक अयस्क को गलाकर उसे सोना और फिर सोने को कुंदन बनाने के लिए। व्यक्तित्व को गलाकर साधु बनाने के लिए और फिर साधु को चेतना बनाने के लिए।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

कुंभ

कुंभ = कुंभक

कुंभक अर्थात् थाम कर या रोक कर रखना। कुंभ मेला अर्थात् मन को रोकने के उपाय व रोकने के प्रभाव की जानकारी से सम्बन्धित आयोजन। कुंभ मेले में गृहस्थ, सन्यासी व योगी, तीनों धाराएँ आकर मिलती हैं।

उत्सर्जन

उत्सर्जन = उत् + सर्जन (उत्तेजना का त्याग)

आहार

आहार = आहरित

इन्द्रियों के माध्यम से बाहरी वातावरण से जो भी ग्रहण किया जाए, वह आहार है। पाँचों ज्ञानेन्द्रियाँ (आँख, नाक, कान, जीभ, त्वचा) आहरित करने के लिए हैं। ये बाहर की सामग्री व सूचनाएँ भीतर तक ले जाती हैं। कर्मेन्द्रियाँ (हाथ, पैर, वाणी, मलद्वार, मूत्रद्वार) भीतर की सूचनाएँ, सामग्री व कर्म बाहर की ओर ले जाती हैं।

कच्चे माल की गुणवत्ता का सीधा प्रभाव, उत्पाद की गुणवत्ता पर पड़ता है। आहार का व कर्म पर पड़ता है।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

सदैव

सदैव = स + दैव

दैव के साथ सदैव अर्थात् दैव के समान स्थायी। दैव अर्थात् संचित कर्मफलों का जीवन पर पड़ने वाला प्रभाव।

मंजिलें

मंजिलें अर्थात् मन के बनाए जिले हैं। मन द्वारा निर्धारित मील के पत्थर ही मंजिलें हैं। मन द्वारा बनाए गए आशियाने ही मंजिलें हैं।

होश

होश का तात्पर्य है, उठना या जागना। भ्रम से, अहंकार से दूर जाना।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

माया

माया = मा (अपराशक्ति) + या (अंधकार)

मन द्वारा बनाई गई दुनिया को माया कहते हैं। मनुष्य के साथ अन्य जन्तु प्रजातियों के पास अपनी सामाजिक व्यवस्था है, जिसके अनुसार वे चलते हैं। मनुष्य ने व्यवस्था को और संगठित किया और उसे मूर्त रूप दिया, जिसे सभ्यता कहा गया। सभ्यता में वैचारिक और भौगोलिक विभिन्नता दिखाई देती है। साथ ही दिखाई देती है लैंगिक, वैयक्तिक, सामाजिक, धार्मिक व भाषाई विभिन्नता भी। साथ ही उपस्थित है व्यापार व्यवस्था भी जो आवश्यकताओं और इच्छाओं को पूरा करती है। मनुष्य अपनी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति स्वतः नहीं कर सकता। इसी कारण उसकी निर्भरता है, व्यापार पर। वहीं व्यापारी व्यापार को अपनी ऊर्जा देता है ताकि वह 'लाभ' कमा सके।

लाभ का उपयोग वह आवश्यकताओं और इच्छाओं की पूर्ति में करता है। आवश्यकताएँ शरीर से सम्बन्धित हैं। इच्छाएँ मन से सम्बन्धित हैं। आवश्यकता और इच्छा से आगे है महत्वाकांक्षा। महत्वाकांक्षा सम्बन्धित है अहंकार से। ये है माया का पूरा ताना-बाना।

वैतरणी

वैतरणी = वै + तरणी

वैतरणी नर्क से स्वर्ग तक जाती है। स्वर्ग की नदी है गंगा। वैतरणी ही नर्क से स्वर्ग में प्रवेश करने पर गंगा में बदल जाती है। हर व्यक्ति अपने स्वर्ग की रचना स्वयं करता है। जैसे ही वैतरणी द्वैत के परिक्षेत्र से बाहर निकलती है, गंगा में परिवर्तित हो जाती है। स्वर्ग

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

वह क्षेत्र है, जहाँ चेतना स्वयं से परिचित होती है। वह शक्ति जो चेतना को विजातिय या द्वैत से पार ले जाए, वैतरणी कहलाती है।

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

❀ ❀ ❀

द्वंद

'द्वंद' अर्थात् द्वैत के अंदर।

पदार्थ की द्विध्रुवीय व्यवस्था के अंदर। दो अक्षों के बीच सीमित कर दिया जाना।

❀ ❀ ❀

'डूबे सो उतरे पार'

'डूबे सो उतरे पार' : यह कर्मयोग का सूत्र है।

काम ऐसा करो, जिसमें पूरे डूब सको। इसे ही स्वाभाविक कर्म कहा जाता है। स्वाभाविक कर्म ही अकर्म हो जाता है। **ऐसा काम जिसमें डूबा न जा सके, उसे छोड़कर उस काम की ओर जाना उचित होगा, जिसमें डूबने की पूरी संभावना हो।** काम का चयन उससे जुड़े फायदों के आधार पर न हो। बल्कि इस आधार पर हो कि क्या करना सबसे सहज लगता है।

❀ ❀ ❀

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

नित्य

नित्य = नि (नियत) + त्य (त्याग)

मूत्र व मल द्वार को कर्मेन्द्रिय कहा गया परंतु मल-मूत्र त्याग को 'नित्य क्रिया' कहा जाता है। क्रिया इसलिए क्यूँकि जो काम मन के माध्यम से हो उसे कर्म और जो मन के माध्यम से न हो, वह क्रिया कहलाता है।

चेतना

चेतना = जाग जाना।

अर्थात् स्वयं के प्रति जाग जाना। सुबह निद्रा खुलना, मन और पदार्थिक जगत के प्रति जागना है। चेत जाना अर्थात् स्वयं को व स्वयं से सम्बन्धित शक्ति को जानना व इस शक्ति के मन द्वारा व्यर्थ उपयोग को रोकना। स्वयं और मन के बीच के अंतर को जानना। अपने मूल स्वाभाविक कर्म को जानना। जीवन के प्रयोजन को जानना। अपने समय व ध्यान का उपयोग, उस प्रयोजन की पूर्णता के लिए करना। अपनी शक्ति और उसके प्रभाव के प्रति जाग जाना। सुख के प्रति जाग जाना। सुख को जानना व अस्वभाविकता तथा उससे सम्बन्धित दुखों के प्रति जागना।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

शिष्य

शिष्य = शि (शिखर) + ष्य (अवश्य)

शिष्य वह है जिसने भीतर के गुरु को जान लिया। शिष्य उपस्थित ही तब होता है, जब गुरु उपस्थित हो जाए। बाहर सद्गुरु मिलेंगे, गुरु नहीं। जब तक गुरु प्रकट न हो, तब तक शिष्य भी उपस्थित नहीं होता। गुरु प्रकट ही इसलिए होता है कि शिष्य को मार्ग दिखा सके। गुरु सीढ़ी के सबसे ऊपरी पायदान पर खड़ा है तो शिष्य सीढ़ी के सबसे निचले पायदान पर। ये चेतना के सोपान हैं।

तम्बाकू

तम्बाकू = तम

तामसिक गुण से युक्त, वह वनस्पति जो तीक्ष्ण गंध से युक्त है व शरीर के लिए हानिकारक है। बदबूदार व अति हानिकारक पदार्थों में सुख ढूँढना तामसिक गुण है। तम्बाकू पूरे शरीर को नुकसान पहुँचाता है परंतु फिर भी मन इसमें आश्रय ढूँढता है। इस प्रकार मन तामसिक पदार्थ के माध्यम से शरीर के विरुद्ध कार्य करता है। तम्बाकू का धुआँ खुद को ही नहीं, वातावरण को और उस वातावरण पर निर्भर अन्य प्राणियों को भी नुकसान पहुँचाता है।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

ओज

ओज = अ + ऊ + ज = अक्षय ऊर्जा द्वारा जन्म

ओम की ओर अर्थात् ऊर्ध्व दिशा में गमन करने वाली शक्ति ही ओज कहलाती है। यह शक्ति ही ब्राह्मणत्व उपलब्ध कराती है। चेतना को जन्म देती है। अपने स्वरूप से साक्षात्कार उपलब्ध कराती है। यही शक्ति जब वाणी के माध्यम से बहती है तो वक्ता ओजस्वी कहलाता है। यही शक्ति जब सहस्त्रार के माध्यम से बाहर निकलती है, तो गंगा कहलाती है। यह शक्ति ही ओम से परिचय का माध्यम बनती है। यह शक्ति ही सूक्ष्म माता, पिता अर्थात् शक्ति और शिव से परिचय कराती है। यही शक्ति आंतरिक आकाश का भी अनुभव उपलब्ध कराती है।

पश्चाताप

पश्चाताप = पश्चात + तप

इससे पहले कि कर्मफल मुझे जलाएँ, मैं स्वयं को तपाकर अपने कर्मफल को दुर्बल करने का प्रयास करूँगा। जब व्यक्ति यह जान लेता है कि मन, वाणी और शरीर द्वारा कुछ अस्वाभाविक और असामान्य घटित हुआ, तब वह मन, वाणी और शरीर सम्बन्धी तप करने का निर्णय करता है। ताकि भविष्य में उन गलतियों का दुहराव रोका जा सके, जो अतीत में अंतःकरण के प्रभाव में की गईं। यह मर्ज को पहचानने और उसका उपचार करने जैसा है। उपचार समस्याओं के प्रति जागने के बाद संभव है। तब तक समस्या, समस्या नहीं आहत है।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

लक्ष्य

लक्ष्य = लक्षित है यम

स्वयं की खोज में निकलने वाले यात्रियों के लिए ईंधन है यम। पतंजलि ने यम को अष्टाँग योग का पहला स्तम्भ बनाया। उन्होंने इसे अहिंसा, सत्य, अपरिग्रह, अस्तेय और ब्रह्मचर्य में विभक्त किया। इसका मूल लक्ष्य है, चेतन मन से युक्त स्वाभाविक जीवन जीना। भीतर की प्रकृति को अभिव्यक्त होने की पूर्ण स्वतंत्रता देना। प्रयासहीन व सार्थक जीवन जीना। प्रयासहीन होना अर्थात् कर्म न करना नहीं अपितु स्वाभाविक कर्म में हस्तक्षेप न करना है।

पछताए

पछताए = पीछे ताप पाए।

पछतावा अर्थात् ग्लानि होना। मन के प्रभाव में किए गए वे काम, जो बाद में विवेक के जागने पर गलत लगे, ग्लानि पैदा करते हैं। गलतियाँ दो प्रकार की होती हैं- खुद द्वारा सोच-समझ कर की गईं और दूसरी अन्य के प्रभाव में आकर संकोच या दृढ़ता की कमी की वजह से हो जाने वाली। गलती से जुड़ी स्मृति कष्ट देती है।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

पुराण

पुराण = पुरा + ण (करण) अर्थात् पुराने साधन

पुरानी होती है स्मृति और स्मृति की अभिव्यक्ति है कहानी। कहानियाँ रुचिकर होती हैं क्योंकि उनमें घटनाएँ होती हैं, व्यक्तित्व होती हैं, द्वंद होते हैं और परिणाम होते हैं। कहानियों में छिपे हैं भ्रम और स्पष्टता और परिणामों में छुपे हैं संदेश। पुराणों का मूल उद्देश्य, संदेशों को कहानियों के माध्यम से सरल व रोचक रूप में आम जन तक पहुँचाना है।

इस्लाम

इस्लाम = इ + सलाम

शक्ति ही सलामती की हेतु है। शरीर में रहने वाली शक्ति शरीर को चलाती है और वातावरण से प्राप्त होने वाली शक्ति का उपभोग मन कर लिया करता है। यदि वातावरण से प्राप्त शक्ति शरीर में रहने वाली शक्ति से मिल जाए तो रूपान्तरण की प्रक्रिया घटित होनी प्रारंभ हो जाती है। यह शक्ति ही कामनाओं और उनसे सम्बन्धित दुखों से दूर रखती है।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

मुसलमान

मुसलमान = मुसल्लम (शुद्ध) + ईमान

ईमान अर्थात् शक्तिमान। शक्ति वह है जो सांसारिक बुराइयों से दूर रखती है और संसार में आसक्ति को भी सीमित करती है। ईमानदार या शक्तिशाली व्यक्ति अपने भीतर की शांति के ज्यादा नजदीक होता है। गीता कहती है कि जिसे शांति नहीं, उसे सुख कहाँ। ईमानदार स्वभाव आंतरिक शक्ति के अपव्यय को रोकता है तथा अनावश्यक कर्मफलों को भी बनने से रोकता है। खुशी यदि नएपन में है तो सुख सनातन में है। शक्ति सनातन की ओर ले जाती है। ईमानदारी सहजता लाती है और सहजता खुदा की ओर ले जाती है। ईमान ही वह रास्ता है जो खुदा की ओर जाता है। हर मार्ग जो भीतर का रास्ता दिखाए, स्वभाव की शुद्धता और चित्त की सरलता की सलाह देता है।

प्राण

प्राण = प्रा (प्राप्ति का साधन) + ण (शरीर प्राप्ति का साधन)

परा + ण (साधन)

पराशक्ति + जीवात्मा

जीवात्मा जीवन प्राप्ति का कारण है और शक्ति जीवन का साधन है। जीवात्मा इस शक्ति के माध्यम से शरीर से जुड़ती है और शरीर माध्यम बनाता है, पदार्थ से सम्बन्धित कामनाएँ, प्रयोग व योजनाएँ पूरी करने का। प्राण को धारण करने वाला प्राणी कहलाता है। प्राणी चर ... र जगत में विभक्त है।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

ज्ञान

ज्ञान = उसे जानना जो सदैव उपस्थित है।

जो परिवर्तनशील नहीं। जो रूपान्तरण की प्रक्रिया से नहीं गुजरता। लेकिन उसे जानना क्यूँ आवश्यक है? क्यूँकि उसे जानकर ही हम स्वयं को जान पाते हैं और इस जगत से अपने सम्बन्ध को जान पाते हैं। उसे जानकर ही जीवन के रहस्य को जाना जा सकता है। उसे जानकर ही भ्रम मिटते हैं और ऊर्जा का अनेक दिशाओं में व्यय रुकता है। उसे जानकर ही द्वँद मिटता है और जीवन एक दिशा में आगे बढ़ता है। उसे जानकर ही व्यक्ति समाज द्वारा दिए गए निरर्थक लक्ष्यों और उनसे सम्बन्धित भय से मुक्त होता है।

लीला, रास व जीवन

लीला = चैतन्य द्वारा

रास = चैतन्य व प्रकृति द्वारा

जीवन = जीव की प्रकट अवस्था

राससम्बन्धित है पुरुष और प्रकृति के मिलन से। रास की परिणति है प्रेम तथा आनन्द। शरीर में स्थित शिव तथा शक्ति के मिलने पर शांति घटित होती है। शिव तथा शक्ति के मिलने पर ही मन नियंत्रित या निष्क्रिय होता है। ये सुख की अवस्था ही **रास** कहलाती है। गे है महारास। यह परम और परा के मध्य घटित होता है। जब चेतना परम के

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

निकट पहुँचती है तो परम और परा की संयुक्ति के परिणाम स्वरूप घटित आनंद का अनुभव कर पाती है। परम है परमात्मा और परा है परमात्मा का अदृश्य विस्तार अर्थात् उनकी शक्ति।

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

चैतन्य जब शरीर रूप में उपस्थित हो विभिन्न घटनाओं के माध्यम से ईश्वर की उपस्थिति का संदेश देते हैं। विभिन्न प्रयोजनों को पूर्ण करते हुए जीवन जीने के तरीकों को स्पष्ट करते हैं व अपने संदेशों के माध्यम से जीवन के लक्ष्यों के बारे में बताते हैं और आम जन को उन लक्ष्यों को प्राप्त करने हेतु प्रोत्साहित करते हैं। स्वयं के माध्यम से उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। सभ्यता को मनुष्य में दिव्यता के दर्शन कराते हैं। प्रेम व धर्म का संदेश देते हैं, तब यह **लीला** कही जाती है।

जीवन = जीव की शरीर के माध्यम से अभिव्यक्ति जीवन कहलाती है। यह मन के प्रभाव में बिताया गया काल है।

बदमाश

बदमाश = बद + मानस

बद से बना Bad, बद से ही बना बदला।बदला अर्थात् प्रतिशोध या परिवर्तनशील। मनस अर्थात् मन से। अस्थिर तथा बदल जाने वाले व्यक्ति को भी लोग बदमाश कह दिया करते हैं।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

अस्त

अस्त = अनुपस्थित

सूर्य अस्त होना अर्थात् सूर्य का अनुपस्थित होना। सूर्य वहाँ पर अस्त हुआ, जहाँ पर व्यक्ति उपस्थित है। अब सूर्य पृथ्वी के दूसरे आधे भाग में उपस्थित है। सूर्य अपनी जगह पर स्थित है परंतु हम उसे अस्त और उदित होते देखते हैं, क्यूँकि धरती के साथ ही हम सभी भी चलायमान हैं।

मस्त

मस्त = म + अस्त

मन का अनुपस्थित हो जाना ही मस्त हो जाना है। मन का अनुपस्थित होना अर्थात् स्मृति, बुद्धि, संस्कारों, आकांक्षाओं, योजनाओं और भय का अनुपस्थित हो जाना है। मस्त होना अर्थात् सहज होना। सहजता संस्कारित नहीं, स्वाभाविक है। इस प्रकार मस्ती भी स्वाभाविक है।

योगदान

योग प्राप्ति पर ही व्यक्ति, परमात्मा द्वारा हर प्राणी को दिए जा रहे, दान को जान पाता है। मन के लिए दान कर्म है। मन इसे अच्छाई व पुण्य से जोड़ता है। वहीं चेतना के लिए दान मात्र आवश्यकता की पूर्ति है।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

पस्त

पस्त = भीतर के परम का अस्त हो जाना।

पस्त होना अर्थात् शक्तिहीन होना। चुस्त होना अर्थात् शक्ति से भरे होना व आलस से दूर होना है। चुस्त होना अर्थात् संतुलित और नियमित होना भी है। पस्त से बना परास्त, जिसका तात्पर्य व्यक्ति की पराशक्ति या आंतरिक शक्ति का चूक जाना है।

सद्गुरु

सद्गुरु = सध + गुरु

गुरु तो सदैव सधा हुआ है ही परंतु जो गुरु के सानिध्य में आकर सध गया, वह सद्गुरु है। जो गुरु के सानिध्य में आकर साधु हुआ, वह सद्गुरु है। गुरु शिष्य परम्परा अर्थात् गुरु परम को जानता है व शिष्य गुरु के माध्यम से स्वयं को पाने का प्रयास करता है। जिसे हम सद्गुरु कहते हैं, वह अपने गुरु का एक योग्य शिष्य है।

उत्साह

उत्साह = उत् का साहचर्य

हर्ष, रोमांच, उत्साह की श्रेणी में आते हैं। उत्साह अर्थात् मद्धिम उत्तेजना।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

दुष्ट

दुष्ट = दु + अष्ट

दुरुपयोग (पंचतत्व + मन, बुद्धि, अहंकार)

दुष्ट अर्थात् जिसका अंतःकरण दूषित है। शरीर अंतःकरण का उपकरण मात्र है। दूषित अंतःकरण दूषित कर्म का कारण बनते हैं। दूषित कर्म आंतरिक अस्थिरता का कारण बनते हैं। जो अशांति को निमंत्रित करती है। दूषित कर्म, स्मृति के भण्डार को भरते हैं। यह स्मृति ही चित्त में विक्षोभ पैदा कर, चित्त अशांत करती है।

नश्वर

नश्वर = न + स्व + रत

जो स्व में रत नहीं। व्यक्तित्व स्व में रत नहीं होते। इसी कारण व्यक्तित्व बनते व नष्ट होते रहते हैं। व्यक्तित्वों की छाप स्मृति पर रहती है। स्मृति के लोप के साथ व्यक्तित्व भी लुप्त हो जाते हैं। अवतार व बुद्ध पुरुष व्यक्तित्व नहीं, वर्तमान का भाग होने के कारण सनातन होते हैं। इसी कारण वे हर काल में प्रासंगिक हैं। जो स्व में रत है, वो सनातन है।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

शंभू

शंभू = स्वयंभू

वह जो भीतर से पूर्णतया सम है। वह जो प्रज्ञा में पूर्ण प्रतिष्ठित हो, मन अथवा कामनाओं से सर्वथा दूर हो। वह जो देखने में मनुष्यों के समान है परंतु जिसका अंतःकरण प्रकृति की तरह पूर्णतया शांत व सम तथा अस्तित्व की तरह पूर्णतः शून्य है। जो अब जीव नहीं, चैतन्य स्वरूप है। वह जो स्वयं में पूर्ण प्रतिष्ठित है। वह जिसके भीतर से प्रकृति अपरिवर्तित व शुद्ध रूप में प्रवाहित होती है। वह जो प्रकृति को पूर्ण स्वतंत्रता देता है और इसी कारण स्वयं भी पूर्ण स्वतंत्र है। जिसके भीतर की अशुद्धियों का शमन हो चुका है। जिसके भीतर पदार्थ, प्रकृति तथा परमात्मा तीनों उपस्थित हैं परंतु तीनों एक दूसरे से बिल्कुल अलग-अलग हैं।

Holiday (हॉलिडे)

Holiday = Holy day

हॉलीडे अर्थात् पवित्र दिन। मन के लिए हॉलिडे मतलब छुट्टी का दिन। छुट्टियाँ तीन प्रकार की हैं- धार्मिक, सामाजिक व राजनैतिक।

धार्मिक आयोजन पवित्र करने वाले माने जाते हैं। धर्म से बहुतायत जनसंख्या जुड़ी होती है। इसी कारण अवतारों, जाग्रत पुरुषों व धर्म की स्थापना करने वाले महात्माओं के जन्म दिवस पर व मुख्य धार्मिक आयोजनों पर छुट्टी की व्यवस्था होती है। राष्ट्र निर्माताओं के स (स्वतंत्रता व संविधान दिवस) पर सरकार अवकाश घोषित करती है।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

प्रांतीय सरकारें, उस प्रान्त की सामाजिक व्यवस्था के आधार पर समाज सुधारकों, महापुरुषों व संतों के जन्मदिवस पर अलग से छुट्टियों की व्यवस्था करती है।

❀ ❀ ❀

रुद्र

रुद्र = जो रुदन से द्रवित हो जाए।

रुद्र शिव का एक नाम है। रुदन से द्रवित होना भोलेपन से सम्बन्धित है, सहजता से सम्बन्धित है। काम ने शिव पर नियंत्रण कर उन्हें अस्थिर करना चाहा। शिव ने काम को ऊर्जा न देकर, अपने ज्ञान नेत्र द्वारा कामऊर्जा को सोम में रूपान्तरित किया। तत्पश्चात रति की प्रार्थना को भी उन्होंने स्वीकार कर लिया।

❀ ❀ ❀

शाश्वत

शाश्वत = शा + श्वेत

जो स्वयं प्रकाश है व पूर्ण शांति के आवरण से आच्छादित है। जो काल के बंधन से परे व काल में उपस्थित होता हुआ भी काल के प्रभाव से मुक्त है। जो स्वयं प्रकाशित है। वह हर कालखण्ड में उपस्थित है और अपरिवर्तनीय है। वह जो स्थिर है।

❀ ❀ ❀

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

विवेक

विवेक = विवेचना का करण

विवेक नहीं तो विवेचना नहीं। विवेचना अर्थात् विवेक के माध्यम से किसी तथ्य को स्पष्ट करना। बुद्धि समझ है तो वैराग्य शक्ति विवेक है। विवेक जीवन में प्रकृति के सनातन नियमों का प्रवेश कराता है। जीवन को द्वैत के बंधन से परे ले जाता है। जैसे मोहित व्यक्ति का मार्गदर्शन उसकी समझ करती है, वैसे ही वैरागी का मार्गदर्शक है विवेक। समझ लाभ-हानि को देखकर निर्णय करती है। विवेक बस सही का रास्ता दिखाता है।

कैवल्य

कैवल्य = केवल यम

हमारा एक भाग है जो यम के पाँच स्तम्भों (अहिंसा, सत्य, अपरिग्रह, अस्तेय और ब्रह्मचर्य) के अनुरूप है। यम से सम्बन्धित एक शक्ति का आवरण होता है जिसमें स्थित होने को कैवल्य में स्थित होना कहते हैं। यम का पालन इसी शक्ति के घेरे को संघनित करने हेतु बताया गया। जैसे मन बुद्धि को चाहता है, वैसे ही चेतना चैतन्य को चाहती है। ये शक्ति का वलय, मस्ती और सुख का वलय है। इसी वलय के भीतर प्रज्ञा और प्रकाश दोनों उपस्थित हैं।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

पंचतत्वों के लिए पंचामृत

पंचामृत प्राकृतिक तत्वों से बनता है। जैसे दूध, दही, घी, शहद, गुड़। नियत मात्रा में इनका सेवन शरीर के लिए लाभप्रद है। ये बल व ऊर्जा प्रदान करते हैं व पाचन शक्ति व रोग प्रतिरोधक क्षमता को मजबूत करते हैं।

विवाह

विवाह = विजातिय से निर्वाह

शिव और शक्ति के मिलन में मन अनुपस्थित हो जाता है क्यूँकि शिव शुद्ध हैं और शिव से युगल बनाने हेतु शक्ति को स्वयं को शुद्ध करना होता है। दोनों के मिलन से मन, स्मृति और अहंकार अनुपस्थित हो जाते हैं तथा बुद्धि, विशुद्ध बुद्धि में परिवर्तित हो जाती है। विवाह में मन, बुद्धि, अहंकार और स्मृति उपस्थित होते हैं और यही विजातिय हैं। विवाह बंधन में एक–दूसरे की इन अशुद्धियों के साथ रहना होता है। विवाह शिव और पार्वती का भी हुआ लेकिन इस विवाह से पहले शिव योग को प्राप्त हुए और पार्वती को कठिन तप कर स्वयं को अशुद्धियों से रहित करना पड़ा। विवाह दो मनुष्यों का भी होता है किन्तु दोनों अपनी अशुद्धियों को साथ लेकर बंध बना लेते हैं और यही समस्या की वजह बन जाता है।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

माँ

माँ = मा (शक्ति) + ँ (शिव)

मा प्रकृति को अभिव्यक्त करता है तो ँ पुरुष को। माँ शब्द अभिव्यक्त करता है कि माँ के भीतर प्रकृति है तो पुरुष के रूप में शिव भी हैं। प्रत्यक्ष रूप में पुरुष और स्त्री के मिलन से बच्चे की उत्पत्ति होती है, तो सूक्ष्म रूप में पुरुष और प्रकृति के मिलन से संतान अथवा चेतना का जन्म होता है। मंदिर में देवी को भी माँ कहा जाता है। देवी उस शक्ति की अभिव्यक्ति हैं, जो उत्पन्न करने वाली माँ और बच्चे, दोनों के भीतर उपस्थित हैं।

बुद्धत्व

बुद्धत्व = शुद्ध + बुद्धि + त्व

बुद्धत्व अर्थात् 'शुद्ध बुद्धि की अवस्था'। बोध की अवस्था, प्रेम की अवस्था अर्थात् सभी में स्वयं को देखते हुए उन्हें भी समान अधिकार देना। करुणा की अवस्था अर्थात् किसी की भी आवश्यकतापूर्ति के लिए तत्पर होना। स्वयं को जानने तथा सभी को जानने की अवस्था। अपने तथा जगत् के मूल तत्व का ज्ञान। प्रज्ञा में स्थिति की अवस्था।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

व्यक्तित्व

व्यक्तित्व = व्यक्ति + त्व

भावनाओं और भावभंगिमाओं की अभिव्यक्ति के माध्यम से व्यक्तित्व स्वयं को पुष्ट करता है। व्यक्ति के पास व्यक्त करने के कई साधन हैं जैसे लेखन, वाणी, चेहने की भावभंगिमाएँ व बॉडी लैंग्वेज। सारी अभिव्यक्ति मन के माध्यम से होती है और इसमें व्यय होती है शक्ति। शक्ति के व्यय से व्यक्तित्व आकार लेता है। जैसे शरीर के कारण उसकी छाया है। वैसे ही व्यक्ति की मानसिक छाया है, उसका व्यक्तित्व।

तर्पण

तर्पण = त्वम् (आपको) + अर्पण

तर्पण सम्बन्धित है, पूर्वजों से। पूर्वजों को याद करना व उन्हें कुछ अर्पित करना तर्पण कहलाता है। तर्पण सम्बन्धित है, मोह के सम्बन्ध व भावनाओं से। अन्यथा प्रकृति सभी प्रकट अथवा अप्रकट जीवों के प्रति समर्पित है। प्रकट या अप्रकट दोनों अवस्थाओं में प्रकृति ही सभी आवश्यकताओं की पूर्ति करती है।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

तर्पयामि

तर्पयामि = आपको अर्पित करते हैं।

यज्ञ में अग्नि को आहूति देते समय 'तर्पयामि' शब्द उच्चरित किया जाता है। सूर्य की ऊर्जा से ही पदार्थों की उत्पत्ति होती है। अग्नि को पदार्थ समर्पित करना, इस तथ्य को जानना है कि ऊर्जा रूपान्तरित होती है। अतः पदार्थ को अपना मान बैठना उचित नहीं। यज्ञ करना अर्थात् निर्लिप्त होना है। निष्काम यज्ञ का भाव यही है।

ख़ुदाई

ख़ुदाई = ख़ुदा की शक्ति

ख़ुदाई अर्थात् ख़ुदा की शक्ति द्वारा रची गई और चलने वाली दुनिया। इसके इतर एक और दुनिया है, जो मन द्वारा रची गई और चलित है। जिसे 'माया' कहते हैं। मन अपने अनुसार इसमें परिवर्तन करता रहता है। मन अपनी दुनिया बसाने के लिए, पूरी तरह प्रकृति पर निर्भर करता है। मायावी दुनिया उस घर के समान है, जो किसी दूसरे की जमीन पर दूसरे की ईंटों से बना है लेकिन मन इसे कहता अपना ही है।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

रहस्य

रहस्य = रह + स्याह

जो सूत्र एक गणितज्ञ के लिए सामान्य है, वही एक कलाकार के लिए रहस्य हो सकता है। कला गुण है, गणित बौद्धिक है। जो बात हमारे आयाम पर खरी उतरती नहीं, हमारे लिए रहस्य हो जाती है। जब तक हम 'स्व' से दूर हैं, तब तक परम् की खोज हमारे लिए एक परम् रहस्य है। मन को लगता है कि जब मैं हूँ ही, तो ये 'स्व' कौन सी बला है? मन को यह बात मजाक सी लगती है कि मन और 'स्व' दोनों अलग-अलग आयाम हैं।

साथ

साथ = स + अथ (जो प्रारंभ से संग है।)

कुछ है, जो हमारे साथ तब से है, जब हम मन के साथ समय की रोमांचक यात्रा पर निकले। जब यह यात्रा थका देने, सुकून छीनने और दुःख देने लगती है, तब हम ढूँढना प्रारंभ करते हैं कि वो क्या है जो सुकून देता है और जो रोमांच और दुःख से परे है? समय का अस्तित्व मन से जुड़ा है, सो मन के प्रबल होने और क्षीण होने के साथ ही समय की अनुभूति भी प्रबल और क्षीण होती है।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

अधुनातन – पुरातन – सनातन

अधुनातन = अधु (आधुनिक) + नातन (समय)
पुरातन = पुरा (पुराना) + नातन (समय)
सनातन = स (साथ) + नातन (समय)

आज का परिदृश्य अतीत की योजनाओं पर कार्य करने से उपस्थित हुआ। भविष्य आज की योजनाओं पर कार्य करने से उपस्थित होगा। लेकिन अतीत, आज और भविष्य तीनों ही वर्तमान के धरातल पर लगे पौधे हैं। वर्तमान को हम जब मन की नजरों से देखते हैं तो वो आज बन जाता है। आज को हम जब मन की अनुपस्थिति में देखते हैं तो वह वर्तमान होता है। ठीक वैसे ही जैसे रंगीन चश्मा लगाकर, हम दुनिया को रंगीन देखते हैं और चश्मे की अनुपस्थिति में वास्तविक रंग सामने होते हैं। अतीत, आज और भविष्य के प्राणियों में यह समानता है कि तीनों साँस के रूप में हवा ही लेते हैं या लेंगे। वर्तमान भी ठीक उसी हवा या ऑक्सीजन की भाँति है जो प्राणियों के चारों ओर सदैव उपस्थित रहता है।

कायर

कायर = काया + रत = (जो काया में रत है।)

चेतन मन 'मैं' है, तो शरीर 'मेरा' है। 'मेरा' ही 'मैं' का धन है। 'मैं' 'मेरा' में रत रहता है। चेतन मन काया में रत रहता है। चेतना के लिए 'मेरा' है 'शांति'। जब चेतना शांति में स्थित हो, तब वह काया की तरफ नहीं देखती, क्यूँकि उस दशा में काया में रत रहने वाला चेतन मन, अनुपस्थित हो जाता है।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

लक्ष्मन

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

लक्ष्मन = लक्ष्य + मन

लक्ष्मन दो बातों के लिए जाने जाते हैं। विवेक और दृढ़ता। लक्ष्मन जीवन से सम्बन्धित सारे निर्णय विवेक के अनुसार लेते हैं। दूसरा उन निर्णयों पर वे दृढ़ रहते हैं। उनका लक्ष्य है मन पर नियंत्रण। यदि मन का उन पर नियंत्रण होता तो वे अपने निर्णय ‘सुविधा’ के आधार पर लेते और जीवन में दृढ़ता की जगह ‘समझौते’ होते। समझौता मतलब ‘बीच का रास्ता’। समझौते से दोनों ही पक्ष संतुष्ट नहीं होते। दोनों में ही कुछ न कुछ खिन्नता का भाव रहता है।

विवेक के साथ दृढ़ता भी जुड़ी होती है और समझ के साथ जिद्। राम के साथ वन जाना लक्ष्मण की जिद् नहीं दृढ़ता है। जिद् के साथ जुड़ी है अहंकार की तुष्टि तो दृढ़ता के साथ जुड़ा है सुकून।

अपेक्षा

अपेक्षा = अपर + इच्छा = दूसरों से की गई इच्छा
उपेक्षा = अपेक्षा की पूर्ति न होना

अपेक्षा और इच्छा में एक बात समान है और वह है इच्छा। ‘इच्छा’ वह तरंग है, जो अपनी परिधि छोड़ दूसरे की परिधि में प्रवेश करती है। अपेक्षा यदि नकार दी जाए तो वह उपेक्षा बन जाती है और उपेक्षा दुख का कारण है क्योंकि यह हमारे अहंकार को ठेस पहुँचाती है। साथ ही हमारी संतुष्टि पाने की संभावनाओं पर चोट करती है। **अपेक्षा की [illegible] ुशी देती है।**

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

'तुम' व 'आप'

तुम = व्यक्ति

आप = व्यक्तित्व

सामाजिक यात्रा 'हमारे जैसा' या 'हमारे साथ' या 'हमारा दोस्त' से 'हमारे लिए सम्मानीय' बनने तक की है। तुम से आप तक की है। 'हमारे जैसा' से 'बड़ा आदमी' बनने तक की है। वहीं अध्यात्मिक यात्रा विभिन्नता से समता तक की है। भिन्न शरीर, भिन्न पहचान, भिन्न व्यक्तित्व से 'एक चेतना' तक की है। 'तुम' व्यक्ति है जो अपनी भावनाओं, कामनाओं और समझ को अभिव्यक्त करता है। व्यक्तित्व वह है, जो अपने गुणों, बुद्धि या स्वभाव को अभिव्यक्त होने देता है। 'आप' वह है, जो प्रयास द्वारा व्यक्ति से व्यक्तित्व में रुपांतरित होता है।

संतुष्टि

संतुष्टि = सम + तुष्ट + ई= वह शक्ति जो संतुष्ट करे।

संतुष्टि एक भाव है, जो एक नियत स्तर तक संतुष्ट हो जाने पर प्राप्त होती है। संतुष्टि प्राप्ति से पहले विषय में उत्कंठा होती है। संतुष्टि प्राप्ति के पश्चात् विषय में उत्कंठा समाप्त हो जाती है। संतुष्टि से ही सम्बन्धित शब्द है 'संतोष'।

संतोषम् परम् सुखम्। संतोष को परम सुख का कारण बताया गया। कारण है कि जो शक्ति उत्कंठा के समाधान में लगकर, ध्यान को व्यस्त रखे हुए थी, वह अब मुक्त है। जिससे [illegible] मुखी हो सकता है।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

संतुष्ट

संतुष्ट = सम + तु + अष्ट

मन अपने प्रयासों और परिणामों से तब तुष्ट होता है, जब व्यक्ति स्वाभाविक कर्म करे। स्वभाव सम है। स्वभाव का साथ लेने पर मन के संतुष्ट होने की संभावना बढ़ जाती है। स्वभाव के आधार पर बाँटे गए चार वर्ण (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र) स्वाभाविक संतुष्टि पाने हेतु ही हैं। यदि एक क्षत्रिय व्यापार करे तो हो सकता है कि वह आर्थिक रूप से ज्यादा सफल हो लेकिन स्वाभाविक रूप से कम संतुष्ट होगा। पंचमहाभूतों को मन, बुद्धि व अहंकार के साथ रखना मन, बुद्धि व अहंकार के साथ शरीर के सम्बन्ध को दिखाता है। यह सम्बन्ध ही मन और अहंकार के शरीर पर पड़ने वाले प्रभाव का कारण भी है।

नमन – शमन – अमन

नमन = न + मन
शमन = शांत + मन
अमन = अ + मन

न मन ही अमन है। हमें देहधारियों को नमस्ते व ईश्वर को नमन करना सिखाया जाता है। हमें ईश्वर को नमस्ते करना नहीं सिखाते। नमस्ते अभिवादन है, जो बातचीत की संभावनाओं को खोल देता है। नमन अर्थात् अपने और ईश्वर के बीच से मन को अनुपस्थित कर देना। ईश्वर से बातचीत की संभावना नहीं। ईश्वर से बस पाया जा सकता है। बात करने हेतु मन ...ान की अनुपस्थिति में बात संभव नहीं।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

उद्देश्य

उद्देश्य = उद + देश + य

उद्देश्य अर्थात् यम के माध्यम से उद अवस्था में पहुँचना। उद अर्थात् उदासीन या अनावेशित अवस्था। जीवन के उद्देश्य का तात्पर्य इसी उदासीन अवस्था को पाना है। आवेशित अवस्था में व्यक्ति आसानी से बाहरी आवेशों द्वारा आकर्षित या प्रतिकर्षित किया जा सकता है। उदासीन होते जाने या आवेश का त्याग करते जाने पर, व्यक्ति अनावश्यक रूप से बाहरी परिवर्तन द्वारा प्रभावित नहीं होता या कम होता है। हर आवेशित क्रिया या प्रतिक्रिया व्यक्ति की शक्ति को हर लेती है। इससे न चाहते हुए भी, व्यक्ति अपनी शक्ति या सुकून को खोता रहता है। व्यक्ति अपने स्वाभाविक कर्म को करता हुआ, सबसे अनावेशित अवस्था में होता है। जिन्हें सेवा का भाव है वे सेवा से, भक्त इसे भक्ति से, प्रेमी इसे प्रेम से, कर्मयोगी स्वाभाविक कर्म से और ध्यानी इसे ध्यान से पा सकते हैं।

गोधुलि

गोधुलि = गौ (प्रकाश) + धुलि

अर्थात् प्रकाश से धुली।

दिन प्रकाश से नहाए होते हैं तो प्रभात तथा संध्या प्रकाश से धुली होती है। प्रकाश और अंधकार के बीच का समय जब न रात हो, न दिन, गोधुलि कहलाता है। संध्या के समय दीपक जलाने की प्रथा है। जो कहती है कि जब बाहर भ्रम रूपी अंधकार हो, तब भीतर दिया जलाकर रखो। यात्रा में एक मार्गदर्शक साथ रखो।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

उद्दीपन

उद्दीपन = उद् + दीपन= उद् अवस्था में दीप प्रज्जवलन होना।

जैसे दीपक स्थिर वायु में सतत् जलता रह सकता है। वैसे ही उदासीन अवस्था में स्थित व्यक्ति के भीतर के आंतरिक प्रकाश का प्रकट होना और प्रज्जवलित रहना ज्यादा संभावित है। यह योग प्राप्ति की तैयारी जैसा है। अंधेरी रात में यदि एक स्थिर, सतत् प्रज्जवलित दीपक मिल जाए तो क्या बात हो। जिसके पास दीपक हो वह अंधेरे में भी सतत् चलता रह सकता है। यदि हमारा दीप प्रज्जवलित न हो तो न मार्ग ही दिखेगा, न चलना ही होगा, तो फिर पहुँचना कैसे हो?

बुद्ध कहते हैं कि बुद्धम शरणम् गच्छामि। अर्थात् जिसके पास दीपक हो, उसके साथ चलना प्रारंभ कर दो। जब तक की तुम्हारा अपना दीप प्रज्जवलित न हो। जब दीप प्रज्जवलित हो जाएगा तो तुम स्वतः ही अपना मार्ग, अपना धर्म पहचान उस पर चलने लगोगे। बुद्ध के साथ चलना, तुम्हारे आंतरिक परिवर्तन पर काम करेगा।

गर्मा

गर्मा = ग + रमा = ऊष्मा में रत

ऊष्मा सम्बन्धित है, तापमान के बढ़ने से। तापमान या तो शारीरिक कारणों से बढ़ता है जैसे संक्रमण से या मानसिक कारणों से, जैसे क्रोध, चिंता, भय, दुख से।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

सुरति

सुरति = स्व + रति

कबीर अपने दोहों में सुरति शब्द का कई बार उपयोग करते हैं। आजकल सुर्ती शब्द का उपयोग एक वनस्पति के लिए होता है, जिसके सेवन से नशा होता है।

कबीर 'सुरति' का उपयोग 'स्व' में रत होने के लिए करते हैं। कबीर की सुरति शक्ति है, वहीं वनस्पति वाली सुर्ती का गुण है मादकता। कबीर की सुरति मस्ती लाती है तो वनस्पति वाली सुर्ती उत्तेजना। सुरति स्वयं से जोड़े रखती है तो सुर्ती नशे से। योगी सुरति से संतृप्त रहता है, तो सुर्ती का आदि सुर्ती से संतुष्ट। सुरति संयम से उत्पन्न होती है तो सुर्ती बाजार से खरीदी जाती है। सुरति ईश्वर की शक्ति है। जैसे माँ बच्चे को, मौसम के अनुरूप कपड़े पहनाकर, बाहरी आवरण से उसकी रक्षा करती है। वैसे ही सुरति चेतना के चारों ओर आवरण बना, द्वैत के प्रभाव से उसकी रक्षा करती है।

स्वयं

स्वयं = स्व + यम

'स्व' में भी वर्तमान है। अतः 'स्व' को जानने हेतु वर्तमान में आना होगा।

जहाँ यम है, वहाँ स्व के होने की संभावना काफी बलवती है। यम ही स्व को अपने मूल स्वरूप में बनाए रखता है। यह ही स्व का रक्षक है। यम के पालन से शरीर को प्राप्त अधिकतर शक्ति, अपने मूल स्वरूप में बनी रहती है।

यम के पालन से, चेतना सतत् वर्तमान में बने रहते हुए, 'दृष्टा' भाव में स्थित रहती है। है, जो इस जगत को, काम को परे रखकर देखता है। भी वह इस जगत् के

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

दूसरे पहलू को भी देख पाता है। तभी वह जान पाता है कि 'काम' अकेले नहीं आता, वह अपने साथ दुःख, भय और बंधन को साथ लेकर आता है। ये सभी 'काम' के पीछे छिपे होते हैं। प्रारंभ में दिखता है तो बस 'काम'। जैसे सिक्के का एक ही पक्ष दिखता है, दूसरा छिपा रहता है।

❀❀❀

God Bless You

ईश्वर आपको सूक्ष्मता प्रदान करें। सूक्ष्मता ही आनंद का हेतु है। स्थूलता आनंद और सुख से दुर है। शरीर स्थूल है, चेतना सूक्ष्म है। कबीर कहते हैं कि छोटी चींटी को चीनी का रस मिल जाता है और विशाल हाथी के माथे धूल पड़ती है। शरीर काम और कामनाओं के प्रयोग का यंत्र है। चेतना शांति का अनुभव कर सकती है और आत्मा आनंद में स्थित होती है। तात्पर्य यह है कि सूक्ष्मता बढ़ते जाने के साथ ही, प्रेम व स्थिरता बढ़ती जाती है। शरीर के माध्यम से प्यार मिल सकता है परंतु प्रेम तो चेतना से सम्बन्धित है। ब्लेस का तात्पर्य बीइंग लेस से है। अर्थात् सूक्ष्म होते जाने से है। गॉड अर्थात् परमात्मा स्वयं बंधनहीन व अतिसूक्ष्म हैं। इसी कारण वे सर्वत्र उपस्थित हैं। यही कारण है कि वे आनंद के स्रोत भी हैं।

❀❀❀

नमो नमः

नमो नमः = न मोह, न मैं

❀❀❀

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

आनंद

आनंद = आ (आवरण) + नंद (पिता का)

पूर्ण स्थिरता अर्थात् न आदि न अंत, वही आनंद है। आनंद अर्थात् काल के चक्र के उस पार छलांग। आनंद में न स्मृति है, न समझ है, न बुद्धि है और न ही मन है। आनंद में बस स्थिति है। शांति और प्रकाश जब एक साथ मिल जाए तो उसे आनंद कहते हैं।

संतति

संतति = संतृप्ति की प्राप्ति

बच्चा यदि नाम रोशन करता है तो संतति भीतर के अंधकार को रोशन करती है। बच्चा यदि बुढ़ापे की लाठी है तो संतति मार्ग में प्रकाश की किरण है। बच्चा यदि संतुष्टि है, तो संतति संतृप्ति है। बच्चा बुढ़ापे की लाठी है तो संतति वर्तमान है। बच्चा दक्षिण दिशा से उत्पन्न होता है, तो संतति उत्तर दिशा से जन्म लेती है। **बच्चा पितृत्व की उपलब्धि है, तो संतति ब्राह्मणत्व की प्राप्ति।** संतति जीवन को प्रयोजन देती है। संतति ही व्यक्ति को उपलब्ध शक्तियों को संघनित कर, उसे प्रयोजन की पूर्णता में लगाती है।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

उजाला

उजाला = उज + आला

प्रकाश ही सबसे श्रेष्ठ है। उजाले का सीधा सम्बन्ध है साफ देख पाने से, भय के दूर होने से, सक्रियता से। आँखे भी प्रकाश की अनुपस्थिति में नहीं देख सकती। रोशनी, पदार्थ को प्रकाशित कर देती है और प्रकाश यथार्थ को। पदार्थ के सतत् अनुभव के लिए, आँखों को प्रकाश की जरूरत है। इसी कारण इंसान ने रात को भी रौशन करने के लिए, रोशनी के विभिन्न उपकरण बनाए। ताकि रात भी पदार्थ से सम्बन्धित हमारे अनुभव को रोक न सके। अँधेरा शरीर को निष्क्रिय कर देता है, लेकिन मन अंधेरे में भी सक्रिय रहता है। अतः मन ने प्रकाश के दूसरे स्त्रोतों की रचना की ताकि वह शरीर को रात में भी सक्रिय रख सके। धरती के लिए रात सूरज डूबने के साथ शुरु होती है और दिन सूरज आने के साथ प्रारंभ होता है। मन के लिए रात ग्यारह – बारह बजे होती है और दिन आठ – नौ बजे।

स्थितप्रज्ञ

स्थितप्रज्ञ = प्रज्ञा में स्थिति

प्रज्ञा अर्थात् सत्य का ज्ञान। प्रज्ञा में स्थित होती है चेतना। यह स्थिति शरीर में शक्ति के ऊर्ध्वरिता होने पर प्राप्त होती है। इस अवस्था में चेतन मन और अवचेतन मन में चलने वाले विचार थम जाते हैं और व्यक्ति पूर्ण स्थिरता और शून्यता में स्थित होता है। इस अवस्था में वह मौन रहना चाहता है और बोलने पर वाणी से ओज प्रवाहित होता है।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

जन्म

जन्म = जो न मैं

उत्पन्न = उत्पत्ति अन्न से है।

उत्पन्न होना अर्थात् शरीर रूप में प्रकट होना। अन्न ही सूर्य की ऊर्जा को संचित कर उसे जीवों को उपलब्ध कराते हैं। इसी अन्न रूपी ऊर्जा से शरीर की रचना होती है। बुद्ध के माध्यम से यदि हम उत्पत्ति और जन्म को समझें तो सिद्धार्थ की महामाया से उत्पत्ति हुई और फिर सिद्धार्थ की तपस्या ने तथागत या बुद्ध को जन्म दिया। जन्म अर्थात् शरीर से उस भाग का उदित होना, जो 'मैं' या 'मन' के बंधन से मुक्त हो, अपने स्वतंत्र अस्तित्व को पहचानती है। जन्म के फलस्वरूप जो भाग उदित होता है, वह हमारे अस्तित्व का तीसरा आयाम है और हमारे मन और परमात्मा के बीच का सेतु है। प्रकट और अप्रकट जगत् के मध्य का सेतु है। तर्क और शून्यता के मध्य का सेतु है, जिसे बोध कहते हैं।

वर्जिन

अंग्रेजी में वर्जिन शब्द आया वजाइना से। वजाइना शब्द मिलता जुलता है, हिन्दी के शब्द वर्जना से। हिन्दी में अक्सर वर्जनाओं के टूटने की बात कही जाती है। हिन्दी में कुमार या कुमारी शब्द आया कौमार्य से। अंग्रेजी में कौमार्य शब्द का अर्थ है वर्जिनिटी। वर्जिन और वर्जित मिलते जुलते शब्द हैं। वर्जिन का तात्पर्य है पहुँच से रहित और वर्जित का तात्पर्य है प्रतिबंध।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

सहज

सहज = सह + जन्म

सहजता अर्थात् जो जन्म से व्यक्ति के साथ रहती है। जैसे समझ और यौवन आने के साथ बचपन खोता जाता है। वैसे ही अधिकतर हमारी समझ और महत्वाकांक्षा, सहजता पर हावी हो जाती है। सहजता का बचा रह पाना, एक दुर्लभ घटना है। कबीर कहते हैं कि – जस की तस घर दीन्ही चदरिया। सहजता ही वह चादर है, जो हर बच्चे को मिलती है। कबीर अपनी सहजता को मन, बुद्धि व अहंकार से बचाने में सफल हो गए। अर्थात ये दुनिया उनमें कुछ बदल न पाई। वे दुनिया में रहते हुए भी दुनिया से उतने ही पृथक रहे, जैसे कीचड़ से कमल पृथक रहता है। बचपन तो स्वाभाविक रूप से सहज होता है। कबीर जवानी और बुढ़ापे में भी सहज रह गए। सहजता चेतना का मूल स्वभाव है। व्यक्तित्व, इसी कारण व्यक्तित्व होता है कि वो असहज होता है। बच्चे का कोई व्यक्तित्व नहीं और उसे व्यक्तित्व की आवश्यकता भी नहीं।

वृद्ध, वृद्धि और वृहद

वृद्धि अर्थात् संख्या का बढ़ना।

वृहद अर्थात् आकार का बढ़ना।

वृद्ध अर्थात् शरीर का ढलना।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

व्यापार

व्यापार = व्य (व्यय) + अपार

व्यापार से पहले आता है अधिकार। सामग्री, विद्या, तकनीक पर अधिकार करो। फिर उस अधिकार के माध्यम से व्यापार संभव है। व्यापार अर्थात् लेन-देन। हर व्यापार के मूल में है धन का लेन-देन। व्यक्ति को अपनी आवश्यकताओं, इच्छाओं और महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति के लिए धन चाहिए। इस लेन-देन के क्रम में निश्चित तौर पर कुछ, सिर्फ व्यय होता है। वह है शक्ति, ध्यान और समय। आवश्यकता से इच्छा और इच्छा से महत्वाकांक्षा की ओर जाते हुए, इनका व्यय क्रमशः बढ़ता जाता है। जो व्यक्ति मात्र आवश्यकताओं तक खुद को सीमित कर लेता है, वह अपनी शक्ति, ध्यान और समय का बड़ा भाग, अपने उपयोग के लिए बचा लेता है। अन्यथा महत्वाकांक्षा की ओर जाते हुए, मन शक्ति का उपभोग करता जाता है।

उद्यापन

उद्यापन = उद् + यापन

उद्यापन अर्थात् समापन नहीं। उद्यापन अर्थात् आवेशों का त्याग। रुपांतरण, बदलाव, उन्नयन। उदासीन अवस्था की प्राप्ति और उदासीन अवस्था में जीवनयापन। समान्यतः व्रत की पूर्णता पर उद्यापन किया जाता है, जिसका तात्पर्य है, व्रत के माध्यम से उदासीन अवस्था की प्राप्ति।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

मनन

मनन = मन + न = म + नन

मन की हलचल को शांत करना ताकि किसी विषय से सम्बन्धित सूचनाएँ व विवेक जाग्रत हो सके। मनन सम्बन्धित है, चेतन मन में उठने वाली कामनाओं की तरंगों के शांत होने से। इस अवस्था में भी अवचेतन मन चलता रहता है। प्रकृति की ओर देखते हुए मनन करना ज्यादा सहज है क्यूँकि व्यक्ति और वस्तुएँ चेतन मन को विचार की खुराक देते हैं। मनन अर्थात् विचारों को थोड़ा थामना ताकि भीतर से उठने वाले सुझाव सतह पर आ सकें। मनन अर्थात् बातचीत से अलग होकर, एकांत में अपनी समस्याओं के हलों को खोजना।

उसे ढूँढोगे कैसे?

उसे ढूँढोगे कैसे?

या तो मन से

या बुद्धि से,

या विवेक से,

या समर्पण से।

मन से उसे मंदिर में ढूँढेंगे, बुद्धि से गुरु और आश्रम में, विवेक से स्वाध्याय व पुस्तकों में। समर्पण से प्रेम में और स्वीकार भाव में।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

जीव

जीव = जन्म + शक्ति + वर्तमान

ज = जन्म चेतना का ई = शक्ति व = वर्तमान

जीव के विखण्डन के परिणाम स्वरूप जो जन्म लेता है, वह जानता है कि उसका भोजन, परिधान और आश्रय 'शक्ति' है। इस अवस्था में स्थित हो, वह समय के जिस आयाम से परिचित होता है, वह है वर्तमान। जीव के विखण्डन के परिणाम स्वरूप ही हमारे तीसरे आयाम का जन्म होता है और वह जो बतलाता है उसे कहते हैं बोध। जो शुद्ध बुद्धि से उपजता है।

जीव ही विभिन्न शरीरों के रूप में, प्रकट रूप में अभिव्यक्त होता है। जीव और शरीर मिलकर व्यक्ति बनते हैं और व्यक्ति ही व्यक्तित्व का विकास करता है। अर्थात् जीव ही व्यक्ति रूप में व्यक्तित्व का कारण है। परंतु जीव स्वयं में परम् कारण नहीं।

उदासी

उदासी का तात्पर्य आशाहीनता नहीं। उदासी का तात्पर्य है आवेशहीनता। उदासी शब्द को गलत समझा और समझाया गया है। उदासी अर्थात् उद् अवस्था में आसीन। उदासी निराशा कतई नहीं। उदासीनता मन की सिद्धि है क्यूँकि मन अपने आवेशों के लिये जाना जाता है।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

शक्ति

शक्ति = श (शांत) + क्त + ई

जो शांति में रत कर दे।

जो व्यय में रत है, वह व्यक्ति है। जो शक्ति का सतत् व्यय कर, मन-वाणी और बुद्धि से सक्रिय रहे, वह व्यक्ति है और जो मन को थामने का सामर्थ्य रखे, वह शक्ति है। मिथक कथाएँ यह बतलाती हैं कि असुरों का वध देवी ने ही किया है।

दुर्गा का तात्पर्य धारणा शक्ति से है, जो मन और चेतना के बीच एक दुर्ग बना देती है, जिसे पार कर चेतना मन से सतत् दूर हो जाती है। शक्ति ही चेतन मन को शांत करती है। शक्ति ही काम, क्रोध, लोभ, मोह और इनसे सम्बन्धित दुख को चेतना से परे रखती है। शांति कुछ और नहीं, अपितु शक्ति का चेतना के चारों ओर सघन आवरण है।

अंत

अंत = असंतृप्त

अंत अर्थात् असंत। फसलें पकती हैं, अंत को प्राप्त नहीं होतीं। फल पकते हैं और उपयोगी बन जाते हैं। फसलों और फलों का सत् शरीर में रह जाता है और अनावश्यक व अनुपयोगी भाग, शरीर से निकल प्रकृति का भाग हो जाता है। अन्न और फल का एक भाग शरीर और शरीर में रहने वाली शक्ति हो गया। विज्ञान कहता है कि ऊर्जा नष्ट नहीं होती रुपान्तरित हो जाती है। अध्यात्म कहता है कि जैसे प्रकृति सनातन है, वैसे ही परमात्मा शाश्वत है। सिर्फ मन ही आरंभ और अंत देखता है। अन्न के छिलके को हटा अन्न अलग कर लिया जाता है क्यूँकि अन्न उपयोगी है और जो उपयोगी है, वह नष्ट

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

नहीं होता, रुपान्तरित होता है। मन जिसे अनुपयोगी समझ नष्ट कर देता है, प्रकृति उसका भी उपयोग कर लेती है।

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

❀ ❀ ❀

प्रेम

प्रेम = प्र (सत्य) + इमम (इसमें)

अर्थात् जिसमें सत्य वास करता है। परमात्मा के चारों ओर उनकी अपरा शक्ति होती है, इसी शक्ति को प्रेम कहते हैं। बुद्ध, महावीर ने कहा परमात्मा प्रेम है। क्राइस्ट ने कहा, गॉड इज लव। हिन्दी में शब्द है प्रेम प्रकाश, अर्थात् जहाँ प्रेम है, वहीं प्रकाश अर्थात् ईश्वर का धाम है। एक उक्ति के अनुसार यदि आप जानते हैं कि प्रेम आपके साथ है तो जीवन के उतार-चढ़ाव का सामना ज्यादा बेहतर तरीके से किया जा सकता है।

प्रेम निश्चिंतता देता है अर्थात् चेतन मन की सक्रियता को थामता है। यदि व्यक्ति के भीतर परमात्मा है तो निश्चित तौर पर व्यक्ति के भीतर प्रेम भी है क्यूँकि परमात्मा प्रेम है। ध्यान की गहराइयों में उतर, योगी इसी प्रेम में अपनी चेतना को डुबोता है।

❀ ❀ ❀

अंधेरा – सवेरा

अंधेरा = अंध + ऐरा

सवेरा = सव + ऐरा

ऐरा = काल (समय)

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

हिंदी और अंग्रेजी के ऐरा का तात्पर्य एक है और वो है काल या समय। अंधेरा अर्थात् वह कालापन, जो व्यक्ति की आँखों को अनुपयोगी बना दे। पूर्ण अंधकार में किसी भी जंतु की आँखें नहीं देख सकतीं।

दुनिया से सम्बन्धित समय को मन दो भागों में बाँटता है – 1. जिसमें रोशनी रहती है। 2. जिसमें प्राकृतिक रूप से अंधकार रहता है। खुद से सम्बन्धित समय को चेतन मन दो भागों में बाँटता है – 1. जो अच्छा बीता। 2. जो अच्छा नहीं बीता। जो समय अच्छा नहीं बीता उसे भी दो भागों में बाँटा जाता है – 1. जो बोरियत के साथ बीता। 2. जो बुरा बीता।

❀❀❀

लाभ

लाभ = ला + भर

हानि = नियत हरण

हाय, ह्रास, हानि, हाहाकार सभी क्षरण या नुकसान के लिये उपयोग किये गये हैं। वहीं लाभ, लाया, लाना, आमद या बढ़ोत्तरी के लिये उपयोग किये गए हैं।

❀❀❀

धर्म

धर्म = धर + मम् = मुझे धारण करो।

धर्म स्वभाव के निकट होता है। स्वभाव के अनुसार कर्म का आचरण ही धर्म है। ... कर्म करते हुए, व्यक्ति मन पर ज्यादा बेहतर तरीके से नियंत्रण रख पाता है।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

कारण यह है कि मूल शक्ति स्वाभाविक कर्म की ओर मुड़ जाती है। अपना मूल कर्म करते हुए स्वभाव स्वयं को अभिव्यक्त कर पाता है। इससे व्यक्ति जो कुछ भी स्वयं में समेटे हुए है, उसे आकार दे पाता है। **कर्म ही जब स्वाभाविक हो जाए तो वो धर्म हो जाता है।** कर्म जब महत्वाकांक्षी हो जाए तो वो कर्मफल उत्पन्न करने लगता है। प्रकृति की शक्ति जब परमात्मा के कार्य को आकार दे, तो वो धर्म बन जाती है। स्वाभाविक कर्म ही मन का उपयोग कर पाता है। अस्वाभाविक कर्म मन को उद्वेलित करता है।

समाधि

समाधि = सम + अधीन

समाधि अस्तित्व का व्यक्ति को दिया गया वह उपहार है, जिसके माध्यम से व्यक्तित्व के अस्तित्व में रुपांतरण की प्रक्रिया प्रारंभ होती है। समाधि में अस्तित्व का प्रेम छिपा है। समाधि ही वह प्रसाद है जो स्वयं परमात्मा द्वारा प्रदान किया जाता है।

सामान्य

सामान्य = सम + अन्य

अर्थात् दूसरों के समान। मन और बुद्धि के तल पर सामान्यता संभव नहीं। मन कहता है – मैं सुंदर, मैं विशेष, मैं अलग, मैं पिछड़ा, मैं वंचित, मैं बूढ़ा, मैं बीमार। बुद्धि कहती है – [illegible]ार, मैं बुद्धिमान, मैं तेज़।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

सामान्यता आनी प्रारंभ होती है, स्वभाव के तल पर। स्वभाव कहता है, दूसरों के समान मैं इंसान। पुरुष या स्त्री भी नहीं, सिर्फ इंसान। इससे गहराई में स्थित है बोध। बोध कहता है, सबके समान मैं भी जीव। जानवर भी मेरे समान ही जीव। बोध के भीतर है ज्ञान; जो कहता है, सभी चर और अचर के समान मैं बस चेतना। इसके भीतर है परम् ज्ञान, जो जानता है, मैं बस शून्य। और जो कुछ भी है, बस वही है।

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

आगे नाथ, न पीछे पगहा
भीतर नाथ, बाहर जगन्नाथ

मन आगे और पीछे देखता है क्यूँकि आगे भविष्य है और पीछे अतीत। उसे अपने आगे नाथ चाहिये, जिसके पीछे वे चल सके। जो बचपन में उसका ध्यान रखे और जवानी में मार्गदर्शन करे व संसाधन उपलब्ध कराए। उसे पीछे पगहा चाहिए, जो जवानी में उसे व्यस्त रखे, मनोरंजन करे और बुढ़ापे में सहारा दे। बस नाथ और पगहा के साथ पूरी हुई जीवन की व्यवस्था। लेकिन जीवन की वास्तविक खोज, भीतर के नाथ और बाहर के जगन्नाथ को ढूँढने की है। नाथ वह है जो व्यक्ति का कारण है। जगन्नाथ वह है जो सभी चर–अचर और निर्जीव जगत् का कारण है। नाथ वह है, जो भीतर अपरिवर्तनीय व एकरूप है। जगन्नाथ वह है जो चारों ओर अखण्ड, एकरस व शाश्वत है। पगहा उपलब्धि है, जगन्नाथ प्राप्ति है।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

उद

उद = जो मध्य में है।

शरीर के मध्य में है उदर अर्थात् पेट।

मन और परमात्मा के मध्य में है चेतना।

धरती और शून्य के बीच है आकाश।

प्रकाश और भावना के बीच है भाव।

पदार्थ और चैतन्य के मध्य है चेतना।

आनंद और उपद्रव के मध्य है शांति।

समयहीनता और आज के मध्य है वर्तमान।

दिन और रात के मध्य है गोधुलि।

शाश्वत और परिवर्तनशील के मध्य है सनातन।

परमात्मा और मोह के मध्य है वैराग्य।

आनंद और उत्तेजना के मध्य है स्थिरता।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

महत्व

महत्व = मैं हूँ तत्व = अर्थात् लोगों के ध्यान का 'मैं' केन्द्र बिन्दु बनूँ।

अर्थात् कद्र या इम्पॉर्टेन्स। 'मैं' की यह अपेक्षा होती है कि लोग मेरे गुणों और उपलब्धियों को जाने और मुझे तवज्जो दें। महत्व अर्थात 'मैं' का 'मेरे' में, अपने होने के मायने को ढूँढना। परमात्मा के लिए जो तत्व है, वही मैं के लिए महत्व है। महत्व तत्व को नहीं जानता, तत्व को महत्व से कोई सरोकार नहीं। तत्व का सम्बन्ध है जानने से, तो महत्व का सम्बन्ध है मानने से। अपना मन चाहता है कि जो मैं मानता हूँ, वही दूसरे भी मानें। वहीं विरोधी का मन कहता है कि जो मैं नहीं मानता, वो दूसरे क्यूँ मान रहे हैं? महत्वाकांक्षा महत्व पाना चाहती है। दूसरों की स्मृति में जगह पाना चाहती है। इस संसार में अपना पदचिह्न छोड़ना चाहती है। ज्यादा से ज्यादा लोगों की स्मृति तक, अपनी पैठ बनाना चाहती है।

महत्व सम्बन्धित है द्वैत से, जिसमें कर्ता और प्रशंसक दोनों उपस्थित हैं। मन अपने कर्मों के माध्यम से लोगों पर अपनी छाप छोड़ना चाहता है। खुद को प्रशंसकों से घिरा देख, खुद को महत्वपूर्ण मानता है।

मन खुद में उपस्थित गुण, कौशल, बौद्धिकता के प्रभाव को, अपने चारों ओर पड़ते देखता है और इसी आधार पर खुद को महत्वपूर्ण मानने लगता है। व्यक्ति का जो भी प्रभाव है, वह उस उपहार के कारण है, जो प्रकृति ने उसे दिया है। वास्तव में प्रकृति ही उन गुणों के माध्यम से अभिव्यक्त होती है, परंतु मन इन गुणों को अपना मान बैठता है। जिसे प्रकृति प्रदत्त ये उपहार नहीं मिलते, वो स्वयं को महत्वहीन मान बैठता है। महत्व का सारा खेल, मन से सम्बन्धित है।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

महान्

महान = मैं का हनन

मैं का हनन होने पर महत्वाकांक्षा का भी अवसान हो जाता है। 'मैं' से मुक्ति ही महानता के दरवाजे खोलती है। महत्वाकांक्षा सभ्यता का भाग नहीं बनती, महानता सभ्यता को धनी बनाती है। महानता क्षेत्र, धर्म और सभ्यता की दीवारें लाँघ जाती है। महत्वाकांक्षा उकसावा देती है और महानता प्रेरणा। महानता कहती है कि 'मैं है नहीं' इसलिए खुद के लिए कुछ करने का कोई मतलब नहीं।

महानता सरलता लाती है और जीवनशैली को साधारण बनाती है। साधारणता ही शैली हो जाती है। मन कहता है, जीवन जियो अदा के साथ। महानता कहती है, जीवन रहे सरलता के साथ। महानता के लिए सरलता कोई दिखावा नहीं, अपितु तरीका है। महानता चाहती है कि पूरा ध्यान जीवन के उद्देश्य की पूर्णता पर हो।

मुनि

मुनि = मौनी (मन को प्राप्त ऊर्जा का निषेध)

वह जो अपने चेतन मन को मौन करने में सफल हो जाए। मौन दो प्रकार का है –

1. मौखिक मौन, 2. मानसिक मौन। मौखिक मौन अभ्यास है, मानसिक मौन सिद्धि।

मुँह चुप हो लेकिन मन बोलता रहे तो बस ध्वनि प्रदूषण न होगा। भीतर स्थिति जस की तस ही रहेगी। मन मौन हो जाए और तब वाणी से जो निकलेगा, वही प्रवचन है। मौनी ही असंग है। मन ही वह आवेशित भाग है, जो किसी का संग चाहता है। मन के मौन होने ... अवस्था उपलब्ध होती है। मन के मौन होने पर सन्यासी का अपने क्षेत्र अर्थात्

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

शरीर पर नियंत्रण होने लगता है। शरीर पर नियंत्रण अर्थात् शरीर रूपी यंत्र, अब मन से चालित नहीं होता। अब वह स्व का उपकरण हो जाता है।

कर्म

कर्म = कर (करण) + मम (मेरे)

(अर्थात् साधनों पर मन का नियंत्रण होना।)

करण अर्थात् साधन। कर मम् अर्थात् साधन व कर्म में आसक्ति । 'मन' को 'मेरा' चाहिए। मन की अनुपस्थिति में कर्म, कर्म न रहकर अकर्म हो जाता है। यदि कर्म न होगा तो कर्मफल की संभावना भी न होगी। **इच्छा मनचाहा बँधन है तो कर्मफल अनचाहा बँधन।** अकर्म अर्थात् अपने रथ की बागडोर अपने हाथ न रख कृष्ण के हाथ सौंप देना। इस अवस्था में कर्मक्षेत्र, धर्मक्षेत्र बन जाता है।

अर्जुन ने अपना महाभारत जीता क्यूँकि उन्होंने कृष्ण को सारथी चुना और मार्गदर्शक भी। अकर्म भी आंतरिक मार्गदर्शक प्राप्त कर लेता है।

कर्म कहता है नियंत्रण मेरा होगा। अकर्म कहता है कि मेरा नियंत्रण समाप्त। अब जो होगा, स्वाभाविक होगा।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

न्याय

न्याय = न यामिनी (प्रकाश) + यम (सत्य)

न्याय के लिए आवश्यक है एक निष्पक्ष व्यवस्था और निर्दोष व सम न्यायाधीश। न व्यवस्था किसी पक्ष से प्रभावित हो, न न्यायाधीश किसी पर मोहित हो। दोषी न्याय व्यवस्था से दूर भागता है, फरियादी व्यवस्था के पास जाता है। इसी प्रकार मन परमात्मा से दूर भागता है परंतु स्वभाव समर्पण की ओर जाता है, भक्ति की ओर जाता है। सभ्यता की न्याय व्यवस्था और प्रकृति का कर्मफल का सिद्धांत एक समान है। कर्मफल सिद्धांत का उद्देश्य, चेतना को द्वैत के द्वितीय पक्ष से परिचित कराना है। मन कहाँ उत्तेजना और आकर्षण से आगे देख पाता है। प्रकृति की न्याय व्यवस्था ही निश्चित करती है कि पदार्थ के दोनों पक्षों से परिचय हो। अनुभव हो तो पूरा हो, आधा नहीं।

न्यास

न्यास = न यामिनी + सम = (जहाँ प्रकाश व समता हो।)

न्यास 'समता व बोध' के आधार पर स्थापित होते हैं। न्यास स्थापित ही वह करता है जिसने समत्व को प्राप्त किया हो। न्यास का प्रयोजन व्यापार नहीं। न्यास का लक्ष्य प्रयोजन व आवश्यकताओं की पूर्ति है। नॉट फार प्रॉफिट आर्गनाइज़ेशन की अवधारणा ही न्यास की अवधारणा है। न्यास न सफलता, न ही संतुष्टि के लिए और न ही लोक कल्याण की भावना से स्थापित किए जाते हैं। न्यास स्थापित होते हैं, आत्म प्रयोजन के लिए। परपज़ ऑफ लाइफ की पूर्ति के लिए। जहाँ समता हो, वहाँ महत्वाकांक्षा नहीं होती। अतः पाने के [illegible] बचता नहीं। अब अपने पास जो कुछ हो, उसी पर कार्य करना होता है। उस

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

सारे कार्य को न्यास की छत्रछाया तले एकत्र कर दिया जाता है। प्रभुपाद जब अमरीका गए तो उन्होंने कहा कि मैं यहाँ कुछ पाने नहीं, कुछ देने आया हूँ और फिर उन्होंने इस्कॉन की स्थापना की।

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

कृष्ण

ऊष्ण = ऊ (ऊर्जा) + ष्ण (घनीभूत)

कृष्ण = कृ (कृपा) + ष्ण (घनीभूत)

यदि कृष्ण समान चेतनाएँ धरती पर उपस्थित न हों, तो जीवन एक ऐसी अंधी दौड़ बन जाए, जिसमें भागे तो सभी, कोई सरपट, कोई धीमे लेकिन गंतव्य किसी को न पता हो। इस भागदौड़ का कारण सिर्फ इतना हो कि चारों ओर सभी भाग रहे हैं। इसी दौड़ के कारण, हमने जीवन को वर्षों में बाँट रखा है। जिसमें एक वर्ष बीतने के बाद, अगले वर्ष की दौड़ प्रारंभ हो जाती है। वहीं ऋषियों ने जीवन को चार चरणों में बाँटा, जिसे आश्रम व्यवस्था कहा गया। आश्रम व्यवस्था में हर आश्रम के स्पष्ट लक्ष्य हैं। जिन लक्ष्यों को पूरा करता व्यक्ति, अपने गंतव्य की ओर आगे बढ़ता है। कृष्ण की जीवन लीला व गीतारूपी वचन ही कृष्ण की कृपा है।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

मगहर

मगहर = म + गहर

बादल की गड़गड़ाहट सुन कभी लोग यह मानते थे कि ऊपर कोई देवता क्रोधित हो रहे हैं। वैसे ही कबीर के समय यह भ्रान्ति थी कि मगहर नामक कस्बे में मृत्यु से मुक्ति नहीं मिलती। कबीर जानते थे कि यह किसी की नासमझी थी, जो अंधविश्वास में बदल गई थी। जीवन के अंतिम समय में उन्होंने इस भ्रान्ति को भी तोड़ देना उचित समझा। वे शरीर छोड़ने मगहर चले गए। मगहर अर्थात् मन की गहराइयों में उतरने से मुक्ति नहीं मिलती। मन पदार्थ को ही उपस्थित जानता है, सो वह पदार्थ की ओर ही लेकर जाएगा। लोगों ने मगहर का मतलब, मगहर नामक कस्बा समझा। कबीर ने अपने बोध का उपयोग लोगों की भ्रान्तियों को तोड़ने हेतु किया। अन्यथा अभी तक मगहर को शायद अशुभ ही समझा जाता।

अवतार

अवतार = अवस्थित हुए तारण के लिए।

हर अवतार की उपस्थिति का सभ्यता पर बहुत वृहद प्रभाव पड़ता है। सभ्यता की जीवनशैली, रहन-सहन, आहार, स्थापत्य सभी में परिवर्तन दिखाई पड़ता है। वे जो सत्य की खोज के यात्री हैं, उनमें नई शक्ति का संचार होता है। समाज सत्य की खोज के प्रति ज्यादा सहृदय हो जाता है। सामाजिक मान्यताओं और बंधनों की बेड़ियाँ ज्यादा टूटती हैं। अंधविश्वास और धर्म के नाम पर कुरीतियों का प्रसार थमता है। कर्मकाण्डों पर कुठाराघात ... धर्म के नाम पर चल रहा व्यापार थमता है। लोग ज्यादा सहजता से महत्वाकांक्षा

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

का त्याग करते हैं। समाज में छायी भ्रम की स्थिति कम होती है। ताज़गी की एक नई बयार बहती है। करुणा, प्रेम, ध्यान, विवेक पुनः मुख्यधारा में आते हैं। समाज में दुराव घटता है। लोग स्वयं को और दूसरों को ज्यादा स्वतंत्रता देते हैं। जीवन के प्रयोजन की बातें होती हैं। धर्म और कर्तव्य के नाम पर एक दूसरे का दोहन थमता है।

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

महेश

महेश = मह + ईश = (मैं का हनन करने वाले ईश्वर।)

मन शिव की ओर बढ़ता हुआ सतत् विरल होता जाता है। शिव सत्य का द्वार हैं, अतः मन इस द्वार से आगे नहीं बढ़ पाता। मन स्थूलता को ही उपस्थित मानता है और परमात्मा सूक्ष्मता से ही प्राप्य है। स्थूल और सूक्ष्म जगत अलग-अलग है। मन का पूरा प्रयोजन ही स्थूल जगत में बने रहने से है। मन पदार्थ में ही ईश्वर की रचना भी करता है और उन्हें ढूँढता भी है। मंतव्य यह है कि ईश्वर भी मिल जाएँ और मन भी बना रहे। इससे वह अपने अस्तित्व की उपस्थिति सिद्ध करने में सफल हो जाएगा। वहीं शिव आपके सिर्फ सूक्ष्म भाग को ही ईश्वर के लोक में प्रवेश करने देते है। वही सूक्ष्म भाग ही सत्य है।

Religion

Religion = Re + ligion (ligation)अर्थात् फिर से जुड़ना

लाइगेशन मतलब जुड़ना। रीलाइगेशन से ही शब्द बना है रिलिजन। अर्थात् पुनः जुड़ना। खो देने का सबसे आसान तरीका है, खुद को खो देना। यदि व्यक्ति घर का रास्ता

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

भूल गया तो काफी संभावना है कि वो घर को ढूँढ लेगा। यदि न भी ढूँढ पाया तो खोज तो बंद न होगी। यदि घर खोने के बाद स्मृति भी खो जाए तो खोज ही खो जाएगी। अब घर पहुँचना कैसे संभव हो?

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. -L-100111/2021
Date 05/03/2021

ईश्वर को पा लेने का सबसे आसान मार्ग है, खुद को पा लेना। जिसकी स्मृति वापस आ गई, उसके प्रयास भी प्रारंभ हो जाते हैं। धर्म का कार्य ही खुद के और ईश्वर के मध्य के मार्ग का निर्माण करना है। एक शब्द है 'स्वधर्म'। स्व के प्राप्त होते ही स्व से सम्बन्धित धर्म की भी प्राप्ति हो जाती है। ये है आपका अपना व्यक्तिगत धर्म।

समृद्ध

धन में वृद्धि धनवान बनाती है, समृद्ध नहीं।

समृद्ध = सम + ऋद्धि (ऋतम्भरा प्रज्ञा)

सम में आने पर प्रज्ञा की प्राप्ति

धनवान शब्द सम्बन्धित है संसाधनों के जुटने से या संसाधनों के खरीदने की सामर्थ्य के आने से। धन मन को संतुष्टि देता है। मन के लिए संसाधन ही धन है। वहीं समृद्धि शब्द सम्बन्धित है चेतना से। समृद्धि अर्थात् प्रज्ञा में प्रगति से सम में स्थिति होती है। सम इतना आवश्यक क्यों है? क्यूँकि हमारे प्रयास तब तक नहीं रुकते, जब तक हम समत्व को प्राप्त न कर लें। सम में आने तक हमारी खोज चलती रहती है। खोज चलती रहना अर्थात् यात्रा चलती रहना। प्रज्ञा अर्थात् सत्य का ज्ञान। बुद्धि हमें धनवान बनाती है, लेकिन समृद्धि चेतना से ही संभव है। जगत् में उपस्थित सारा बोध, चेतना की प्राप्ति से ही संभव है।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

आशा

आशा = उपस्थित + शांति

शांति ही समत्व है। पूर्ण शांति पूर्ण समत्व है। जब कभी समस्या घेरती है तो आशा जागती है कि सब ठीक हो जाएगा अर्थात् सम हो जाएगा। समस्या विषमता है, समाधान सम है। प्रसन्नता शांति के भीतर छिपी होती है। खुशी और प्रसन्नता में अंतर है। हर खुशी का कोई कारण है, कारण के बिना खुशी संभव नहीं। वहीं प्रसन्नता अकारण है।

पराधीनता में आशाएँ बलवती हो जाती हैं। एक तरफ पराधीनता होती है तो दूसरी तरफ आशा। जब कोई भी आशा न पनपे, उस वक्त व्यक्ति स्वतंत्र होता है।

आशा का प्रयोजन ही अपने मूल स्थान, मूल स्थिति में पहुँचने का है। स्व के क्षेत्र में आकर आशाएँ भी विराम ले लेती हैं क्यूँकि यही वह स्थिति है, जिसकी आशा थी।

शांति

शांति = वर्तमान

आनंद = काल से परे

शांति से आनंद तक

वर्तमान शांत है क्यूँकि वर्तमान में चेतन मन शांत है। वर्तमान स्थिरता है। वर्तमान सम्बन्धित है बोध से। वर्तमान दुःखों से दूर है। वर्तमान सम्बन्धित है आवश्यकताओं से। ूर है इच्छाओं से। वर्तमान में कोई योजनाएँ नहीं। वर्तमान में बस स्थिति है।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

वर्तमान दूर है पदार्थ के आकर्षण व भोग में रस से। वर्तमान सम्बन्धित है प्रयोजन से। वर्तमान सम्बन्धित है, आत्म धर्म से अर्थात् स्वभाविक कर्म से। वर्तमान में मोह की अनुपस्थिति है। वर्तमान से प्रेम की किरण निकल चारों ओर फैलती है।

कसरत

कसरत = कसावट में रत

शरीर की प्रकृति है ढलना। ऊतकों के भीतर का कोलैजन समय के साथ कम होता जाता है। जिससे उनकी कसावट कम होने लगती है। आसन, मसल्स, टेंडन और तंत्रिकाओं में उनकी कसावट खोने की प्रक्रिया को धीमा करते हैं और प्राणायाम यही काम शरीर के आंतरिक अंगों और सॉफ्ट टिश्यू के लिए करता है। नशे की आदत बुढ़ापे की प्रक्रिया को तेज करती है और नियमितता और व्यायाम इस प्रक्रिया को धीमा करते हैं।

संग

संग = सम + गति

जिसकी गति आपके समान हो। अंग्रेजी में कहावत है –"Birds of same feather, flock together" अर्थात् एक समान लोग, एक साथ होना पसंद करते हैं। एक समान शौक वाले लोग ऐसे आयोजन करते हैं जिसमें वे एकत्र हो, अपने शौक पूरे कर सके। बाइकर्स ग्रुप, डांस ग्रुप, सामाजिक संगठन इत्यादि एक तरह की रुचि वाले लोगों के । विद्या और शिक्षा में रुचि रखने वाले विद्यालयों और विश्वविद्यालयों में एकत्र

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

होते हैं। भोजन में रुचि रखने वाले स्ट्रीट फूड वेंडर और रेस्टोरेंट में एकत्र होते हैं। खेल में रुचि रखने वाले मैदान और स्टेडियम में, राजनीति में रुचि रखने वाले जिला परिषद, विधानसभा और संसद में, कविता में रुचि रखने वाले कवि सम्मेलन और मुशायरे में साथ आते हैं।

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

बीज

बीज = ब + ई + ज = (ब्रह्म व शक्ति के मिलने पर जन्म।)

चर–अचर जगत् उससे ही परिपूर्ण है। ब्रह्म की अध्यक्षता में प्रकृति ही सब चर–अचर जगत को रचती है। बीज में संभावना है और शरीर उसी संभावना की अभिव्यक्ति। बीज में संभावना है, तो वह संभावना परमात्मा के ही कारण है। परमात्मा ही सम के कारण है तो प्रकृति भाव, भावना और रचना की कारण है।

बीज शब्द चेतना से जुड़ा है। किसान खेत में बीज डालता है और एक पौधा चेतन हो उठता है। पौधा जीवित होते दिखता है लेकिन उसमें से चेतना ही अभिव्यक्ति होती है। जन्म लेना अर्थात् एक आयाम से दूसरे आयाम में प्रवेश करना। बीज कारण है जीवन का, तो प्रकृति है, उस जीवन की रचनाकार।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

काफ़िर

काफ़िर = कामनाओं की फिराक़ में।

जीवन का प्रयोजन ही जीवन का धर्म है। प्रयोजन की प्राप्ति तक धर्म खुद में एक खोज है। कामनाओं की फिराक़ में रहते हुए, हम खुद अपने धर्म से विरत रहते हैं। जो अपने धर्म से दूर है, वह खुद से और खुदा से दूर है। इसलिए कहा गया कि काफिर खुदा से दूर रह जाता है। प्रयोजन की पूर्णता शक्ति से होती है। कामनाएँ इसी शक्ति को सोख लेती है। हमारे जीवन का सबसे छिपा तत्व शक्ति है, क्यूँकि यह इन्द्रियों से परे है। दिन रात हम इसके द्वारा ही अपने हर काम को अंजाम देते हैं। फिर भी इससे ही चूकते चले जाते हैं। इससे चूकना अर्थात् खुद से चूकना। अपने प्रयोजन, अपने धर्म और अपने खुदा से चूकना।

नमस्कार

नमस्कार = न म कारण = जो मैं नहीं है, वही कारण है।

जीवन का कारण है। 'मैं' कदापि कारण नहीं है। नमस्कार बतलाता है कि मैं अर्थात् मन उपभोक्ता है, उत्पादक नहीं। मन यदि कारण है तो सिर्फ जीव के शरीर लेने का। किन्तु यह शरीर भी परिवर्तनशील और अस्थायी है। शरीर उपलब्ध कराने वाली है प्रकृति। मन से नश्वरता जुड़ी हुई है। यह नश्वरता ही भय का कारण है। शरीर एक बड़ी ही पेचीदा मशीन है। इसमें आई समस्याएँ भी पेचीदा हैं, जो कष्ट का कारण है।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

सोम

सोम = सः + ओम

जो ओम है, वही सोम है। सोम ही ओम का द्वार है। सोम ही उमा अर्थात् शक्ति का गंतव्य है। **चीनी भाषा में शिव व शक्ति को ही यिन और यांग कहा गया।** दोनों के एक दूसरे से दूर होने पर ही चेतना के लिए प्रकृति, एक सृष्टि अर्थात् शरीर को रचती है। शिव और शक्ति के एक हो जाने पर, चेतना पुनः परा में प्रवेश कर जाती है। सोम तक पहुँचने पर ही चेतना सत्य की प्राप्ति करती है। बच्चा जब गर्भ से बाहर निकलता है, तभी उसे अपने स्वतंत्र अस्तित्व का पता चलता है। बाहर निकलने पर ही उसे पता चलता है कि उसकी उपस्थिति गर्भ के बिना भी है।

अर्पित

अर्पित = अर + पित = (प्रकाश ही पिता है।)

प्रकाश के जगत् में सिर्फ प्रकाश ही उपस्थित हो सकता है। प्रकाश के जगत् में प्रवेश का बस एक उपाय है, स्वयं प्रकाश होने के लिए, रुपान्तरण की प्रक्रिया से गुजरना। पक कर आप पाक हो जाते हैं। अर्पित का शाब्दिक अर्थ है सौंपना। किसी वस्तु को अग्नि को समर्पित कर देखिये। अग्नि उसमें से भभूत को अलग कर ऊर्जा को अवमुक्त कर देती है। उसी प्रकार व्यक्ति जब स्वयं को अर्पित कर देता है तो उसके रुपान्तरण की प्रक्रिया स्वतः ही शुरु हो जाती है। जैसे अग्नि में कुछ भी जलेगा तो उससे प्रकाश निकलेगा। जैसे ही जो रण की प्रक्रिया से गुजरेगा, अंततः उसमें से प्रकाश निकलेगा ही।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

आधि – व्याधि

आधि = आ (आमद) + अधिक

व्याधि = व्य (व्यय) + अधिक

आधि में अधिकता होती है और व्याधि में कमी। दोनों ही अवस्थाओं में शरीर में उपस्थित संतुलन बिगड़ जाता है। आधि और व्याधि के लिए अंग्रेजी में शब्द हैं– हाइपर और हाइपो। शरीर ज्वर से तपना और शरीर का तापमान कम होना, दोनों ही सामान्य नहीं है।

वृद्धि, ऋद्धि और सिद्धि

वृद्धि सम्बन्धित है मन से। वृद्धि से सम्बन्धित है परिमाण या पैरामीटर। वृद्धि या तो संख्या में होती है या आकार में।

वहीं जैसे खुदा और खुदाई है वैसे ही है सिद्धि और ऋद्धि। खुदा चैतन्य हैं और खुदाई है उनसे सम्बन्धित पराशक्ति। सिद्धि है स्व की प्राप्ति और ऋद्धि है स्व से सम्बन्धित प्रज्ञा और बोध।

ऋद्धि और सिद्धि है, धरती पर रहते हुए परमात्मा के निकट होना। जो चेतना के लिए सिद्धि और ऋद्धि है, वही मन के लिए दुनिया और पैसा है। मन के लिए दुनिया खुदा है और पैसा खुदा की खुदाई। तत्व की जिज्ञासा रखने वालों के लिए, सिद्धि और ऋद्धि और [illegible] इच्छा रखने वालों के लिए है दुनिया और पैसा।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

यात्रा

यात्रा = यामिनी तर आ

यात्रा = यात (गति) + रा (रात्रि)

शक्ति के माध्यम से अंधकार तरने को किया गया प्रयास ही यात्रा कहलाता है। यात्रा की पूर्णता प्रज्ञा में स्थित होने से होती है। यात्रा के दौरान द्वंद, भ्रम, अनिश्चितता, भय, उत्तेजना, अस्थिरता, दुःख, रोमांच, हर्ष, मोह, अधिकार, इच्छा, महत्वाकांक्षा, प्रतीक्षा, काम, अपूर्णता बनी रहती है।

यात्रा की पूर्णता पर प्रेम, प्रसन्नता, आनंद, स्थिरता, पूर्णता, निर्भयता और स्पष्टता होती है। यात्रा के दौरान विचार रहते हैं, पूर्णता पर मात्र शून्यता। शून्यता ही स्थिरता है। शून्यता ही शाश्वत है। यात्रा सदैव समय की परिधि में चलती है और गंतव्य सदैव समय की परिधि के बाहर है। समय की परिधि में गंतव्य नहीं।

अंधकार के बीच बीता समय ही यात्रा है। तात्पर्य यह है कि प्रकाश गंतव्य है। प्रकाश में कोई यात्रा नहीं। अंधकार व्यक्ति की स्वाभाविक स्थिति नहीं। इसी कारण गति होती रहती है। स्वाभाविक स्थिति में मात्र स्थिरता है। अंधकार में गति है, प्रकाश में स्थिरता है। गति का कारण है द्वैत, सापेक्षता या रिलेटिविटी। जब वातावरण व वस्तु भिन्न होते हैं, तब होती है गति या सापेक्षता। परंतु जब वस्तु ही वातावरण हो और वातावरण ही वस्तु हो तब कोई गति नहीं, बस उपस्थिति है। जहाँ गति है, वहाँ गंतव्य नहीं है। जहाँ गंतव्य है, वहाँ गति नहीं है।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

उद्विकास

उद्विकास = उद् + विकास

उद् अवस्था में ही चेतना के पौधे का विकास होता है। मन हमारा आवेशित भाग है। मन का आवेश हमारी शक्ति को ऊर्जा में बदलता रहता है। मन के आवेशित होने पर हमारा आंतरिक विकास अवरुद्ध हो जाता है। **जो व्यक्ति जगत् से उदासीन हो गया, उसकी चेतना विकसित होने लगती है।** क्योंकि बाहर की ओर होने वाला शक्ति का ह्रास रुक जाता है। विकास मन से सम्बन्धित है और उद्विकास चेतना से सम्बन्धित है। स्त्री और पुरुष दो विपरीत आवेश हैं, तो चेतना निरावेशित है। इसी कारण वह बंध बनाने की इच्छा से मुक्त है। बुद्ध के सदैव उद् अवस्था में बने रहने के कारण ही उनकी चेतना बढ़कर वटवृक्ष के समान हो गई। उद् अवस्था में मनुष्य को उपलब्ध शक्ति के माध्यम से उसकी चेतना का विकास होता है।

महाभारत

महाभारत = मैं का हनन करने पर प्रकाश में रत।

जिसने 'मैं' का हनन किया, उसे प्रकाश मिला। जिसे प्रकाश मिला, वो मन से छूटा। जिसे प्रकाश मिला, उसने जाना कि मन से छूटने जैसा कुछ है। जो मन से छूटा वो 'द्विज' हुआ। द्विज अर्थात् द्वितीय जन्म। मन के लिए महाभारत है, दो पक्षों के बीच भयंकर युद्ध। वास्तव में महाभारत है, अपने स्वाभाविक कर्म को करते हुए, 'स्व' को प्राप्त करना और स्थिर होना। महाभारत का अर्थ है खुद को साधना। महाभारत का अर्थ है यह

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

जानना कि समर्पण के पश्चात् मार्गदर्शन प्राप्त होता है। महाभारत का अर्थ है स्वभाव को मन के बँधन से मुक्त करना। महाभारत का संदेश है, स्वाभाविक होना और जीत-हार में आसक्ति न होना।

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

मजा

मजा = म + जा

जब तक मैं जाएगा नहीं, मजा आएगा कैसे? मन मजा पाने के लिए, आपको दुनियाभर में दौड़ाएगा। लेकिन यदि एक स्थान पर रहते हुए, मन को विरल कर पाए तो मजे की अनुभूति उस एक स्थान पर उपलब्ध की जा सकती है।

दुनिया का तरीका है कि

आपनो छोड़, परे को धावै, आपनो छूटे, परे न पावै।

मन के कहने पर जिन चीजों के पीछे हम भागते हैं, वो हमें मिलती हैं, समय के दायरे में। समय के दायरे में मिली कोई चीज अपनी नहीं होती। वैसे ही जैसे सपने में मिली कोई भी चीज, सपना टूटते ही विलुप्त हो जाती है और इस क्रम में हम चूक जाते हैं खुद से। मन के दिये गए मजे में एक सज़ा छिपी है और वो है एक और प्रयास, एक और बंधन, एक और जन्म। और करना फिर वही काम है, खुद से मिलने की कोशिश।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

ऋषि

ऋषि ही ऋचा के प्रवाह का माध्यम बनते हैं। दुनिया में सारे संसाधन प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से प्रकृति ही उपलब्ध कराती है। सारी विद्या और विज्ञान बुद्धि उपलब्ध कराती है और सारा बोध व ज्ञान चेतना उपलब्ध कराती है। वैज्ञानिक विज्ञान के सूत्र, समीकरण, नियम व अवधारणा देते हैं तो ऋषि अध्यात्म व दर्शन से सम्बन्धित सूत्र, सिद्धान्त, स्पष्टीकरण व सृष्टि से पुनः जुड़ने के मार्गों को उपलब्ध कराते हैं। जैसे ब्रह्माण्ड से सम्बन्धित बोध ऋचाओं के माध्यम से प्राप्त होता है, वैसे ही ऋचा ऋषि के माध्यम से प्राप्त होती है। जैसे डाकिया भुला दिया जाता है, डाक याद रहती है। वैसे ही ऋषि तो बस माध्यम है, महत्वपूर्ण है ऋचा। यही कारण है कि वेदों को रचने वाले ऋषियों के बारे में सूचना नहीं मिलती।

काया

काया = कामना + यामिनी

कामना, यामिनी अर्थात् अंधकार की ओर खींच ले जाती है। अंधकार अर्थात् खुद से दूरी। खुद से दूरी अर्थात् धर्म से दूरी। धर्म से दूरी अर्थात् प्रयोजन से दूरी। प्रयोजन से दूरी अर्थात् उपयोगिता से दूरी। स्वतः विकसित होने वाली वस्तु उपयोगी हो जाती है। आत्मिक विकास से सुख मिलता है और इस विकास के माध्यम से उपस्थित होने वाला उत्पाद सभ्यता के लिए उपयोगी होता है। अंधकार और भ्रम में घिरे हम उपयोगी नहीं, उपभोगी हो व्यक्ति के भीतर की शक्ति ही उसे उपयोगी बनाती है। वहीं मन उसे भोगी बनाए

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

रखता है। मन कहता है– पाने को सारा संसार है लेकिन वो ये नहीं बताता कि इस प्रक्रिया में कितनी शक्ति खर्च होगी। वास्तव में उसे भी नहीं पता कि शक्ति खर्च होती है। क्यूँकि पाने की लालसा में वो भीतर नहीं देख पाता।

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

आराम

आराम = सुख = सुकून

आराम अर्थात् राम की आहट। आराम का अर्थ है स्थिरता, शांति, द्वंद से मुक्ति। सुख का प्रारंभ ही तब है, जब प्रभु की आहट मिलती है। तभी हम यह जान पाते हैं कि ‘संभव है’। तभी यह पता चलता है कि स्वाभाविक कर्म ही आराम लाता है। तभी यह ज्ञान होता है कि जितना आराम होगा, उतना ही काम होगा। यदि आराम चाहिए तो कर्म करना होगा। तभी पता चलता है कि कर्म और आराम अलग-अलग नहीं बल्कि एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। कर्म न हो तो आराम खो जाता है। आराम का अर्थ है, भीतर की प्रकृति का अपने स्वाभाविक कर्म में रत रहना। इस जगत् में वही आराम से है, जो अपने स्वाभाविक कर्म में रत है।

उत्थान

उत्थान = उत् + स्थान

उत्थान का तात्पर्य है गुणों में ऊपर की ओर उठना। तामसिक से राजसिक और राजसिक से ...की ओर बढ़ना। उत्थान अर्थात् निम्न गुणों से मुक्ति पाना।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

अच्छी संगत उत्थान में सहायता करती है। इसी संगत में व्यक्ति जान पाता है कि उत्थान भी संभव है। हमारे गुणों का हमारे जीवन जीने के तरीके पर प्रभाव रहता है। गुणों में परिवर्तन से जीवन जीने के तरीके में भी परिवर्तन आ जाता है। गुणों का प्रभाव विचारों पर होता है और विचारों का प्रभाव हमारे कर्म पर। इसी कारण अलग गुणों वाले व्यक्तियों के कर्म अलग-अलग बरतते हैं। तीनों के कर्म व कर्मफल बंधन अलग-अलग होते हैं।

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

जागो

जागो = जा + गौ = प्रकाश की ओर गमन करो।

जागो अर्थात् दुनिया के लिए नहीं, स्वयं के लिए जागो। सिर्फ आँखें ही मत खोलो, अंतस की आँखें खोलो। **अपनी कामनाओं के लिए नहीं, अपनी संभावनाओं के लिए जागो।** अपने मन के लिए नहीं, अपनी चेतना के लिए जागो। शरीर ठोकरें खाकर गिरता है, चेतना ठोकर खाकर उठती है। सिर्फ अनुभवों के लिए नहीं, अपनी अनुभूतियों के लिए जागो। अपनी आसक्तियों के लिए ही नहीं, अपनी स्वतंत्रता के लिए जागो। अपनी ऊँचाइयों के लिए ही नहीं, अपनी गहराइयों के लिए जागो। जागो और देखो अपने तीसरे आयाम को, जो अपनी ही गहराइयों में स्थित है। भ्रम को अब सोने दो, जागो अपनी स्पष्टता के लिए।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

चिंतन

चिंतन = चिंत + न = संघनित व एकदिशा में विचार की प्रक्रिया।

अपनी समझ को खँगालना, ताकि नए विचार उत्पन्न हो सकें। एक दिशा में विचार तब संभव है, जब चेतन मन नए आकर्षणों और कामनाओं की तरफ न भागे। इसलिए चिंतन के लिए एकांत और प्राकृतिक जगह ठीक है। चिंता और चिंतन में फर्क ये है कि चिंतन में समस्या का समाधान नहीं सूझता। व्यक्ति असहाय महसूस करता है। वही चिंतन में अपनी और दूसरों की समझ और विवेक की सहायता से समस्या को हल करने का उपाय ढूँढा जाता है। इसी कारण वैश्विक, राष्ट्रिय, सामाजिक और सांस्कृतिक समस्याओं का हल खोजने के लिए, चिंतन शिविर आयोजित किए जाते हैं।

चंचल

चंचल = चन + चल = चयन करता चल।

चंचल शब्द मन के साथ जोड़ा जाता है क्यूँकि यह अपनी प्राथमिकताओं के अनुसार चयन किया करता है। यह चयन अनुभव प्राप्त करने के लिए होता है। चयन का दूसरा पक्ष है अस्वीकार करना। प्रशंसा का दूसरा पक्ष है निंदा। पसंद का दूसरा पक्ष है घृणा। चयन का सम्बन्ध मन के आवेशित होने से है। चयन करने की प्रवृत्ति ही व्यक्ति के अस्थिर होने से सम्बन्धित है। चंचलता से सम्बन्धित शब्द है, चैन या चयन। उदाहरण के लिए ये कहना कि 'अब घर जाकर चैन मिलेगा' अर्थात् घर मेरी पसंदीदा जगह है, जहाँ पर मैं आराम

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

महसूस करता हूँ। वहाँ पर मैं ज्यादा सहज महसूस करता हूँ क्यूँकि वहाँ पर मैं उस भूमिका में नहीं होता, जिस भूमिका में मैं घर से बाहर होता हूँ।

❀ ❀ ❀

भ्रम

भ्रम = भर + म = भरा मन से

गीता कहती है कि भोगों की कामनाओं द्वारा ज्ञान हर लिया जाता है। ज्ञान हर लिये जाने पर आंतरिक प्रकाश अनुपस्थित हो जाता है। इस दशा में व्यक्ति की सूचनाओं का स्त्रोत उसका मन और दुनिया हो जाती है। एक अंधेरे कमरे में रहने वाला, भ्रम से ग्रस्त रहता है। जहाँ अंधकार है वहाँ आशंकाएँ हैं, भय है, असुरक्षा है, द्वंद है। भ्रम में मत रहो अर्थात् अपने मन के ही साथ मत रहो। मन की आसक्ति कई चीजों से जुड़ी है। यही एकाग्रता के अनुपस्थित होने का कारण है।

❀ ❀ ❀

खोज

खोज = खो (खोना) + ज (जन्म)

खोज का सम्बन्ध इस बात को जानने से है कि 'मेरा खोया क्या है?' जब हमें पता हो कि खोया क्या है, तब उसे पाने का प्रयास 'ढूँढना' कहलाता है। ढूँढनें के लिए कुछ और लोगों को काम पर लगाया जा सकता है क्यूँकि उन्हें बताया जा सकता है कि जो खोया है, वो दिखता कैसा है। लेकिन जब हमें पता न हो कि खोया क्या है तो फिर वो इस दुनिया में तो न मिल सकेगा। तात्पर्य यह है कि ढूँढना इन्द्रियों के माध्यम से संभव है लेकिन [illegible] द्रियों से परे है। सामने उपस्थित दुनिया से तो मनुष्य का सम्बन्ध इन्द्रियों से है

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

लेकिन एक दुनिया और है, जिससे हमारा सम्बन्ध इन्द्रियों के माध्यम से नहीं जुड़ता। वो है हमारे भीतर की दुनिया। मतलब खोज भीतरी दुनिया में ही संभव है। भीतरी खोज के इस क्रम में कुछ खो जाता है और कुछ जन्म लेता है। जो खो जाता है, वो है मन। जो जन्म लेता है, वो वही है जिसे व्यक्ति खोज रहा होता है।

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

नमः

मन का विपरीत है नमः।

नमः का अर्थ है न महत्ता। नमन या मन की अनुपस्थिति। ओम अर्थात् चैतन्य। शिवाय अर्थात् द्वैत से बाहर निकलने का द्वार। मन की समाप्ति का द्वार; चेतना के जगत का द्वार। ओम नमः शिवाय का तात्पर्य है, मन से मुक्त होकर शिव के मार्ग से ओम की ओर गमन। **नमः अर्थात् वैराग्य।** मन अर्थात् राग या जुड़ाव। वैरागी के भीतर की शक्ति स्वतः ही शिव से मिलने को तत्पर हो जाती है। इस दशा में 'सहज योग' की स्थिति बन जाती है। सहज योग अर्थात् बिना किसी विशेष प्रयास के स्वतः ही योग प्राप्ति की ओर बढ़ जाना। सहजता के साथ जीते हुए, योग की ओर बढ़ना।

कुंडली

कुंडली = कुंडल (बंधन) + ई (शक्ति)

कंडली अर्थात् कुंडलिनी शक्ति। वह शक्ति जो चेतना के चारों ओर उपस्थित होती है। स्थिति का उद्देश्य चेतना को आवरण प्रदान करना। शरीर से जीव के सम्बन्ध को

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

जोड़ना व तोड़ना तथा जीव तथा शरीर के बीच माध्यम के रूप में कार्य करना है। यह ईश्वर की महाशक्ति का शरीर में अंश है।

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

❀ ❀ ❀

नारायणी

नारायणी = नारायण की शक्ति

नारायण से सम्बन्धित शक्ति ही नारायणी कहलाती है। उसी शक्ति को चित्रों में देवी के रूप में दिखाया जाता है। शक्ति शून्यता या चेतना की तरफ खिंचती है तो ऊर्जा आवेश की तरफ। मन आवेशित है इसी कारण मन को ऊर्जा और बल से काम चलाना होता है। शक्ति मन से परे रहती है। एक राक्षस के पास दिखाने को माँसपेशियाँ हैं, क्रोध है, चेहरे व आँखों की भंगिमाएँ हैं व कर्कश वाणी है। वहीं देवी के पास है मात्र शक्ति। राक्षस नरों के मध्य ही उत्पात मचाते हैं व शक्ति की ओर जाने पर संहारित हो जाते हैं। हर प्राणी में शक्ति का प्रवाह सतत् है, बस संयम के माध्यम से वह संघनित हो जाती है।

❀ ❀ ❀

'कर्म से धर्म तक यानि स्वयं के मर्म तक'

स्वाभाविक कर्म से धर्म की प्राप्ति होती है। धर्म सम्बन्धित है, 'स्व' से। स्व की प्राप्ति पर ही अपने व्यक्तिगत धर्म के बारे में बोध होता है। स्वाभाविक कर्म को करने पर व्यक्ति को संतुष्टि की प्राप्ति होती है। संतुष्टि की प्राप्ति उसकी संतृप्ति के मार्ग को खोल देती है। अपने स्वभावगत कर्म को करते हुए यदि व्यक्ति को संतुष्टि मिलती है, तो **अपने व्यक्तिगत धर्म न करते हुए व्यक्ति को जीवन प्रयोजनपूर्ण लगने लगता है।** उसके जीवन के

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

प्रयोजन की पूर्णता ही उसका धर्म है। अपने प्रयोजन पर काम करते हुए ही व्यक्ति धर्म के असली मतलब को समझ पाता है। पहली बार उसे एक धर्म प्राप्त होता है जो उसे दिया नहीं गया, उसे बताया नहीं गया, बल्कि वह स्वतः ही भीतर से उभरा है। अपने धर्म का पालन करते हुए ही व्यक्ति प्रकृति से एकात्मकता महसूस करता है। खुद को सृष्टि से अलग नहीं बल्कि खुद को सृष्टि से अभिन्न जानता है। धर्म का पालन ही व्यक्ति के मन को भी रम देता है। जिससे व्यक्ति अपनी ही गहराइयों में स्वेच्छा से उतरता जाता है।

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

उद्विकास

उद्विकास = उद् + विकास = (उद् अवस्था में होने वाला विकास)

इस जीवन में दो संभावनाएँ हैं, या तो व्यक्तित्व विकसित होगा या चेतना। व्यक्तित्व के विकास के लिए मन माध्यम बनता है और चेतना के विकास और रुपान्तरण के लिए धर्म। मन द्वारा प्राप्त स्थिति को विकास और धर्म द्वारा प्राप्त स्थिति को उद्विकास कहते हैं। मन अपना सारा ज़ोर व्यक्तित्व के विकास पर ही लगाता है। वहीं उद् अवस्था में चेतना का पौधा वृक्ष बनने लगता है। विकास बाहरी बेहतरी है तो उद्विकास आंतरिक बेहतरी। विकास सफलता और संतुष्टि है तो उद्विकास सुख और प्रसन्नता। विकास ऊर्जा से होता है तो उद्विकास शक्ति से। विकास आवरण को चमकाने पर ज़ोर देता है तो उद्विकास अंतस को चमकाने पर। विकास से धन बढ़ता है तो उद्विकास से सुख।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

पूर्वाध व उत्तरार्ध

सूर्य उगता पूर्व में है, अस्त पश्चिम दिशा में होता है लेकिन स्थित वो या तो उत्तर दिशा में होता है या दक्षिण दिशा में। सूर्य के पूर्व व पश्चिम में होने की स्थिति, हर दिन में एक बार बनती है। वहीं सूर्य 6 महीने तक लगातार उत्तर दिशा में और 6 महीने तक दक्षिण दिशा में बना रहता है। शरीर की व्यवस्था द्विध्रुवीय है, जिसमें सिर उत्तर दिशा और पैर दक्षिण दिशा को इंगित करते हैं। बचपन से बुढ़ापे की ओर जाते हुए, शरीर में चेतना की स्थिति उत्तरोत्तर उत्तर की ओर स्थित होती जाए तो व्यक्ति स्वतः ही शुभ कार्यों के सम्पन्न होने का माध्यम हो जाता है। उम्र के बढ़ते जाने पर व्यक्ति का वश नहीं और इसके लिए कोई प्रयास भी नहीं। लेकिन चेतना को शरीर में ऊर्ध्व दिशा में उठाने के लिए, वह अवश्य प्रयास कर सकता है।

जो कुछ भी आयातित है वह महत्वपूर्ण है। मन को सभी महत्वपूर्ण चीजों में रुचि है। इसी कारण व्यापार में महत्वपूर्ण वस्तुएँ महँगी होती है। शरीर के तल पर हवा, पानी, रोटी, कपड़ा और मकान की आवश्यकता है। वहीं जीव के लिए आवश्यक है शरीर। चेतना के लिए आवश्यक है शक्ति और आत्मा के लिए आवश्यक है प्रकाश।

शरीर के लिए आवश्यक है भोजन। वहीं मन को आवश्यकता है अच्छा, स्वादिष्ट व मन लायक भोजन की। चेतना के हर तल पर आवश्यकताएँ अलग-अलग हैं। ये वस्तुएँ जो हर एक हेतु एक समान जरूरी हैं, वे हैं आवश्यकताएँ तथा जिन वस्तुओं का वितरण असमान है, वे हैं महत्वपूर्ण वस्तुएँ।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

शिव

शिव = शिखर पर वर्तमान प्राप्त होगा।

वर्तमान शिखर पर है, अतीत उससे नीचे और भविष्य उससे भी नीचे। इसी कारण कृष्ण इस जगत् को ऊर्ध्वमूल वाला कहते हैं। जिसकी जड़ें ऊपर व तने तथा शाखाएँ नीचे हैं। वर्तमान से ही भविष्य जन्मता है। सबसे आवश्यक इन्द्रिय जो भविष्य के लिए चाहिए वो है मन। मन ही बुद्धि व अन्य दूसरी इन्द्रियों के माध्यम से भविष्य को रचता है। रूपक के रूप में जगत का शिखर कैलाश को कहा गया। इसी कारण कैलाश को शिव की वास स्थली कहा गया। शिखर सूक्ष्म है। वहीं काम, क्रोध, लोभ, मोह स्थूल है। इसी कारण वे शिखर तक नहीं पहुँच पाते।

व्यक्ति

व्यक्ति = जो व्यय में रत है।

शक्ति से ही ध्यान है। ध्यान से कर्म है और कर्म से समय है। हम भले ही इस बात को न जाने लेकिन अपनी हर कामना को पूरा करने के लिए, व्यक्ति अपनी शक्ति का व्यय किया करता है। वृक्ष अपनी शक्ति का उपयोग कर उत्पादकता पाते हैं। **वृक्ष अपनी शक्ति के उपयोग से फल बनाते हैं तो व्यक्ति अपनी शक्ति के व्यय से कर्मफल।** फल प्रकृति की प्रक्रिया का भाग हैं। वे उपयोग में आ जाते हैं। इसी कारण बंधन नहीं पैदा करते। वहीं कर्मफल, बंधन के हेतु कहे गए। इस सृष्टि में हम ही या तो उपभोक्ता हैं या उत्पादक हैं या पूरी उत्पादन की प्रक्रिया के कारण हैं। जिस काम में हम स्वयं को सहज पाते हैं, उसी स्तर स्थित हो जाते हैं।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

सादा जीवन, उच्च विचार

सादा जीवन जीनें में शक्ति का अपव्यय नहीं होता। सादा जीवन अर्थात् आवश्यकताओं की पूर्ति पर केन्द्रित जीवन। आवश्यकताओं की पूर्ति, ऊर्जा व बल से हो जाती है। कामनाओं पर केन्द्रित जीवन में शक्ति का व्यय खूब है। कामनाएँ शक्ति को खर्च करती हैं। उच्च विचार का तात्पर्य विवेक और बोध से है। सादा जीवन अपना बहुत सारा ध्यान बचा लेता है, जो भीतर की ओर मुड़ जाता है। भीतर की ओर मुड़ा ध्यान, विवेक व बोध पैदा करता है। समझ और विवेक में अंतर यह है कि समझ आसक्ति से दूषित होती है और विवेक आसक्ति रहित होता है।

परीक्षा

परीक्षा = पर + इच्छा

परीक्षा यह तय करती है कि व्यक्ति में परा का पक्ष मजबूत है या इच्छा का। इसी आधार पर गीता मनुष्य समुदाय को दो भागों में बाँटती है। दैवी संपदा की प्रधानता वाले तथा आसुरी संपदा की प्रधानता वाले। इच्छा का पक्ष मजबूत होता है तो व्यक्ति इच्छा जगत में अपनी स्थिति मजबूत कर लेता है। इच्छा जगत अर्थात् दृश्य जगत्। परा का पक्ष मजबूत होने पर, व्यक्ति सूक्ष्म जगत् में अपनी स्थिति को सुदृढ़ कर लेता है।

कृष्ण अर्जुन से कहते हैं कि हे अर्जुन! आसुरी संपदा बंधन की हेतु कही गई है और दैवी मोक्ष की हेतु। तू दैवी संपदा को लेकर उत्पन्न हुआ है, अतः तू शोक मत कर।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

परीक्षा का तात्पर्य बस इतना है कि व्यक्ति अपनी स्वाभाविक उदासीनता को प्रमुखता देता है या अवसरों को भुनाने की प्रवृत्ति रखता है।

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

❀❀❀

मत और मति

मति अर्थात् बुद्धि। लोक व्यवहार व भविष्य से सम्बन्धित बुद्धि को समझ कहते हैं। परिवार, समाज व भविष्य की आवश्यकताओं और असुरक्षा पर ध्यान देने व कार्य करने वाले को समझदार कहा जाता है। वहीं विद्या और विज्ञान के क्षेत्र में उत्कृष्ट करने वाले को बुद्धिमान कहा जाता है। बुद्धि का वह भाग, जो निर्णय लेने और देने से सम्बन्धित होता है, मति कहलाता है। मति अपनी बुद्धि, समझ, परिस्थितियों के अनुसार निर्णय करती है। उसका यह निर्णय मत कहलाता है। मति अर्थात् मत देने की शक्ति। तात्पर्य यह है कि बुद्धि भी शक्ति द्वारा ही चालित होती है।

❀❀❀

सोच, शोचनीय व शोक

सोचना मन द्वारा होता है। किसी एक विषय पर ध्यान लगाना, उससे सम्बन्धित विचार पैदा करता है। सोचना सम्बन्धित है फंतासी, विश्लेषण, विकल्प की तलाश और यादों से। शोचनीय अर्थात् असहाय स्थिति। शोचनीय स्थिति संवेदनशीलता से जुड़ी है। यह सोच और शोक के बीच की स्थिति है। किसी अप्रिय घटना का मन पर पड़ने वाला प्रभाव, शोक कहलाता है। ये वे घटनाएँ हैं, जो व्यक्ति के बस के बाहर की होती हैं। व्यक्ति को ...ार करना होता है।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

शिकायत – शिकार – शिकवा

शिकायत = शिक (बुरी) + आयत (सूचना)

शिकार = शिक (बुरी) + अर

शिकवा = किसी से सम्बन्धित कोई अप्रिय याद

बात और आयत

बात समझ या मन से आती है और आयत शुद्ध बुद्धि से। आयत और ऋचा समानार्थी हैं। आयत बोध से जुड़ी है। आयात आत्मा का संगीत है। आयत संदेश है, समाधान है, जीवन से सम्बन्धित स्पष्टीकरण है। साथ ही आयात हिन्दी भाषा में उपयोग होने वाला शब्द है, जिसका अर्थ है दूर देश से आने वाला सामान। आयत दूसरे आयाम से आती है। यह बड़ी रोचक स्थिति है कि जिस मुख से कभी प्रश्न निकलते थे, उसी मुख से उत्तर निकलने लगते हैं। प्रश्न किसी अन्य आयाम से आते हैं, तो उत्तर किसी अन्य आयाम से। वाणी बस माध्यम बन जाती है।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

आयु

आयु = आ (उपस्थित) + यु (युग्म) = जीव व शरीर का युग्म

जीव एक ध्रुव है तो शरीर दूसरा ध्रुव। जीव ही शरीर के बनने का कारण है। आयु वह समयकाल है, जब तक जीव व शरीर का यह युग्म बना रहता है। जीव स्वभाव का भी वाहक है। जीव की जैसी प्रकृति होती है, व्यक्ति वैसी ही प्रकृति प्रदर्शित करता है। शरीर पदार्थ है और पदार्थ समय के साथ परिवर्तनशील है। यह परिवर्तनशीलता और सम्बन्धित क्षरण ही आयु के सीमित होने का कारण है।

मन:चिकित्सा

मन:चिकित्सा = मन से जुड़ी समस्याओं की चिकित्सा

मन इन्द्रियों में सबसे शक्तिशाली इन्द्रिय है। मन के साथ रोमांच जुड़ा है; आकर्षण जुड़ा है। सौंदर्य व अपनापन जुड़ा है, तो भय, अवसाद, दु:ख व बेचैनी भी जुड़ी है।

भीतर जो भी चले, अभिव्यक्त शरीर के माध्यम से ही होता है। हर इन्द्रिय से जुड़े चिकित्सक हैं, तो मन से जुड़ी चिकित्सा का होना स्वाभाविक है। मन की सक्रियता या स्थिरता का सीधा प्रभाव मस्तिष्क की तरंगों पर पड़ता है। विज्ञान के पास यंत्र हैं, जो मस्तिष्क की तरंगों के माध्यम से, व्यक्ति के अंतस के बारे में काफी सूचनाएँ एकत्र कर सकते हैं।

योग स्वयं पर बेहतर नियंत्रण के लिए मन पर नियंत्रण का सुझाव व तरीके देता है। विज्ञान के माध्यम से शरीर पर मन के प्रभाव को नियंत्रित करने के अपने तरीके विकसित

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

किये। विज्ञान देखता है कि मन से जुड़ी समस्याओं के होने पर शरीर में किन हार्मोन्स का स्राव बढ़ता या घटता है या और कौन से बदलाव होते हैं। शोध के द्वारा इन समस्याओं के लिए वह दवाएँ विकसित करता है।

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Date 05/03/2021

मौन ही कौन का उत्तर देगा

मौन अर्थात् चेतन मन का निःशब्द हो जाना। अंतस के तालाब में बुलबुलों का उठना बंद हो जाना। मन के पास प्रश्न हैं– कौन, कहाँ, कब, कैसे? और सहायता करने को है समझ और बुद्धि। मन के भीतर है स्वभाव और स्वभाव से सम्बन्धित है विवेक। स्वभाव के भीतर है शुद्ध बुद्धि। शुद्ध बुद्धि के पास हैं प्रश्नों के उत्तर। मन का शांत होना शुद्ध बुद्धि को सक्रिय कर देता है। जिससे सारे उत्तर स्वतः ही उभरने लगते हैं। बुद्ध दर्शन, बुद्ध की उसी शुद्ध बुद्धि से उपजा है। शुद्ध बुद्धि के भीतर है चेतना। चेतना के पास है स्वयं से सम्बन्धित स्मृति। 'कौन' का उत्तर यहीं पर है। 'मैं कौन हूँ' का उत्तर यहीं से आता है।

स्यापा

स्यापा = स्याह को पाना

स्याह अर्थात् अंधकार, भ्रम, समस्या, विवाद, आशंका, भय, अज्ञान, अशांति, अस्थिरता। मनचाहे का उपलब्ध न हो पाना स्यापा नहीं लेकिन कभी–कभी विनोद में मनचाहे के [illegible] हो पाने और अनचाहे के मिल जाने को भी स्यापा कहे दिया जाता है। स्याह से

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

ही बना श्याम, शाम और स्याही। नेत्र के लिए अंधकार का तात्पर्य है, रोशनी की अनुपस्थिति। बुद्धि के लिए अंधकार का तात्पर्य है, समझ की अनुपस्थिति। मन के लिए अंधकार का तात्पर्य है, मनचाहे की अनुपस्थिति। चेतना के लिए अंधकार का तात्पर्य है, स्वयं की अनुपस्थिति। आत्मा के लिए अंधकार का तात्पर्य है, प्रकाश व आनंद की अनुपस्थिति। स्वभाव के लिए अंधकार का तात्पर्य है, सरलता व विनम्रता की अनुपस्थिति।

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

मोह

मोह = मेरा

द्वैत में दो ध्रुव होने आवश्यक हैं। मन यदि एक ध्रुव है तो 'मेरा' दूसरा ध्रुव है। मन 'मेरा' से चारों ओर से घिरा होता है। 'मोह अथवा मेरा' ही वह दुनिया है, जो मन अपने लिए बसाता है। 'मेरा' के अंतर्गत वह सभी कुछ आ जाता है, जिसे मन अपना कहता है। मन तथा 'मेरा' के बीच मानसिक, भावनात्मक व शारीरिक सम्बन्ध होता है।

मन और माया कुछ और नहीं, बस मैं और मेरा है। माया से सारा जुड़ाव, बस मोह या मेरा के माध्यम से है। काम और क्रोध 'मैं' से तो लोभ और मोह 'मेरा' से जुड़े हैं। मोह के लक्षण बचपन में ही दिखने लगते हैं, जब बच्चे खिलौनों को अपना संसार मान लेते हैं। बड़े होने पर मोह मजबूत होता है और व्यक्ति अपने लिए नए आकर्षक और महंगे खिलौनों का इंतजाम कर लेता है।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

संसाधन

संसाधन = सम + साधन

वे साधन जिनकी सभी को समान रूप से आवश्यकता है। पृथ्वी, अग्नि, जल, वायु, आकाश मूल संसाधन हैं, जो प्रकृति द्वारा सभी को उपलब्ध होते हैं। मूल संसाधनों से उत्पन्न वे संसाधन जिन्हें मनुष्य निर्मित करता है, व्युत्पन्न संसाधन कहलाते हैं। जैसे – रोटी, कपड़ा, मकान, दवाइयाँ व मानव निर्मित शेष सभी अन्य संसाधन। जब संसाधन आवश्यकताओं के परिक्षेत्र से बाहर निकलकर, इच्छाओं के परिक्षेत्र में प्रवेश करने लगते हैं तो वे रुपांतरित होकर उत्पाद बन जाते हैं। इच्छाएँ जब महत्वाकांक्षा में परिणत हो जाती हैं तो संसाधन रुपांतरित होकर विलासिता के उपकरण बन जाते हैं।

मूल संसाधन जीवन के लिए अपरिहार्य हैं, तो व्युत्पन्न संसाधन लाइफ स्टाइल के लिए आवश्यक।

Time = Tie Me

शिव प्रतिरूप हैं, उस योगी के, जो काल या समय के बंधन से मुक्त है। समय अवसर है पदार्थ और गुणों को अनुभव करने का। अनुभव प्राप्ति में व्यक्ति, अपनी शक्ति को व्यय करता है। शक्ति का यह व्यय ही स्वयं से हमें विचलित कर, समय से हमारे बंधन को मजबूत कर देता है। समय द्वारा उपलब्ध कराया गया अवसर ही, बंधन का कारण बन जाता है। समय जड़ता देता है और जड़ता अज्ञानता तथा असुरक्षा देती है। जो समय को अवसर जानता है, वह नहीं जान पाता कि यह बंधन भी है। जो समय द्वारा उपलब्ध कराए

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

गए अवसर से निस्पृह है, वही समय के बंधन को देख पाता है। इसी कारण बुद्ध कहते हैं कि समय दुःख है।

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

जिसके पास 'आस' हो आप उसके 'पास' रह सकते हैं।

मन काम को भोगता है और काम हमारी शक्ति को। व्यक्ति को लगता है कि उसने काम को भोगा परंतु वास्तविकता में काम हमारी आशा या आस को भोग जाता है। स्वामी उसे कहा जाता है जो अपने काम और क्रोध के वेग को रुपांतरित करने में सक्षम हो। जो अपने काम और क्रोध को पीकर उसे पचा सके।

काम यदि दैत्य है तो आशा देवी है। काम यदि अशांति है तो आशा शांति है। काम यदि बंधन है तो आशा स्वतंत्रता है। काम से छूटा व्यक्ति यदि समाज का सबसे निर्धन व्यक्ति भी हो, तो भी आशा के साम्राज्य का वह स्वामी है। शिव अराध्य हैं और महादेव हैं तो उसका कारण यही है कि काम उन्हें न बाँध सका। शिव काम के दास नहीं, अपने स्वामी हैं। यही कारण है कि पार्वती या शक्ति या शांति उनकी अर्धांगिनी हैं।

धर्म में फूल का महत्व

मंदिरों और धार्मिक आयोजनों में फूल का प्रयोग बहुतायत से होता है। देवता का शृंगार फूल के बिना पूर्ण नहीं माना जाता। विशेष आयोजनों पर विशेष शृंगार होते हैं। विदेशों ल मँगाकर विग्रह को अर्पित किए जाते हैं।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100114/2021
Date 05/03/2021

फूल का पर्यायवाची है सुमन। सुमन अर्थात् सुंदर मन। **भीतर उपस्थित परमात्मा को अर्पित करने के लिए मन को ही सुमन बना अर्पित करना होता है।** इसी मन रूपी पुष्प से परमात्मा का शृंगार होता है।

अंतस के मंदिर में परमात्मा की पूजा सुंदर मन से की जाती है। लेकिन मन के सुंदर होने की कसौटी है क्या? मन जब अपने चयन करने की आदत को छोड़कर, जीवन के प्रयोजन रूपी धर्म को पूर्ण करने में लग जाता है, तब वह सुंदर हो उठता है। चेतना अपने धर्म को जानती है लेकिन धर्म पूर्ण, मन के माध्यम से ही होता है। सुलझा मन ही धार्मिक है।

बुद्धि

बुद्धि = बुद्ध + ई (शक्ति)

बुद्ध अर्थात् शुद्ध बुद्धि। शुद्ध बुद्धि बोध उत्पन्न करती है। मन के प्रभाव में आंतरिक शक्ति, जब शुद्ध बुद्धि को मिल जाती है तो बुद्धि विकसित होने लगती है। बुद्धि के विकास से विज्ञान का विकास होता है। व्यक्ति में बौद्धिकता आती है और व्यक्तित्व का निर्माण होता है। बुद्धि से योजनाएँ निकलती हैं। वहीं किसी प्रकार से यदि बुद्धि से ई अर्थात् शक्ति को अलग किया जा सके तो बुद्ध अर्थात् शुद्ध बुद्धि तथा शक्ति अर्थात् शांति प्राप्त होती है। अपरिवर्तित शक्ति ही शांति अथवा सुख है। अपने भीतर की शक्ति को बिना परिवर्तित किए, मूल रूप में प्रकृति को वापस करने को ही, कबीर 'जस की तस घर दीनी चदरिया' कहते हैं। शुद्ध बुद्धि बोध उत्पन्न करती है, जो श्लोक, सुत्त, दोहों, सूत्रों, ऋचाओं, वर्स और शब्द के रूप में सभ्यता को मिल जाता है।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

दीपदान

दीपदान = दीप + दान

दीपक अंधकार को दूर करता है और यात्रा को गतिमान रखता है। वैसे ही चेतना रूपी दीपक, ईश्वर तक पहुँचने वाले मार्ग को प्रकाशित कर, यात्रा को गति देता है। रोशनी देने वाला दीपक, ईश्वर तक के मार्ग को प्रकाशित नहीं कर सकता। जैसे दीपक ऑक्सीजन की उपस्थिति में ही जलता है, वैसे ही **चेतना का दीपक शक्ति की उपस्थिति में प्रज्जवलित रहता है।** बाहर विज्ञान ने रोशनी फैला रखी है तो भीतर का अंधकार ज्ञान ही दूर कर सकता है। विज्ञान यदि खुशी लाता है तो ज्ञान सुख। चेतना और शक्ति मिलकर ही दीप और दान हो जाते हैं। शक्ति के परिक्षेत्र में मन का प्रवेश निषिद्ध है। इसी कारण वहाँ जो भी है बस दान है। स्वयं को उपलब्ध वस्तु या शक्ति, जब व्यक्ति अपने मन से बचाकर आगे की ओर बढ़ा देता है, वही दान है। पाना खुशी का हेतु है, तो दान सुख का।

अंतःकरण

अंतःकरण = अंतःपुर के करण जैसे मन, बुद्धि, अहंकार।

अंतःपुर में उपस्थित कर्म के साधन अंतःकरण कहलाते हैं। अंतःकरण की सक्रियता ही कर्म का कारण है। निष्क्रिय अंतःकरण की उपस्थिति में जो घटित होता है, उसे 'यज्ञ' कहते हैं।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

शक्ति ईंधन का साधन है। भोजन ऊर्जा का साधन है। अंतःकरण कर्म का साधन है। हाथ, पैर निर्माण और रचना का साधन है। चेतना यज्ञ का साधन है। हाथ, पैर यदि मन, बुद्धि और अहंकार के प्रभाव में कार्य करें तो यज्ञ का साधन बनते हैं।

हाथों से चोरी भी होती है और यज्ञ भी होते हैं। बस महत्वपूर्ण यह है कि हाथ किसके प्रभाव में कार्य कर रहे हैं।

परिवार परिधि पर है।

समाज विस्तृत परिवार है, तो परिवार सूक्ष्म समाज है। परिवार और समाज का मूल तत्व एक समान है। दोनों ही अपने और पराए की अवधारणा पर चलते हैं। परिवार सुरक्षा देता है। आर्थिक सुरक्षा, खाद्य सुरक्षा, सामाजिक सुरक्षा, भावनात्मक, वैयक्तिक सुरक्षा परिवार ही देता है और यही सारी सुरक्षाएँ देने की आपसे भी अपेक्षा करता है। परिवार है, व्यक्ति की सुरक्षा की सबसे बाहरी दीवार। लेकिन व्यक्ति की अपनी प्रकृति कैसे व्यक्ति को नियंत्रित करेगी और किस प्रकार उसका उपयोग करेगी, इस बारे में परिवार भी अति सीमित तौर पर ही मदद कर सकता है। अपने आंतरिक द्वँदो का सामना, हर व्यक्ति को खुद ही करना पड़ता है। अपने अंतःकरण पर नियंत्रण की पद्धति, उसे स्वयं ही विकसित करनी होती है। अपनी आत्मा को सबल और अपने मन को निर्बल, उसे स्वयं ही बनाना होता है।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

साधक

साधक = साध + करण

वह **जो अपने अंतःकरण को साधने में लगा है, साधक कहलाता है।** वह जो आंतरिक सफाई में लगा है और भीतर जगह खाली करने में लगा है, साधक कहलाता है। बुद्धि के माध्यम से की गई जाँच अनुसंधान कहलाती है और शक्ति के माध्यम से की गई पड़ताल खोज कहलाती है।

साधक अपनी आंतरिक संरचना में परिवर्तन चाहता है। साधक आंतरिक रुपांतरण चाहता है। वह अपना घर व्यवस्थित करना चाहता है। साधना सदैव अंतःकरण से ही सम्बन्धित होती है। साधक अपने जीवन को उपयोगी बनाना चाहता है। साधक अपने समय का उपयोग, अपने ऊपर कार्य करने में करना चाहता है। साधक अपनी मूर्ति गढ़ने में लगा है। साधक अपने भीतर या तो खुद को ढूँढने में लगा है या साधना के माध्यम से स्वयं को स्थिर करने में लगा है।

भाव

भाव = जो भा (प्रकाश) और वर्तमान का मार्ग प्रशस्त करे।

व्यक्ति की आंतरिक शक्ति जब संघनित होने लगती है, तो वह भाव में रुपांतरित होने लगती है। भाव में उतरा व्यक्ति पहली बार बुद्धि की योजनाओं की खींचतान से खुद को मुक्त महसूस करता है। **भाव ही बुद्धि का नियंत्रक है।** बुद्धि यदि सफलता की हेतु है तो भाव सुकून की पहली अनुभूति। भक्ति मार्गी को यही भाव उपलब्ध होता है। लाभ-हानि में को भाव ही दूर करता है। समाधि का पहला स्वाद, भाव ही उपलब्ध कराता है।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

ईश्वर के प्रति प्रेम, भाव को उपलब्ध कराने का माध्यम बनता है। भाव ही भविष्य से आसक्ति को विरल करता है। भाव की प्राप्ति, वर्तमान की ओर उठाया गया पहला पग है। ईश्वर आज, अभी, यहाँ मिलते हैं। भक्त और भगवान के बीच भविष्य नहीं होता। आँखें बन्द कर ध्यान में गहरे उतरना समाधि नहीं बल्कि समाधि एक सदैव छायी रहने वाला मस्ती हल्कापन और सहजता है।

ग्रहण

ग्रहण = ग्रह ही कारण है।

दंत कथाओं के अनुसार सूर्य ग्रहण और चंद्र ग्रहण के कारण हैं, राहु और केतु नामक दो असुर। जो सूर्य और चन्द्रमा पर अधिकार कर, उन्हें कष्ट में ला देते हैं। जिससे उनका आकार बदला दिखाई देता है और उनका प्रकाश क्षीण पड़ जाती है। परंतु ग्रहण शब्द बतलाता है कि ग्रहण का कारण है, स्वयं ग्रह की स्थिति। ग्रहण न सूर्य पर आता है और न चन्द्रमा पर। ग्रहण आता है पृथ्वी पर। ग्रहण के दौरान सूर्य की रोशनी कम नहीं होती, बस पृथ्वी पर हम उसे नहीं पा पाते। समस्या हमारी अपनी है, जिसे हमनें सूर्य और चन्द्रमा की समझ लिया। सूर्य ग्रहण में सूर्य और पृथ्वी के बीच में चन्द्रमा आ जाता है और चन्द्र ग्रहण में सूर्य, पृथ्वी और चन्द्रमा की स्थिति कुछ ऐसी होती है कि पृथ्वी की छाया, चन्द्रमा पर पड़ने लगती है।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

समाधान

समाधान = सम + धान (धारण)

जैसे पृथ्वी, धरती पर रहने वाले सभी प्राणियों की माँ है। वैसे ही शरीर की आंतरिक शक्ति, सभी प्राणियों की चेतना की आश्रयदाता है। धरती शरीर को आश्रय देती है तो शक्ति चेतना को आश्रय देती है। स्थूल अवस्था में धरती आश्रय स्थली है तो सूक्ष्म अवस्था में शक्ति। समाधान अर्थात् सबके लिए एकसमान। जहाँ विषमता या विशेषता नहीं पैदा की जा सकती है। विशेषता पैदा करने के लिए, इस आवरण से बाहर आना होगा। परंतु विशेषता के साथ समस्याएँ भी जुड़ी हैं। वहीं समता के साथ जुड़ा है समाधान। विशेषता के साथ प्रतियोगिता जुड़ी है, तो समता के साथ शुद्धि। विशेषता अपेक्षा करती है तो समता बस प्रेक्षा। समता स्थिरता है तो विशेषता अस्थिरता। समस्या यात्रा है तो समाधान पड़ाव, और सम है गंतव्य।

समाप्त

समाप्त = सम + आप्त

गति के साथ हमारा जो भाग जुड़ा है, वह है मन। स्थिरता के साथ हमारा जो भाग जुड़ा है, वो है आत्मा। आरंभ और अंत दोनों ही गति के साथ जुड़े हैं। समाप्त अर्थात् सम से ओतप्रोत। व्यक्ति का अंतःकरण जैसा होता है, वैसी ही दुनिया का निर्माण, प्रकृति अंतःकरण के चारों ओर कर देती है। इसीलिए कहा गया कि जैसी मति, वैसी गति।

प्रकट और विलीन ये दोनों ही शब्द अंतःकरण से जुड़े हैं। अंतःकरण के फैलाव के साथ ... के अनुरूप बाहरी दुनिया प्रकट होने लगती है। साथ ही अंतःकरण के सूक्ष्म होते

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

जाने के साथ ही मन, उत्कण्ठा, रुचि, आसक्ति, अतीत, भविष्य, विलीन होने लगते हैं। आरंभ के पहले जो होता है, समाप्ति के बाद भी वही रहता है। मन के विलीन होते जाने पर समत्व स्थापित होता जाता है। विषम में से 'वि' हटा देने पर सम ही बचता है।

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

आश्रम

आश्रम = आश्रय + म

घर और आश्रम में मूलभूत अंतर यह है कि घर इच्छाओं की शरणस्थली है। घर में बच्चे, वयस्क और वृद्ध, सभी अपनी-अपनी इच्छाओं पर कार्य करने में व्यस्त रहते हैं। इच्छाएँ ही वह गोंद है जो घर को एक रूप में बनाए रखती है। इच्छा ही वह भूमि है, जिसपर नए घरों की स्थापना की जाती है। घर बसाने का तात्पर्य है कि अपनी इच्छाओं की पैदावार के लिए उर्वरा भूमि तैयार करना।

वहीं आश्रम की मूलभूत संरचना या प्रयोजन आवश्यकताओं की पूर्ति करना है। भोजन-वस्त्र और रहने की जगह, सारा जोर बस इसी पर रहता है। प्रयोजन यह है कि अपनी बाकी बची शक्ति को व्यक्ति अपने आंतरिक उन्नयन में लगा सके। घर यदि बाहरी दुनिया में रुचि व्यक्त करता है तो आश्रम भीतरी दुनिया में। आश्रम अंतःकरण के सूक्ष्मीकरण पर कार्य करने की जगह है। घर इच्छाओं को आश्रय देता है तो आश्रम आवश्यकताओं को।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

सत्

सत् = सज्जन, सती, सतीष, सज्जन अर्थ सद् जन।

सत् गुण निस्पृहता प्रदान करते हैं। निस्पृहता अर्थात् आवलम्बन से मुक्ति। सत् अर्थात् साथ। निस्पृह व्यक्ति 'स्व' की ओर गमन् कर सकता है। सत गुणों से स्वभावगत सिद्धियाँ जुड़ी होती हैं। जैसे खारे जल को मीठे पानी में परिवर्तित कर उपयोगी बनाया जा सकता है, वैसे ही सत्व गुण स्वाभाविक शुद्धि के हेतु हैं। स्वाभाविक शुद्धि जीवन के प्रयोजन की पूर्ति के लिए आवश्यक है। शुद्ध स्वभाव उस मीठे पानी के समान है, जो अपनी और आसपास के प्राणियों के प्रेम की प्यास को बुझाता है। रजो गुण जहाँ मन से सम्बन्धित सुख है वहीं सत गुण स्वयं से सम्बन्धित सुख। सत गुण स्वभाव से सम्बन्धित सुखों की ओर ले जाते हैं।

Renunciation

Renunciation = Re + None + Ciation

दुनिया छोड़ देने का तात्पर्य दुनिया से आसक्ति छोड़ देना है। दुनिया को दुखस्वरूप जान लेने के पश्चात् दुनिया से आसक्ति छूटने का मार्ग खुल जाता है। दुनिया से लगी आसक्ति, खुद को भूला देती है।

खुद को और दुनिया से आसक्ति, दोनों को एकसाथ लेकर चलना संभव नहीं। रिननसिएशन अर्थात् दुनिया से आसक्ति को छोड़कर, खुद की ओर वापस लौटना। रिननसिएशन अर्थात् जो मेरी शक्ति है, वो मेरे पास रहेगी। दुनिया से किये लेन-देन में और दुनिया से लगाई गई आसक्ति या आस में अब उसे खर्च [illegible] करेंगे। रिननसिएशन [illegible] और उससे सम्बन्धित दुनिया से, खुद से सम्बन्धित दुनिया की ओर लौटना।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

रुपान्तरण

रुपान्तरण = रूप + अंतरण

रूपांतरण अर्थात् ट्रान्सफॉर्मेशन। नवजात से बचपन, बचपन से जवानी और जवानी से बुढ़ापा। ये शरीर के नियत रुपान्तरण हैं। तात्पर्य यह है कि रुपान्तरण या बदलाव निश्चित होता है। लेकिन क्या हमारा अंतःकरण भी किसी रुपान्तरण से गुजरता है? यदि हाँ तो क्या यह स्वतः ही होता है या किसी विधि द्वारा इसे उत्प्रेरित किया जा सकता है? अंतःकरण अदृश्य है, तो यदि रुपांतरण हुआ भी तो पता कैसे चल सकेगा?

जब अंतःकरण रुपान्तरित होता है तो उसका सीधा प्रभाव हमारे जीवन जीने के तरीके पर पड़ता है। जीवन जीने के तरीके में आए बदलाव से, अंतःकरण के रुपान्तरण के बारे में पता चलता है। नियति द्वारा घटित घटनाएँ व हमारे खुद के प्रयोगों के परिणामों के प्रभाव से भी अंतःकरण रुपान्तरण से गुजरता है। **जीवन यदि इतना रुपांतरित हो सके कि 'स्व' का द्वार खुल जाए तो जीवन में अमूलचूल परिवर्तन घटित होते हैं।**

सिद्धि

सिद्धि = वह शक्ति जो सीधी एक दिशा में प्रवाहित हो।

वह अवस्था, जो शक्ति के सीधे ऊर्ध्व दिशा में प्रवाहित होने पर प्राप्त होती है। यह ठीक वैसे ही है जैसे बीज से पौधा निकल आए और बीज पौधे में रुपान्तरित हो जाए। आंतरिक ही सिद्धि का हेतु है। मन की बनाई दुनिया में यदि पदोन्नति है, तो आंतरिक

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

दुनिया में सिद्धि है। सिद्धियाँ आंतरिक रुपान्तरण के विभिन्न तल हैं। क्रोध पर नियंत्रण भी आत्मिक रुपान्तरण का एक चरण है, जो चरम के नजदीक है। श्रीकृष्ण ने गीता में इसकी चर्चा की है। स्वभाव का शुद्ध व निर्मल होना भी सिद्धि है। काम पर उत्तरोत्तर नियंत्रण स्थापित होता जाना भी सिद्धि है। वनस्पति जगत् में काम नहीं परंतु पूरा जंतु जगत काम से बंधित है। जंतु जगत वनस्पति जगत से विकसित तो हुआ लेकिन अपनी ऊर्जा आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए, वनस्पति जगत पर आश्रित भी हो गया। विकास के साथ निर्भरता भी आई।

प्रकाश

प्रकाश = प्र + का + श

सत्य सभी कामनाओं का शमन कर देता है। प्रकाश है कामनाओं से पूर्ण मुक्ति व पूर्ण स्पष्टता की स्थिति। पूर्ण शून्यता व स्थिरता की स्थिति। प्रकाश से ही जीवन में प्रयोजन की प्राप्ति है। प्रकाश में ही अपने मूल स्वरूप के दर्शन होते हैं। प्रकाश न मन को प्राप्य है और न बुद्धि को। प्रकाश प्राप्य है चेतना को। प्रकाश में धुलकर बुद्धि, विशुद्ध बुद्धि में रुपान्तरित हो जाती है। यह परमात्मा तथा शरीर में स्थित परमात्मा के अंश के मध्य घटने वाली एक घटना है।

प्रकाश प्राप्ति के ही क्षण में, गुरु की उपस्थिति का भी बोध होता है। प्रकाश प्राप्ति से पहले मार्गदर्शक मिल सकते हैं परंतु गुरु तो प्रकाश में ही उपलब्ध होते हैं। गुरु से मिलने के क्षण में ही ज्ञान प्राप्ति होती है। सही कहा गया है कि गुरु के बिना ज्ञान कहाँ? शिक्षक हमें विज्ञान उपलब्ध कराते हैं तो गुरु ज्ञान। गुरु प्रकाश में स्थित रहते हैं और प्रकाश को

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

कभी नहीं छोड़ते। गुरु शिष्य को प्रयोजन उपलब्ध कराते हैं और प्रयोजन पर काम करते हुए शिष्य रूपान्तरित होने लगता है।

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. -L-100111/2021
Date 05/03/2021

साक्षी

साक्षी = स + अक्ष + ई

वह शक्ति जो सबमें समान रूप से उपस्थित, अक्षय परमात्मा को ज्ञान नेत्रों द्वारा देख सके। साक्षी वे नेत्र हैं, जो सिर्फ समानता देखते हैं। साक्षी यह देख पाता है कि हर जगह मात्र एक ही तत्व है। मन विभिन्नता देखता है। बुद्धि विशेषता देखती है। आसक्ति आकर्षण देखती है। मोह 'मेरे' को देखता है। अच्छाई अपनों को देखती है। महत्वाकांक्षा अपने प्रभाव को देखती है। सफलता अवसर को देखती है। संतुष्टि कुशलता को देखती है। संतृप्ति प्रयोजन को देखती है। साक्षी अति सूक्ष्म है और सूक्ष्मता सर्वस्व उपस्थित है।

जब तक मनुष्य अपने शिखर को न उपलब्ध हो जाए, साक्षी नेत्र उसे उपलब्ध नहीं होते। यदि एवरेस्ट धरती का शिखर है तो साक्षी मनुष्यता का शिखर है। **हम जो होते हैं, हर जगह हम वही देखते हैं।** यदि हम लोभी है तो हर जगह धन देखते हैं। जब हम कामी होते हैं तो हर जगह काम देखते हैं। जब हम आत्मा होते हैं तो हर जगह परमात्मा को देखते हैं।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

वंदना

वंदना = बंदगी = (बंधे हुए की पुकार)

जो यह जान ले कि वह प्रकृति के गुणों द्वारा बाँधा गया है और अलग-अलग प्रकार की आसक्ति में घिर गया है। उसके द्वारा ईश्वर को, लगाई गई गुहार ही वंदना कहलाती है। बंधा हुआ व्यक्ति जब अपने बंधन से आसक्त हो, तथा अपने बंधन को और बढ़ाने लगे तो वह है गंदगी। वहीं **बंधा हुआ व्यक्ति जब अपने बंधन को कमजोर करने के प्रयास करने लगे, तो वह है बंदगी।** बंधन मुक्ति की प्रक्रिया पौधे के विकसित होने, उस पर फूल लगने और फिर फूल से पराग कणों के बाहर निकल, वातावरण में फैलने जैसी है। भक्ति के साथ बंदगी का प्रारंभ हो जाता है, जो समय के साथ रुपान्तरित होती रहती है। भक्ति के साथ भक्त के शिष्य बनने की प्रक्रिया प्रारंभ हो जाती है।

स्वाहा

स्वाहा = स्व + अहा = (स्व का स्वाद)

अग्नि में सामग्री को अर्पित करने पर पर ऊर्जा मुक्त हो जाती है और सामग्री नष्ट हो जाती है। इसी प्रकार स्वाहा अर्थात् स्व के अलावा मेंरे भीतर जो भी निरर्थक है वो भस्म हो जाए और बचे तो मात्र 'स्व' का स्वाद।

स्वाहा का अर्थ है इच्छाओं का स्वाहा हो जाना। इच्छाओं में खर्च होने वाली शक्ति 'स्व' को उपलब्ध हो जाती है। आत्म प्राप्ति का यज्ञ ही इच्छाओं को स्वाहा करने का है [illegible] का धन है शक्ति। 'स्व' का स्वाद जीभ पर पड़ने वाले स्वादों से श्रेष्ठ है [illegible] स्व' को बनाए रखने के लिए, व्यक्ति जीभ के स्वाद की आसक्ति से आगे चला

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

जाता है। स्वाहा का तात्पर्य है, आवश्यकता से अधिक का रुपान्तरण के लिए अर्पण। यज्ञ का प्रयोजन है, जो अनावश्यक है उसे त्याग देना और जो आवश्यक व उपयोगी है, उसे संचित कर लेना।

स्वधा

स्वधा = स्व + धा = (स्व को धारण करना)

स्वधा अर्थात् मन और बुद्धि को त्याग कर, मात्र स्व को ही धारण करना। मन और बुद्धि द्वारा उपलब्ध कराए गए जगत से परे, मात्र 'स्व' में या प्रज्ञा में स्थित होना। स्वधा अर्थात् व्यक्तित्व और महत्वाकांक्षा को त्याग कर स्व को स्थिर करना। यदि हमने 'स्व' को धारण नहीं किया हुआ है तो किसे धारण किया है? उत्तर है मन और बुद्धि को और उनसे सम्बन्धित दुनिया को। स्वधा का तात्पर्य है 'स्वधाय' अर्थात् 'स्व' से सम्बन्धित लोक अथवा 'कैवल्य'। जैसे रहने के लिए झोंपड़ी से लेकर महल तक उपलब्ध है। वैसे ही स्वधाय से सम्बन्धित सतत् चरण हैं। स्वधा के संघनित होते जाने के साथ ही चेतना 'कैवल्य' की ओर बढ़ती रहती है। झोंपड़ी, अनचाहे के भीतर घुस आने की ज्यादा संभावना की वजह से सबसे कम सुरक्षित होती है और महल विजातिय के अतिक्रमण से सबसे ज्यादा सुरक्षित रहता है।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

भभूत

भभूत = भस्मीभूत

पदार्थ से ऊर्जा के अवमुक्त हो जाने पर जो शेष रहे, वह है भभूत या राख। पदार्थ के भभूत में परिवर्तन की प्रक्रिया को भस्मीभूतीकरण कहते हैं। भभूत अर्थात् अतीत में उपस्थित पदार्थ का अवशेष। भभूत में न ही कोई आकर्षण है और न ही मन को कोई रुचि। क्योंकि भभूत में कोई विशेष गुण नहीं। पदार्थ से गुणों के अवमुक्त हो जाने पर जो शेष रहता है, वह है भभूत। जो गुणहीन है, शिव को वह स्वीकार है।

भभूत, एक विशेष संरचना से ऊर्जा के अवमुक्त होने का सूचक भी है। भभूत अपने मूल अवयवों में लौटने की सूचना भी है। भभूत का प्रसाद के रूप में वितरण पदार्थ की वास्तविकता से परिचय कराना है। भभूत का तात्पर्य है, प्रकृति के अवयवों का अपने मूल स्वरूप में परिवर्तित हो जाना। भभूत पदार्थ का वह हिस्सा है जो दृश्य है, लगभग ९९.९९ प्रतिशत हिस्सा ऊर्जा का है। जो अदृश्य होकर वातावरण में विलीन हो जाता है।

ईंधन

ईंधन = शक्ति रूपी धन

मन और चेतना के ईंधन अलग-अलग हैं। ऊर्जा मन के लिए ईंधन है तो शक्ति चेतना के लिए ईंधन है। कहा जाता है कि खाली पेट फौज भी लड़ाई नहीं कर सकती। तेल बिना गाड़ी नहीं चल सकती। ऊर्जा की अनुपस्थिति में मन भी अक्रिय हो जाता है। शरीर का ईंधन है न्यूट्रीशन। न्यूट्रीशन अर्थात् न्यूट्रियेन्ट्स + ऊर्जा। इस प्रकार शरीर, मन और अलग-अलग ईंधन हैं। अपनी यात्रा को सतत् चलाए रखने के लिए सभी को

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

अपने अपने ईंधन की आवश्यकता है। इसी कारण संतुलित भोजन के साथ संतुलित जीवन भी जरूरी है। संतुलित जीवन, शक्ति के अपव्यय को रोकता है, जिससे चेतना को आवश्यक मात्रा में शक्ति मिलती रहती है। **मन उत्तेजना को ढूँढता है तो चेतना शांति को।** उत्तेजना और शांति के ईंधन अलग-अलग हैं।

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

ऐश

ऐश = ऐश्वर्य

सामान्य बोलचाल में ऐश शब्द का उपयोग बहुतायत से होता है। ऐश अर्थात् विभिन्न प्रकार के सुखों को भोगना। मन जिसे सुख मानता है, उसे भोगने को 'ऐश करना' कहता है। मन, जीव और चेतना के लिए ऐश्वर्य के मायने अलग-अलग हैं। मन के लिए विलासिता व महत्वाकांक्षा ऐश्वर्य है तो आत्मखोजी के लिए 'बुद्धत्व' ऐश्वर्य है। वहीं बुद्ध के लिए अपने प्रयोजन की पूर्णता व धर्म प्रसार ऐश्वर्य है। मन के लिए आत्मखोज कोई ऐश्वर्य नहीं और बुद्ध के लिए विलासिता में कोई ऐश्वर्य नहीं।

मन को बस अपनी महत्वाकांक्षा की पूर्ति चाहिए तो बुद्ध को बस अपने प्रयोजन की पूर्ति। विलासिता के अपने ऐश्वर्य हैं तो सहजता के अपने। चेतना के लिए ऐश्वर्य है स्थिरता और शांति क्यूँकि दोनों के साथ सहजता आती है। वहीं मन के ऐश्वर्य हैं, उसके अधिकार। जिन्हें वह कतई नहीं छोड़ना चाहता। **जिसने सहजता की मस्ती चख ली, वो कतई उसे नहीं छोड़ना चाहता।**

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

उद्गम

उद्गम = उद् + गमन

उद् के साथ गमन है उद्गम, तो उत् के साथ है पात अर्थात् उत्पात। उद्गम अर्थात् उद् अवस्था में रहता हुआ, व्यक्ति सतत् मन से दूर चला जाता है। उद् अर्थात् उदासीन। वहीं उत् अर्थात् आवेशित अवस्था में रहता हुआ व्यक्ति, अपनी अवस्था से नीचे गिर जाता है। उत्पात का तात्पर्य है कि उत्तेजना सदा शक्ति का ह्रास करती है। इसी कारण उद् अवस्था में रहता व्यक्ति मान, अपमान में सम रहना चाहता है क्यूँकि वह अपनी शक्ति को कम होते नहीं देखना चाहता। इस शक्ति को वह संयम, ध्यान, कर्मयोग इत्यादि से कमाता है। अपने कमाए धन का सभी उचित उपयोग चाहते हैं। उचित तरीके से कमाया गया धन, सदा प्रिय होता है। अर्जित करना अर्थात् प्रयास को पूरा होते देखना। प्रयास का पूरा होना अर्थात् आशा का बलवती होना। आशा का बलवती होना अर्थात् शांति की ओर बढ़ना।

करण

करण = कर + ण = (कर्म का साधन)

मनुष्य के हाथों का विकास कुछ इस प्रकार से हुआ कि ये विभिन्न कर्मों को कर सकते हैं। पकड़ना, लिखना, चित्रकारी, आक्रमण तथा बचाव, यंत्रों का निर्माण, महसूस करना, रचना और दूसरे कई प्रकार के काम हाथ कर सकते हैं। कर्म करने के साधन करण कहे गए। मन, बुद्धि और अहंकार अंतःकरण हैं, जो कर्म करने के प्रेरणास्रोत हैं। हाथ मन के उपकरण हैं, परंतु हाथों के कर्म करने की सीमा है। इसी कारण मन ने बुद्धि के माध्यम से उपकरण विकसित किए, जो काम करने की गति को कई गुना बढ़ा सकते हैं। मन

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100711/2021
Date 05/03/2021

को कई हाथ चाहिए, अपनी महत्वाकांक्षा की पूर्ति के लिए। इसलिए मन, करण अर्थात् हाथों के माध्यम से उपकरण विकसित करता जाता है। उपकरण भी ऐसे, जिन्हें सिर्फ बटन दबा कर नियंत्रित किया जा सके। जो दिनों का काम घंटों में कर सकें। अंतःकरण, करण के माध्यम से उपकरणों का निर्माण कर डालता है। पृथ्वी की जनसंख्या भी इसी सोच के कारण तेजी से बढ़ी कि जितने हाथ होंगे, उतने साधन होंगे।

चरण

चरण = चर + ण

चरण अर्थात् चलने का साधन। ये पैरों के विकास का ही परिणाम था कि जंतु जगत चार पैरों से, दो पैरों वाला हो सका तथा मानव को दो हाथ मिल पाए। जो पहले पैर थे, वही हाथ हो गए। जो पहले चलने के काम आते थे, वही बाद में बैठकर कार्य करने के काम आने लगे। हाथों के विकास ने भाषा के विकास में बहुत योगदान दिया। मन ने हाथों का उपयोग, लिखने की शैली को विकसित करने में किया। जिससे सूचनाएँ दर्ज होने लगीं और विज्ञान तथा विद्या को सहेजा जाने लगा। पैरों ने मनुष्य का बोझ उठा लिया और हाथों ने उसके कर्मों का। हाथों के विकास के साथ स्पर्श का भी विस्तार हुआ। स्पर्श सम्बन्ध बनाने में उपयोगी है। इसी कारण पैर छुए जाने लगे और हाथ मिलाए जाने लगे। पूर्वी सभ्यता ने अपने ही दोनों हाथों को मिलाया और पश्चिमी सभ्यता ने हाथ मिलाने को, दो लोगों के बीच अभिवादन का माध्यम बनाया।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

महिला

महिला = महि (धरती/प्रकृति) + लाभ

वह जो प्रकृति के समान जन्म देने में सुलभ हो। वह जिसमें प्रकृति का तत्व सामान्य से ज्यादा मात्रा में हो। वह जो प्रकृति के समान हो। वह जिसमें बीज को पौधे में परिवर्तित कर देने की शक्ति हो। वह जो सिर्फ जन्म ही न दे, गोद भी दे और पालन पोषण भी करे। वह जिसमें गुणात्मक बढ़ोत्तरी की संभावना हो। **मन यदि मूलधन पर ब्याज देता है तो प्रकृति ब्याज को मूलधन में परिवर्तित कर वापस करती है।** बीज को पौधे में और फिर वृक्ष में परिवर्तित कर देना, ब्याज को मूलधन में बदल देना ही तो है। किसान खेत में बीज डालकर ब्याज को ही तो मूलधन में परिवर्तित करता है। किसान यही काम जीवनभर करता है। किसान थक जाता है, परंतु प्रकृति नहीं थकती। किसान के बच्चे जब बड़े हो जाते हैं, तो वे भी खेत से ब्याज पर मूलधन वसूलते हैं। किसान बस खेत को बीज देता है, खाद देता है, पानी देता है और थोड़ा रखरखाव देता है।

यदि मोह होगा तो न जोह होगा न टोह।

मोह का तात्पर्य है कि मुझे मेरा ठिकाना मिल गया। अब यही है मेरी दुनिया। तुम्हीं मेरा मंदिर, तुम्हीं मेरी पूजा, तुम्हीं देवता हो। ट्रेन को यदि कोई स्टेशन पसंद आ गया तो वो वहाँ से क्यूँ हिलना चाहेगी। ट्रेन का दिल यदि स्टेशन पर आ जाए तो वो सतत् चलते रहने के अपने धर्म से विमुख हो जाएगी। यदि धर्म न होगा तो कैसे होगा रुपान्तरण? मोह का तात्पर्य ही है कि जैसे हो तुम, वैसे ही रहना और जैसा हूँ, मैं वैसा ही रहूँगा। न तुम [illegible] मैं बदलूँगा। अब हमारी पूरी लड़ाई ही बदलाव से है। दोनों एक दूसरे को

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

बदलने न देंगे। मुझे तुम्हारे इसी रूप से प्यार है। इसी रूप को थामें रखना। यदि रूप बदला तो स्नेह भी खतरे में पड़ जाएगा। इसलिए तुम मुझे थामे रखो और मैं तुम्हें थामे रखूँगा। अब तुम्हारा ध्यान मुझसे परे न जाए और मेरा ध्यान तुमसे न हटेगा।

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

पुरुष

पुरुष = पुर + उषा

परमात्मा को पुरुष कहा गया और शक्ति को प्रकृति। पुरुष अर्थात् प्रकाश का धाम। पुरुष और प्रकृति के साथ में आने पर ही किसी सृष्टि का निर्माण संभव है। मनुष्य का शरीर अपने आप में एक सूक्ष्म सृष्टि है, जो पुरुष और प्रकृति के साथ आने पर निर्मित होता है। पुरुष ही जीव और जीवन के होने का मूल कारण है। सृष्टि का मूल कारण संवेदांगों या नेत्रों की परिधि से परे है। हमारे कान 20 हर्ट्ज़ से 20,000 हर्ट्ज़ आवृत्ति की आवाज़ ही सुन सकते हैं। 20 हर्ट्ज़ से कम और 20,000 हर्ट्ज़ से ज्यादा आवृत्ति की आवाज़ कानों की पकड़ से बाहर है। दृश्य जगत के मूल कारण, दृश्य जगत की पकड़ से परे हैं। पुरुष का क्षेत्र आनंद क्षेत्र है। प्रकृति का क्षेत्र शांति और सुख का क्षेत्र है तो दृश्य जगत् खुशी और दुख का क्षेत्र है। प्रकाश के चारों ओर शक्ति, शक्ति के चारों ओर ऊर्जा और ऊर्जा के चारों ओर पदार्थ। कुछ इस प्रकार से हमारे जगत् की संरचना है। पदार्थ को देखा जा सकता है। ऊर्जा को महसूस किया जा सकता है। शक्ति या शांति की अनुभूति होती है और पुरुष के लिए कोई शब्द या वर्णन नहीं।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

उद्गार

उद्गार = उद् + गार (निचोड़)

उद् अवस्था का निचोड़ ही उद्गार है। उत्तेजना की अवस्था में क्रोध, जिद, जोश, अपमान निकलता है। सामान्य अवस्था में समझ, मत और विचार निकलते हैं, तो उद् अवस्था में शब्दों के माध्यम से उद्गार निकलते हैं। उद्गार पर न व्यक्तियों की और न ही परिस्थितियों की छाप होती है। उद्गार बोधपूर्ण होते हैं। जो सभी के ऊपर समान रूप से लागू होते हैं और सभी के लिए समान रूप से उपयोगी भी होते हैं। उद्गार क्षेत्रीय, जातीय और धार्मिक विभिन्नताओं से अछूते होते हैं। ये भोजन के सत्व की तरह होते हैं, कम और अति उपयोगी। ये स्वादिष्ट हों न हों, लेकिन लाभदायक अवश्य होते हैं। उद्गार काल के परिवर्तनों से भी अछूते होते हैं। अतीत और भविष्य की सांस्कृतिक, राजनैतिक और सामाजिक परिस्थितियों का भी, उन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

उत्तेजना

उत्तेजना = उत् + ई + तजना = (उत् अवस्था में शक्ति का त्याग)

एक शब्द है 'कामोत्तेजक' अर्थात् जहाँ काम होता है वहाँ उत्तेजना होती है। जहाँ काम नहीं होता, वहाँ क्या होता है? वहाँ होता है राम अर्थात् जो राज करे मन पर। जहाँ राम है वहाँ प्रेम, विनम्रता और स्थिरता है। राम भले ही अयोध्या के राजा कहे जाते हैं, परंतु उनका राज है स्वयं पर। खुद के मन पर। राम की इसी विशेषता के हनुमान, भरत और लक्ष्मण

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

कायल हैं। इसी एक कारण से हनुमान राम से खुद को, सदैव अपनी शरण में रखने को कहते हैं।

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100811/2021
Date 05/03/2021

उत्तेजना में आकर व्यक्ति जिसका सबसे पहले त्याग करता है वो है अपनी स्वयं की शक्ति। राम हर अवस्था में स्थिर और सम रहते हैं और उत्तेजना कहीं से उनकी इस रक्षापंक्ति को नहीं भेद पाती। व्यक्ति खुद की उत्तेजना को तभी तक संभाल पाता है, जब तक उसके भीतर शक्ति होती है। शक्ति के क्षीण होने पर, उत्तेजना समस्या बन जाती है।

तेज

तेज = कामना रहित शक्ति

शक्ति यदि मन को मिल जाए तो उत्तेजना या विचार बन जाती है। शुद्ध बुद्धि को मिल जाए तो बोध बन जाती है। चेतना को मिल जाए तो शांति बन जाती है तथा ऊर्ध्व दिशा से बाहर निकलने पर तेज बन जाती है। तज और तेज में अंतर ये है कि शक्ति जब क्षैतिज दिशा से निकले तो 'तज' या 'त्याग' और ऊर्ध्व दिशा से निकले तो 'तेज' बन जाती है। आम बोलचाल में तेज शब्द का उपयोग तीक्ष्ण बुद्धि, अधिक गति और हावी होने की प्रवृत्ति के लिए किया जाता है। तेज शब्द का उपयोग सकारात्मक और नकारात्मक दोनों ही संदर्भों में किया जाता है। तेज ऐसा शब्द है, जिसका उपयोग शरीर, मन, बुद्धि और अध्यात्मिक अवस्था, इन सभी के लिए किया जाता है। एक ही शब्द का उपयोग मन के अनियंत्रित और नियंत्रित होने, तथा निर्जीव और जीव दोनों के लिए होता है। 'स्व' के साथ सम्बन्धित शक्ति, व्यक्ति को तेजस्वी बनाती है।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

त्रास

त्रास = तर + अस (असफल)

त्रास शब्द का उपयोग दुख और कष्ट के लिए होता है परंतु त्रास का वास्तवकि अर्थ है– 'वह परिस्थिति जो तरण को असफल बना दे।' तरण अर्थात् कामनाओं के बंधन को पार करना। कामना से मुक्ति ही बोध को जन्म देती है। जिसने एक बार शांति को चख लिया, वह जान जाता है कि कामना कोई सुंदर अवसर नहीं, बद्सूरत बंधन है। कामना प्रारंभ में 'चयन' होती है तो बाद में मजबूरी बनकर रह जाती है। पहले जो सुअवसर होती है, बाद में वही त्रास हो जाती है। किसी धावक के लिए गड्ढों से भरे मैदान में दौड़ना त्रास है। किसी तैराक के लिए मगरमच्छों से भरी नदी में तैरना त्रास है। जितनी ज्यादा आंतरिक सफाई होगी और जितने कम आदतों की बाध्यताएँ होंगी, तरण उतना ही सफल होगा।

गुरु

गुरु = जो गमन को ऊर्जा दे और शेष सभी को रुद्ध कर दे।

कहीं कहा गया कि प्रभु की कृपा से ही गुरु की प्राप्ति होती है। निश्चित तौर पर प्रभु की कृपा, गुरु के रूप में प्राप्त होती है। गुरु और शिष्य दो अलग-अलग व्यक्ति नहीं बल्कि एक ही व्यक्ति के भीतर स्थित चेतना की दो अवस्थाएँ हैं। गुरु चेतना के शिखर पर है तो शिष्य आधार पर। गुरु के प्राप्त होने को ईश्वर की कृपा इसलिए कहते हैं कि पहले तो शिष्य स्वयं को पहचान जाता है। दूसरा गुरु से शिष्य की मुलाकात हो जाती है। तीसरा न जाता है कि गुरुता भी संभव है। गुरु को पाकर ही शिष्य की ऊर्जा एक नियत

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

दिशा में केन्द्रित होती है। गुरु को देखकर ही शिष्य में रुपान्तरण की प्रक्रिया प्रारंभ होती है। गुरु और शिष्य की दुनिया ही अलग है। गुरु को पाकर ही शिष्य जान पाता है कि वह एक फल है और तब प्रारंभ होती है, फल के विकसित होने और पकने की प्रक्रिया।

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. -L-100111/2021
Date 05/03/2021

निर्वाण

निर्वाण = निः (बिना) + वाण (तरंग)

निर्वाण अर्थात् पूर्ण तरंगहीनता की स्थिति। गीता में कहा गया कि परमात्मा मन से अत्यंत परे है। हमारे अंतःकरण में सभी तरंगों के उठने का स्थान मन है। मन का शमन होने पर, व्यक्ति अपने अंतःकरण में शांति अर्थात् प्रकृति की स्थिरता का सुख ले सकता है। तरंग के होने के लिए किसी माध्यम की आवश्यकता है और प्रकृति वही माध्यम है। अतरंगित प्रकृति ही शांति की स्थिति है। त्यौहार की रात में लगातार पटाखे फूट कर वातावरण को तरंगित कर देते हैं। पटाखों के माध्यम से मन ही अपनी उपस्थिति दर्ज कराता है। तरंगहीनता या विचारहीनता की स्थिति उत्पन्न होने पर, व्यक्ति को अपनी ही संगत में सुख रहता है। एकांत आनंददायी होने लगता है। ध्यान गहरा होने लगता है। अंतस का दीप जलता ही तब है, जब आंतरिक प्रकृति सूक्ष्म हो चलती है। प्रकाश और प्रकृति के साथ व्यक्ति की आंतरिक प्रकृति सूक्ष्म हो चलती है। स्थूलता के अवयव मिटने लगते हैं। अंतःकरण स्वतंत्र हो चलता है।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

मृत्यु

मृत्यु = मृद् + युग्म = (जीव और शरीर के युग्म का टूट जाना।)

यह वह प्रक्रिया है जिसमें जीव शरीर से अलग हो जाता है। शरीर में शक्ति का संचरण, जीव के माध्यम से ही होता है। जीव-शरीर युग्म के टूटते ही शरीर को शक्ति की आपूर्ति रुक जाती है। संवेगी अंग जीव को नहीं देख सकते। वे मात्र शरीर को ही जानते हैं। सामान्य भाषा में कहा जाए तो चालक गाड़ी से अलग हो जाता है। ऑपरेटर यंत्र से दूर हो जाता है। खराब गाड़ी और वो भी बिना चालक के, व्यर्थ है। जीव के लिए यात्रा महत्वपूर्ण है, वाहन नहीं। प्रकृति नया वाहन उपलब्ध करा देती है। इसके उलट ज्ञानेन्द्रियों के लिए तो वाहन ही महत्वपूर्ण है। भगवान अदृश्य हैं परंतु भक्त दृश्य है। प्रेम अदृश्य है, परंतु प्रेमी दृश्य है। दृश्य और अदृश्य भाग के बीच, सम्बन्ध विच्छेद ही मृत्यु कहलाता है। मन के लिए ये सबसे बड़ी समस्या है क्यूँकि शरीर पर उसका एकाधिकार है या शरीर उसका यंत्र है और कोई भी अपने अधिकार या यंत्र को छोड़ना नहीं चाहता।

मत और तम

मत और तम एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। मन अंधकार इसलिए है क्यूँकि मन दुनिया को जानता है, बस खुद को नहीं जानता। मन वो लाइट है, जिसके भीतर अंधेरा है। मन को ये तो पता है कि उसके हाथ में, घर में, दुकान में, बैंक खाते में क्या है। बस उसे ये नहीं पता कि उसके भीतर क्या है। खुद को न जानने के कारण, वह बाहरी दुनिया को दो भागों में बाँट देता है। मेरे और पराए। अनुभव, विद्या और विचारों के माध्यम से वह जो करता है, उसे समझ कहते हैं। हर परिस्थिति में इसी समझ से मत निकालता है,

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

जिसे व्यक्ति व्यक्त कर देता है। मत या समझ का उपयोग वह अपने और अपनों के फायदे के लिए करता है। मन यदि आवश्यकता है तो बुद्धि आविष्कार है। अपनी बनाई दुनिया को मन, इसी समझ से नियंत्रित करता है। मन और बुद्धि अर्थात् 'मैं' और मेरी दुनिया।

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

माफी

माफी = मा (नहीं) + फिर

माफी अर्थात् गलती फिर नहीं करने का निश्चय और इस निश्चय से उसे अवगत कराना, जिसे किसी कर्म से क्षति या ठेस पहुँची हो। माँगने वाला माफी माँगता है और देने वाला क्षमादान देता है। हम कभी उत्तेजना में, तो कभी कम समझ के कारण, कुछ ऐसे काम कर देते हैं, जो किसी को क्षति पहुँचाने वाले होते हैं। विवेक या काम का परिणाम यह बतला देता है कि कुछ गलत हुआ है और व्यक्ति 'ग्लानि' से भर जाता है। जिसे क्षति पहुँची हो, उसके सामने व्यक्ति अपनी गलती स्वीकार कर, ग्लानि प्रकट करता है। इससे सामने वाले व्यक्ति में दया भाव प्रबल हो जाता है। जिससे उसके चेतन मन में इस घटना से सम्बन्धित उठने वाले विचार क्षीण पड़ जाते हैं और उसके लिए भी इस बुरे अनुभव की स्मृति से निकला सुगम हो जाता है तथा संभावित क्लेश को भीतर बैठनें की जगह नहीं मिलती।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

नौकर

नौकर = नव + कर (हाथ)

नव कर अर्थात् नया हाथ या नया कर्म करने का साधन अर्थात् नया सहायता का साधन। जो सहायता का साधन है, उसे मातहत मान लिया गया। इसके पीछे माँग और आपूर्ति का सीधा सा सिद्धान्त काम करता है। जब आपूर्ति ज्यादा और माँग कम होती है, तब सहायक को नौकर समझ लिया जाता है। जब माँग और आपूर्ति बराबर हो तो सहायक, सहायक ही रहते हैं तथा जब आपूर्ति कम हो और माँग कहीं ज्यादा तो सहायक, ईश्वर की भेजी कृपा मान लिए जाते हैं। क्योंकि अब चुनाव का अधिकार उनके साथ है और यदि वे रुकना स्वीकार कर रहे हैं तो ये उनकी भलमनसाहत है। हर वो चीज जिसे पैसे से खरीदा न जा सके, कृपा कहलाती है और हर वो चीज जिसे पैसे से खरीदा जा सके 'मेरी' या 'मेरा' की श्रेणी में आ जाती है।

भावी

भावी = भाव + ई

भावी अर्थात् भविष्य। बुद्धि की सारी योजनाएँ भविष्य से सम्बन्धित हैं। बुद्धिमान का सारा प्रयास भविष्य को सजाने, सँवारने का है। बुद्धि को प्राप्त शक्ति ही भविष्य का निर्माण करती है। किसी प्रकार यदि बुद्धि को प्राप्त होने वाली शक्ति को बुद्धि से पृथक किया जा सके, तो भाव की प्राप्ति होती है। भाव के गहरे होने पर भाव समाधि उपलब्ध होती है। भक्ति भाव का सुगम साधन है। भक्ति ही भक्त को जन्म देती है। भक्त वह है, जो अपने उपयोग प्रभु में लीन रहने में करता है। भविष्य की योजनाओं और चिंताओं दोनों

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

से ही उसे कुछ मतलब नहीं। बुद्धि पर से आसक्ति हटने पर भाव का उदय होता है। शक्ति यदि बुद्धि के साथ चली जाए तो भविष्य का निर्माण हो जाता है और यदि शक्ति बुद्धि से हट जाए तो भाव प्रकट होने लगता है। जो भविष्य के प्रति रोमांचित नहीं है, वो आज में रुककर यह देख सकता है कि आज के पास क्या है उसके लिए।

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100118/2021
Date 05/03/2021

क्षमा

क्षमा = क्षति + मा (नहीं)

क्षमादान देना अर्थात् आश्वस्त करना कि आपके प्रति मेरी भावना में कोई क्षरण नहीं हुआ है। आपकी गलती से दोनों के बीच के सम्बन्धों का क्षय नहीं हुआ है। मेरे अंतःकरण में आपके प्रति कोई मलिनता नहीं है। आपके द्वारा माँगी गई माफी ने मेरे भीतर के क्षमाभाव को मजबूत किया है। क्षमा उस नदी के समान है, जो अपनी तरफ फेंके गए पत्थर को खुद में समा लेती है। वहीं प्रतिक्रिया उस दीवार के समान है, जो अपनी ओर फेंकी गई गेंद को उतने ही बल से वापस ढकेल देती है। यह कोई आवश्यक नहीं कि माफी माँगने पर ही क्षमा उपजे। कृत्य भले ही दूसरे का हो लेकिन उससे सम्बन्धित बुरी स्मृति और क्लेश अपने भीतर ही उपजता है। चेतन मन के लिए बुरी स्मृति, उस उद्दीपन की तरह है जो लगातार विचारों की तरंगे उत्पन्न करता रहता है। इससे सबसे ज्यादा क्षय तो अपने आंतरिक साम्य को ही पहुँचता है। संयम की अग्नि में बुरी स्मृति को भस्म कर, अपने सहज स्वभाव की ओर लौट जाना ही उचित है। अन्यथा सामने वाले को ग्लानि हो न हो लेकिन खुद को क्लेश होना तय है। किसी दूसरे के कृत्य की सजा खुद को देना, कोई समझदारी नहीं।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

संभावना

संभावना = सम + भावना

संभावना अर्थात् सुलझाव। उलझा हुआ धागा उपयोगी नहीं। उपयोगी होने की पहली शर्त ही है कि धागा सुलझा हुआ हो। विचारों का अंतस पर पड़ने वाला प्रभाव ही भावना है। उलझाव नकारात्मक विचार और भावनाएँ देता है और सुलझाव सकारात्मक विचार और भावनाएँ। संभावना के लिए अंग्रेजी में शब्द है 'प्रॉबैबिलिटी', जो प्रतिशत में व्यक्त की जाती है। संभावना समाधान नहीं है। मन संभावना पर काम करता है और विवेक समाधान पर। संभावना जगत् के उलझाव से सम्बन्धित है तो समाधान स्वयं के उलझाव से। भावना मन से सम्बन्धित है तो सम आत्मा से। संभावना सफलता और संतुष्टि से सम्बन्धित है। किसी विवाद में सम्बन्धित पक्षों की भावनाएँ यदि भिन्न हों तो सुलह की संभावना कम हो जाती है और यदि भावनाएँ एक समान होने लगे तो सुलह की संभावना बढ़ जाती है।

समर्पण

समर्पण = सम + अर्पण = सम के प्रति अर्पित हो जाना।

सम वह है जो सबमें समान रूप से उपस्थित है। सम ही सबके चारों ओर भी समान रूप से स्थित है। सम से ही सारी दुनिया व्याप्त है। अतीत, वर्तमान और भविष्य में भी सम एकसमान और अपरिवर्तित रूप से स्थित है। सम ही है, जो एकमात्र स्थित है। शेष सभी प्राणी मात्र उपस्थित हैं। उस सम के प्रति आवलम्बन ही समर्पण है। मन अपने सारे खेल समय की परिधि में ही खेलता है। समय सम से व्युत्पन्न है। वह दुनिया जिसे माया कहते की परिधि में स्थित है। सम के प्रति अर्पित होना अर्थात समय की परिधि में

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

उपस्थित दुनिया में आसक्ति का क्षीण होना। समर्पण अर्थात् सम के लिए, अपने दरवाजों और खिड़कियों को खोल देना। समर्पण अर्थात् उपस्थित होकर स्थित की ओर देखना। समर्पण अर्थात् सम को निमंत्रण।

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

संसार

संसार = सम + सार = समत्व ही जिसका सार है।

सार अर्थात् निचोड़। निचोड़ अर्थात् रस। रस अर्थात् सत्व। नारंगियाँ भले असंख्य हो लेकिन सबके भीतर है, विटामिन-सी। असंख्य चेहरे और उनसे जुड़े असंख्य शरीर लेकिन बने हैं सब ऊर्जा से ही। असंख्य मन लेकिन पैदा करते हैं सब विचार ही। असंख्य फेफड़े लेकिन खींचते हैं सब ऑक्सीजन ही। असंख्य प्राणी लेकिन सभी ऊर्जा पाते हैं एक सूर्य से ही। गीता में कृष्ण कहते हैं कि जो नष्ट होते सब चराचर भूतों में, मुझ परमात्मा को ही सम और अक्षय देखता है, वही यथार्थ देखता है।

संसार के आधार पर विभिन्नता ही विभिन्नता है लेकिन जैसे-जैसे चेतना ऊपर की ओर उठती है, वह खुद से परिचित होने लगती है। खुद से परिचित होकर ही वह सबके यथार्थ को जान पाती है। रोचक बात यह है कि व्यक्ति स्थित संसार में होता है लेकिन उसकी मुलाकात यहाँ खुद से होती है। यह ठीक वैसे ही है, जैसे कि व्यक्ति सुपरमार्केट में उम्मीद के साथ खड़ा हो और उसे पता चले कि वहाँ उसे सुख न मिलेगा, क्यूँकि सुख रहता तो उसके भीतर ही है।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

स्वास्तिक

स्वास्तिक = स्व + आस्ति + क (करण)

शरीर में स्थित होकर 'स्व' की प्राप्ति की जा सकती है। स्व ही सुख का साधन है। जो छलक जाए वो खुशी, जो समा जाए, वो सुख। स्वास्तिक सबके भीतर स्थित 'स्व' की ओर संकेत करता है और कहता है कि 'स्व' को साधन बनाओ। 'स्व' वह साधन है, जिसे मार्ग ज्ञात है। स्वास्तिक कहता है कि 'स्व' में स्थित हो जाओ और वही साधन हो जाएगा। चार पुरुषार्थों के माध्यम से, आठ भेदों वाली अपरा प्रकृति को पार करो क्यूँकि अपरा से मुक्त हो जाना ही मोक्ष है। अपरा शक्ति के आठ भेद हैं, पृथ्वी, अग्नि, जल, वायु, आकाश, मन, बुद्धि व अहंकार। स्वास्तिक समस्या की ओर भी संकेत करता है और समाधान की ओर भी। स्वास्तिक रहस्य है और रहस्य की कुंजी भी। स्वास्तिक कहता है कि 'स्व' में स्थित होने पर, कर्म बंधन से मुक्ति संभव है। स्वधर्म का पालन करने पर 'स्व' की प्राप्ति संभव है।

सरस – नीरस – रस

सरस = रुचिकर

नीरस = अरुचिकर

रस = शांति / आनंद

रस को ही मन सरस या नीरस में बदल देता है। सरस वह है, जो रस से साम्यता प्रदर्शित नीरस वह है, जो रस से विपथन प्रदर्शित करता है। रस शुद्ध है और अपने मूल

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

स्वरूप में स्थित है। रस में मन का मिश्रण हो जाने पर, वह सरस या नीरस हो जाता है। रस मन से परे है, अतः मन रस को नहीं जानता। इसी कारण वह सरस और नीरस में उलझा रहता है। रस न हो तो सरस या नीरस की संभावना नहीं है। इसी प्रकार शक्ति न हो तो मन के लिए भी कोई संभावना नहीं है। रस की दुनिया और सरस/नीरस की दुनिया एक दूसरे से बिल्कुल भिन्न है। रस अनुभूति से प्राप्य है और सरस/नीरस अनुभव से। रस आंतरिक है तो सरस/नीरस वाह्य।

ऊष्मा

ऊष्मा = ऊर्जा का पदार्थ में बहकर उसका तापमान बढ़ा देना।

ऊष्मा का शाब्दिक अर्थ है गर्मी। एक नियत मात्रा से ज्यादा ऊर्जा, जब पदार्थ से प्रवाहित होती है तो पदार्थ का तापमान बढ़ने लगता है। एक नियत मात्रा से ज्यादा तापमान बढ़ने पर पदार्थ में उपस्थित ऊर्जा, प्रकाश में बदलने लगती है और पदार्थ में अवस्था परिवर्तन होने लगता है। एक नियत तापमान पर ठोस लोहा भी द्रव में परिवर्तित होने लगता है तथा तापमान कम होने पर पुनः ठोस में बदल जाता है। लोहे को अलग रूपों में ढालने के लिए, तापमान बढ़ाकर उसे द्रवित करना पड़ता है। इस प्रक्रिया में ऊर्जा वातावरण में भी विसरित होती है; जिससे वातावरण का तापमान बढ़ता है। काम, क्रोध, भय और भावनाओं के माध्यम से मन शरीर की शक्ति को तेजी से ऊर्जा में परिवर्तित कर, ऊष्मा उत्पन्न कर सकता है। दौड़ और खेल भी शरीर में ऊष्मा उत्पन्न करते हैं परंतु ये ऊष्मा कोशिकाओं में उपस्थित ऊर्जा और वसा के विखण्डन से उत्पन्न होती है।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

उग

उग = ऊर्ध्व गमन

पौधे का धरती से विपरीत, ऊपर की ओर उठना ही उगना कहलाता है। ऊपर की ओर उठते हुए तने के माध्यम से पौधा भूमि से जुड़ा रहता है। भूमि और वातावरण से प्राप्त शक्ति तने को सीधा रखती है व तने के माध्यम से पौधे के ऊपरी भाग तक पहुँचती है। उगने की क्रिया पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण के विपरीत दिशा में होती है। ऊर्ध्व दिशा में उठा तना तो आँखों को दिखाई देता है लेकिन वह शक्ति जो इस तने के माध्यम से ऊपर उठती है, वो आँखों और मन को दिखाई नहीं देती। तात्पर्य यह है कि पौधे का एक भाग दृश्य है तो एक भाग अदृश्य। ऊर्ध्व गमन करने वाली यह शक्ति ही पौधे को वृक्ष में और वृक्ष को घने, छायादार और फलदार वृक्ष में बदलती है। ऊँचाई के कारण फलों का विकसित होना व पकना सुगम होता है और फल तैयार अवस्था में, धरती पर उपयोग कर लिए जाने हेतु पहुँचते हैं।

नशा

नशा = न शान्ति

नशे की वस्तुएँ कड़वी, बदबूदार और शरीर को नुकसान पहुँचाने वाली होती हैं। कई बार मनुष्य लोक लज्जा के भय से, छिप-छिपकर उनका उपयोग करता है। नशा करने वालों को समाज सम्मानजनक दृष्टि से नहीं देखता। नशे के आदी का घर वाले ही अपमान व विरोध करते हैं। नशे के साथ इतनी सारी समस्याएँ होने के बावजूद भी, क्यों मनुष्य उनसे खुद [illegible] नहीं कर पाता?

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100118/2021
Date 05/03/2021

मन अपने नशे को 'आदत' कहता है और दूसरों के नशे को 'बुराई'। नशा रोमांच देता है, अतः कुछ लोग रोमांच के लिए इसका उपयोग करते हैं। नशे के आदियों का भी समाज होता है। नशा करना व्यक्ति को उस समाज का हिस्सा बना देता है। नशा विचारों योजनाओं, आशंकाओं के बोझ को हल्का करता है। व्यक्ति कुछ समय के लिए उल्लासित महसूस करता है। खुद के ही बनाए गए बोझ से दूरी महसूस करता है और इसी उल्लास को पाने हेतु वह अपनी प्रतिष्ठा और स्वास्थ्य को भी दाँव पर लगाने से नहीं चूकता।

परमहंस

परमहंस = परम + हंस

साधारण शब्दों में यदि परमहंस को अभिव्यक्त किया जाए तो शब्द होगा 'प्रेमहंस'। प्रेम जगत् में रहने वाला हंस। हंस शब्द के चयन का कारण हंस का विवेकशील व श्वेत होना है। 'विवेक'- प्रेम और मोह, धर्म और अधर्म के बीच भेद कर सकता है। श्वेत होने से तात्पर्य शुद्ध होने से और मन, बुद्धि और अहंकार के दोषों से मुक्त होने से है। श्वेत अर्थात् आत्मा जैसा शुद्ध। मोह है तो संशय भी है। मोह नहीं तो समत्व है। समत्व है तो प्रेम है। प्रेम वह निधि है, जो शाश्वत है। व्यक्ति प्रेम में स्थित या प्रेम से परे स्थित हो सकता है लेकिन प्रेम अक्षय है। जो प्रेम में स्थित हो गया, वह परमहंस है। जो मन में स्थित हो गया वो मनुष्य है। हर मन के साथ एक अलग पहचान है लेकिन प्रेम के भीतर सारी 'पहचान' मात्र एक हंस में विलीन हो जाती हैं।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

समाज को तत्व से मतलब नहीं और उसे महत्व से मतलब नहीं।

परमात्मा और मनुष्य में यह भेद है कि मनुष्य महत्व की ओर देखता है और परमात्मा स्वयं अक्षय तत्व हैं। मनुष्य महत्व की ओर देखते हुए अपने तत्व से चूकता चला जाता है। तत्व भीतर है और महत्व बाहर। मन के लिए महत्व ही तत्व है। मन को दूसरों का ध्यान चाहिए और परमात्मा अपना ध्यान स्वयं में समेट कर स्थित हैं। मन अपना ध्यान बाहर की ओर केन्द्रित कर उसे विरल कर लेता है। परमात्मा मन से अत्यंत परे है। अतः ध्यान की विरलता का प्रश्न नहीं उठता।

मनुष्य को भी ध्यान चाहिए लेकिन दूसरों का। दूसरे के ध्यान की चाह में वो अपने ध्यान से भी चूक जाता है। तब स्थिति कुछ ऐसी बन जाती है कि 'न खुदा ही मिला न विसाले सनम'। मन को अपना ध्यान दे दीजिए और वह उसे मोह और आसक्ति में बदल देगा। अपना ध्यान अपने पास रख लीजिए और स्थित नमो नमः की हो जाती है।

ओजस्वी

ओजस्वी = ओज + स्व + ई

तपस्या से संघनित शक्ति ही ओज में परिवर्तित हो 'स्व' को ओजस्वी बनाती है। ओज एक प्रवाह है। जो जब वाणी के माध्यम से प्रवाहित होता है, तो व्यक्ति को ओजस्वी वक्ता बनाता है। सत्य को कहा नहीं जा सकता, सत्य में रहा जा सकता है। सत्य में मन अनुपस्थित हो जाता है और कुछ भी कहना, मन के माध्यम से ही संभव है। इसलिए सत्य से सम्बन्धित जितनी अनुभूतियाँ हैं, उसे एक शब्द दे दिया गया 'आनंद'। बोध को कहा ... है। ओज इसी 'बोध' की व्याख्या करता है। सहज योजना बनाकर अपनी बात

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

कहती है। वहीं ओज धारा की भाँति, तत्क्षण शब्दों के माध्यम से प्रवाहित हो जाता है। ओजस्विता व्यापार से सम्बन्धित नहीं, वरन् सम्बन्धित है दर्शन और अध्यात्म से।

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

समत्व

समत्व = सम + त्वमं = तुम सभी समान हो।

यह शून्य की घोषणा है कि तुम सभी समान हो। तुम आयु, लिंग, पद, महत्व, बुद्धियों में विभक्त दिखाई देते हो लेकिन तुम्हारी ये सारी विभिन्नताएँ परिवर्तनशील और समाप्त हो जाने वाली हैं। तुम्हारे भीतर का वह तत्व जो सम रहता है, वह शाश्वत है। जिस वातावरण में तुम रहते हो, वह एक समान है। तुम्हारी सारी विभिन्नताएँ, उस एक समानता में लिपटी हैं। तुम्हारे चारों ओर उपस्थित विभिन्नता झूठी है, इसी कारण वह टिकती नहीं। समत्व शाश्वत है और माया परिवर्तनशील है। इस दुनिया को तुम अपने मन की नजर से देखते हो, इसी कारण हर जगह मात्र विभिन्नता दिखाई देती है। तुम समदृष्टि के लिए प्रयत्न करो, क्यूँकि तब तुम विभिन्नता में छिपी बैठी समानता देख सकोगे। समत्व ही वह आधार है, जिसपर तुम्हारी चेतना का पौधा विकसित होता है।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

समर्थ

समर्थ = सम + अर्थ

सम को ही अर्थपूर्ण जानने वाला। विवेक के लिए समर्थ का तात्पर्य यही है। वहीं मन के लिए समर्थ का तात्पर्य है, अर्थ अर्थात् धन का उपयोग कर समाधान निकालने वाला। समाज और अध्यात्म में, 'समर्थ' के दो अलग-अलग अर्थ हैं।

बोध के लिए प्रयोजनपूर्ण और आंतरिक विकास व रुपांतरण से भरा जीवन ही अर्थपूर्ण है। जीवन वो पहेली है, जिसका अर्थ छुपा हुआ है। मन के पास जीवन की पहेली का उत्तर नहीं है। जिसने प्रयास से या दैवयोग से सम का साक्षात्कार किया, वह जान गया कि जीवन में पाने योग्य क्या है? इस जीवन का उपयोग क्या पाने में और क्या संभाल के रखने में करना है। जीवन में स्थान किसे देना है और किसे जाने देना है। किसे पाकर जीवन अर्थपूर्ण हो उठता है। मन कहता है कि समर्थ वह है, जिसके पास धन है क्यूँकि उसके पास जीवन के सुंदर अनुभवों को प्राप्त करने की क्षमता है। वहीं बोध बतलाता है कि सामर्थ्यवान वह है, जिसने अपने जीवन से विभिन्नताओं को विदा किया।

अच्छा

अच्छा = जो अपनो को आवृत्त करे।

जो अपनो पर अपना ध्यान केन्द्रित करे।

अपरा जगत को यदि मोह के अनुसार बाँटा जाए तो यह दो भागों में विभक्त होगा, अपना [illegible]ा। जिसके सारे प्रयत्नों के केन्द्र में अपना और अपने हैं, अच्छा कहलाता है। वह

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

व्यक्ति जो अपने परिवार की दृष्टि में अच्छा व सम्मानीय है, वह समाज की दृष्टि में अच्छा नहीं भी हो सकता है। परिवार के लिए सहृदय होना मोह की माँग है परंतु सभी के लिए सहृदय होना, स्वभाव से सम्बन्धित विशेषता है। व्यक्ति में कुछ प्रतिशत सच्चाई को अच्छाई कहते हैं और सौ प्रतिशत अच्छाई को सच्चाई कहते हैं। अच्छाई सापेक्षिक होती है और सच्चाई निरपेक्ष होती है। जिस दिन सच्चाई सापेक्षिक हो जाती है, वो सच्चाई न रहकर अच्छाई हो जाती है।

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100811/2021
Date 05/03/2021

वीरगति

वीरगति = वीर ही गतिमान होता है।

अपने मूल स्वभाव का पालन ही वीरता है। मूल स्वभाव का पालन ही धर्म है। अपने धर्म का पालन व्यक्ति का स्वभाव तो होता है लेकिन स्वधर्म पालन में बाधाएँ भी हैं। अपने धर्म के पालन में व्यक्ति को अपमान, उपहास, मोह, जिद्द जैसी कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है। स्वधर्म पालन के लिए, समय-समय पर आने वाली कठिनाइयों को नजरअंदाज कर देना और धर्मपथ पर अडिग रहना वीरता है। यह वीरता ही व्यक्ति के स्वाभाविक दुर्गुणों को दूर कर, व्यक्ति को सतत् कल्याण की ओर गतिमान रखती है। अडिग रहना ही वीरता है।

अपमान का जवाब अपमान से देना प्रतिक्रिया है और अपमान को पी जाना वीरता है। प्रतिक्रिया देना आसान है क्यूँकि मन तो इसके लिए उत्तेजना देता ही है। उत्तेजना को शक्ति थाम सकती है। विनम्रता में शक्ति है। इंजन की क्षमता उसकी शक्ति से आँकी जाती है।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

रजो

रजो = राजा

रजोगुण की प्रधानता, व्यक्ति को राजसी प्रवृत्तियों की ओर धकेलती है। 'राजा' शब्द 'रजो' गुण से ही उत्पन्न हुआ है। जो व्यक्ति रजोगुण में बरतता है और उनमें रुचि व्यक्त करता है, वह राजसी अनुभवों को पाना चाहता है। राजतंत्र में राजसी अनुभव बल से व सत्ता से नज़दीकी से लिए जा सकते थे परंतु आधुनिक काल में, धन के माध्यम से राजसी अनुभवों को पाना संभव है। एक रजोगुणी व्यक्ति के लिए, ठाठ-बाट से जीना ही जीवन जीने की कला है। रजोगुण सम्बन्धित है नियंत्रण से। राज्य पर, संसाधनों पर, निर्णयों पर। राज्य पर नियंत्रण से जुड़े बहुत सारे अनुभव हैं, जिसे व्यक्ति भोगना चाहता है। इतिहास ने असंख्य युद्ध देखे हैं, जो इन्हीं अनुभवों को पाने के लिए लड़े गए। इन अनुभवों की चाह ने, भीषण रक्तपात भी किया है।

तम

तम = तमीज़, तमस, तमाशा, तुम, तम्बाकू, तमतमाया।

तम को नियंत्रित करने की शक्ति तमीज़ है।

मनुष्य में तीन प्रकार के गुणों (सत्व, रज और तम) से होते हुए शक्ति का प्रवाह होता है। तामसिक गुण वे गुण हैं, जो शक्ति को सबसे निचले स्तर पर विसर्जित कर देते हैं। तामसिक गुण जीवन के सबसे निम्न प्रकार के अनुभव से जुड़े हैं, जिनमें दुर्गंधयुक्त भोजन, नशे की सामग्री में आसक्ति, काम अनुभव के लिए हिंसा व मन, शरीर तथा बोली पर [illegible]नता शामिल है। तामसिक गुण क्षुद्र लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए भी हिंसा का मार्ग

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

दिखा देते हैं। तपस्या मुख्यतः मन, वाणी और शरीर पर नियंत्रण से ही सम्बन्धित है। ये वे गुण हैं, जो व्यक्ति को अंधकार की ओर खींच ले जाते हैं। विवेक तो दूर, तामसिक गुण सामान्य समझ को भी बाधित कर देते हैं और व्यक्ति के लिए अनावश्यक कष्टों का निर्माण कर देते हैं। तामसिक गुणों के प्रभाव में रहता हुआ व्यक्ति, कई बार समझ भी नहीं पाता कि अनावश्यक रूप से खड़ी की गई, इन समस्याओं से बचा जा सकता था।

भविष्य

भविष्य = आगे उभरने वाली तस्वीर

भविष्य परिवर्तन है। भविष्य असुरक्षा है। भविष्य योजना है। भविष्य कामना है। भविष्य की परिधि पदार्थ तक है। हम आज जो ध्वनि पैदा करते हैं, भविष्य में वही प्रतिध्वनि बनकर हम तक वापस लौटती है। जब हम तालाब में कंकड़ फेंकते हैं तो पानी से कंकड़ के टकराने पर तरंग बनते देखना चाहते हैं। कंकड़ फेंका ही इस अपेक्षा में जाता है कि ये तरंग पैदा करेगा। कंकड़ का फेंकना प्रयास है तो तरंग परिणाम है। प्रयास के मूल में है उत्कंठा या अपेक्षा। उत्कंठा अर्थात् देखें कंकड़ फेंकते हैं तो क्या होता है? अपेक्षा अर्थात् कंकड़ फेकेंगे तो तरंग उठेगी। आज का प्रयास, तरंगरूपी भविष्य के रूप में हमें वापस मिलता है। कंकड़ फेंकने वाला मन हमारे भीतर है तो प्रकृति रूपी तालाब भी हमारे भीतर है। इसी कारण तरंगित भी हम ही होते हैं। बाहर उठने वाली तरंग को हम देख सकते हैं तो भीतर उठने वाली तरंग को महसूस कर सकते हैं।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

सापेक्ष व निरपेक्ष

सापेक्ष को यदि सामान्य भाषा में कहा जाए तो वह होगा 'मोहित'। निरपेक्ष का तात्पर्य है निस्पृह या संतृप्त या अनअटैच्ड। सापेक्ष और निरपेक्ष, दोनों ही गतिमान होते हैं परन्तु सापेक्ष या मोहित अपने अक्ष या बंधन के चारों ओर गतिमान होता है, तो निरपेक्ष स्वतंत्र रूप से, सभी ओर गमन के लिए मुक्त होता है। संक्षेप में सापेक्ष बंधन है और निरपेक्ष स्वतंत्र। सापेक्ष को किसी से अपेक्षा है, निरपेक्ष अपेक्षारहित है। सापेक्ष अपने लिए आवलम्बन ढूँढ रहा है। निरपेक्ष किसी भी बाह्य आवलम्बन पर आश्रित नहीं है। सापेक्ष पहले प्रेक्षा करता है अर्थात् देखकर चुनाव करता है। फिर चुने हुए से अपेक्षा रखता है। निरपेक्ष न ही प्रेक्षक है और न ही अपेक्षक। अर्थात् न देखता है और न उम्मीद ही रखता है। सापेक्ष मन से युक्त है और निरपेक्ष मन से मुक्त है।

भाग्य

भाग्य = भा (प्रकाश) + ग्य (ज्ञान)

प्रकाश को जानना ही हर एक का गंतव्य है। भाग्य अर्थात् प्रकाश को जानना। प्रकाश को जानना अर्थात् इस जगत् के मूल कारण को जानना। भाग्यवान अर्थात् प्रकाश को जानने वाला। भाग्यशाली अर्थात् प्रकाश को जानकर शांति में लीन रहने वाला। भाग्यशाली की गति प्रकाश की ओर होती है। दुर्भाग्य कुछ और नहीं, बस प्रकाश से दूर जाना है। अंधकार की ओर जाना अर्थात् बंधन की ओर जाना। प्रकाश की ओर जाना अर्थात् स्वतंत्रता की ओर जाना। दुर्भाग्य अर्थात् यम से दूर भागना है। यम से दूर भागना अर्थात् स्वयं से [illegible] है। यम अर्थात् अहिंसा, सत्य, अपरिग्रह, अस्तेय और ब्रह्मचर्य।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100171/2021
Date 05/03/2021

ब्रह्मचर्य अर्थात् यम के माध्यम से ब्रह्म की ओर चलना। सामान्य भाषा में नियति को भाग्य कहा जाता है क्यूँकि कभी-कभी प्रकाश की प्राप्ति नियति में होती है। जो पूर्व जन्म के कर्मों और प्रयासों की परिणति होती है।

उद्यान

उद्यान = उद् + यान = उद् अवस्था की ओर लेकर जाने वाला।

आम बोलचाल में बगीचे या पार्क को उद्यान कहा जाता है। उद्यान शब्द अपने आप में योग के एक सूत्र को समेटे है। उद्यान अर्थात् वह स्थल जो प्राकृतिक वातावरण से भरपूर हो, जिससे व्यक्ति को उद् या उदासीन अवस्था में जाने में सरलता हो।

आश्चर्य नहीं कि एकांतवास करने हेतु लोग प्रकृति के आश्रय में जाना पसंद करते हैं। शहरों में ऐसे स्थान बनाए जाते रहे हैं, जहाँ व्यक्ति शहर में रहते हुए भी, प्रकृति के सानिध्य को प्राप्त कर सके। प्रयोजन यह है कि यदि भीड़ उत्तेजना दे तो, ऐसी जगह भी पास हो, जहाँ बैठकर प्रकृति की स्थिरता और शांति को महसूस किया जा सके। यदि शहर उत् अवस्था में ले जाए तो उद्यान उद् अवस्था में ले जाए। व्यक्ति यह जानने का प्रयास करता रहता है कि शहर के पास उसे देने को क्या है। उद्यान में जाकर वो ये जान सके कि प्रकृति के पास उसे देने को क्या है।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

नाथ

नाथ = न + अथ

नाथ अर्थात् वह जिसका कोई आरंभ नहीं है। जो आरंभ से नहीं बँधा, वो गणना से भी नहीं बँधा। जो गणना से नहीं बँधा, वो परिवर्तन से भी नहीं बँधा और वो समय से भी नहीं बँधा। जो समय से नहीं बँधा, वो सनातन है, अक्षय है। नाथ वह है जो प्रकृति के बँधनों से मुक्त है अर्थात् द्वैत के बँधन से मुक्त है। नाथ सूक्ष्म है और अखिल है। जीवन एक प्रयोग है और हर प्रयोग का आरंभ और अंत है क्यूँकि पदार्थ समय के साथ परिवर्तनशील है। 'नाथ' पदार्थ और उसके सभी बंधनों से मुक्त है। जो बँधन में है, उसे वही रास्ता दिखा सकता है, जो स्वयं बँधन से मुक्त हो। नाथ ही प्रेरणास्रोत भी हैं और आश्रय प्रदान करने वाले भी हैं।

तन्मय व चिन्मय

कर्मेन्द्रियों व ज्ञानेन्द्रियों के माध्यम से किये जाने वाले कार्यों में तल्लीन हो जाना तन्मयता कहलाता है। मन का अपनी कामनाओं, वासनाओं और लुभावने सपनों में तल्लीन रहना मनोमयता कहलाता है। वहीं जो सत्य में लीन है, वो स्वयं सत्य है। सत्य ही चिन्मय है। तन्मयता एकाग्रता है तो चिन्मयता विशुद्ध ध्यान है, जो समाधि की पराकाष्ठा है। तन्मयता मन के माध्यम से प्राप्त की जाती है, तो चिन्मयता आत्मा के माध्यम से। तन्मयता से मन जुड़ा हुआ है, तो चिन्मय मन के प्रभाव से पूर्णतया मुक्त है। चंचलता जितनी ही कम होगी, तन्मयता उतनी ही बेहतर होगी। तन्मयता में शरीर और मन की उपस्थिति है तो चिन्मय शरीर और मन के बँधन से परे है।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

इंतकाल में भी इति है, अंत है और काल है।

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

प्राचीनकाल में सभ्यताओं के बीच जो संपर्क हुआ, उसने एक दूसरे की संस्कृति और भाषा को प्रभावित किया। इति और इंड (end) एक समान ध्वनि उत्पन्न करते हैं और अर्थ भी। इस एक शब्द इंतकाल में पूर्वी, पश्चिमी और खाड़ी की सभ्यताओं के निशान मौजूद हैं। भाषा घटना, भावना और विद्या को व्यक्त करने का साधन है। सभ्यता कोई भी हो लेकिन घटनाएँ और भावनाएँ लगभग एकसमान हैं।

इत, इति और इंड (end) के मिश्रण को प्रदर्शित करता है। इंतकाल और अंतकाल लगभग एकसमान शब्द हैं। दोनों अलग-अलग भाषाओं से आते हैं परंतु एक ही घटना को अभिव्यक्त करते हैं।

श्रद्धा

श्रद्धा = शरण + धारण

आप ही मुझे प्रेम और सुख में शरण देते हैं और पृथ्वी तथा गर्भ के रूप में धारण भी करते हैं। श्रद्धा यह जानती है कि भावना, भाव और प्रकाश में पदार्थ और चैतन्य में, शरीर और आत्मा में, पृथ्वी और आकाश में, मात्र वही उपस्थित है। सभी जीव उसी के शरणागत हैं। जीव या प्राणी चेष्टा भले ही स्वयं के लिए करे लेकिन कर्म, शक्ति, ऊर्जा और परिणाम मात्र उसी एक के कारण फलीभूत होते हैं। कृतियाँ अनेक किन्तु कारण एक है। चित्र अनेक परंतु चित्रकार एक है। व्यक्तित्व, जीव, चेतना और आत्मा, मात्र एक ही परमात्मा के अंतर्गत हैं। विभिन्नताएँ यदि बढ़ती हैं तो भेद सिमटते भी हैं। प्यार यदि अनेक हैं तो प्रेम है।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

शरद ऋतु में जैसे सरोवर कमल को धारण करते हैं। वैसे ही मेरे भीतर के कमल को धारण करने वाले आप सरोवर हो। श्रद्धा का तात्पर्य है, उसके प्रति समर्पण, जो शरण देने वाला हो तथा धारण करने वाला हो।

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100117/2021
Date 05/03/2021

प्राणी

प्राणी = प्राण + ई (शक्ति)

प्राणी अर्थात् सजीव। प्राणी चर और अचर जगत् में विभक्त हैं। चर जगत् वह है, जिसके पास पैर हैं और जो अपना स्थान बदल सकता है। अचर जगत एक जगह पर स्थित है। चर और अचर दोनों जगत् में एक समानता है और वो ये है कि दोनों सजीव हैं। अर्थात् दोनों में जीवन व्याप्त है। सजीव और निर्जीव में यह भेद है कि सजीव में प्राण उपस्थित है और निर्जीव में नहीं। दूसरा सजीवों की आंतरिक संरचना, निर्जीवों की आंतरिक संरचना से भिन्न है। तीसरा प्राण की उपस्थिति में, शरीर में जीवन का संचार होता है। जिससे जीवन विकसित, पुष्पित और पल्लवित होता है। प्राण के भीतर ही परमात्मा का वह अंश होता है, जो शरीर में रहता है। परमात्मा के भीतर रहने तक, शरीर चलायमान रहता है। इसका तात्पर्य है कि परमात्मा ही किसी भी सृष्टि का मूल कारण हैं। परमात्मा के चारों ओर ही सृष्टि की रचना होती है।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

नर – नारी

नर = न + अर = जो प्रकाश से दूर हो।

नारी = न + अर + ई = जो प्रकाश से दूर हो परंतु शक्ति से परिपूर्ण हो।

नर के पास बल है तो नारी के पास शक्ति। परंतु दोनों ही प्रकाश से दूर, मन के नियंत्रण में हैं। जब चेतना प्रकाश में स्थित हो या नर/नारी अवस्था में हो, दोनों ही स्थितियों में शक्ति साथ रहती है। बस नर/नारी रूप में शक्ति मन के नियंत्रण में रहती है। जिस कारण शक्ति के साथ होते हुए भी, चेतना शांति व सुख से वंचित रहती है। प्रकाश रूप में चेतना, शक्ति की पूर्ण रूप से अनुभूति कर सकती है। शक्ति की अनुपस्थिति समस्या है, शक्ति की उपस्थिति आशा है और शक्ति की सघनता समाधान है। नर/नारी के रूप में चेतना की प्रकाश से दूरी इस कारण हो जाती है कि चेतना मन से बँध बना, प्रकाश से दूर हो जाती है।

अर्पण – समर्पण – तर्पण

अर्पण = अर + पण (परायण)

समर्पण = सम + अर + पण (परायण)

तर्पण = तर + पण (परायण)

अपने कर्म से प्राप्त कुछ फलों को, यदि किसी की आवश्यकतापूर्ति के लिए दिया जाए तो वह दान, किसी की इच्छा पूर्ति के लिए दिया जाए तो भेंट, यदि परमेश्वर को प्रेम स्वरूप प्रकट किया जाए तो अर्पण कहा जाता है। अपनी इच्छाओं और अपेक्षाओं को त्यागकर ईश्वर के परायण हो जाना समर्पण और तरण के परायण होकर, प्रस्तुत किए गए

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

द्रव्य को तर्पण कहा जाता है। समर्पण के केन्द्र में हैं परमात्मा क्यूँकि वे ही सम हैं। वे हर एक प्राणी के भीतर और चारों ओर सम अवस्था में हैं। वहीं अर्पण के केन्द्र में हैं, अपना भाव और तर्पण के केन्द्र में है प्रियजनों के तरण की इच्छा। अर्पण में व्यक्ति इच्छारहित हो जाता है तो तर्पण में इच्छा और अपेक्षा रहित।

पतित

पतित = पतन + इत

पतन मन को मजबूत करता है और मन प्रारंभ और अंत को ही जानता है। पत इत अर्थात् गिरा हुआ समाप्तप्राय है। पत इदं अर्थात् यह अपनी स्थिति से गिर गया है। अपनी स्थिति से उठने पर ही, व्यक्ति रुपान्तरण को जान पाता है। पतन हो जाने पर व्यक्ति काम और क्रोध के दुश्चक्र में फँस जाता है। उत्थान होने पर ही व्यक्ति काम और क्रोध के रुपांतरण का साक्षी बन पाता है। जैसे पक्षी के लिए सुरक्षित जगह, ऊँचे और दुर्गम स्थल हैं। धरती पर उतरने पर, उसके बँधन की संभावना कहीं ज्यादा बढ़ जाती है। वैसे ही चेतना का नैसर्गिक स्थल मुक्ताकाश है। मुक्ताकाश वह स्थान है जहाँ चेतना स्वतंत्र और मुक्त रूप में रह सकती है। यह आकाश द्वैत के बँधनों से परे है। यहाँ रहकर चेतना द्वैत और अंतरिक्ष, दोनों को ही एक नियत दूरी से देख सकती है। वह बँधन और अनंत दोनों को ही देख सकती है।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

निवाज

निवाज = निवारण + जो

गरीब निवाज अर्थात् जो गरीबों की समस्याओं का निवारण करे। गरीब वो है जिसके पास समस्या है और अमीर वो है जिसके पास सम है। गरीब समस्या को पाटने में, अपने प्रयत्नों को खर्च करता है। अमीर अपने धर्म में बरतता हुआ सम में स्थित रहता है।

आत्मिक स्तर पर भ्रम ही समस्या है और स्पष्टता समाधान है। आंतरिक रूपांतरण के साथ भ्रम, स्पष्टता में बदलता जाता है। भ्रम और अस्पष्टता आंतरिक गरीबी है। स्पष्टता और प्रेम आंतरिक अमीरी है। भक्ति वह उत्प्रेरक है जो आंतरिक गरीबी को अमीरी में परिवर्तित करती है। हनुमान का जीवन भक्ति सिखाता है, इसी कारण उन्हें गरीब निवाज कहा जाता है। आंतरिक गरीबी की अवस्था में विभिन्न चाहतें पैदा होती है और आंतरिक अमीरी से मन पर नियंत्रण और आत्म में स्थिति प्राप्त होती है।

नरक

नरक = नर + क (करण)

वह स्थल जहाँ प्रकाश से दूरी, अज्ञानता में स्थित होते हुए मोहित अवस्था में निवास होता है। यह वह स्थल है, जहाँ एक ही जगह पर बहुत सी चेष्टाएँ उपस्थित हो। जो स्वयं से दूर और एक दूसरे पर मोहित रहते हुए, दुखों को प्राप्त करती हैं। चूँकि मोह जड़ता है और नरक समय की परिवर्तनशीलता से बँधा है। एक ही स्थल पर जड़ता और परिवर्तनशीलता एक साथ उपस्थित होकर अत्यंत भ्रम की स्थिति को पैदा कर देते हैं। जीव मोह को अपना[illegible] हुए, परिवर्तनशीलता के साथ सतत् संघर्ष में रत रहता है।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

मैं 'मेरे' में परिवर्तन को नापसंद करता है, इसका विरोध करता है और इसे थामने का प्रयास करता है। नरक में एक कारण और है, जिस पर जीव का कोई वश नहीं चलता और वह है परिस्थितियाँ। परिस्थितियों में बदलाव को उसे सहन करना होता है। सहन करते हुए, वह 'मेरे' को थामे रखने का भी प्रयत्न करता है।

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

हृदय

हृदय = हृ (हरि) + दय (दया)

ईश्वर प्रेम है। हृदय को प्रेम से जोड़ा जाता है और जहाँ प्रेम है, वहाँ ईश्वर के होने की संभावना सबसे ज्यादा है। वास्तव में ईश्वर के कारण ही प्रेम उपस्थित है। ईश्वर यदि केन्द्र हैं, तो प्रेम परिधि है। हृदय के समीप ही, अनाहत चक्र की उपस्थिति कही गई है। अनाहत चक्र, प्रेम उत्पत्ति का स्थल है। दमन यदि मन को दबाना है, दहन यदि अग्नि को जलाना है तो दया आंतरिक अंधकार को रोककर समानता के भाव को बढ़ाना है। जीवन जीने के मुख्यतः दो ही दर्शन हैं। एक है – मैं और मेरा, दूसरा है – समानता व एकरूपता। पहला दर्शन है मन का, दूसरा दर्शन है आत्मा का।

जैसे परमात्मा इस सृष्टि के केन्द्र में है, प्रकृति जीवन के केन्द्र में है, ठीक वैसे ही हृदय इस शरीर के केन्द्र में है। हृदय पूरे शरीर को ऊर्जा व ऑक्सीजन की आपूर्ति करता है तथा कोशिकाओं के अपशिष्ट को समेट कर उन्हें साफ रखता है।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

संतोष

संतोष = संतृप्ति + उषा

संतृप्ति प्रकाश प्राप्ति की ओर ले जाती है। संतृप्ति उस स्टेशन की भाँति है, जहाँ प्रकाश की ओर जाने वाली ट्रेन आती है। ट्रेन को पकड़ने के लिए, स्टेशन पर आना जरूरी है। संतृप्ति वह अवस्था है, जब व्यक्ति दुनिया से सुख प्राप्ति की अपेक्षाओं को छोड़ देता है। अब उसे ज्ञान हो जाता है कि दुनिया से सिर्फ खुशी मिल सकती है। सुख तो अपने भीतर ही मिलेगा। इसलिए वह बाहर से आने वाले अवसरों पर से ध्यान हटाकर, अपनी आंतरिक रसायनिक संरचना पर ध्यान केन्द्रित कर लेता है। बाहरी दुनिया से निस्पृह होकर वह अपनी बहुत सी शक्ति का संचय कर लेता है और इस शक्ति के माध्यम से वह अपनी अशुद्धियों से मुक्ति का उपाय करता है व स्वयं को सतत् भीतर से पकाता है। जैसे पके फल ही मीठे व रसदार होते हैं वैसे ही संतृप्ति मीठा स्वभाव व प्रेम रूपी रस प्रदान करती है। इसीलिए कहा गया कि 'संतोषं परम सुखम'।

श्मशान

श्मशान = शमन + शांति

श्मशान वह स्थान है जहाँ विभिन्नता और पहचानें मिटकर, प्रकृति में विलीन हो जाती हैं। मन का शमन होने पर शांति प्राप्त होती है। मन की अनुपस्थिति की अवस्था को ही शांति कहते हैं। मन विभिन्नता को ही मान्यता देता है, तथा वह जीवन, विभिन्नता को केन्द्र में ... व्यतीत करता है। जब वह विभिन्नता को प्रकृति बनते देखता है, तब वह तस्वीर

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. -L-100111/2021
Date 05/03/2021

के उस हिस्से को देखता है, जिसे वास्तविकता कहते हैं। मन अपनी बनाई दुनिया में रहता है। जो दुनिया सपनों की है। इसी कारण वास्तविकता इसका भाग नहीं है। मन अपनी दुनिया में वृद्धि का तो स्वागत करता है परंतु परिवर्तन या ढलान का नहीं। यथास्थिति बनाए रखने में ध्यान खर्च करना पड़ता है।

जब सपने स्थाई नहीं होते तो सपनों की प्रेरणा से बनी दुनिया में स्थायित्व कैसे हो? सपनों से बनी दुनिया में आकर्षण और रोमांच है तो दुख भी है। वास्तविक दुनिया में बहाव है, रुपान्तरण है और शांति है।

पाप – पुण्य

पाप = पा + प (पतन)

पुण्य = पुनः + यम

पाप वे कर्म हैं जिनके द्वारा व्यक्ति अधोगति को प्राप्त होता है। अपनी वर्तमान स्थिति से नीचे गिरने का हेतु है, पाप। वर्तमान स्थिति का तात्पर्य आंतरिक स्थिति से है। आर्थिक या सामाजिक स्थिति से नहीं। आर्थिक स्थिति खराब होने के बाद भी, यदि व्यक्ति मन की सलाह को मानकर ऐसे कर्मों को नहीं करता, जो अंतःकरण को भारी कर दे, तो भले ही आर्थिक विपन्नता बनी रहे परंतु आंतरिक संपन्नता बढ़ती रहती है। हर वो काम जो सही है, वह स्वाभाविक है। दूसरे को खुद के समान जानते हुए, जो भी कर्म किया जाए, वह पुण्य है। पुण्य वह कर्म है, जिससे अंतःकरण सूक्ष्म होता जाता है और चेतना प्रेम और शांति को प्राप्त करती है।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

अभाव

अभाव = अ + भाव = भाव की अनुपस्थिति

अभाव मतलब कमीं। भीतरी और बाहरी दुनिया में, कमीं के अलग-अलग मायने हैं। बाहरी दुनिया में कमी के मायने हैं, संसाधनों की कमी और संसाधनों को खरीदने में प्रयुक्त होने वाले धन में कमीं। मन अतीत से भविष्य तक फैला है और एक स्थिति जिसे वो नापसंद करता है, वो है कमीं। धन और संसाधनों की कमी से खुशी के रास्ते बाधित हो जाते हैं। वहीं भाव में कमीं से, सुख के रास्ते बाधित हो जाते हैं। भीतर की ओर जाते वक्त, भाव ही सुख का पहला द्वार है और बाहर की रक्षा पंक्ति भी यही है।

धन भविष्य की असुरक्षा को दूर करता है तो भाव भविष्य को दूर करता है। भविष्य है तो भविष्य से सम्बन्धित चिंताएँ हैं। चिंता भविष्य से सम्बन्धित है तो भय आज से। आज से भय रूपी अशुद्धि जब विलीन हो जाती है तो आज, वर्तमान में रुपान्तरित हो जाता है।

आत्माराम

आत्माराम = आत्मा + रा + म = जब आत्मा राज करे मन पर।

आत्मा में स्थिति ही मन पर राज्य की स्थिति है। अपने मन पर राज्य ही राम राज्य है। राम ने अपने मन पर राज्य किया। यही कारण है कि अयोध्या पर उनके राज्य के काल में, प्रजा पर उनका अमिट प्रभाव रहा। जब प्रजा राम से प्रेरणा लेने लगे तो प्रजा भी रुपांतरित होने लगती है। जिससे राज्य सुगम होने लगता है और निखरने लगता है। राज्य में स्थिरता का तत्व आने लगता है। राम और उनकी प्रजा सात हजार साल पहले थी, लेकिन राम चर्चा आज भी है। यही है स्थायित्व। राम जैसा राजा मिलना, एक सद्गुरु मिलने

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

जैसा है। इस दशा में राज्य अनुशासन न रहकर, साधना हो जाता है। जस राजा तस प्रजा।

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

राम के सानिध्य, में उनके भाई भी रुपांतरित हुए। कैकयी ने भरत के लिए राजगद्दी माँगी, तो भरत ने उस गद्दी के लिए राम के खड़ाऊँ। स्वयं को जीतने के पश्चात् ही, राम ने राज्य स्वीकार किया।

ईमान

ईमान = ई + मान = जो शक्ति को ही महत्वपूर्ण माने।

ईमान अर्थात् शुद्ध अंतःकरण। ईमानदार अर्थात् लोभ से दूरी। ईमानदार वह है जो दुनिया से अपने लेन-देन को साफ रखे और दूसरों के धन को अपने लिए मिट्टी समान समझे। वह ऐसा इसलिए करता है कि वह अपने अंतःकरण को प्रधानता देता है और किसी भी लाभ के लिए, उसे दूषित नहीं करना चाहता। शुद्ध अंतःकरण के साथ व्यक्ति ज्यादा स्थायित्व महसूस करता है और किसी भी अनुचित लाभ के लिए उसे खोना नहीं चाहता। जिसे दुनिया ईमानदारी कहती है, वो एक विशेष प्रकार का स्वभाव है। ऐसा व्यक्ति खुद को ईमानदार की तरह नहीं देखता, वरन् उसके जीवन जीने का तरीका ही यही है। वो बस अपना धन कमाना चाहता है और दूसरों के धन में रुचि नहीं रखता।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

‘सबसे बड़ा सुख है, खुद से जुड़ जाना’
और
‘सबसे बड़ा दुख है, खुद से कट जाना’

यदि परमात्मा आनंद हैं तो ‘स्व’ है सुख। सुख ‘स्व’ या खुद से सम्बन्धित है। वहीं मन से सम्बन्धित है खुशी। स्व में सुख इसलिए है कि ‘स्व’ स्थिरता की स्थिति है। जहाँ स्थिरता है, वहाँ स्पष्टता है। वहीं समानता और प्रेम भी है। जहाँ ये सभी हैं, वहाँ प्रकृति के बंधन नहीं। जहाँ बंधन नहीं, वहाँ कोई अनिवार्यता नहीं, मजबूरी नहीं। वहाँ न काम है और न ही क्रोध, लोभ, मोह और ईर्ष्या। प्रकृति के बंधनों में, समय का बंधन भी है। खुद से दूर हो जाना, सबसे बड़ा दुख इस कारणवश है कि अब दूसरों द्वारा दी गई पहचान पर निर्भरता समाप्त हो जाती है। प्रकृति शरीर देती है, जो पहचान बन जाता है। लोग नाम देते हैं जो पहचान बन जाता है। परिवार धर्म दे देता है और मन महत्वाकांक्षा दे देता है, जो पहचान बन जाते हैं।

❀ ❀ ❀

उत्तर

उत्तर = उत् + तर

उत्तर दिशा की ओर से तरण संभव है। उत्तर दिशा की ओर प्रश्नों के उत्तर भी हैं। शरीर में दो दिशाएँ हैं। उत्तर ऊपर की ओर व दक्षिण नीचे पैरों की ओर। दक्षिण दिशा में काम का केन्द्र है। पुरुष और स्त्री के जननांग, शरीर में दक्षिण दिशा की ओर नाभि के नीचे स्थित हैं। दक्षिण दिशा की ओर हैं चरण, जो क्षैतिज दिशा में चलते हैं। उत्तर की ओर है गंगा [illegible]र के मिलन का स्थल। गंगा है शरीर में उपस्थित शक्ति। सागर है ब्रह्माण्डिय परा

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

शक्ति। तरण शब्द का उपयोग इसलिए है कि शक्ति नदी के समान प्रवाहित होती है और चेतना इसी प्रवाह के माध्यम से ऊर्ध्वदिशा में आगे बढ़ती है। धारा के साथ स्वतः तरण हो जाता है परंतु सड़क पर तो खुद ही चलना होता है। इसी कारण उत् के साथ तरण शब्द जोड़ा गया और अधो के साथ गति। उत्तर दिशा की ओर उठने वाली धारा के साथ स्वतः तरण संभव है, बशर्ते वह धारा उपस्थित हो।

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

भक्त और विभक्त

विजातिय है मन और मन के साथ विभिन्नता जुड़ी है। मन से जुड़कर व्यक्ति विभक्त हो जाता है क्यूँकि वह अपने स्रोत से जुड़े होने के बाद भी उसे भूल जाता है। भक्त वह है, जो विभिन्नता पर नहीं, अपितु ईश्वर परायण है। एक ईश्वर अर्थात् आगे बढ़ने का एक मार्ग। जहाँ विभक्ति है, वहाँ एकाग्रता नहीं। जो विभक्त है, वो अतीत और भविष्य के बीच बँटा हुआ है। वह अपने आज का निवेश, अतीत की स्मृतियों और भविष्य की योजनाओं में करता है। यही कारण है कि वो उपस्थित तो रहता है परंतु खोया रहता है। भक्त अतीत और भविष्य पर से ध्यान हटाकर, अपने अराध्य पर लगा देता है। इस प्रकार वह विभक्ति से परे जाने का उपाय ढूँढता है। अतीत पीछे है और भविष्य आगे। अतीत और भविष्य की ओर देखने पर व्यक्ति क्षैतिज दिशा में बढ़ता है और आज वह बेड़ी है जो धरती से बाँधती है। वहीं वर्तमान उस यान के समान है, जो ऊर्ध्व दिशा में गति करने को स्वतंत्र है।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

जननी व जनेऊ

जननी अर्थात् जो जन्म दे नीचे से। जनेऊ अर्थात् जन्म ऊपर से। स्त्री के पास एक सुविधा है कि उसके पास गर्भाशय है, जो शुक्राणु रूपी बीज को एक बच्चे के रूप में विकसित कर सकता है। पुरुष के पास जन्म देने की ये प्राकृतिक सुविधा नहीं है। जन्म देने के लिए पुरुष शरीर के ऊपरी भाग में उपस्थित एक सूक्ष्म द्वार पर निर्भर है, जिसे सहस्रार कहते हैं। यही सुविधा स्त्री के पास भी उपलब्ध है। शरीर के निचले भाग से एक जीव को जन्म मिलता है परंतु ऊपरी भाग से व्यक्ति 'स्व' या 'खुद' को जन्म देता है। सिद्धार्थ जन्म से बुद्ध नहीं थे। पैंतीस वर्ष की अवस्था में वे बुद्ध हुए। सिद्धार्थ ने जिसे जन्म दिया, वे बुद्ध हैं। जनेऊ धारण करना एक संकल्प है, इस द्वितीय जन्म का। साथ ही संततियों को जीवन के लक्ष्यों से परिचित कराना भी है।

जनम

जनम = जानना मन को

जन्म लेने से पहले गर्भ में पूर्ण अंधकार है और जन्म लेने के पश्चात् चारों ओर प्रकाश। गर्भ में यदि पलकें खुले भी तो द्रव और अंधकार के कारण देखने को कुछ खास नहीं। जन्म के पश्चात् आँखें खुलती हैं और धीरे-धीरे दृष्टि का विकास होता है। जन्म से पहले बच्चा और माँ अलग-अलग होते हुए भी एक हैं। जन्म से पहले माँ की खास देखभाल की जाती है क्यूँकि माँ की हर समस्या का प्रभाव बच्चे पर पड़ता है। जन्म के बाद ही बच्चा, माँ से खुद को अलग जान पाता है और पहली बार माँ से अलग, अपने स्वतंत्र अस्तित्व ... न करता है।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

ठीक यही अवस्था, दूसरे जन्म के बाद होती है। बुद्ध ने ज्ञान प्राप्ति के बाद ही जाना कि वे सिद्धार्थ नहीं हैं। सिद्धार्थ तो बस एक आवरण था, जिसमें वे उपस्थित थे। द्वितीय जन्म के पश्चात् व्यक्ति खुद को भी जान पाता है और मन को भी। पहली बात वह जानता है कि उसका अपने मन से पृथक एक भिन्न अस्तित्व है। तब वह बच्चे के समान विकसित होना प्रारंभ करता है।

कष्ट - नष्ट - भ्रष्ट

कष्ट = क + अष्ट

नष्ट = न + अष्ट

भ्रष्ट = भर + अष्ट

कष्ट, नष्ट और भ्रष्ट तीनों ही अष्ट अर्थात् आठ से जुड़े हैं। अष्ट है प्रकृति की आठ भेदों वाली अपरा शक्ति। ये आठ भेद हैं – पृथ्वी, अग्नि, जल, वायु, आकाश, मन, बुद्धि और अहंकार। शरीर बनता है पंच महाभूतों से, तो व्यक्तित्व बनता है आठों भेदों के साथ आने से। इस आठ भेदों वाली व्यवस्था के विखण्डित हो जाने को नष्ट होना कहते हैं। अहंकार मन या बुद्धि में कोई भी यदि ज्यादा प्रबल और अनियंत्रित हो जाए तो भ्रष्ट होने की संभावना बढ़ जाती है।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

जीवित

जीवित = जीव + इदं (it)

अध्यात्म में हर चर – अचर प्राणी की एक ही शाश्वत पहचान है कि वो जीव है। जीव की शरीर में उपस्थिति के कारण ही शरीर की कार्यप्रणाली चलती रहती है। जीवित होना अर्थात् जीव का शरीर में उपस्थित होना है। जीवित और मृत में मात्र यही अंतर है कि जीवित में जीव शरीर में उपस्थित है, मृत में नहीं। जीवित शब्द यह स्पष्ट करता है कि शरीर जीव से चालित होता है। जीव ही शरीर रूपी वाहन का चालक है। जीव के लिए ही प्रकृति इस शरीर रूपी यंत्र का सृजन करती है। शरीर श्वास के लिए, अपने वातावरण पर निर्भर रहता है। तात्पर्य यह है कि शरीर और उसके चारों ओर का वातावरण अलग-अलग नहीं है। शरीर पानी, हवा, पोषक पदार्थ और ऊर्जा को अपने वातावरण से ही प्राप्त करता है। शरीर, शरीर अवस्था में बने रहने के लिए, अपने वातावरण पर ही निर्भर है। इस प्रकार यह सृष्टि, जीव को अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने में सहायता करती है। शरीर की शक्ति और ऊर्जाकी आवश्यकताओं को सृष्टि ही पूरा करती है।

जोश

जोश वह ऊर्जा है, जो किसी कार्य या प्रयोग को अपना लक्ष्य जानते हुए पूरी समग्रता से, उसे पूर्ण करने में लगती है। लक्ष्य जुड़ा है मन से। जोश किसी भी हाल में परिणाम अपने पक्ष में चाहता है।

मन जोश का उपयोग अपने कार्य के सकारात्मक परिणाम पाने में करता है। जोश की आवश्यकता तब होती है, जब मार्ग में बाधाएँ ज्यादा हों। बाधाएँ गति को धीमा

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

करती हैं और मन को हतोत्साहित करती हैं। जोश बाधाओं के बावजूद, गति को बनाए रखने को प्रेरित करता है। जोश बाधाओं व समस्याओं पर से ध्यान हटाकर, लक्ष्य पर केन्द्रित रखने में सहायक होता है। जोश कहता है कि लक्ष्य से पहले न रुको और न सोचो। बस लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए, आगे बढ़ते रहो।

नातेदारी, दुनियादारी, हिस्सेदारी और जिम्मेदारी

दुनिया की यही कहानी है, हमने पुरुषार्थों को अब इनसे बदल लिया है। ये सभी मन के निहितार्थ हैं। वहीं 'स्व' से संबंधित चार पुरुषार्थ हैं – धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष। धर्म वह है जो 'म' अर्थात् मन को नियंत्रित कर सके। जिसका पालन करने पर मन स्वतः ही नियंत्रित हो जाए। धर्म व्यक्ति को अपने केन्द्र की ओर लेकर जाता है व सीमित रखता है। धर्म संबंधित है 'स्व' से। धर्म में बरतते हुए व्यक्ति, जीवन को अर्थपूर्ण बना सकता है। जीवन के अर्थपूर्ण होने पर कामनाएँ विरल होने लगती हैं और अंततः कामनाओं से मुक्ति ही मोक्ष का मार्ग प्रशस्त करती है। वहीं मन नातेदारी, दुनियादारी, हिस्सेदारी और जिम्मेदारी में अपनी दुनिया समेट लेता है। क्या वृक्षों ने कोई जिम्मेदारी ओढ़ रखी है? आवश्यकता ही नहीं है क्यूँकि उन्हें उनका धर्म पता है। वे अपने धर्म में रत हैं।

दया

शक्ति है, जो जीव को प्राथमिकता देती है। न वर्ण, न क्षेत्रीयता, न विभिन्नता, न व्यक्तित्व। दया चर और अचर को मात्र जीव रूप में देखती है। इसीलिए कहा

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

गया कि जीवों पर दया करो। अर्थात् सभी को जीव रूप में देखो। अपनी गलती पर व्यक्ति मात्र पश्चाताप करता है परंतु दूसरे की गलती पर दण्ड देने को तैयार हो जाता है। दण्ड की व्यवस्था करने को राज्य व नियति हैं।

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

दया अर्थात् कारण रहित सहायता। अपने भीतर के अंधकार को मिटाकर, सामने वाले को खुद से अभिन्न जानना। उससे उसी प्रकार बरतना, जैसा कि हम अपने लिये चाहते हैं। दया वह गोंद है, जो दो जीवों को आपस में जोड़ देता है, जब किसी एक को मदद की आवश्यकता हो।

अनंत

अनंत = अन + अंत

अनंत अर्थात् जिसका अंत अनुपस्थित है। जो अंतहीन है। अनंत का एक और अर्थ है कि जहाँ मन न जा सके। मन ही अंत को मापता है। मन का दायरा बस अंत तक है। जो मन के दायरे से बाहर है, वह अनंत है। मन दूरी तय करता है, अपनी जिज्ञासा को शांत करने के लिए। वह देखना चाहता है कि वहाँ पर क्या है और वह किस प्रकार का अनुभव प्रदान करता है? इस प्रकार दूरी से सम्बन्धित है परिवर्तन और परिवर्तन से सम्बन्धित है अनुभव। लेकिन वह तत्व जो सृष्टि में हर जगह उपस्थित है, वह अपरिवर्तनशील है। मन उसका अनुभव नहीं कर सकता क्यूँकि मन सिर्फ परिवर्तनों को ही माप सकता है। वह जो जैसा यहाँ पर है, अरबों मील दूर भी वह वैसा ही है। उसे जानने के लिए दूरी नहीं तय करनी होती, मात्र स्थित होना होता है।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

प्रणव

प्रणव = प्र (सत्य) + ण (कारण) + व (वर्तमान)

सत्य ही सृष्टि का मूल कारण है और उसके हेतु ही प्रकृति का चक्र घूम रहा है। उस सत्य का मार्ग वर्तमान से होकर जाता है। ठीक वैसे ही जैसे, गंदे कपड़ों के साफ होने का मार्ग धुलाई से होकर जाता है।

प्रण स्वयं से संबंधित है और वर्तमान भी स्वयं से संबंधित है। जब भीष्म पितामह प्रण लेते हैं कि सूर्य के उत्तरायण में आने पर ही शरीर छोड़ूँगा तो यह भी स्वयं से ही सम्बन्धित है। सूर्य का उत्तरायण में आना अर्थात् स्वयं के दीप का जल उठना।

प्रणव अर्थात् वर्तमान से होकर वह मार्ग जाता है, जो मन से परे प्रेम और प्रकाश तक पहुँचता है। प्रेम आत्मा का भोजन है और प्रकाश उसकी शाश्वत स्थिति है।

संभव

संभव = सम + भव

सम वह धरातल या स्थिति है जहाँ सिर्फ एकरूपता है। जो यहाँ पर है, वही दूर में भी है। समानता की वजह से, खोज लिए जाने को कुछ भी नहीं है। इसी कारण हमारे भीतर का वह भाग, जो खोज में रुचि रखता है, वह भी तृप्त हो जाता है। एकरूपता की वजह से ध्यान के अलग-अलग भागों में बँटने की अनिवार्यता भी नहीं है। हमारे भीतर का ध्यान जब पूर्ण संघनित व केन्द्रित हो जाता है तो वह पूर्ण स्थिरता, अचलता व शांति उपलब्ध

हर कल्पना मूर्त रूप लेने के लिये, ध्यान पर निर्भर है। ध्यान के विरल हो जाने

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

पर सुख भी विरल हो जाता है। जितने ज्यादा संकल्प होंगे, व्यक्ति उतना ही स्थिर व सुखों से दूर होगा। इसी कारण सुख, संकल्प से प्राप्य नहीं। सुख संभव है।

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

पीछे मुड़कर मत देखना

पीछे मुड़कर मत देखना अर्थात् जिस आसक्ति को पीछे छोड़ दिया, वापस मुड़कर उसमें रुचि मत व्यक्ति करना। क्यूँकि रुचि प्रयोग में बदल जाती है। प्रयोग आसक्ति में और आसक्ति बँधन में।

पतंजलि योगसूत्र में 'धारणा' की बात की गई है। धारणा अर्थात् स्वयं को धारण करने की शक्ति। जो खुद का भाग नहीं, उसे छोड़ देना और वापस उसमें जिज्ञासा व्यक्त न करना।

हमारे पीछे अतीत है और अतीत की स्मृतियाँ हैं। स्मृतियाँ ही अतीत से जोड़ती हैं। वर्तमान में कर्म है और धर्म भी। कोई कर्म में बरत रहा है तो कोई धर्म में स्थित है। अतीत की स्मृतियों का हमारे कर्म पर प्रभाव होता है। लेकिन धर्म का अतीत से कुछ लेना-देना नहीं। धर्म अभी है, यहाँ है। अपने स्वाभाविक धर्म में रत व्यक्ति, न पीछे देखता है और न आगे। वह मात्र स्वयं में लीन हुआ चलता रहता है। पीछे मुड़कर देखने पर धर्म न दिखेगा और न ही व्यक्ति खुद को देख सकेगा। धर्म और स्व का युगल तो वर्तमान में है।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

भाई

भाई= भा (प्रकाश) + ई (शक्ति)

भाई अर्थात् वह जो शक्ति के माध्यम से प्रकाश की ओर ले जाए। तेल और रोशनी एक दूसरे के पूरक हैं। वैसे ही शक्ति और प्रकाश एक दूसरे के पूरक हैं। भाई मार्गदर्शक है व प्रेरणा का स्रोत है। अपने जीवन दर्शन पर चलते हुए, राम शेष तीन भाइयों के लिए प्रेरणास्रोत बनते हैं। भाई मार्ग में खड़े उस प्रकाश स्रोत के समान है, जो मार्ग को प्रकाशित कर यात्रा को सुलभ बनाता है। जो स्वयं प्रकाशित हो गया, वो बहुतों के लिये प्रेरणा का स्रोत हो जाता है। यदि राम अपने आदर्शों पर टिके न रहते तो कदाचित शेष तीन भाइयों के जीवन में भी क्रांति न घटित हो पाती। राम का राम होना, भरत को भरत और लक्ष्मण को लक्ष्मण होने के लिए प्रेरित करता है। एक पिता के बच्चे आपस में भाई तो एक गुरु के शिष्य आपस में गुरुभाई कहे जाते हैं, क्यूँकि गुरु को वे अपने अध्यात्मिक पिता के रूप में स्वीकार करते हैं।

साईं

साईं = सम + ई

वो जो शक्ति के माध्यम से सम में स्थित है। शक्ति के माध्यम से सम में स्थित रहना अर्थात् अपने धर्म में रत रहना। स्वाभाविक कर्म ही धर्म है। धर्म शक्ति का पुरोधा है और शक्ति ही सम में स्थिति को स्थाई करती है।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

भाई यदि आश्रय या शरण है तो साईं उसी आश्रय से निकलने वाला प्रकाश है। भाई यदि दीपक है तो साईं उस दीपक से निकलने वाली किरण है। भाई यदि बगिया है तो साईं उस बगिया से उठने वाली सुवास है। भाई यदि वन है तो साईं उस वन में रहने वाली शांति व ताज़गी। भाई यदि मंदिर है तो साईं उस मंदिर में रहने वाले देवता। भाई यदि आश्रम है, तो साईं उस आश्रम में एकत्र किया जाने वाला ध्यान।

नव

नव = न + व (वर्तमान)

नव अर्थात् नया। नयापन सम्बन्धित है, उत्तेजना और रोमांच से। नव सम्बन्धित है हर्ष से। वर्तमान में कुछ भी, नयापन नहीं है। यह सदैव था और सदैव है। जैसे नींद में कुछ भी नयापन नहीं है, है तो बस आराम। मन पूछता है कि बताओ नया क्या है? व्हाट्स न्यू? और यदि जवाब मिले कि कुछ भी नया नहीं है, सब वैसे ही है तो मान लेना कि सब बोरिंग, उबाऊ या रुटीन है। मन परिवर्तन में रोमांच खोजता है। इसीलिए वह जानना चाहता है कि कहाँ क्या रोमांचक है? रोमांच के दूसरे छोर पर है दुख और बीच में है उबाऊपन। नएपन की चाहत या कोशिश बेहतरी के लिए है। नव या नएपन की चाहत ही भविष्य की ओर ले जाती है। नव की चाहत ही अंत और आरंभ को प्रोत्साहित करती है। नएपन की चाहत अपनी योजना को मूर्त रूप देने के लिए भी है और दूसरों की योजनाओं को आकार लेते हुए देखने के लिए भी है।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

शव

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

शव = श (शक्ति) + व (वर्तमान)

शरीर की ऊर्जा अवमुक्त हो, पुनः प्रकृति का भाग हो जाती है। प्रकृति शक्ति से चालित है और वर्तमान में स्थित है। शरीर के पास न अपनी कोई इच्छा है, न सपने हैं। ये बस जीव की इच्छा, सपने, उद्देश्य, प्रयोजन और धर्म को पूरा करने का माध्यम है। मशीन जैविक हो या यांत्रिक (बायोलॉजिकल या मैकेनिकल) रिसाइकिल की जा सकती है। मन और शरीर के युग्म को विज्ञान की भाषा में साइकोसोमैटिक कहते हैं।

मन की शरीर पर इस निर्भरता को समाप्त करने के लिए, तंत्र की रचना की गई। निर्भरता के समाप्त होने पर शरीर यंत्र की भाँति हो जाता है। यंत्र उपयोगी होता है और उत्पादकता को कई गुणा बढ़ा सकता है। इस प्रकार शरीर जीव की शक्ति का उपभोग न कर, उपयोगी होने लगता है। शरीर पदार्थ का वह पिण्ड है, जो ऊर्जा में परिवर्तनशील है। जीव के शरीर से अलग होने पर, शरीर इस परिवर्तनशीलता के लिए उपलब्ध हो जाता है।

वाणी

वाणी = वाण (तरंग/ऊर्जा) + ई (शक्ति)

गले के तंतुओं में कंपन से ऊर्जा की तरंगें पैदा होती हैं, जो वातावरण को कंपित करती हैं और आगे की ओर बढ़ती हैं। कान के पर्दे पर उपस्थित संवेदी तंतु, इस तरंग को ग्रहण कर लेते हैं और सूचनाओं को मस्तिष्क तक पहुँचा देते हैं। जो बुद्धि से निकले वो 'बात' या 'तर्क' तथा जो बोध से निकले वो 'वचन' कहलाता है। जिन तरंगों के माध्यम से बात को वातावरण में छोड़ा जाता है, उसे वाणी कहते हैं। वाणी का उपयोग अपशब्दों

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

के लिए, निंदा, अपमान या उपहास करने के लिए किया जा सकता है, सूचनाओं को देने में या क्रोध को व्यक्त करने में किया जा सकता है। वाणी ककर्श भी हो सकती है और मधुर भी।

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

एकांत

एकांत = एक + अंत

एकांत अर्थात् मात्र एक उपस्थित और मन का अंत।

मन का प्रारंभ ही वहाँ से है, जहाँ गिनती एक से आगे बढ़ी। एकता एकत्व नहीं है। एकता का तात्पर्य है कि हम हैं अलग-अलग, लेकिन एक साथ खड़े हैं। आपस में हमारा मन क्रियाशील नहीं है क्यूँकि आपस में स्वीकार्यता है किन्तु बात जब किसी दूसरे की आएगी तो मन क्रियाशील हो उठेगा। यदि इस पृथ्वी पर सिर्फ एक ही मनुष्य होगा, तो अधिकार का प्रश्न भी उसके भीतर न उठेगा। अधिकार का प्रश्न ही तब आएगा, जब एक और मनुष्य उपस्थित हो जाएगा। तब जितने क्षेत्र में वे क्रियाशील रहते हैं, उतने क्षेत्र को वे दो हिस्सों में बाँट लेंगे। बाहर की ओर जाने पर, ज्यादा से ज्यादा हम एकता ही स्थापित कर पाएँगे। एकत्व की संभावना, भीतर की ओर जाने पर ही उपस्थित होगी। एकत्व अर्थात् एक तत्व। विभिन्नता की उपस्थिति का कारण है, वह एक तत्व।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

संकर और शंकर

संकर अर्थात् मिश्रित। संकर अर्थात् आठों करणों (पंचमहाभूत, मन, बुद्धि, अहंकार) के साथ मिश्रण में स्थित होना।

वहीं शंकर अर्थात् शम + करण। जिसने आठों करणों का शमन कर दिया। जिसने मन, बुद्धि, अहंकार का शमन कर पंच महाभूतों के बंधन से स्वयं को मुक्त किया। जिसने सृष्टि की अपरा शक्ति का शमन किया और पराशक्ति के साथ स्थित हो गया कैलाश अर्थात् कैवल्य आकाश पर। जिसने अपने भीतर की संकरता से मुक्ति पा ली और आंतरिक अशुद्धि को भस्म कर दिया।

द्वैत के दोनों पक्षों का मिलकर एक हो जाना ही पूर्णता है। ये शरीर रूपी सृष्टि शिव और शक्ति नामक दो ध्रुवों से मिलकर बनी है।

हरि

हरि = हर + इ

हर एक में शक्ति स्थित है। इसी शक्ति से ही पूर्णता प्राप्त होती है। इसी कारण हर एक में पूर्णता की समान संभावना है। हर एक में उपस्थित शक्ति ही, हर एक में उपस्थित समानता से परिचित कराती है। हरि और ओम के मिलने पर ही व्यक्ति, अपनी पूर्णता को प्राप्त करता है। हर प्राणी शक्ति से ही चालित है। शक्ति से ही विकास है। वृक्षों, फूलों, फलों, जीवन के माध्यम से यह शक्ति ही अभिव्यक्त होती है।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

शक्ति से ही काम है, ध्यान है और सिद्धि भी। शक्ति से ही शांति है और शक्ति के ह्रास से असफलता भी। शक्ति से ही है धर्म भी और धर्म का पालन ही असुरक्षा व अज्ञात के भय से मुक्ति देता है। तात्पर्य यह है कि जहाँ पर धर्म नहीं, वहीं पर है अज्ञात और अज्ञात से जुड़ा भय व असुरक्षा भी। धर्म और कुछ भी नहीं, बस स्वभावगत कर्म है। जहाँ असुरक्षा है, वहाँ असुरक्षा से निपटने की योजनाएँ हैं और उन योजनाओं के क्रियान्वयन हेतु किया गया कर्म भी।

हर हर महादेव

हर हर महादेव अर्थात् हर एक में शिवत्व की संभावना है। हर एक में शिव उपस्थित हैं। शिव को अपना एक ध्रुव जानिये और शक्ति को दूसरा। इन्हीं दो ध्रुवों के बीच जो आकार लेता है, वो है जीवन। शिव तक पहुँचते पहुँचते काम भस्म हो जाता है। यदि शिव इस शरीर में उपस्थित हैं तो काम से परे जाने की संभावना भी शरीर में है। शिव तक पहुँचते हुए प्रकृति का प्रवाह स्थापित व निर्बाध हो जाता है। इसी कारण काम अनुपस्थित हो जाता है। शक्ति का बाधित प्रवाह ही काम को जन्म देता है। शिव मैं का हनन करने वाले देव भी हैं। इसी कारण वे महादेव हैं। इस प्रकार 'मैं' या मन से पृथक होने की संभावना भी इस शरीर में उपस्थित है। वैवाहिक बंधन में होने के बाद भी शिव आत्मलीन हैं और शक्ति को प्रवाह की स्वतंत्रता देते हैं। यही शिव का संदेश भी है कि तुम शक्ति को स्वतंत्रता दो, बदले में वो आपको मुक्त कर देती है।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

सम्बोधि

सम्बोधि = सम + बोध + इ

वह शक्ति जो शुद्ध बुद्धि प्रदान करे, सम्बोधि कहलाती है। शुद्ध बुद्धि बोध का स्रोत है। विषमता के साथ समझ जुड़ी है और समत्व के साथ बोध। बुद्धि के पास विषमता से जुड़ी सूचनाएँ हैं और बोध के पास सम से जुड़ी। एक तरफ मोह है, तो दूसरी ओर समता है। वह क्षण जब समत्व का बोध उपलब्ध हो, संबोधि का क्षण कहलाता है। समता के पास प्रेम की गोद है और सदैव उपलब्धता का आश्वासन। समता के पास है, सभी के लिए समर्पण। समता पूर्णतया निर्लिप्त है। इसी कारण अपने धर्म में पूर्णतया स्थित है। प्रकृति व परमात्मा दोनों ही अपने अपने धर्म में स्थित हैं व उससे परे नहीं हटते। जिसने स्वयं को जाना, उसने अपने धर्म को भी जाना। धर्म का पालन ही स्थिरता देता है व प्रकृति के बंधनों से मुक्ति भी। संबोधि के क्षण में व्यक्ति अपनी सीमा के परे जाकर, अपने वातावरण से जुड़ता है।

होइहें वही जो राम रचि राखा

प्रकृति की एक नियत व्यवस्था है और हर जीव प्रकृति के नियमों से बँधा है। हर जीव की यात्रा प्रारंभ हुई प्रेम से और हर एक का गंतव्य भी प्रेम ही है। मन का प्रयत्न इस दुनिया में अपनी एक दुनिया बसाने का व उस पर पूर्ण नियंत्रण का है। वह खुद को और अपनी बनाई इस दुनिया को स्थाई करना चाहता है। प्रकृति और उसके नियम शाश्वत हैं। क्रिया की तरह कर्मफल का नियम भी शाश्वत है। कृत्रिम वस्तुओं के उपयोग से मनुष्य अपनी [illegible]ो चाहे जैसे सजा-सँवार ले लेकिन रहता वह प्रकृति के नियमों के अधीन ही है।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

प्रकृति कर्म के लिए शक्ति व ऊर्जा देती है व कर्म करने की स्वतंत्रता देती है, तो वही कर्म, कर्मफल बंधन भी देती हैं। शक्ति का प्रवाह जब बाधित हो, तो वो काम हो जाता है और वही प्रवाह जब स्थापित हो जाए, तो वो राम हो जाता है।

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

नाश

नाश अर्थात् ना शक्ति। ना शक्ति अर्थात् ना शांति।

सत्यानाश अर्थात् सत्य तक पहुँचने की शक्ति और संभावना का नाश। शक्ति के माध्यम से ही इच्छाओं की पूर्ति है। शक्ति की अनुपस्थिति में इच्छा तो होगी लेकिन उसकी पूर्ति की संभावना नहीं। इस दशा में इच्छा भी समस्या जैसी होगी। शक्ति ही मन को संतुलित करके रखती है। शक्ति से ही रुपांतरण है और तरण है। शक्ति से ही स्थिरता है। शक्ति से ही विकास है और उपयोगिता है। शक्ति से ही सिद्धि है और प्रयोजन की पूर्णता है। नाश इन सभी संभावनाओं का अंत है।

उद्धार

उद्धार = उद् + धार

ऊपर उठने वाली धारा ही उद् धारा है और यह धारा जिस अवस्था में पहुँचाती है, उसे उद्धार कहते हैं। यह धारा व्यक्ति को उत्तेजना और आवेशों से परे ले जाकर, उदासीनता में ...ती है। उदासीन अवस्था में व्यक्ति के भीतर स्थित शक्ति का प्रवाह बाहर की ओर

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

नहीं होता। इस प्रकार शक्ति का ह्रास रुक जाता है। यह शक्ति व्यक्ति के बोध को पकाती है। पेड़ पर पके फल सर्वश्रेष्ठ माने जाते हैं। वैसे ही व्यक्ति अपने भीतर के बोध रूपी फलों को प्राप्त करता है। ये वे फल हैं जो व्यक्ति तक ही सीमित नहीं रहते बल्कि आगे सभ्यता तक पहुँचते हैं और सभी इनसे लाभान्वित होते हैं। ठीक वैसे ही जैसे किसान अपने द्वारा एकत्र किए गए फलों को, उपभोक्ता तक पहुँचा देता है। वृक्ष अपने चारों ओर के वातावरण से सम्बन्ध नहीं बनाते, इसी कारण पुष्पित और फलित होते रहते हैं।

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100311/2021
Date 05/03/2021

आशीष

आशीष = आ (उपस्थित) + शीष (सिर)

आशीष अर्थात् सुरक्षा, सहायता व मार्गदर्शन देना। आशीष में दो चीजें महत्वपूर्ण हैं– हाथ और सिर। जिसमें हाथ प्रदान करने वाला है और सिर ग्रहण करने वाला। सिर को चाहिए बाहरी वातावरण में होने वाले परिवर्तनों से सुरक्षा, आवश्यकताओं की पूर्ति, विकसित होने की स्वतंत्रता और शीतलता। वहीं देने वाला हाथ धन, विद्या, बोध, आश्वस्तता और कभी-कभी शक्ति भी दे सकता है। पूर्वी सभ्यता में छोटी लड़कियों को शक्ति का स्वरूप मानकर त्योहारों में उनसे आशीर्वाद लिया जाता है और भेंट स्वरूप भोजन, पैसा और कपड़े दिये जाते हैं। बच्चे सहजता में काफी धनी हैं। इसी कारण वे सहजता का आशीष देते हैं। वहीं बड़ों के पास धन, संसाधन और अनुभव है, जो वे छोटों को प्रदान करते हैं।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

आशीर्वाद व धन्यवाद

आशीर्वाद में सामने वाले के सिर पर हाथ रखा जाता है और धन्यवाद में अपने दोनों हाथों को जोड़ा जाता है। आशीर्वाद का सम्बन्ध प्रदान करने से है और धन्यवाद का सम्बन्ध प्राप्त करने पर कृतज्ञता प्रकट करने से है।

देने वाला आशीर्वाद देता है और पाने वाला धन्यवाद देता है। अवसर प्रदान करना भी आशीर्वाद देना ही है। जब कोई ग्राहक किसी विक्रेता से कुछ सामान खरीदता है तो वह विक्रेता को व्यापार का अवसर देता है। यह उस विक्रेता को आशीर्वाद देने जैसा ही है। इसी कारण कई विक्रेता अपने ग्राहक को, उन्हें अवसर उपलब्ध कराने के लिए धन्यवाद देते हैं। मरीज डॉक्टर को अपना इलाज करने का अवसर देता है, यह भी आशीर्वाद देना ही है। संतुष्टि और सफलता पाने के लिए, हर एक को अवसर की आवश्यकता होती है। इसी कारण सभी को आशीर्वाद की आवश्यकता है।

मस्जिद

मस्जिद = सजदा करने का स्थान

जब व्यक्ति अपनी जिदों को छोड़ देता है तो वह स्वीकार भाव में आ जाता है। स्वीकार भाव ही सजदे या भक्ति के लिए अंतर्मन को तैयार कर देता है। मंदिर और मस्जिद आस्था के निर्माण स्थल हैं। व्यक्ति की आस्था उसे नियमित सजदों के लिये तैयार करती है। नमाज़ों की संख्या और समय निश्चित होने का तात्पर्य व्यक्ति को एक नियमित जीवन में । जो अंतःप्रेरणा से ही संभव है, किसी दूसरे की ज़िद से नहीं। जिद्दी दूसरों का

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

मन नहीं, अपना मन भी होता है। जो खुद के बनाए नियम और लक्ष्यों को ध्वस्त कर देना चाहता है, एक ही व्यक्ति के भीतर अनियंत्रित मन और नियमित दिनचर्या साथ नहीं रह सकते। मन के पास अपनी दुनिया को अपने अनुसार चलाने की ज़िद है तो सजदा खुदा की कायनात का हिस्सा बनने की तैयारी है।

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

बेबी के बीवी बनते ही
बाबू के बाबा बनने का रास्ता खुल जाता है।

हर बेबी में एक बीवी छिपी है और हर बाबू में एक बाबा। बेबी वह स्त्री है जो एकल है और युग्म बनाने के लिए तैयार है। बीवी वह है, जो पुरुष के साथ युगल में है। बाबू वह है, जिनके पास जीवन के लिए कुछ नियत सपने हैं और जो किसी स्त्री के साथ बंध बनाकर उन सपनों को वास्तविक बनते देखना चाहता है।

बेबी और बाबू दोनों ही एक दूसरे की तरफ इसलिये आकर्षित हैं ताकि अपनी-अपनी इच्छाओं, आवश्यकताओं और प्रयोगों को पूरा किया जा सके। विवाह के बाद दोनों ही एक-दूसरे के एक नए पक्ष से परिचित होते हैं और वह है मन। स्त्री बच्चा जन कर पूर्णता का अनुभव करती है किन्तु पुरुष अपनी पूर्णता की खोज में ही रहता है। युगल में आकर वह जान जाता है कि यही वह ठौर नहीं है, जिसे वह ढूँढ रहा है।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

बाबा

परिवार में बाबा उसे कहते हैं, जो प्रेम से परिपूर्ण हो। समाज में बाबा उसे कहते हैं, जो बोध से परिपूर्ण हो। बाबा बच्चों को भी कहा जाता है क्यूँकि वे सहजता से परिपूर्ण होते हैं।

बच्चों के लिए 'मास्टर' शब्द का उपयोग किया जाता है। मास्टर अर्थात् रोशनी का स्तंभ। शिक्षक के लिए भी मास्टर शब्द का उपयोग होता है। बच्चा सहजता व शिक्षक विद्या की रोशनी का स्तंभ होता है। बाबा शब्द का उपयोग, दृढ़ता दिखाने के लिए भी किया जाता है। 'ना बाबा ना' कहना अर्थात् दृढ़ता से किसी प्रस्ताव को नकार देना। समझा कर ना को हाँ में बदला जा सकता है परंतु 'ना बाबा ना' अर्थात् समझाए जाने की गुंजाइश नहीं।

अरस्तु

अरस्तु= अर + स्तुति

अरस्तु अर्थात् प्रकाश की स्तुति। प्रकाश की ओर ध्यान केन्द्रित करना। स्वयं को प्रकाश का ग्राही बनाना। हम जिसकी ओर भी ध्यान केन्द्रित करते हैं, हमारे भीतर वह विकसित होने लगता है। यदि हम काम की तरफ ध्यान देते हैं तो हमारे भीतर काम विकसित होने लगता है। हनुमान जब राम की ओर ध्यान केन्द्रित करते हैं तो उनके हृदय में राम उभरने लगते हैं।

हिन्दी का 'स्त' और अंग्रेजी का स्टेम एक समान शब्द हैं, जिसका अर्थ है तना। उति [illegible] ठना। स्तुति वह है, जो हमारे आंतरिक पौधे को विकसित करने और उसे ऊपर

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

उठने में मदद करती है। कमल के पास खिलने का एक ही उपाय है कि वो कीचड़ से ऊपर उठ जाए।

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100311/2021
Date 05/03/2021

अरुण

अरुण = अर + उ + करण

प्रकाश और ऊर्जा का करण अर्थात् साधन। ऊर्जा ही पदार्थ में रुपांतरित होती है और पदार्थ पुनः ऊर्जा और प्रकाश में। इस प्रकार से सूर्य में उपस्थित ऊर्जा से ही हमारी आकाशगंगा में उपस्थित पदार्थ की रचना हुई। इस प्रकार जो अभी पदार्थ है, वह कभी ऊर्जा था और पुनः कभी ऊर्जा में ही रुपांतरित हो सकता है। इस प्रकार जो कभी सूर्य था, वो ही आज ग्रह व उपग्रह है। हर जीव के पास जो शरीर है वो सूर्य द्वारा प्रदान की गई ऊर्जा से ही बना है। मन इस शरीर रूपी यंत्र को अपना कहता है। वह इसके माध्यम से समय की परिधि में उपस्थित सभी अवसरों को भोगना चाहता है। समय की ही परिधि में मन, अवसर और पदार्थ हैं। समय को महसूस करने वाला मन ही है।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

समस्या व तपस्या

समस्या = सम + स्याह

तपस्या = तप + स्याह

जो समत्व से दूर है वह समस्या है और जो अपने भीतर के अंधकार को तपाए, वह तपस्या है। अंधकार अर्थात् अशुद्धि, प्रकाश अर्थात् शुद्धि। तपस्या समस्या को विरल करने के लिए है। तपस्या की अनुपस्थिति में समस्या बढ़ जाती है। तपस्या मन, वाणी और शरीर को नियंत्रित करने का मार्ग है। मन के नियंत्रण में आई वाणी और शरीर ही समस्या पैदा करते हैं। मन के नियंत्रण से मुक्त वाणी और शरीर समस्या को काफी हद तक घटा देते हैं। यदि किसी कमरे में प्रकाश हो तो भी बाहर खड़ा व्यक्ति प्रकाश तक नहीं पहुँच सकता। कारण यह है कि उसके और प्रकाश के बीच कमरे की दीवारे हैं। समस्या नामक शब्द बताता है कि प्रकाश सदैव भीतर है, वह बस अंधकार की दीवार से ढँका है।

आबाद व बर्बाद

आबाद = आ (उपस्थित) + बाद (स्थान)

बर्बाद = बर (बुराई) + बाद (स्थान)

आ का अर्थ है उपस्थिति, बाद का अर्थ है उपस्थित। उपस्थिति है व्यक्ति की व उपस्थित है नगर।

बर अर्थात् अनुपस्थिति, खंडित या भग्न होना व बाद का अर्थ है स्थान या व्यवस्था या बर्बादी का सम्बन्ध उपस्थिति के कम या अनुपस्थित हो जाने से या खंडित हो

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

जाने से है। क्यूँकि उपस्थिति ही उपस्थित का रखरखाव करती है। रखरखाव की अनुपस्थिति में क्षरण शुरु हो जाता है।

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

बाद को आबाद रखरखाव ही रखता है। यदि अनुपस्थिति किसी वजह से उपस्थित से मुँह फेर लेती है तो ‘बाद’ बर्बाद हो जाता है। वह अतीत का शहर बनकर रह जाता है। जहाँ प्राकृतिक संसाधनों की सहज उपलब्धता है, वहाँ उपस्थिति बढ़ जाती है। यह उपस्थिति ही एक शहर आबाद कर देती है।

गौण

गौण = गौकरण (गौकरण अर्थात् प्रकाश का साधन।)

अंधेरे से जुड़े हमारे भय को रोशनी दूर कर देती है लेकिन अज्ञात से जुड़े हमारे भय को ज्ञान दूर करता है। रोशनी हमारे अज्ञात से जुड़े भय को नहीं दूर कर सकती। इसलिए भले ही दिन रात हम रोशनी में रहें लेकिन अज्ञात से जुड़े अपने भय के साथ जीते रहते हैं। रोशनी में हम दुनिया को स्पष्ट रूप से देख सकते हैं तो ज्ञान की रोशनी में हम खुद को स्पष्ट रूप से देख सकते हैं। जिसे ज्ञान या प्रकाश प्राप्त हुआ हो, और जिसने प्रकाश की उस ज्योति को स्थिर रखने में सफलता पाई हो, वह गौकरण के समान है। वह समाज में उस प्रकाश के स्तंभ के समान है, जिसमें व्यक्ति स्वयं की झलक पा सकता है। ऐसे व्यक्तियों का समाज में उपस्थित होना, समाज को अपने आंतरिक विकास हेतु प्रोत्साहित करता है।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

ऋतुफलम समर्पयामि

ऋतुफलम समर्पयामि अर्थात् वर्तमान ऋतु में उपलब्ध फल को सम अर्थात् ईश्वर को अर्पित करता हूँ। फल ऊर्जा और शक्ति से भरे होते हैं और अनाज मुख्यतः ऊर्जा और बल से। बीमारी में फल दिये जाने का प्रयोजन, ज्यादा मात्रा में शरीर को शक्ति उपलब्ध कराना है। जिससे शरीर रोग का ज्यादा बेहतर तरीके से मुकाबला कर सके और बीमारी से मुक्त होने की गति को बढ़ाया जा सके। अंग्रेजी में जो हीलिंग पॉवर है, वही हिन्दी में प्राण शक्ति है। यह शक्ति ही बीमारियों से लड़ती है और घावों को भरती है। यही शक्ति इच्छाशक्ति के रूप में व्यक्ति को विभिन्न आदतों और नशों से मुक्त करती है। जिससे की व्यक्ति के अंतःकरण और शरीर पर, मन का दुष्प्रभाव कम होता है। जिससे व्यक्ति ज्यादा स्थिर रहते हुए अपने शरीर का उपयोग, जीवन के प्रयोजन को पूर्ण करने में करता है और उपभोगी न रहकर उपयोगी हो जाता है।

वेद

वेद = व + इदं

वर्तमान इदं। अर्थात् जो वर्तमान है या सनातन है। जो स्थिर है और स्त्रोत है। वेदना अर्थात् जो सनातन और स्थिर नहीं है। वेदना समय के साथ प्रकट और समय के साथ ही विलीन हो जाती है। वेद लिखे गए हजारों साल पहले, लेकिन वे इतिहास की श्रेणी में नहीं आते। वे न किसी व्यक्ति की चर्चा करते हैं, न व्यक्तित्व की, न किसी घटना और न किसी अनभव की। वे तत्वों की बात करते हैं। हम लेखक को उसके लेखन के माध्यम से जानते वेद तो हैं लेकिन उनके लेखक वे ऋषि थे जो व्यक्तित्व न रहकर बोध हो गए।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

इसी कारण उनका कोई नाम नहीं। वर्तमान में मात्र प्रकृति है, शक्ति है, बोध है और स्थिति है। स्थिति का कोई नाम नहीं, पहचान नहीं। नाम और पहचान उपस्थित की होती है।

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

मंत्र

मंत्र = मन + तर

मन पर तैरने का साधन है मंत्र। मन के दरिया में चलने वाली नाव है मंत्र। चेतन मन को व्यस्त रखने का साधन है मंत्र। मन को दिया गया काम है मंत्र। मंत्र में दुहराव है, लय है, प्रवाह है, चक्र है। मंत्र में कोई नयापन नहीं। मन हमारा वह भाग है जो नएपन में रुचि रखता है। पुराने से उसे उबन होती है। मन को उन सभी आदतों में रुचि है, जो उसे उत्तेजना की खुराक देती है। मन उत्तेजना के माध्यम से सशक्त होता है। वहीं प्रकृति मात्र चक्र को जानती है, रुपांतरण को जानती है। वो किसी एक अवस्था को महत्व नहीं देती और न ही किसी एक रूप को।

मंत्र मन को दिया गया वह दान है, जिसके माध्यम से वह उत्तेजक मन से सुंदर मन में रुपांतरित होता है। वह उत्तेजना से बंध बनाना छोड़, खुद में सुंदर होने लगता है। सुंदर मन प्रेम के बाहर जाने और चारों ओर के प्रेम को ग्रहण करने और भीतर उतरने देने का द्वार है।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

निमंत्रण

निमंत्रण = नि + मन + तरण

मन तरण के आयोजन हेतु निवेदन।

निमंत्रण आग्रह है, शामिल होने का उस आयोजन में, जो आंतरिक मंथन के लिए आयोजित किया जाए। मंत्रणा का प्रयोजन है मंथन। मंथन का प्रयोजन है, दही से छाछ और मक्खन को अलग करना। मंत्रणा बौद्धिक परिचर्चा नहीं है। न ही यह शास्त्रार्थ है या वाद-विवाद या बातें है। मंत्रणा उन बोधगम्य बातों को साझा करना है, जिनके उपयोग या अमल से मन रुपांतरित होता है। जीवन के प्रयोजन की पूर्णता के लिए उस सुंदर मन की आवश्यकता है, जो सभी ओर से ध्यान समेट कर प्रयोजन पूर्णता की दिशा में लगा दे। प्रयोजन पर काम करने पर, व्यक्ति का आंतरिक पौधा विकसित होता है और उस पर कमल रूपी वह फूल आता है, जो अशुद्धियों से ऊपर उठ कर मुक्ताकाश में पुष्पित होता है।

परंपरा

परंपरा = परम् + परा

परम् तक पहुँचने का साधन है परा।

परा शक्ति है। अपरा पदार्थ और उसके भोग और उस पर नियंत्रण की इच्छा है। समय के साथ कर्मकाण्डों को ही परंपरा समझ लिया गया। कर्मकाण्ड ज्ञानकाण्ड का मार्ग प्रशस्त करते हैं। संस्कृति में आंतरिक उन्नति के सूत्र होते हैं। आत्मज्ञान को उपलब्ध हुए व्यक्तियों से संस्कृति समय-समय पर और उन्नत और धनवान होती जाती है। जैसे बुद्ध के

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

माध्यम से संकृति ने अहिंसा को खुद में समाहित किया तो महावीर के माध्यम से शाकाहार संकृति में समाहित हुआ। वेदों ने सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे संतु निरामया व वसुधैव कुटुम्बकम् का मंत्र दिया। राम ने आदर्शों पर जीना सिखाया तो हुनमान ने भक्ति में रमना सिखाया। कृष्ण ने स्वभाविक कर्म करने का प्रोत्साहन दिया तो ऋषियों ने योग तपस्या और साधना के गुर संस्कृति में समाहित किये। इस प्रकार संस्कृति परम् और परा तक पहुँचने का मार्ग बन जाती है।

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

अपरंपार

अपरंपार = अपरं (दूसरा) + पार

दूसरा अर्थात् द्वैत। द्वैत के जो पार है, वही सत्य है और मुक्त है। द्वैत के जो इस पार है, वह माया है और बंधन है। जैसे किसान अपने जानवर को खूँटे से बाँधकर रखता है क्यूँकि वह उन सभी सुविधाओं का उपयोग करना चाहता है, जो अपने पशु के माध्यम से उसे प्राप्त होती हैं। वैसे ही द्वैत व्यक्ति को सीमाओं में बाँध देता है।

अपरंपार का तात्पर्य है असीम। असीम वो है जो प्रकृति के बंधन, कब्जे व ऋणों से मुक्त है। वह जो आत्मनियंत्रित है, वो नियमों के बंधन व उनसे होने वाले अनुभवों से दूर रहता है। जिसे कामनाएँ नहीं छूतीं। वह क्रोध, लोभ, मोह व ईर्ष्या से भी पीड़ित नहीं। सीमाएँ रुग्णता देती हैं तो असीमता स्वास्थ्य।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

सुंदर

सुंदर = सु + अंदर

जो मन के भीतर है, वही सुंदर है। सुंदर मन उसी आंतरिक सुंदरता का द्वार है। मन के भीतर है स्वभाव और स्वभाव सुंदर है। स्वभाव में स्थित हुआ व्यक्ति, मन की उत्तेजना से दूर रहता है। इसी से वह इस उत्तेजना से भरे जगत् में रहता हुआ भी, उदासीन रह सकता है। उत्तेजित लोगों के बीच उपस्थित उदासीन व धैर्यवान व्यक्ति सुंदर है। आकर्षक इमारतों के बीच खड़ा पेड़ शांत है व सुंदर है। इमारत ऑक्सीजन की उपभोक्ता है व ऊष्मा की उत्पादक है तो पेड़ ऑक्सीजन का उत्पादक है व ऊष्मा का अवशोषक है। रूप प्रकृति का उपहार है, तो सुंदर मन व्यक्ति की कमाई। अर्थात् रूप पाया ही जा सकता है, तो सुंदरता कमाई भी जा सकती है। सुंदरता उत्पादकता की घोषणा है। रूप समय के साथ ढल जाता है तो सुंदरता अनुभवों और मुश्किलों की आग में तपकर निखरती है। तपस्या मन, वाणी और शरीर पर कार्य करती है। अतः तपस्या से सुंदरता निखरती है।

❀ ❀ ❀

ममता व ममत्व

ममता = मम + तात
ममत्व = ममता का कारण या तत्व

ममत्व ममता को विकसित कर देता है और ममता सम्बन्ध जोड़ लेती है। सम्बन्धों का उपयोग हम, अपनी असुरक्षा की भावना को दूर रखने में करते हैं। ममता आश्रय देती है तो [illegible] आश्रय में शरण भी ढूँढती है। प्रकृति ने हमें शरण दे रखी है लेकिन हममे वो अपना [illegible] नहीं ढूँढती। इसी कारण उसमें शरण लिये हुए हम, उसी से अपरिचित रह जाते हैं।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

प्रकृति में मन को जोड़ देने पर ममता बन जाती है और ममता से मन को निकाल देने पर जो बचता है, वो प्रकृति है। प्रकृति इसी कारण निर्लिप्त रह पाती है क्यूँकि वो ममत्व नहीं, समत्व को जानती है। वहीं ममता निर्लिप्त नहीं रह पाती। इसी कारण अपने ध्यान को किसी और पर केन्द्रित कर, मात्र उसे ही अपना मान बैठती है और अपनी शरण से चूक जाती है।

विवेचन

विवेचन = विवेक के माध्यम से चयन

विवेक चयन किसका करता है? विवेक सदैव स्वयं का चयन करता है और ये 'स्व' हर जगह है। हर एक जीव में है। विवेक कभी भी भेद का चयन नहीं करता, इसी कारण विवेक न मन का चयन करता है, न बुद्धि का और न ही अहंकार का पक्ष लेता है। न ही ये विभिन्न व्यक्तियों में भेद करता है। ये स्त्री और पुरुष के भेद को भी मान्यता नहीं देता। विवेक अपने अतीत के प्रभाव में आकर, अपने भविष्य का चयन भी नहीं करता। विवेक चुनता है, सहजता को। यही कारण है कि यह व्यक्ति को जगा देने की क्षमता रखता है क्यूँकि यह अपनी शक्ति को भेदों और विभिन्नताओं की अग्नि में स्वाहा नहीं करता। नींद खुलती ही तब है, जब थकान मिट जाए और शरीर में शक्ति का स्तर, एक नियत तल पर आ जाए। इस दशा में व्यक्ति क्रियाशील होने को तैयार हो जाता है।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

अस्तित्व व व्यक्तित्व

अस्तित्व = अस्ति + त्वमं = (मात्र तुम ही उपस्थित हो)

व्यक्तित्व = व्यक्ति + त्वमं

महत्वाकांक्षा जीवन में जिसका निर्माण करती है, वह है व्यक्तित्व। व्यक्तित्व को एक व्यक्ति चाहिये, जिसके माध्यम से वह विकसित हो सके। व्यक्ति की अनुपस्थिति में व्यक्तित्व संभव नहीं। महत्वाकांक्षा, व्यक्ति की उपस्थिति का उपयोग जिसे विकसित करने में करती है, उसे व्यक्तित्व करते हैं।

इतिहास बतलाता है कि पृथ्वी पर व्यक्तित्व उभरे और विलीन हुए परंतु कभी स्थिर नहीं हुए। कभी टिक न सके और न ही किसी को प्रेरणा दे सके। प्रोत्साहन वे अवश्य देते रहे हैं, जीवन में सफलता की कहानी लिखने की। लेकिन व्यक्ति जब भी सफलता से आगे जाता है, वो व्यक्तित्वों से भी आगे जाकर, अस्तित्व को जानने के लिए प्रयत्नशील हो उठता है।

वासना

अनुभव करने की इच्छा, जब आसक्ति में बदल जाती है, तो वासना बन जाती है। वास न करने देने की शक्ति वासना है। वासना स्व को उभरने नहीं देती। स्व जिस शक्ति में स्थित होता है, उसे वासना भोग जाती है।

वासना अंतःकरण को सदैव तरंगित रखती है। इसी कारण अंतःकरण में स्थिरता वास नहीं कर पाती। अंतःकरण की स्थिरता आत्मिक विकास के लिए आवश्यक है। आंतरिक

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

अस्थिरता, बाहरी जगत् पर अति निर्भरता का कारण है। जब भीतर उथल-पुथल हो तो शरण कहीं बाहर ही लेनी होगी।

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

वासना को यदि एक शब्द में व्यक्त किया जाए तो वह होगी अस्थिरता। नशे की समस्या से पीड़ित व्यक्ति, नशे की खोज में बार-बार अपने घर से बाहर निकलता है। नशे की इच्छा हो उठे तो वह घर में भी व्यग्र हो जाता है। उसके पास रहने की जगह तो होती है लेकिन उसमें रहने की स्थिरता नहीं होती। नशे की लत में रहते हुए, वो कई बुरे अनुभवों से गुजरता है।

काम

काम = का + म

मन की अंधकार की ओर, खींच ले जाने वाली उत्तेजना काम है। काम के माध्यम से ही मन जगत् से अपने सम्बन्ध को जोड़ता व उसे प्रगाढ़ करता है। जगत् में काम की संभावना भी है और अवसर भी है। काम शक्ति का ही एक बाय-प्रॉडक्ट है। कामाग्नि को जलाने के लिए मन चाहिये और बुझाने के लिए शक्ति चाहिए। शक्ति ही उत्तेजना को संतुलित करती है। बचपन में काम नहीं, लेकिन प्रसन्नता है। जवानी में काम है लेकिन प्रसन्नता खोने लगती है। काम की संभावना तो जागती है, लेकिन प्रसन्नता खोने की शर्त पर। काम की क्रिया में शक्ति, ऊर्जा और पदार्थ तीनों ही उपस्थित हैं और मन तथा शरीर दोनों ही भाग लेते हैं। काम में कल्पना की भी हिस्सेदारी है, तो वास्तविकता की भी। काम दो सृष्टियों के बीच का सम्बन्ध है। काम में दो सृष्टियाँ एक-दूसरे के नजदीक तो जाती हैं लेकिन खुद से दूर भी जाती हैं। दोनों में मेलजोल तो बढ़ता है लेकिन खुद से दूरी की शर्त पर।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

स्वावलंबन

स्वावलंबन = स्व + आवलंबन

आवलंबन अर्थात् टेक लेना या सहारा लेना। स्वावलंबन अर्थात् स्व का सहारा लेना। कुछ लोग ऐसे होते हैं, जिनके पास एक से दो हो जाने के विकल्प होते हुए भी वे जीवन की यात्रा को अकेले तय करने को प्राथमिकता देते हैं। वहीं कुछ के लिए एक से दो होना ही जीवन जीने का तरीका है। कुछ लोग सामाजिक तौर पर एक से दो जाने पर भी स्वतंत्र अंतःकरण के होते हैं। वहीं कुछ लोगों का पूरा जीवन ही दूसरों का आवलंबन लेने और उसे बनाए रखने का प्रयास करने में बीतता है। स्व को प्रज्ञा की प्राप्ति होती है और प्रज्ञा के साथ जुड़ी है स्थितप्रज्ञता। वहीं 'स्व' के साथ जो भाव जुड़ा है, उसे स्वभाव करते हैं। यह स्वतः स्फूर्त होता है, जिससे मन और बुद्धि की उथल-पुथल थमती है।

संबोधन

सम को उपलब्ध हुए व्यक्ति के पास देने को बोध है। इसी कारण जाग्रत पुरुष समाज को अपना बोध, उपहार रूप में देते रहते हैं। जैसे सूर्य अपनी रश्मियाँ विखेरता रहता है, जाग्रत पुरुष अपना बोध बिखेरता रहता है। फूल अपनी सुगंध बिखेरता रहता है, वृक्ष अपनी छाया बिखेरता रहता है। यात्री उस रास्ते को प्राथमिकता देते हैं, जिस रास्ते पर पेड़ों की छाया रहती है। वहीं ठंड से तड़प रहे व्यक्ति को, धूप भी छाया जैसी प्रतीत होती है। उसी प्रकार विचारों की बमवर्षा से घिरे व्यक्ति के लिये बोध शरण जैसा है। बुद्धं शरणं गच्छामि का है, बोध की शरण में जाना। धम्मं शरणं गच्छामि का तात्पर्य है, धम्म की शरण

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

में जाना, जिससे बोध उत्पन्न होता है। संघंम् शरणं गच्छामि का तात्पर्य है, उनके मध्य जाना, जो बोध के अनुसार जीवन जीते हैं।

माता

माता = मा (नहीं) + ता (ताप)

जहाँ अंधकार नहीं है। जहाँ ताप नहीं है, वहाँ अशुद्धि भी नहीं है। पके हुए फल को आग पर पकाया नहीं जाता क्यूँकि वह खुद ही पक कर उपयोगी हो चुका है। व्यक्ति जैसे-जैसे मन की अशुद्धियों से मुक्त होता जाता है, वो माता के निकट पहुँचता जाता है। माता अर्थात् प्रेम का वो आवरण जो सभी प्रकार की असुरक्षाओं और भय से मुक्ति दे देता है। हमारे भीतर का मन ही याचक या भिखारी है और हमारे भीतर की प्रकृति ही अन्नपूर्णा, लक्ष्मी और सरस्वती है। जो अपने मन से मुक्त है, वो याचक नहीं है। जिसे कुछ पाना नहीं है, वो देने वाले के राज्य में प्रवेश कर जाता है। जिसे पाना है, उसे बाजार में खड़े होकर चारों ओर आशा भरी नज़रों से देखना होगा। अपने मन के साथ रहते हुए, हम ही गरीब हैं और अपने मन से छूटकर, हम ही अमीर हैं।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

स्पष्ट

स्पष्ट = स्प + अष्ट

अपरा शक्ति के आठों भेदों (पृथ्वी, अग्नि, जल, वायु, आकाश, मन, बुद्धि व अहंकार) को एक दूसरे से भिन्न जानना ही स्पष्टता है। अपने मन, बुद्धि व अहंकार को जानना अर्थात् खुद को इनसे भिन्न जानना। तब इनका उपयोग आवश्यक या बाध्यकारी न होकर वैकल्पिक होगा। स्थूलता बाध्यता व बाधा दोनों को ही क्षीण करती है। स्पष्टता को किसी व्यक्ति, विचार या विचारधारा का अनुसरण करने की आवश्यकता नहीं पड़ती। स्पष्टता के कारण व्यक्ति इनके मध्य रहकर, इनसे निस्पृह रह सकता है। स्पष्टता खुद की उपयोगिता की तलाश करती है। स्पष्टता किसी और का आवलम्बन नहीं ढूँढती। स्पष्टता जानती है कि खुशी बाहर है लेकिन सुख भीतर है।

हरि व हरियाली

हरि कवि हैं तो हरियाली उनकी कविता।

हरि गंतव्य हैं तो हरियाली उनका द्वार।

हरि परमात्मा व उनकी शक्ति हैं तो हरियाली परमात्मा व उनकी शक्ति की पदार्थ में अभिव्यक्ति।

परमात्मा प्रेम हैं तो हरियाली उसी प्रेम का मूर्त स्वरूप।

हरि परमात्मा हैं, तो हरियाली प्रकृति।

ली के रूप में दृश्य होते हैं।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

हरियाली में परमात्मा है, उनकी परा शक्ति है और अपरा शक्ति के पंचतत्व। हरियाली में अपनी ही जगह पर पूर्ण विकसित होने की अद्भुत शक्ति होती है। वहीं मनुष्य अपने विकास का सदैव क्षैतिज विस्तार करता है। मनुष्य अपने अधिकार व प्रभाव के विस्तार का विकास करता है। हरि हरियाली के रूप में पृथ्वी पर जीवन को संभव बनाते हैं। हरियाली पाँचों तत्वों के संतुलन को बनाए रखती है। संतुलन ही जीवन को संभव बनाता है।

अतिथि देवो भवः

दैव वह है, जिसके बारे में हम योजना नहीं बना सकते। दैव हमारे कर्मफलों का प्रभाव है, जो नियत समय पर हमें प्राप्त होता रहता है। हाँ इसके प्रभावों का सामना करने के लिए अपने प्रयास अवश्य किये जा सकते हैं। जैसे किसान फसल तो अपनी योजनानुसार बो सकता है लेकिन मौसम पर उसका वश नहीं चलता। हमें जीवन में कुछ नियत मुश्किलों से गुजरना होता है, जो हर एक के लिए अलग-अलग हैं। व्यक्ति को जीवन में कुछ नियत सुविधाएँ भी मिल जाती हैं, वे भी हर एक के लिए अलग-अलग हैं। इस प्रकार दैव के बुरे और अच्छे दोनों ही प्रभाव जीवन पर पड़ते हैं। बुद्धि समय को योजनाबद्ध तरीके से दिन, महीने और सालों में बाँट देती है। अतिथि वो है, जो हमारी योजनाओं से परे है।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

पूजा

पूजा = पू + जा

पूजा अर्थात् पूर्णता को जाग्रत करना। पूजन अर्थात् पूर्णता को जाग्रत करने की प्रक्रिया। मनोरथ पूजा से नहीं, प्रयास से पूर्ण होते हैं। परीक्षा में वे बच्चे अच्छा प्रदर्शन करते हैं, जो बुद्धिमान और मेहनती होते हैं। व्यक्ति भी प्रयास की महिमा जानते हैं। उनके लिये ईश्वरीय कृपा की इच्छा, बाधाओं को कम करने या दूर करने के लिए होती है। लोग मंदिरों को ईश्वर का घर मानते हुए अपनी समस्याओं व इच्छाओं को बताने व ईश्वरीय मदद की अपेक्षा में व इच्छापूर्ति के पश्चात् कृतज्ञता ज्ञापित करने वहाँ जाते हैं। परंतु अपूर्णता का पूर्णता में रूपांतरण संभव है। पूर्णता की स्थिति में व्यक्ति द्वारा शक्ति का क्षय रुक जाता है व शक्ति का एक सतत् प्रवाह स्थापित हो जाता है।

आज्ञा

आज्ञा = आ (उपस्थिति) + ज्ञा (ज्ञान)

ज्ञान का उपस्थित होना ही आज्ञा है। ज्ञ वर्णमाला का आखिरी अक्षर है। अर्थात् ज्ञान सभी सीखी हुई बातों से परे है। ज्ञान की परिधि वहाँ से शुरु होती है, जहाँ पर सीखने की सभी संभावनाएँ समाप्त हो जाती हैं। खुद के बारे में सीखने को कुछ भी नहीं। खुद को सिर्फ जानना ही संभव है। सीखना बुद्धि से सम्बधित है और जानना सम्बन्धित है, उससे जो बुद्धि से परे है। इसी कारण ज्ञान किसी को नहीं दिया जा सकता, क्यूँकि यह स्वयंभू है। यह स्वयं ही प्रकट होता है। ज्ञान की तुलना जन्म से की जाती है, जैसे जन्म के दौरान

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

बच्चे को खुद ही इस प्रक्रिया से गुजरना होता है। ठीक उसी प्रकार ज्ञान पाने की प्रक्रिया के दौरान, व्यक्ति को आंतरिक रुपांतरण की सघन प्रक्रिया से गुजरना होता है।

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

गुमान

गुमान = गु (गहन) + मान (अंधकार)

गुमान अर्थात् व्यर्थ का मान। मान हो या अपमान दोनों ही मन से सम्बन्धित है। खुद पर गुमान तो किया जा सकता है लेकिन व्यक्ति यदि खुद का अपमान करने लगे तो कहा जाएगा कि या तो वो मज़ाक कर रहा है या फिर कोई मानसिक समस्या लगती है। खुद पर जितना गुमान होगा, व्यक्ति खुद के अपमान के प्रति भी उतना ही संवेदनशील होगा। किसी दूसरे व्यक्ति के द्वारा खुद के लिये यदि कुछ अरुचिकर आए, तो वो अपमान सरीखा लगता है। गुमान गहन अंधकार की भाँति इसलिये है कि हमारा अंधकार या बुद्धि हमारे व्यक्तित्व से जुड़ी है और व्यक्तित्व स्वयं अस्थायी व मिट जाने वाला है। व्यक्ति को कैसी कुशलता, प्रतिभा, बुद्धि या रूप मिलता है, इसमें उसका खुद का कोई दखल नहीं। ये सभी प्रकृति की व्यक्ति को देन है। अतः गुमान अपने लिये अंधेरा बढ़ाने जैसा है।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

राह और हरा

रास्ता और उस पर छायी हरियाली, सफर को आसान बना देती है। यात्री चलते हुए तेज धूप से बचा रह सकता है और यदि थककर आराम करने की इच्छा हो तो शरण भी आसपास ही मिल जाती है। ये सभी सुविधाएँ हम तब पा सकते हैं, जब हम पेड़ों के बढ़ने और टिके रहने की स्वतंत्रता का हनन न करें। इस प्रकार जब हम प्रकृति के काम में हस्तक्षेप नहीं करते तो हमारा ही जीवन सरल रहता है। पेड़ शक्ति से भरे हैं और उनकी ये शक्ति हमारी यात्रा को सुगम बनाती है। हम चाहे सफलता की डगर के यात्री हों या संतुष्टि की, शक्ति की आवश्यकता पग-पग पर पड़ती है। संतुष्टि तो प्राप्त ही तब होगी, जब व्यक्ति लोभ को एक तरफ रख, अपनी पूरी क्षमता से काम करेगा। लोभ को दूर रखने के लिए भी इच्छाशक्ति की जरूरत होगी। खुद तक पहुँचने की यात्रा भी इसी शक्ति के माध्यम से पूर्ण होती है। यात्रा कोई भी हो, सरल उसे शक्ति ही बनाती है।

अभिमान

अभिमान = अभिजात्य + मान

अंग्रेजी में एक मुहावरा है 'ब्लू ब्लड' अर्थात् राज परिवार से सम्बन्धित व्यक्ति। ब्लू ब्लड का तात्पर्य है कि खुद को इतना विशेष समझना कि ये प्रतीत होने लगे कि मेरा खून भी दूसरों से अलग नीले रंग का है। ऐसा नीली शिराओं को देखकर लगता है। अभिजात्य का तात्पर्य है, स्वयं को जाति, वर्ण, धर्म, पारिवारिक संपन्नता के आधार पर विशेष समझना। [illegible] आदत है कि वह खुद में उन विशेषताओं को ढूँढता है, जिनसे वह खुद को

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

यकीन दिला सके कि किस प्रकार वो दूसरों से भिन्न है। इन विशेषताओं को ही वह अपनी पहचान मानना चाहता है, व इसे सहेजना चाहता है। इसे सहेजने के लिये मन कई जुगत लगाता है। कई राजपरिवारों में अपनी पारिवारिक विशेषता को सहेजने के लिए, परिवार के भीतर ही विवाह करने का प्रचलन रहा है। शादियों में जातियों का बंधन लगाना भी इसी विशेषता व पहचान को सहेजने का तरीका है।

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

गंगा

गंगा = गं (गगन) + गा (गामिनी)

गंगा स्वर्ग से उतरती है, ऐसा विभिन्न कथाओं में बताया जाता रहा है लेकिन ये तस्वीर का सिर्फ एक पक्ष है। दूसरा पक्ष ये है कि गंगा स्वर्ग तक चढ़ती भी है। इसी कारण इसे गंगा या गगन गामिनी कहते हैं। स्वर्ग तक चढ़ना अर्थात् शक्ति का ऊर्ध्व दिशा में बढ़ना। एक पौधे में शक्ति जब ऊपर की ओर बढ़ती है तो यह पौधे को विकसित करती है। यही शक्ति ही फल और फूल के रूप में अभिव्यक्त होती है। भगीरथ ने तपस्या करके अपने भीतर उपस्थित इस शक्ति रूपी गंगा को प्रवाहित किया और भीतर उपस्थित शिव ने इस गंगा के वेग को थामकर, इसे अनंत या सृष्टि को वापस किया। और इस प्रकार वे प्रकृति के बंधन से मुक्त हुए।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

द्रवित

द्रवित अर्थात् द्रव रूप में परिवर्तित होना। हमारे भीतर शिला के समान ठोस है अहंकार और द्रव रूप में है स्वभाव या प्रकृति, जो खुद को किसी एक रूप में बाँधकर नहीं रखती। ये खुद को किसी भी स्वरूप में ढाल सकती है। लचीलापन व विनम्रता इसका गुण है और प्रवाहित होते रहना इसकी प्रकृति। ग्लेशियर में पानी बर्फ रूप में जमा रहता है और यही बर्फ जब पिघलती है तो नदी के रूप में उपयोगी बनकर, भूमि और जीवों की प्यास बुझाती है। अहंकार ही रूपांतरित हो स्वभाविक विनम्रता व दयालुता बन जाता है। ग्लेशियर की बर्फ जीवों के उपयोग की तब बनती है, जब वह जल के रूप में स्वयं को बदलती है। अहंकार सनातन नहीं है परंतु चक्र सनातन है। अहंकार रूपी चट्टाने आखिर में प्रकृति के प्रवाह में विलीन हो जाती हैं। शिला जितनी बड़ी हो, उसे उतने ही पानी के थपेड़े भी झेलने पड़ते हैं।

उद्यमी

उद्यमी = उद् + यमी

उद् अवस्था में रहते हुए जो यम के अनुसार जीवन व्यतीत करता है और इस प्रकार सतत् अपने अंतःकरण अथवा सॉफ्टवेयर पर काम करता है। जो अपने आंतरिक पौधे के विकास के लिये अपनी शक्ति का संचय करता है। जो शक्ति के अपव्यय को रोककर अपनी आंतरिक प्रकृति को अपना काम करने देता है। उद्यमी जानता है कि शरीर में रहने वाली ...ति की है, अतः वह उसमें कम से कम हस्तक्षेप करता है। वह जानता है कि इस

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

शक्ति का बेजा उपयोग कर्मफल उत्पन्न करता है। वह अपने भीतर की प्रकृति को स्वतंत्र करता है और इस प्रकार खुद अपनी स्वतंत्रता को प्राप्त करता है।

उद् अवस्था ही प्रेम की अवस्था है। न आकर्षण, न विकर्षण, न खिंचाव, न दुराव। ये वही प्रेम है जिसे हर व्यक्ति, हर वक्त ढूँढता रहता है। ये वही स्थिति है, जहाँ व्यक्ति रहना चाहता है। इसे खोकर ही वह असुरक्षित महसूस करता है।

प्रयास ही प्रार्थना है।

विवेक, स्वाभाविक कर्म और बोध के अधीन होकर जिया गया जीवन ही प्रार्थना हो जाता है। विद्यार्थी के लिये प्रार्थना है, अपना ध्यान पढ़ाई की ओर टिकाए रखना। ये करने के लिये उसे अपनी चंचलता और राह से परे चले जाने की आदत को नियंत्रित करना पड़ता है। विद्यार्थी का पढ़ाई के लिये समर्पण जितना उच्च कोटि का होगा, उसकी तैयारी भी उतनी बेहतर होगी। वृक्षों को मंदिर जाने की आवश्यकता नहीं बल्कि मंदिरों को फूलों, पौधों और वृक्षों से सजाया जाता है क्यूँकि अपने विकास के लिये उनका समर्पण ही उनकी प्रार्थना है। वृक्ष अपनी शक्ति का व्यय नहीं करते, मनुष्य करते हैं। इसी कारण मनुष्यों ने अपने-अपने धर्मों के अनुसार, अपने-अपने प्रार्थना स्थल बनाए हैं। वहीं वृक्ष फल और फूल बनाते हैं। मनुष्य अपने प्रार्थना स्थलों में अपने मन का भार उतारने जाता है। वहीं वृक्षों के पास मन नहीं, इसी कारण उन्हें मंदिरों की भी आवश्यकता नहीं।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

गुणा

गुणा = गुण + अ (शक्ति)

गुणों को ऊर्जा प्राप्त होने पर जीवन में गुणात्मक परिवर्तन आता है। जैसे बीज को जब प्रकृति की शक्ति प्राप्त हो जाती है तो वह पौधे में रुपांतरित हो जाता है। पौधा विकसित हो फसल में रुपांतरित हो जाता है। कुछ बीज असंख्य बीज पैदा कर देते हैं। अर्थात् प्रकृति के भीतर जीवन को गुणात्मक रूप से परिवर्तित कर देने की संभावना है। हर एक जीवन के भीतर प्रकृति उपस्थित है। व्यक्ति प्रकृति के इसी गुण का उपयोग अपने उद्देश्य व प्रयोजन की पूर्णता में कर सकता है बशर्ते उसका मन उसे ये करने की स्वतंत्रता दे और बाधा न खड़ी करे। खजाना यदि ताले में बंद हो तो हम चाहकर भी उसका उपयोग नहीं कर सकते। ताला खुलते ही, खजाना हमारे उपयोग के लिए प्रस्तुत है।

अहंकार व घमंड

अहंकार व घमंड दोनों ही एक दूसरे से अलग हैं। घमंड अहंकार की अगली अवस्था है। अहंकार अर्थात् अहंकारणम्। मंड अर्थात् घर। घमंड अर्थात् अहंकार द्वारा अपने बनाए घर को मजबूत करना।

अहंकार मानता है कि इस सृष्टि से अलग, मेरा अपना अलग अस्तित्व है। अहंकार कुछ और नहीं बस अंधविश्वास है। अहंकार ये भी नहीं देख पाता कि जिस अस्तित्व को वो अपना कहता है, पूरा का पूरा वो सृष्टि द्वारा दिए गए संसाधनों से ही बना है। सृष्टि से ...ने अलग अस्तित्व के अंधविश्वास को ढोते रहना और इसे मजबूत करना घमंड

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

कहलाता है। घमंड अपने चैन के खर्चे पर ही हो सकता है। अर्थात् घमंड को बनाए रखने के लिए और को खोना पड़ता है। घमंड और आराम की जोड़ी से आराम व चैन की जोड़ी जीवन को ज्यादा उपयोगी और उत्पादक बनाती है।

अंत

अंत = अं (अनुपस्थित) + त (तरण)

अंत के बाद जो कुछ भी बचा रहे वो प्रकाश है। अंत की सारी परिकल्पना जड़ता से जुड़ी है। जड़ता रुपांतरण को मान्यता नहीं देती। जड़ता अपने अंतःकरण और अस्तित्व को बनाए रखने की कोशिश है। जीवन सिर्फ चलने का ही नाम नहीं। जीवन तैरने की भी तैयारी है। यात्रा सिर्फ चलकर ही पूरी नहीं की जाती बल्कि तैरकर और उड़कर भी पूरी की जाती है। चलता शरीर है, तैरता जीव है और उड़ता परमहंस है। अंत मशीन का संभव है लेकिन मौकों का नहीं। मौके अनंत हैं क्यूँकि प्रकृति का चक्र सतत् है। ये एक लिमिटेड पीरियड ऑफर नहीं। प्रयास असफल हो सकते हैं, लेकिन प्रकृति नहीं। जीवन प्रयास हो सकता है परंतु प्रकृति सनातन है। परीक्षा आयोजित ही इस कारण होती है कि बच्चे पास हो सकें।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

विसर्जन

विसर्जन = वि + सर्जन

विसर्जन अर्थात् जिसका सृजन किया उसे विलोपित करना। सर्जन का विपरीत है विसर्जन। जिसका सृजन किया उसे विस्मृत करना या भूल जाना। विसर्जन का तात्पर्य है रुपांतरित करना। आकार को आकारहीन होते हुए देखना। विसर्जन का संदेश है कि आकार के मोह में पड़ने का कोई औचित्य नहीं है। कृति का सृजन होता है तो विसर्जन भी होता है। सृजन धरती पर होता है तो विसर्जन पानी में। धरती पर चलना संभव है तो पानी में तैरना। संदेश ये है कि जिसने पूजा की वो मोह में भले ही पड़ जाए लेकिन जिसकी पूजा होती है, वो सृजन और विसर्जन दोनों में राजी है। सृजन के पहले वह मुक्त था, सृजन के पश्चात् वह स्थिर रहा और विसर्जन के पश्चात् वह पुनः मुक्त है। जो स्थिर है, वो पूजनीय है। जो अस्थिर है वो पुजारी है।

यमुना व सरस्वती

यमुना = यम के माध्यम से प्रवाहित होने वाली शक्ति

सरस्वती = सम रस वती

यदि इस शरीर को एक पूर्ण सृष्टि माने तो यमुना इसमें उपस्थित वो धारा है जो यम (अहिंसा, सत्य, अपरिग्रह, अस्तेय और ब्रह्मचर्य) के अनुसार जीवन जीने पर प्रवाहित होती यमुना आगे जाकर उस धारा से मिल जाती है, जिसे गंगा कहते हैं। गंगा गगन की

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

ओर उठने वाली धारा है। हर व्यक्ति के भीतर एक तत्व है, जो हर जीव के भीतर समान है। इस तत्व से सम्बन्धित जो शक्ति है, वह सरस्वती या सम रस वती कहलाती है। ये सम रस ही सोमरस है। शिव जिस रस का पान करते हैं, ये वही सोमरस है। धरती की गंगा समुद्र से मिल जाती है तो शरीर के भीतर की गंगा ब्रह्मांड की अनंत धारा से। योगी जिन्होंने शरीर के भीतर की धाराओं को जाना, उन्होंने धरती पर उपस्थित धाराओं से उनकी समानता को देखा और इस प्रकार नदियों का नामकरण, आंतरिक अदृश्य धाराओं के नाम पर हुआ।

ऊर्जा

‿ = ऊर्ध्व गमन

⁀ = अधो गमन

शरीर धरती पर क्षैतिज दिशा में गति करता है और चेतना शरीर के भीतर ऊर्ध्व या अधो दिशा में गति करती है। गति ऊर्जा के माध्यम से होती है। चर प्राणी क्षैतिज दिशा में गति करते हैं और पादप जगत् मुख्यतः ऊपर की ओर बढ़ता है। गीता कहती है कि हर वो व्यक्ति अपना मित्र है जो स्वयं को अधोगति में नहीं डालता। यहाँ कृष्ण जीवात्मा की चर्चा कर रहे हैं। जीवात्मा के तल पर अधोगति का तात्पर्य आंतरिक गरीबी से है। वह व्यक्ति ऊर्ध्वरेता, है जिसने जीवन का उपयोग आंतरिक संपन्नता पाने में खर्च किया। ऊपर उठने जितना ही महत्वपूर्ण है, पाई गई प्रगति को स्थिर करना। प्रगति भले ही धीमी हो, लेकिन स्थायी हो। जीते हुए क्षेत्र को संभालना भी उतना ही जरूरी है।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

प्रस्थान

प्रस्थान = प्र (सत्य) + स्थान

प्रस्थान कीजिए अर्थात् स्वयं को खाली कीजिए ताकि भीतर स्थित सत्य के ऊपर उपस्थित सभी आवरण हट जाएँ। प्रस्थान अर्थात् सत्य की ओर गमन करना। प्रस्थान अर्थात् सही दिशा में आगे बढ़ना। प्रस्थान के साथ जुड़े हैं गति, दूरी, यात्रा और गंतव्य। ईश्वर तक की दूरी सभी के लिए एक समान है लेकिन मार्ग में बाधाओं का स्तर सभी के लिए अलग-अलग है। ये बाधाएँ हैं पूर्व जनित कर्मफल की, जो रास्ते में पत्थर या पहाड़ बनकर खड़ी रहती हैं। सतत् प्रयास ही इन बाधाओं को रास्ते से हटाकर, अपना मार्ग साफ़ करता है। गति निर्भर करती है मार्ग पर, गाड़ी पर और गाड़ी में ईंधन पर। आत्मज्ञानियों ने जीवन के अलग-अलग चरणों पर आत्मज्ञान को पाया है। यात्रा निर्भर करती है, चयन पर भी। यदि मन की मंजिल कोई और है तो वो उसी रास्ते पर जाएगा। इस स्थिति में समय ज्यादा लगना स्वाभाविक है।

करुण व करुणा

'करुण', मदद को पुकारते मन की आवाज़ है तो करुणा इस पुकार का अस्तित्व की ओर से आया जवाब है। प्रेम और सौम्य मन मिलकर करुणा बनते हैं तो करुणा से मन के अनुपस्थित हो जाने पर प्रेम बचता है। करुण व करुणा जिस एक बात पर सहमत हैं, वो है मदद। करुण को मदद चाहिए और करुणा उस मदद के लिए तैयार है। करुण है मन ... गा है शक्ति। करुण है आवश्यकता और करुणा है आपूर्ति। करुण के पास है ... करुणा के पास है समाधान। करुण उबरना चाहता है तो करुणा उबारने को

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

तैयार है। करुण असहाय है तो करुणा सहायता के साथ उपलब्ध है। करुण संभावना तलाश रहा है तो करुणा आश्वासन के साथ तैयार है। करुण के पास माँग है, तो करुणा के पास आपूर्ति। करुण, करुणा के लिए की गई प्रार्थना है।

विद्या

विद्या = विद्य + अ (उपस्थित)

जो उपस्थित है उससे सम्बन्धित सूचनाएँ विद्या कहलाती हैं। विद्या सूचनाओं का वो प्रवाह है जो दुनिया से व्यक्ति की ओर होता है। सूचनाओं की प्रकृति के अनुसार उन्हें अलग-अलग विषयों में बाँटा गया है। जैसे इतिहास, भूगोल, गणित, रसायन विज्ञान, भौतिक विज्ञान, जीव विज्ञान, हिन्दी, अंग्रेजी इत्यादि। इनमें से कुछ सूचनाएँ स्मृति में उतर जाती हैं तो कुछ बुद्धि में उतर कर आकार लेती हैं। तेज बुद्धि वालों में ये सूचनाएँ तेजी से प्रॉसेस हो जाती हैं। व्यक्ति को विद्या से जोड़ने में रुचि की भी निर्णायक भूमिका होती है। विद्वान अपनी बुद्धि के माध्यम से उन विषयों पर काम करके और सूचनाओं को पैदा करते हैं। इस तरह वे विषय को और समृद्ध बनाने में अपना योगदान देते हैं। इस प्रकार बुद्धि विद्या को और उन्नत करती है। जिससे विद्यार्थियों को समय के साथ ज्यादा बेहतर सूचनाएँ मिलती हैं, खुद में उतार लेने को।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

वैराग

वैराग = वर्तमान से राग

जो अपने समय का उपयोग दुनिया द्वारा उपलब्ध कराए गए अनुभव को बटोरने में न करके, स्वभावजनित कर्मों को करने में व्यतीत करे। इससे वह वर्तमान में अपनी स्थिति को और सुदृढ़ करता है। वहीं रागी को आज और कल से राग है। वो अपने कल को आज से ज्यादा बेहतर और सुरक्षित बनाना चाहता है। वहीं वैरागी चाहता है कि उसका वर्तमान और गहरा होता जाए। रागी को दुनिया से राग है और वैरागी को खुद से। रागी मानता है कि पाने लायक दुनिया है और वैरागी जानता है कि पाने लायक तो वो खुद है। रागी दुनिया को पाने के लिए खुद को दाँव पर लगा सकता है, तो वैरागी खुद के लिए दुनिया के साथ अपने सम्बन्ध को दाँव पर लगा सकता है। जिसने खुद का स्वाद चख लिया, वो दुनिया के स्वाद के लिए ललायित नहीं रह जाता। वो अब खुद में गहरा उतरना चाहता है।

काशी

काशी = का + श + ई

काशी अर्थात् कामनाओं के शमन की शक्ति।

धरती से ऊपर उठा उपग्रह जब इतनी ऊँचाई पर आ जाए कि धरती का गुरुत्व बल उस पर काम न करे, तो वो धरती के प्रभाव से मुक्त हो जाता है। ठीक उसी प्रकार शरीर की आंतरिक शक्ति के माध्यम से जब चेतना, इतनी ऊपर उठ जाती है कि मन द्वारा लगाया नाओं का बल क्षीण पड़ जाए तो चेतना स्वतंत्र हो, बाहरी प्रभावों से मुक्त हो

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

जाती है। चेतना की इसी अवस्था को काशी कहते हैं। कामनाएँ उत्तेजना लाती हैं और उत्तेजना अस्थिरता। काशी अस्थिरता से मुक्ति की स्थिति है। ये अस्थिरता ही बँधन है। काशी वह स्थिति है जब चेतना मन के बँधन से मुक्त हो, इच्छाओं के पाश से भी मुक्त हो जाती है। इसी कारण काशी को मोक्ष से जोड़ा गया है। काशी गंतव्य है लेकिन शरीर का नहीं, चेतना का। काशी को शिव की नगरी इसी कारण कहा गया है कि शिव कामनाओं से मुक्त हैं। इसी कारण वे सत्य हैं।

स्वार्थ

आम बोलचाल में स्वार्थ शब्द का उपयोग, केवल अपनी इच्छापूर्ति पर ही ध्यान देने या अपनी महत्वाकांक्षापूर्ति पर ही ध्यान देने के लिये किया जाता है। परंतु स्वार्थ का वास्तविक अर्थ इच्छापूर्ति नहीं बल्कि इच्छाओं से मुक्ति से जुड़ा है। घरों में कभी-कभी मोह का त्याग कर देने वाले को भी स्वार्थी कहा जाता है। जो 'स्व' को अर्थपूर्ण बनाने चलेगा, वह निर्मोही तो होगा लेकिन प्रेमी भी वही होगा। स्व के आसपास इच्छाएँ नहीं है, स्व के आसपास प्रेम अवश्य है और प्रयोजन भी है। जिसे समाज स्वार्थी कहता है, उसके पास इच्छाएँ तो होंगी लेकिन प्रेम न होगा। जो निर्मोही हुआ, उसके जीवन का तरीका भी बदल जाता है, वह आत्मकेन्द्रित होने लगता है। इसी उसे उससे जुड़े लोगों ने से स्वार्थी कहना प्रारंभ किया होगा। ऐसे लोगों को समाज स्वार्थी नहीं मानता। बुद्ध, महावीर, और नानक को शायद उनकी पत्नियों ने स्वार्थी कहा हो लेकिन वास्तव में वे निर्मोही ही हैं।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

भावना

भावना अर्थात् भीतर के प्रकाश व वर्तमान या स्थिरता से विपथन। रोशनी के स्त्रोत के माध्यम से यदि समझने का प्रयास किया जाए तो सूरज, प्रकाश या 'भा' है। जो पूरी दुनिया में और सभी के लिए एक समान है। कमरे और घरों में लगी रोशनी भाव है। जो हर व्यक्ति के लिए अलग-अलग है और डिस्को लाइट्स 'भावना' की तरह हैं, जो लगातार बदलती रहती हैं। चेहरा वो कैनवास है, जिसपर भावनाएँ उभरती रहती हैं। इसी कारण 'इमोजी' में भावनाओं को व्यक्त करने के माध्यम के रूप में मुख्यतः चेहरे को चुना गया। भावनाओं में उतार-चढ़ाव है और बदलाव है। जिनका प्रभाव व्यक्ति के अंतस पर पड़ता है। भावना और भाषा में गहरा सम्बन्ध है। भावनाएँ अभिव्यक्त होना चाहती हैं। इसी कारण भाषाएँ विकसित और समृद्ध हुईं। चित्र और मन में उठी तरंगे ही भावनाएँ हैं। जो चेहरे पर आती हैं तो अभिनय बन जाती हैं और वाणी में आती हैं तो भाषा बन जाती हैं।

द्वारका

द्वारका = द्वार + का (शक्ति)

'का' का तात्पर्य है शक्ति। और 'का' से 'म' अर्थात् मन के जुड़ जाने पर काम पैदा होता है। मन के नियंत्रण में आई शक्ति ही काम है। द्वारका अर्थात् शक्ति का द्वार अर्थात् राधा का द्वार। शक्ति के द्वार के भीतर है, शक्ति का साम्राज्य। इसी शक्ति के साम्राज्य के राजा हैं कृष्ण। शक्ति का साम्राज्य ही, प्रेम का साम्राज्य भी है। कृष्ण की शक्ति ही उन्हें नटखट, भरा व निर्भीक बनाती हैं। कृष्ण का प्रेम अर्जुन के लिए है तो द्रौपदी के लिये भी

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

है, बिना किसी विभक्तिकरण के। जो सुख से दूर है वो किसी न किसी के मोह से बँधा है। जो सुखी है, इसी कारण वो मोहित नहीं और यही उसके प्रेम का कारण है। काम सुख नहीं, उत्तेजना है। प्रेम सुख है। 'का' अर्थात् शक्ति ही, 'कृ' अर्थात् कृपा है। कृपा शक्ति है। द्वारका का तात्पर्य है प्रेम का द्वार। गोप भक्त हैं तो कृष्ण भगवान हैं और राधा हैं भक्ति अर्थात् शक्ति। राधा गोपियों के साथ हैं अर्थात् शक्ति भक्त के साथ हैं।

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100911/2021
Date 05/03/2021

दुःख

दुःख अर्थात् जब खालीपन दुष्कर हो उठे।

हमारा अपना 'ध्यान' ही व्यक्ति के सुख का कारण है। यदि यह ध्यान आसक्ति के रूप में किसी और से लग जाए तो खाली वक्त बिताना अत्यंत मुश्किल हो उठता है। हमारे एकांत का साथी हमारा अपना 'ध्यान' है। यह ध्यान ही व्यक्ति को वर्तमान में स्थित करता है। या तो हमारी स्मृतियाँ हमें दुःख देती हैं, क्यूँकि लगता है कि जो भी मूल्यवान था, वो पीछे छूट चला। या फिर हमारी आसक्तियाँ हमें दुःख देती हैं, क्यूँकि लगता है कि जो मूल्यवान है, भविष्य में भी वो हमारे साथ टिकेगा या नहीं। असुरक्षा दुःख है।

खुद को खोकर व्यक्ति दुनियाँ में खो जाता है। वो अपूर्णता महसूस करता है। इसी कारण औरों में अपनी पूर्णता को ढूँढता है। ये अपूर्णता की स्थिति ही दुख है। अपनी चेतना को छोड़, इन्द्रियों पर निर्भर हो जाना दुःख है। इन्द्रियाँ परिवर्तनशील व मायावी जगत् दिखाती हैं। मन की अकारण प्रसन्नता सुख की स्थिति है। खुद से चूककर, हर चीज में खुद को ढूँढना भी दुःख ही है। व्यक्ति की सबसे बड़ी संपदा, वह स्वयं है। इसलिए खुद को खोना पनी सम्पदा से चूक कर, दुनिया द्वारा दी गई भूमिका को निभाने के लिए बाध्य

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

हो जाना। एक धनवान व्यक्ति की याददाश्त चली गई और किसी कारणवश वह अपने घर से दूर हो गया। किसी व्यक्ति ने दया करके, उसे अपने यहाँ सहायक रख लिया। कुछ सालों बाद याददाश्त वापस आती है, तब वह जान पाता है कि वह औरों से पाने की स्थिति में नहीं बल्कि प्रदान करने की स्थिति में है।

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

भवसागर

भव अर्थात् 'होना'। वर्तमान में स्थित होना।

यह दुनिया व्यक्ति को सिर्फ 'होने' के लिये प्रेरित नहीं करती, अपितु कुछ बनने के लिए उत्तेजित करती है। भाव व्यक्ति को सिर्फ 'होने' की तरफ लेकर जाता है तो भावना व्यक्ति को कुछ बनने की तरफ ले जाती है। वह शासक बनता है, अधिकारी बनता है, पिता बनता है, पुत्र बनता है, धार्मिक बनता है, पुरुष बनता है, महत्वाकांक्षी बनता है।

सागर में एकरूपता है। वहीं कुछ बनने में विभिन्नता है, भीड़ है और विकल्प है। इस कोने से उस कोने तक सागर एक समान है। ठीक इसी प्रकार अनुभव असंख्य तरह के हैं लेकिन अनुभूति एक समान है। धरती पर अलग-अलग तरह की रेखाएँ खिंची हुई हैं लेकिन रेखाएँ सागर पर नहीं टिकतीं। धरती को बाँटा जा सकता है, सागर को नहीं। इसी प्रकार वर्तमान नहीं बँटा परंतु वर्तमान से अलग जो समय है। वो कल, आज और कल में बँटा है।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

कैलाश

कैलाश अर्थात् कैवल्य आकाश।

कैलाश वो शिखर है जो हर व्यक्ति के भीतर उपस्थित सबसे ऊँची चोटी है। ये धरती और आकाश के मिलने का बिन्दु है। जहाँ धरती समाप्त और आकाश ही आकाश चारों ओर व्याप्त हो जाता है। ये हर एक व्यकित की चेतना का व्यक्तिगत आकाश है। ये वो आकाश है, जहाँ चेतना अकेले ही उड़ान भरती है। इस आकाश में काम और उसके सहचरों (क्रोध, लोभ, मोह ओर भय) की उपस्थिति नहीं है और न ही वे बँधन हैं जिनसे जीव बँधा रहता है। कैलाश ही जीव का वह उत्तरी ध्रुव है, जहाँ पर ध्रुव रूप में शिव विराजमान रहते हैं। काम शिव तक नहीं पहुँच पाता। इसी कारण इससे परे, चेतना काम से मुक्त रूप में उपस्थित रह सकती है। कैलाश हर एक व्यक्ति का अपना व्यक्तिगत माउंट ऐवरेस्ट है। ऐवरेस्ट बाहर है और कैलाश का रास्ता भीतर से है। कैलाश की यात्रा व्यक्ति की अपनी एकाकी यात्रा है।

विशेष

विशेष अर्थात् विजातिय ही शेष

मन को जिस बात से संतोष मिलता है वो है अपने विशेष होने से। मन आँखों से अपनी सुंदरता देखना चाहता है। कानों से वो अपनी प्रशंसा सुनना चाहता है। मुँह से वो अपनी उपलब्धियाँ बताना चाहता है। मन उम्दा इत्रों और खुशबुओं को खरीदता है क्यूँकि अपने [illegible] उठती मनमोहक खुदबू उसे भाती है। अपनी त्वचा को वो मुलायम और दाग रहित [illegible] हता है। अपनी बौद्धिक क्षमता व गुण उसे बहुत पसंद है। कुल मिलाकर वह खुद

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

को विशेष देखना, मानना और सुनना चाहता है। खुद में दूसरों से कम विशेषताएँ देखने पर मन खिन्न हो उठता है और मानता है कि जीवन ने उसके साथ पक्षपात किया है। वो उन्हें खुद का नजदीकी समझता है, जो उसे विशेष मानते हैं और इस तथ्य को जतलाते हैं। मन अपनी विशेषता को सहेजना और बढ़ाना चाहता है।

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

महात्मा

महात्मा = महती + आत्मा

महात्मा वह है, जिसने 'मैं' से 'आत्मा' तक का रुपांतरण जीवन में प्राप्त किया। वह रुपांतरण ही मनुष्य से महात्मा तक की यात्रा है। महात्मा मन से चालित नहीं होता बल्कि मन के माध्यम से अपने प्रयोजनों को पूर्ण करता है। महात्मा का जीवन प्रयोजनपूर्ण होता है। बाहर वह अपने प्रयोजन पर काम करता है और भीतर वो सतत् स्वयं पर कार्य करते हुए स्वयं को वासनाओं से मुक्त बनाने में लगा रहता है। महात्मा महत्वाकांक्षा से रहित है। अपनी सामाजिक स्थिति और स्वीकार्यता बढ़ाने में उसकी रुचि नहीं है। न ही अपने वंश से वो कोई अपेक्षा करता है। उसके प्रयास अपनी पीढ़ियों को सुदृढ़ करने के लिए नहीं है और न ही उसकी इच्छा है कि उसकी पीढ़ियों के माध्यम से लोग उसे जानें। वो अपने भीतर की सीढ़ियों को बनाने में लगा है। वो अपनी कमियों के साथ नहीं रहना चाहता। उसके प्रयास अपने मन को क्षीण करने के लिए हैं। वो अपने आहार को नियंत्रित और दिनचर्या को संतुलित रखना चाहता है।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

वैधव्य

वैधव्य = वैधता का व्यय

विवाह सामाजिक स्वीकार्यता, शारीरिक व भावनात्मक निर्भरता और प्रजनन की प्रवृत्ति को वैधता प्रदान करता है। व्यक्तिगत तल पर जो भावनाओं का महत्व है, सामाजिक तल पर वही वैधता का महत्व है। भावनात्मक और स्वाभाविक तल पर जुड़े, दो व्यक्तियों को वैधता से लेना-देना नहीं तो समाज को आपसी भावनात्मक व स्वाभाविक सम्बन्धों से सरोकार नहीं। विवाह पहले एक पारिवारिक संस्था थी, जो बाद में सामाजिक स्तर पर स्वीकार कर ली गई और विवाह का पंजीकरण होने लगा। जिससे विवाह को वैधता मिली।

हर निर्माण के साथ रखरखाव जुड़ा है तो हर संस्था के साथ जिम्मेदारी। ये जिम्मेदारी है, संस्था को चलाने और उसे बनाए रखने की जिम्मेदारी। पत्नी के न रहने की स्थिति में पुरुष को 'विधुर' व पति के न रहने की स्थिति में स्त्री को 'विधवा' कहा गया। दोनों शब्द ही विधि या वैधता से जुड़े हैं। मुख्यतः 'विधि' व्यक्ति के अधिकारों की सुरक्षा के लिये है। वैध तथा अवैध का निर्णय भी राज्य ही करता है। वैधता के नुकसान को वैधव्य कहते हैं। वैधव्य का अर्थ है कि किसी अन्य के साथ शारीरिक, भावनात्मक व प्रजनन की प्रवृत्ति को सामाजिक स्वीकार्यता नहीं प्राप्त होगी। जब तक कि विधि द्वारा स्थापित संस्था में सम्बन्ध का पंजीकरण नहीं कराया जाता।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

सधवा

सधवा = सध + वा

जिसके साथ वाहक है। जिसका वाहक सधा हुआ है। शादीशुदा स्त्री को सधवा कहते हैं। यहाँ वाहक का तात्पर्य पति से है। जैसे गाड़ी का ड्रॉइवर यात्री को मंजिल तक पहुँचाने की जिम्मेदारी लेता है, वैसे ही विवाह नामक संस्था, पत्नी के रखरखाव की जिम्मेदारी पति को देती है। पत्नी भी चाहती है कि कोई हो जो उसके और बच्चे की आवश्यकताओं को पूरा करे और भविष्य की असुरक्षाओं को दूर करने के लिये काम करे। यदि स्त्री आत्मनिर्भर है तो वो अपनी भावनात्मक आवश्यकताओं और सामाजिक सुरक्षा के लिये किसी का साथ चाहती है। वहीं पुरुष को अधिकारों, शारीरिक व भावनात्मक आवश्यकताओं की पूर्ति में रुचि है। जीवनभर के प्रयासों के फलस्वरूप वो जो अर्जित करता है, उसके लिये वो एक उत्तराधिकारी चाहता है। साथ ही अपने भविष्य की असुरक्षाओं का भी उसे ख्याल है।

कृपा

कृपा = कृ + पा

कृपा अर्थात् पराशक्ति पाना। कृपाशंकर अर्थात् कृ रूपी शक्ति को पाकर ही संकर शंकर होते हैं। शंकर अर्थात् शंका रहित। इसी कृ रूपी शक्ति से ही फल-फूल, अनाज व फसलें तैयार होती हैं। इसी से जंतु जगत् उत्पन्न, विकसित व अपना रखरखाव करता है। इसी से संकर, शंकर हो जाते हैं व सिद्धार्थ बुद्ध हो जाते हैं। इसी से समस्त जीव जगत् चेष्टा करता ...ाक्ति से ही सभी कर्म हैं। इसी से सभी क्रियाएँ हैं और इसी से योग भी है। इसी

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

शक्ति के माध्यम से काम भी है और इसी शक्ति के माध्यम से इच्छाशक्ति भी है। जीव इस शक्ति को ही खर्च करके, जगत् के अनुभवों को खरीदता है। योगी इसी शक्ति का संचय करके, प्रकृति के बँधनों से मुक्त भी होता है। इच्छुक को यही शक्ति कृपा रूप में चाहिए ताकि वो अपनी इच्छाओं की पूर्ति कर सके। योगी को यही शक्ति प्रेम रूप में चाहिए, जिससे वो सभी भयों, अस्पष्टता व भ्रमों से मुक्त हो सके।

कृषि व कृपण

कृषि = जो पराशक्ति पर निर्भर है।

कृपण = कृपा + कारण

कृषि में वे वनस्पतियाँ उगाई जाती हैं, जिनका उपयोग भोजन बनाने में किया जा सके। पराशक्ति ही सूक्ष्म गुणों को स्थूल वनस्पतियों, अनाजों और फलों में बदल कर स्वयं उनमें समाहित हो जाती है। पूरी कृषि इस शक्ति की वजह से ही है। इस शक्ति की अनुपस्थिति में न अनाज ही विकसित हो सकते हैं और न पक ही सकते हैं। वनस्पतियाँ व फसलें सूर्य की ऊर्जा को सोखकर, इसे अन्य जंतुओं को उपलब्ध कराती हैं। मनुष्य अपने खाने लायक भोजन तो उगा लेता है लेकिन दूसरे जंतुओं के खाने लायक वनस्पतियाँ प्रकृति स्वयं ही उगा देती है। घास स्वतः ही उग आती है और गायों को उनका भोजन उपलब्ध करा देती हैं। दूसरे शाकाहारी जानवरों के लिये वनस्पतियाँ प्रकृति तैयार कर देती है। कृपण वह है जो अपनी इच्छाओं को, दूसरों की आवश्यकताओं से अधिक महत्व देता है।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

प्रारब्ध

प्रारब्ध = प्रारंभ से लब्ध

प्रारब्ध अर्थात् जिसे लेकर जन्म लिया गया। जो जन्म से ही साथ है।

कुछ बच्चे धनवान कुल में पैदा होते हैं तो कुछ बच्चों के पास किसी क्षेत्र में, विशेष प्रतिभा होती है। कुछ बच्चों की बुद्धि प्रारंभ से ही तीक्ष्ण होती है तो कुछ बच्चों को ऐसे अभिभावक मिलते हैं जो तपस्वी व मृदु स्वभाव वाले होते हैं। कुछ बच्चों को बेहतर अवसर व बेहतर मार्गदर्शन मिलता है। कोई लड़का तो लड़की रूप में जन्म लेता है। कोई आसुरी तो कोई दैवीय प्रकृति को लेकर पैदा होता है। यदि बच्चा एक पैकेज है तो उस पैकेज में जो कुछ भी उपस्थित है, वो बच्चे का प्रारब्ध है। यदि बच्चे को जन्म के साथ कोई शारीरिक समस्या है तो वो उसका प्रारब्ध है। प्रारब्ध में कुछ तत्व सकारात्मक तो कुछ नकारात्मक हो सकते हैं। कुछ बच्चों को प्रारंभ से ही प्यार की पर्याप्त खुराक मिलती है, जिससे उनके प्यार का पात्र, आगे जीवन में भी भरा रहता है।

वैदेही

वैदेही = विदेही = विजातिय है देह

दो प्रकार की स्थितियाँ हैं – देही और विदेही। देही वह स्थिति है, जिसमें चेतना देह में स्थित हुई इसे ही अपना अस्तित्व मानती रहे, क्यूँकि अपने चारों ओर उसे ये देह ही दिखाई देती है। ठीक वैसे ही जैसे बीज से निकलने वाला अंकुर, जब तक धरती के भीतर होता है उसके चारों ओर गतिरोध और अंधकार होता है। वही अंकुर जब धरती के ऊपर है तो उसके चारों ओर मुक्त आकाश होता है। ताज़गी और रोशनी होती है तथा

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

मुक्त रूप से विकसित होने की स्वतंत्रता होती है। ठीक वैसे ही, व्यक्ति की चेतना भी पौधे की ही तरह विकसित होती है। वह भी ऊपर की ओर उठती है। पहले वह देह को अपने चारों ओर पाती थी, अब वह आकाश को अपने चारों ओर पाती है और जान जाती है कि शरीर से परे भी उसका अपना एक स्वतंत्र अस्तित्व है। यह अवस्था ही विदेही कहलाती है।

जिज्ञासा

जिज्ञासा = जि + अज्ञ + आसा

जिज्ञासा अर्थात् जानने की आशा। ज्ञान की आशा।

हमारी हर जिज्ञासा के मूल में हमारी अपनी खोज है। ये जिज्ञासा तब तक बनी रहती है, जब तक व्यक्ति खुद को पा न ले। दुनिया से मिलने वाली कोई भी सूचना, हमारी जानने की प्यास को नहीं बुझा पाती। दुनिया यदि अपनी सभी गुप्त सूचनाएँ भी हमें दे दे, तो भी हमारी जिज्ञासा शांत नहीं होगी क्यूँकि प्यास पानी से बुझती है, खाने से नहीं और भूख खाने से बुझती है पानी से नहीं। दुनिया अनुभव देती है, जानकारी देती है लेकिन ज्ञान नहीं। आशा का तात्पर्य है शक्ति की उपस्थिति। जिज्ञासा का तात्पर्य है, जिसे जानने पर शान्ति के द्वार खुल जाएँ। जिज्ञासा जानना चाहती है कि ये जो मेरे भीतर कम्पन्न है, इसे थामने का क्या उपाय है? क्या ये कभी थमता भी है? भीतरी स्थिरता के आने के साथ ही जिज्ञासा शांत होती है।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

यज्ञ

यज्ञ = य + ज्ञ

यम को जानना व उसके समान बरतना ही 'यज्ञ' है। अहिंसा, सत्य, अपरिग्रह, अस्तेय व ब्रह्मचर्य में बरतते हुए, व्यक्ति अपने उस सूक्ष्म भाग से परिचित हो जाता है जो मन, बुद्धि और अहंकार से परे है। वह सूक्ष्म भाग ही 'स्व' या सेल्फ है। उसे ही 'आत्म' कहते हैं ओर उसे पाना 'आत्मज्ञान' कहलाता है। यज्ञ रुपांतरण या सेल्फ ट्रान्सफर्मैशन पर सतत् कार्य करता रहता है। यज्ञ का एक ही संदेश और ध्येय है और वो है रुपांतरण। जीवन अगर यज्ञ बन जाए तो जीव रुपांतरित होने लगता है। जीव के रुपांतरण से जो मिलता है, वही 'स्व' या 'सेल्फ' है।

बलि

बलि = बल + ई

बल के माध्यम से शक्ति को दबाना या शक्तिहीन करना। अपने किसी ध्येय या इच्छा के लिए, किसी और को उसके अवसर से वंचित कर देना बलि कहलाता है। जीवन एक अवसर या मौका है। जो हर एक को प्राप्त होता है और इसे देने वाली है प्रकृति। हत्या और बलि में अंतर है। हत्या द्वेष, भय या लोभ के वशीभूत होकर की जाती है। जिसमें द्वेष या लोभ सीधे उस प्राणी से जुड़ा होता है। बलि का प्रयोजन अराध्य को कुछ अर्पित करना है। इसमें लोभ सीधे अराध्य से जुड़ा है कि अराध्य देव या देवी कामनाओं को पूर्ण करेंगे। ता के वशीभूत होकर की जाती है। मान्यता वे सूचनाएं हैं, जो क्रमशः विकसित

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

होती हैं। इन्हें एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति को देता है। बलि मानने पर निर्भर है। जानने से इसका कोई लेना-देना नहीं। वास्तव में बलि के पीछे है इच्छापूर्ति की लालसा। ये लालसा इतनी बलवती है कि किसी का जीवन छीन लेने को भी तैयार हो जाती है। बलि का मूल अर्थ है, बल में आसक्ति का त्याग। जीव के भीतर के असुर की बल में आसक्ति है। बल में आसक्ति को छोड़कर व्यक्ति अपने भीतर की असुरता को स्वाहा कर देता है।

बलि के मूलतः तीन पक्ष हैं।

1. जिसकी बलि दी जाए।

2. जिसे बलि अर्पित की जाए।

3. जो बलि चढ़ाता है।

जिसकी बलि दी जाती है, वो है हमारे भीतर का जानवर। अर्थात् अपने भीतर के जानवर को समाप्त करना। जानवर की अनुपस्थिति में आंतरिक शक्ति सुदृढ़ होती है। यही सुदृढ़ शक्ति ही कृपा रूप में उपलब्ध होती है।

तीसरा पक्ष है, बलि चढ़ाने वाला अर्थात् जिसे कृपा चाहिये। हमारे भीतर की प्रकृति या इच्छाशक्ति ही भीतरी जानवर को नियंत्रित करती है। हर बार जब लालसा रूपी जानवर सिर उठाता है। यही प्रकृति या इच्छाशक्ति ही उसे नियंत्रित करती है।

एकाग्र

एकाग्र = एक + अग्र

एकाग्र अर्थात एक आगे और सारा ध्यान उसके पीछे। ध्येय आगे और सारा प्रयास उसके [illegible] आगे एक न होकर अनेक हों तो ध्यान कई दिशाओं में बंट जाएगा। अनिर्णय

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

की स्थिति आ जाएगी। प्रयास कमजोर पड़ जाएँगे। काम का पूरा होना संदिग्ध हो जाएगा। कई दिशाओं में एक साथ काम करना पड़ेगा। इसमें बुद्धि की मदद और सुझाव लेने पड़ेंगे। बुद्धि काम की पूर्णता पर ध्यान देती है, नैतिकता या अनैतिकता पर नहीं। इन सभी बातों के पीछे कारण होगा, और वो है मन। मन कई चयन एक साथ कर लेता है और उन सभी पर वो काम करना चाहता है। कई लक्ष्यों पर एक साथ काम करने से, शक्ति कई दिशाओं में बँट जाएगी और जिसका सीधा असर काम की गुणवत्ता और शुद्धता पर पड़ेगा। संसाधन और समय दोनों व्यर्थ होंगे। व्यक्ति के आसपास यदि कोई सबसे ज्यादा एकाग्र है तो वो है पेड़। और इसके पीछे वजह ये है कि वो इन्द्रियों के बँधन से मुक्त हैं।

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

आवेश

आवेश = आ (उपस्थित) + वेश (आवरण)

वह आवरण जो मूल स्वरूप के ऊपर धारण किया जाए। तात्पर्य ये है कि आवेश बाहरी तल पर होते हैं। आवेश को धारण व उनका त्याग किया जा सकता है। आवेशों के भीतर जो उपस्थित है, वो उदासीन है। मन की उपस्थिति में आवेश धारण किये जाते हैं और मन की अनुपस्थिति में वे आवेश विरल होकर लुप्त हो जाते हैं। आवेशों की उपस्थिति में ही क्रिया और प्रतिक्रिया होती है। आवेशों की अनुपस्थिति में बस उपस्थिति होती है। जो बस उपस्थिति है, वो क्रिया-प्रतिक्रिया से रहित है। जहाँ आवेश है, वहाँ शक्ति का ह्रास भी है। संयमी होना आवेशों से मुक्त होने का उपाय है। मन की आवेश से तुलना की जा सकती है और प्रेम की शक्ति से। जहाँ प्रेम है वहाँ आवेश नहीं, इसी कारण मन भी नहीं। जहाँ आवेश है, वहाँ प्रेम नहीं और इसी कारण शक्ति भी नहीं।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

लोभ

लोभ = ल (लेना) + उभय (दोनों)

व्यापार में लेना और देना दोनों होता है। लेकिन लोभ को मोल चुकाने में रुचि नहीं। वो बस पाना चाहता है। छल या बल के द्वारा। लोभ दूसरे के अधिकार से कहीं ज्यादा अपनी लालसा को प्राथमिकता देता है। लोभ न सम्मान ही पाता है और न आदर। लोभ और अनैतिकता एक दूसरे के संगी साथी हैं। एक के उपस्थित होने पर, दूसरा प्रकट हो ही जाता है। इसके ठीक उलट जहाँ नैतिकता होती है, वहाँ पारदर्शिता होती है क्यूँकि बुद्धि का दख़ल अति सीमित हो जाता है। लोभ पतन का कारण इसलिये बनता है कि ये अपने भीतर, बुद्धि की जड़ों को बहुत मज़बूत कर देता है। साथ ही कर्मफल और स्मृति के बोझ को काफी बढ़ा लेता है। जितना भार बढ़ता जाएगा, नाव के लिये तैरना उतना ही मुश्किल होता जाएगा।

❀ ❀ ❀

विप्र

विप्र = विजातिय के भीतर उपस्थित सत्य।

विप्र को ब्राह्मण भी कहा जाता है। विप्र वह है, जिसे अपने भीतर के विजातिय तत्व और सत्य के बीच भेद पता है। जिसने जन्म लिया विजातिय के साथ परंतु जीवन में वो सत्य के साथ हो चला। विप्र वह है, जिसका जीवन रुपांतरित हुआ है। जो जन्म से नहीं, स्वाभाविक कर्म से ब्राह्मण हुआ। ब्राह्मण शास्त्रों का अध्ययन करके नहीं बनते। ब्राह्मण बनते हैं स्वाध्याय से। जो अपने साथ हो गया, वो स्वाध्यायी हो गया। जिसने खुद को पढ़ [illegible] अपने भीतर के विजातिय भाग को भी जान गया। जानना जड़ को नहीं, जानना

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

है चेतन को। विप्र जड़ और चेतन के बीच भेद को जानता है। जड़ के साथ है पदार्थ और ऊर्जा तो चेतन के साथ है चैतन्य और शक्ति। जड़ के साथ है स्मृति तो चेतन के साथ है चेतना। चेतन जड़ को भोगता है। जड़ यदि संपदा है तो चेतन ही उसका उपयोग करता है। विप्र ने चंचलता को भी देखा है और वह स्थिरता को भी जानता है।

विकल्प

विकल्प = विजातिय + कल्पित

जड़ और चेतन के संयोग से जीवन आकार लेता है। जड़ तत्व है विजातिय तथा चेतन तत्व है सजातिय। कल्पनाएँ चित्त में जन्म लेती हैं, जिन्हें मन आँखों के सामने साकार होते हुए देखना चाहता है। कल्पना को साकार, जड़ तत्व के माध्यम से ही किया जा सकता है। जड़ तत्वों से जीव का वास्ता, जीवन में ही पड़ता है। इसलिये हर कल्पना को आकार देने के लिए, चेतन तत्व को जीवन में आना होता है। जीवन में मनुष्य अपने विकल्पों पर कार्य करता है। जब तक जीव में विकल्प है, तब तक जीवन है। जब मनुष्य की विकल्पों में रुचि कमजोर होने लगती है तो उसके भीतर का जीव रुपांतरित होने लगता है। जब तक विकल्पों में रुचि गहरी रहती है, तब तक जीव और जीवन का आपसी खेल चलता रहता है।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

निर्विकल्प

निर्विकल्प = निः + वि + कल्प

निर्विकल्प अर्थात् बिना कल्पना या विजातियता के।

जब चित्त शुद्ध हो जाता है, तब उसमें कोई तरंग नहीं उठती और न ही उभरते हैं चित्र ही। कल्पना के अभाव में विकल्प भी क्षीण होने लगते हैं। अंततः विकल्पों पर काम करने की रुचि भी क्षीण होती जाती है। निर्विकल्पता की स्थिति को समाधि कहा गया है। क्यूँकि जब विकल्प न होंगे, तब होगी शून्यता। मनुष्य और परमात्मा में अंतर ये है कि परमात्मा खुद को पूर्णतया थामकर, पूर्ण नियंत्रण में स्थित है। वहीं मनुष्य का अपना नियंत्रण, उसके अपने हाथों से निकलकर मन के हाथों में चला गया है। मन मनुष्य को चलाता है। वहीं परमात्मा से ये संपूर्ण जगत् चालित है। ऐसा नहीं कि परमात्मा की सक्रियता से जगत् चलता है, बल्कि परमात्मा की पूर्ण आत्मकेन्द्रित शक्ति, इस जगत् का स्वतः ही संचालन करती है।

❀ ❀ ❀

वैकुण्ठ

वैकुण्ठ अर्थात् बिना कुंठा के।

चेतना की वह स्थिति, जहाँ पर विकास के कुंदित होने की सभी संभावनाएँ समाप्त हो जाती हैं। अर्थात् चेतना मन के प्रभाव से मुक्त हो, क्षीर सागर अर्थात् शक्ति सागर में स्थित हो जाती है।

वैकुण्ठ में चेतना शेषनाग रूपी शक्ति और क्षीर सागर रूपी लोक से लक्ष्मी रूपी सहायक [illegible]ा में पूर्णतः विश्राम करती है। भगवान विष्णु की नाभि से निकले कमल पर

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

प्रजापति ब्रह्मा विराजमान दिखाई देते हैं। तात्पर्य यह है कि विष्णु रूपी चेतना जब और सूक्ष्म होती है तो वह ब्रह्मा रूप में उपस्थित हो जाती है। ब्रह्मा रूप में चेतना पर समय का प्रभाव, अति क्षीण हो जाता है। वैकुण्ठ लोक भी समय की परिधि में है क्यूँकि इससे साकार भले न किया जा सके परंतु इसकी कल्पना की जा सकती है और चित्रित किया जा सकता है।

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. -L-100011/2021
Date 05/03/2021

आत्मा

आत्मा = आत्म + शक्ति

आत्मा चेतना की परिपक्व स्थिति है। आत्मा को ही परमहंस कहते हैं। चेतना ही आत्मा नहीं है। चेतना को सतत् यज्ञ समान जीवन जी कर, स्वयं को आत्मा में रूपांतरित करना होता है। संयम चेतना को ईंधन उपलब्ध कराता है। संयम अर्थात् यम के साथ एक आवृत्ति पर आ जाना। चेतना वह अंकुर है, जिसकी स्वाभाविक जगह आकाश है। इस आकाश का मार्ग व्यक्ति के भीतर से जाता है। यदि चेतना पौधा है तो आत्मा वृक्ष है। पौधे की ऊँचाई कम है, वृक्ष की ऊँचाई कहीं ज्यादा है। पौधे को वृक्ष बनने के लिए समय, शक्ति और एकाग्रता चाहिए। आत्मा उस परागकण की भाँति है, जिसे पौधा खुद ही वातावरण में मुक्त करता है। जैसे व्यक्तित्व के पौधे से चेतना निकलती है। वैसे ही चेतना के पौधे से आत्मा निकलती है।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

पद्मनाभ

पद्मनाभ = पद्म + नाभि

भगवान् विष्णु का एक नाम पद्मनाभ भी है। पद्मनाभ अर्थात् जिसकी नाभि से कमल प्रस्फुटित होता है। कीचड़ से निकला कमल ऊपर की ओर उठता है। विष्णु की नाभि से निकला कमल भी उनसे ऊपर की ओर उठा चित्र में दिखता है। भगवान विष्णु का पद्मनाभ रूप, उनके और ब्रह्मा के बीच के सम्बन्ध को दिखाता है। चित्र में विष्णु के बाल काले और ब्रह्मा के केश सफेद दिखते हैं। यह परिपक्वता को दिखाता है। अर्थात् प्रजापति ब्रह्मा चेतना की और परिपक्व अवस्था हैं। विष्णु वैकुण्ठ में तो ब्रह्मा, ब्रह्मलोक में निवास करते हैं अर्थात् दोनों ही अलग-अलग तलों पर स्थित हैं। कृष्ण कहते हैं कि ब्रह्मलोक पर्यन्त सभी लोक पुनरावर्ती हैं लेकिन जो मुझे प्राप्त होता है वह पुनः जन्म नहीं लेता। मनुष्य और विष्णु के मध्य एक अंतर यह भी है कि मनुष्य के हाथ में लक्ष्मी हैं और विष्णु के पैरों में।

दमन

दमन = दमित मन

दमन अर्थात् बाधा, रुकावट, बाहरी दबाव। मन को अपने व्यक्तित्व का विकास करने से रोकना। बंधन और नियम थोपना। नज़र रखना और स्वतंत्रता का हनन करना। जहाँ पर दमन है, वहाँ पर कुण्ठा है। वहाँ पर आकाश है, डर है और क्रोध है। मन इस धरती पर और शरीर में अपने प्रयोग करने के लिए ही तो है। यही तो वो जगह है, जहाँ अवसर मन का अपने प्रयोगों को करना जरूरी है क्यूँकि इन प्रयोगों को करके ही वो

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

उनमें उत्कण्ठा खोता है और अनुभवी बनता है। दमन उसके अवसरों को छीन लेता है। अवसर अनुभव लाते हैं और अनुभव मन के दायरे को बड़ा करते हैं तथा मन की बेड़ियाँ धीरे-धीरे खुलने लगती हैं। अपेक्षाओं की जगह स्वीकार्यता लेने लगती है। वहीं दमन, मन के दायरे को सिकोड़ देता है।

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

राम

राम अर्थात् जो राज करे मन पर।

राम अपने मन पर पूर्ण नियंत्रण की अवस्था है। राम चेतना की वो स्थिति है, जो जब किसी व्यक्ति के माध्यम से अभिव्यक्त होती है, तो उसे राम कहा जाता है। जैसे जनक कोई पहचान नहीं बल्कि चेतना की वो स्थिति है, जब वो वैदेही होती है। जब चेतना के अपने देह होने का मान छूट जाता है तो वो वैदेही हो जाती है। राम किसी भी इन्द्रिय के नियंत्रण में नहीं है अपितु अब वहाँ प्रकृति या स्वभाव का वास है। उन पर से विजातिय अर्थात् मन और काम का नियंत्रण अब समाप्त हो चुका है। ये 'जय' की स्थिति है। 'जय राम जी की' का तात्पर्य है कि राम ने खुद को अशुद्धियों से मुक्त किया था और अपने भीतर का राज्य प्रकृति को सौंप दिया था। और जहाँ प्रकृति हो वहाँ परमात्मा हैं।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

रोमांच व रोमांस

किसी मनचाही चुनौती से भेंट हो जाए तो रोमांच व किसी रुचिकर व्यक्ति से भेंट हो जाए तो रोमांस होता है। रोमांच और रोमांस दोनों में ही व्यक्ति जोश से भरा होता है। जोश उत्तेजना का ही स्वरूप है। जोश कुछ पाना चाहता है। जोश जब किसी लक्ष्य से लग जाए तो रोमांच और जब किसी इंसान से लग जाए तो रोमांस बन जाता है।

रोमांच से पैशन जन्म लेता है और रोमांस से अफेयर। जो रोमांच आदत बन जाए तो पैशन बन जाता है ओर जो रोमांस आदत बन जाए वो अफेयर बन जाता है। रोमांच और रोमांस दोनों ही तरुणाई से जन्म लेते हैं और धीरे-धीरे पैशन और अफेयर में रुपांतरित हो जाते हैं। पैशन धीरे-धीरे रोजगार में बदल जाता है और अफेयर सम्बन्ध या विवाह में।

चरम

चरम वह ऊँचाई है, जहाँ पर पहुँचते-पहुँचते मन विलीन होने लगता है। चरम सुख का तात्पर्य है, मन की क्षणिक विलीनता से प्राप्त होने वाला सुख। चरम व सर्वोच्च में भिन्नता यह है कि चरम में मन क्षणिक रूप से विलीन हो जाता है, जबकि सर्वोच्च बिन्दु वह शिखर है, जहाँ तक मन पहुँच सकता है बिना अपनी उपस्थिति खोए हुए। सर्वोच्च बिन्दु पर पहुँचने पर, अपनी सारी शक्ति वह खुद को उस सर्वोच्च बिन्दु पर स्थिर करने पर लगाना चाहता है। चरम में 'मन' चरणों में कुछ क्षणों के लिए आ जाता है और आत्मिक सुख की प्राप्ति होती है। लेकिन चरम के साथ अपनी सीमाएँ हैं। यह सुख तो है लेकिन

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

मध्यम दर्जे का। दूसरा इसका अनुभव करने में बहुत अधिक शक्ति का व्यय करना पड़ता है, जो दूसरों का न्यौता देने जैसा है।

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

❀ ❀ ❀

स्वामी

स्वामी = स्व + मीत

स्व जिसका मीत है। वहीं मनमीत अर्थात् मन जिसका मीत है। जो ये बात जान जाए कि दुनिया जो कुछ भी विकल्प उपलब्ध कराती है, उन सभी में पाने लायक तो वो स्वयं है। क्यूँकि जितना सुकून स्वयं के साथ है, उतना किसी अन्य के साथ नहीं। जितना उत्पादक ‘स्व’ है, उतना उत्पादक कोई और उसके लिये नहीं हो सकता। इस दशा में व्यक्ति अपना सारा ध्यान और शक्ति, ‘स्व’ या सेल्फ के सुपुर्द कर देना चाहता है। स्वामी खुद को खर्च करके दुनिया के अनुभवों को नहीं खरीदना चाहता। वह खुद को सहेजना चाहता है। वह ‘स्व’ को अब और, अपने मन व दुनिया को सौंपने को तैयार नहीं। यदि उसे विकल्प दिया जाए कि या तो अपनी दुनिया को सजाओ या स्व को, तो वह ‘स्व’ को ही सुदृढ़ करना चाहेगा।

❀ ❀ ❀

शिक्षा व दीक्षा

‘शिक्षा और दीक्षा’ का दर्शन भारतीय सभ्यता द्वारा दिया गया अमूल्य दर्शन है। शिक्षा और दीक्षा का दर्शन यह बतलाता है कि शिक्षा बाहर से मिलेगी लेकिन बोध भीतर से मिलेगा। रोशनी बाहर से मिलेगी लेकिन प्रकाश भीतर से मिलेगा। बाहर से आपको दुनिया

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

से सम्बन्धित सूचनाएँ तो मिल जाएँगी लेकिन स्वयं से और खुदा से सम्बन्धित सारी सूचनाएँ भीतर से मिलेंगी। बाहरी दुनिया में जीत को 'विजय' कहते हैं तो भीतरी दुनिया में जीत को 'जय' कहते हैं। अपने काम के बारे में अच्छी जानकारी व्यक्ति को सम्मान दिलाती है तो स्वयं के बारे में जानकारी व उसके अनुसार जिया गया जीवन आदर दिलाता है। शिक्षा का प्रयोजन दुनिया को जानना है तो दीक्षा का प्रयोजन खुद को जानना है। शिक्षा स्मृति और बुद्धि को विकसित करती है तो दीक्षा चेतना को।

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

भक्ति

वह शक्ति जो व्यक्ति को भगवान की ओर प्रवृत्त कर दे, भक्ति कहलाती है। यह शक्ति जिस रूप में व्यक्ति में उपस्थित रहती है उसे 'भाव' कहते हैं। भक्त भगवान के जैसा होना चाहता है। भक्त के भगवान में रुपांतरण की इस यात्रा का माध्यम बनती है भक्ति। भक्त भगवान की स्वाभाविक विशेषताओं का पाठ करता है। कारण है कि वो इन सभी विशेषताओं को स्वयं में देखना चाहता है। इसी कारण भक्त भगवान का सान्निध्य चाहता है। भक्ति भक्त को ध्यान के लिए तैयार करती है। भक्ति विकसित तब होती है, जब भक्त दुनिया से आगे देखने को तैयार हो जाता है। भक्त दृश्य है, भगवान अदृश्य हैं। भक्ति दृश्य और अदृश्य के बीच सम्बन्ध का माध्यम बनती है। ये मानव की आत्मिक खोज ही है, जो मनुष्य को दृश्य से परे ले जाती है। इस प्रकार भक्त प्यार से प्रेम की ओर अग्रसर हो जाता है।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

सुर

सुर = स (समग्र) + उर (ऊर्जा)

अपनी ऊर्जा को समग्र कर एक नियत दिशा में प्रवाहित करने की क्षमता ही सुर कहलाती है। ऊर्जा जब आवाज के माध्यम से सधे व लयबद्ध रूप में प्रवाहित होती है तो सुर कहलाती है। ऊर्जा जब किसी गुण के साथ समग्र रूप से जुड़ जाती है तो होने वाले कार्य को सुंदर बना देती है। प्रकृति अपने हर काम को समग्रता से करती है। अतः उसका हर कार्य सुंदर दिखाई देता है। यही प्रकृति जब किसी कलाकार के माध्यम से अभिव्यक्त होती है तो उसकी कृति को सुंदरता प्रदान करती है। कलाकार को करना मात्र ये है कि अपने भीतर की प्रकृति को मुक्त रूप में अभिव्यक्त होने दे। बाकी का कार्य वह स्वयं कर देती है।

प्रयाण

प्रयाण अर्थात् सत्य की ओर गमन् ।

प्रयास से पहले है निश्चय, जो प्रयास की प्रेरणा देता है। सत्य प्राप्ति के प्रयास व्यक्ति को प्रयाग की ओर ले जाते हैं, जहाँ पर तीन धाराओं के मिलने से संगम की रचना होती है। प्रयाग से आगे एक ही धारा बढ़ती है, जिसे गंगा कहते हैं। गंगा काशी अर्थात् मोक्ष की ओर आगे बढ़ती है। गंगा की इसी सत्य की ओर यात्रा को प्रयाण कहते हैं। प्रयोग सत्य से योग का मार्ग है। प्रयाण सत्य की ओर गति है।

मनुष्य के संदर्भ में ये यात्रा है, उसकी आंतरिक शक्ति की। जो ऊर्ध्व गति करते हुए तीन नाड़ियों के संगम पर पहुँचती है। इन नाड़ियों में शक्ति का प्रवाह होता है। संगम से आगे बढ़ती है। काशी की स्थिति में पहुँचने पर कामनाओं के बँधन पीछे छूट जाता

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

है, जो मोक्ष अर्थात् द्वैत के अक्ष से मुक्ति है। इसके आगे शक्ति के अंनत सागर तक की यात्रा ही प्रयास है।

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100311/2021
Date 05/03/2021

दुश्मन

दुश्मन = दुष्कर मन

दुश्मनी सम्बन्धित है मन से। विरोध और दुश्मनी में अंतर है। दुश्मनी व्यक्ति से सम्बन्धित है और विरोध सम्बन्धित है विचारधारा से। व्यक्ति और उसके हितों को हानि पहुँचाने की प्रवृत्ति दुश्मनी कहलाती है। हित सम्बन्धित है व्यक्ति से। अतः हितों को हानि पहुँचाना अप्रत्यक्ष रूप से व्यक्तित्व को हानि पहुँचाना है। व्यक्ति और उसके हितों से मिलकर व्यक्तित्व बनता है। दुश्मनी बलवती होने पर व्यक्ति को सीधा नुकसान पहुँचाना चाहती है और तब यह हिंसा हो जाती है। जैसे-जैसे मन क्षीण हो जाता है, वैसे-वैसे दुश्मनी भी क्षीण हो जाती है। चूँकि मन के नियंत्रण में व्यक्ति की बहुत सी शक्ति होती है और साथ ही व्यक्ति के संसाधन भी। मन इस शक्ति और संसाधन का उपयोग किसी और का अहित करने में करे तो यह दुश्मनी है। दुश्मनी अपने शक्ति, संसाधन और समय को व्यर्थ करती है। क्यूँकि दुश्मनी कभी अपने समय और शक्ति का उपयोग नहीं कर पाती।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

इन्द्र व इन्द्रियाँ

जैसे धरती प्रकृति द्वारा निर्मित है लेकिन प्रकृति स्वयं इस पर शासन नहीं करती। धरती को राज्यों में बाँटा गया है और इस पर अलग-अलग शासक राज्य करते हैं। ठीक वैसे ही स्वर्ग इन्द्र द्वारा निर्मित नहीं है, इन्द्र का बस मात्र स्वर्ग पर अधिकार है। स्वर्ग का तात्पर्य है स्व, आत्म, सेल्फ और इन्द्र का तात्पर्य है मन। मन रूपी इन्द्र अपनी विभिन्न इन्द्रियों जैसे नाक, कान, जीभ, आँख, त्वचा, हाथ, पैर, जननांग, गुदा और वाणी के माध्यम से स्वर्ग अर्थात् स्व पर राज्य करते हैं। मन अपनी आसक्तियों के साथ रहना चाहता है। इसी कारण इन्द्र, मेनका, उर्वशी और मोहिनी का साथ पसंद करते हैं। मन को चाहिए स्वप्न जिन्हें वह साकार कर सके। और चाहिए स्वप्न सुंदरी भी, जिस पर वह अधिकार कर सके।

स्वर्ग

स्वर्ग के विषय में तीन मुख्य सूचनाएँ जो कहानियों के माध्यम से मिलती हैं, वो ये हैं कि स्वर्ग में इन्द्र हैं, अप्सराएँ हैं व सुख है। स्वर्ग के राजा इन्द्र एक ओर अप्सराओं में आसक्त हैं व दूसरी ओर अपने पद से हटा दिए जाने की असुरक्षा की भावना से पीड़ित हैं। स्वर्ग एक ऐसा स्थान है जहाँ प्रयोग और भोग करने की स्वतंत्रता है। स्वर्ग के जिस सुख की बात की जाती है, उसका कारण यही है। धरती पर जो अवसर आसानी से उपलब्ध नहीं हैं, वो स्वर्ग में सहज ही उपलब्ध हैं। धरती पर प्रतियोगिता है, स्वर्ग में नहीं।

स्वर्ग में खुशियाँ हैं, तो ये कैसे संभव है कि वहाँ असुरक्षा न हो। स्वयं इन्द्र असुरों के से असुरक्षित महसूस करते हैं। दूसरा स्वर्ग को भोगकर वापस धरती पर आना

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

होता है, अतः स्वर्ग से बिछड़ने का दुःख भी है। तीसरा स्वर्ग में इन्द्र हैं, परंतु ईश्वर नहीं हैं और न ही है शांति। अर्थात् प्रेम और प्रकाश दोनों ही वहाँ नहीं हैं।

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100118/2021
Date 05/03/2021

संतोष

जहाँ संतुष्टि का सम्बन्ध प्रयास व प्रयोग से है। वहीं संतोष का सम्बन्ध अवसरों पर मोहित न होने की प्रवृत्ति से है। प्रकृति अवसर पैदा करती है, परंतु परमात्मा उनमें से किसी अवसर का लाभ नहीं उठाना चाहते। मन लाभ उठाना चाहता है, इसी कारण वह कर्म करता है और कर्मफल पैदा करता है। संतोष दैवीय गुण है। प्रकृति की परा शक्ति परमात्मा के प्रति पूर्ण समर्पित है। इसी कारण वह अवसरों और लाभ की तरफ नहीं देखती। अर्जुन राज्य को लाभ की तरह नहीं देखता, दुर्योधन देखता है। कारण यह है कि अर्जुन के भीतर दैवीय सम्पदा की प्रधानता है, इसी कारण उसके पास लोभ नहीं संतोष है। देवी का एक नाम यूँ ही संतोषी नहीं है। इच्छाशक्ति वह संतोष की शक्ति है, जो इच्छाओं का वरण नहीं करती। इस प्रकार वह अपनी बहुत सी शक्ति बचा लेती है। इच्छापूर्ति वो सौदा है, जो शक्ति खर्च करने पर ही पूरा होता है।

क्रोध

क्रोध कामना का भाई है। कामना जहाँ शक्ति की चूषक है, वहीं क्रोध व्यक्ति की अपनी ऊर्जा का उपयोग व्यक्ति के ही विरुद्ध करता है। क्रोध उस व्यक्ति को ही प्रताड़ित करता है, [illegible]क में ये उभरता है। कामना व्यक्ति को नीचे गिराती है तो क्रोध व्यक्ति को नीचे ही

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

बाँध कर रखना चाहता है। ये अंधकार में अपनी सीट पक्की करने जैसा है। कामना अति सुंदर और मोहिनी है। वह जब भी मिलती है, अकेली होती है। वो अपने घर आमंत्रित करती है। व्यक्ति जब कामना के सौंदर्यपाश में बँधा उसके घर पहुँचता है, वहाँ भी उसका स्वागत कामना अकेले ही करती है। व्यक्ति अच्छा महसूस करता है परंतु कुछ समय बाद कामना के चार भाई दिखते हैं जो क्रोध, लोभ, मोह और भय हैं। तब व्यक्ति जान पाता है कि ये कामना रूपी सुंदरी अकेली नहीं, बल्कि एक पूरा गठ्ठर है। इसके साथ, अब चारों भाइयों के साथ भी रहना होगा और उन्हें सहना होगा।

अहंकार व अहं ब्रह्मास्मि

अहंकार खुद को अपने अस्तित्व का केन्द्र बिन्दु या कारण मानता है तो अहं ब्रह्मास्मि स्वयं को इस सम्पूर्ण अस्तित्व के केन्द्र में जानता है। अहंकार से अहं ब्रह्मास्मि तक की यात्रा व्यक्तित्व से अस्तित्व तक की यात्रा है। शरीर के दायरे से बाहर निकलकर, अनंतता में फैल जाने की यात्रा है। अहंकार अरबों-खरबों हैं लेकिन ब्रह्म सिर्फ एक है। जैसे व्यक्ति व जंतु अरबों-खरबों हैं लेकिन उन्हें जन्म देने वाली प्रकृति सिर्फ एक है। व्यक्ति का अपना अहंकार सिर्फ उस व्यक्ति में है। उसका अपना अहंकार किसी और व्यक्ति में नहीं हो सकता क्यूँकि दूसरे व्यक्ति के पास उसका अपना अहंकार है। वहीं ब्रह्म उसके भीतर भी है और आसपास उपस्थित हर एक व्यक्ति में है और हर एक में वो एक समान है।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

रुचि व शुचि

रुचि यदि जगत् से सम्बन्धित है तो शुचि स्वयं व्यक्ति से सम्बन्धित है। रुचि मन और उसके द्वारा चुने आकर्षण के बीच की गतिविधि है। वहीं शुचिता लोभ और आकर्षण के पड़ाव पर न ठहर कर सतत् चलते रहने का नाम है। शुचिता, शौच और सफाई सभी के एक समान अर्थ हैं। शुचिता से भरा जीवन अर्थात् सफाई के साथ जिया गया जीवन। जीवन विकल्प भी देता है और अवसर भी। लोभ भी देता है और मोह भी। लेकिन जब व्यक्ति अपने दर्शन और स्वभाव को थामें चलता रहता है तो भीतरी तौर पर वह साफ रहता है।

रुचि किसी व्यक्ति, विषय, स्थान, गुण में उत्कण्ठा व्यक्त करती है और साथ ही उत्कण्ठा को बरकरार रखते हुए, बार-बार लौटकर अपनी रुचि की ओर आती है। कहने का तात्पर्य है कि इंटरेस्ट, च्वाइस और फॉलोअप दोनों करता है। जैसे ही रुचि समाप्त होती है व्यक्ति लौटना या फॉलोअप करना छोड़ देता है।

प्राप्त

प्राप्त = परा + प्त = (परा से भर जाना)

प्रकाश प्राप्त हुआ अर्थात् पराशक्ति के भीतर उपस्थित प्रकाश प्रकट हुआ। परा शक्ति ही प्रेम है। जिस क्षण व्यक्ति प्रकाश प्राप्त करता है, उस क्षण वो प्रेम से भर जाता है। इस अवस्था को 'प्रेम-प्रकाश' या 'प्रेम-ज्योति' कहा गया।

प्यार के लिये कहा जाता है कि प्यार हो गया और प्रेम के लिए कहते हैं कि प्रेम प्राप्त ... ही वह तेल है जिससे प्रकाश रूपी ज्योति निकलती है। प्यार तो बाहर से मिल

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

जाता है परंतु प्रेम भीतर से ही प्राप्त होता है। तात्पर्य यह है कि शक्ति प्राप्ति की संभावना भीतर ही मौजूद है। अतः यदि किसी को प्राप्ति की इच्छा हो तो उसे भीतर मुड़ना होगा। मनुष्य के पास एक साथ दो दुनिया होती है। एक आँखों के सामने की दुनिया और दूसरी भीतर की दुनिया। बाहरी दुनिया से प्यार पाना संभव है लेकिन प्रेम की प्राप्ति की संभावना तो भीतर ही है।

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

गौतम

गौतम = गौ (प्रकाश) + तम (अंधकार)

प्रकाश ने अंधकार को अनुपस्थित किया। अंधकार कुछ और नहीं बस प्रकाश की अनुपस्थिति है। प्रकाश की उपस्थिति में सब साफ दिखता है, वहीं अंधकार में दिखना असंभव हो जाता है। चलने के लिये प्रकाश चाहिये, अंधकार में थमना पड़ता है। शरारती मन दिन में खुद को असुरक्षित समझता है, तो रात में उसे लगता है कि जब कुछ भी नहीं दिख रहा, तो मैं भी न दिखूँगा, अतः वह ज्यादा सुरक्षित महसूस करता है। चोर अपनी पहचान छिपाना चाहता है। वहीं जहाँ उसकी पहचान उजागर हो जाए, वहाँ वह चोरी नहीं करना चाहता। बुद्ध के नाम के आगे गौतम जुड़ना सिर्फ माता गौतमी की वजह से ही नहीं बल्कि इस कारण भी है कि उनके भीतर प्रकाश उपस्थित हुआ, जिसने उनके आंतरिक अंधकार को मिटा डाला।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

तृष्णा

तृष्णा अर्थात् तृ को पाने की इच्छा ।

तृप्ति को पाने की प्यास ही तृष्णा है। पानी हमारे शरीर की प्यास बुझा सकता है। धन मन की प्यास को बुझा सकता है। काम जननांगों की प्यास को बुझा सकता है। सफलता महत्वाकांक्षा की प्यास को बुझा सकती है। विद्या, तकनीक-कुशलता और समर्पण संतुष्टि की प्यास को बुझा सकते हैं। गर्भ धारण मातृत्व की प्यास को बुझा सकती है। समाज की स्वीकृति सम्मान की प्यास को बुझा सकती है। उसी प्रकार हमारी तृष्णा को तृप्ति ही बुझा सकती है। हमारे भीतर की शक्ति की पूर्णता की प्यास ही तृष्णा है। शक्ति की शिव को पाने की प्यास ही तृष्णा है। अपने अधूरेपन को पूरा करने की प्यास ही तृष्णा है। शिव और शक्ति का मिलन ही तृप्ति है। जिस क्षण तृप्ति घटित होती है, उसी क्षण खुद की खोज भी पूर्ण होती है।

❀ ❀ ❀

गीता

गीत मगन होकर गाया जाता है। स्वयं में डूबकर गाया जाता है। सुनाने की मंशा से नहीं, स्वयं के आनंद के लिये गाया जाता है। गीत में सुनने वाला महत्वपूर्ण नहीं, महत्वपूर्ण है संदेश, जो दिया जा रहा है। महत्वपूर्ण है गाने वाला व्यक्ति, शब्द और प्रवाह। बोल भी उसी के, आवाज भी उसी की और गाने की इच्छा भी उसी की। सुनने वाला तो बस उस बहाव में बहा जाता है। गीता रूपी गीत गाया कृष्ण ने, सभी द्वंद, भ्रम और संशय में घिरे मनष्यों के लिये। गीत तभी तक गीत है, जब वो मन से निकले। आत्मा से निकले तो वह जाता है। गीता युद्धक्षेत्र के मध्य कही गई ताकि दुर्योधन की महत्वाकांक्षा और

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

अर्जुन के मोह दोनों को परास्त किया जा सके। कर्म और धर्म के आपसी सम्बन्ध को स्पष्ट किया जा सके। गीता बतलाती है कि कैसे कर्म के माध्यम से योग के मार्ग को प्रशस्त किया जा सकता है।

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

नास्तिक

नास्तिक = न अस्ति कारण

नास्तिक कृति को मान्यता देता है, कारण को नहीं। नास्तिक मानता है कि कोई भी कारण नहीं है जीवन का। जीवन बस शुक्राणु और अंडाणु के निषेचन से उत्पन्न हो जाता है। वहीं आस्तिक मानता है कि कोई तो और कारण है जीवन का, जो समझ से परे है। नास्तिक कहता है कि मैं ये शरीर हूँ और इस दुनिया में स्थित हूँ। मेरा जोश और मेरी बुद्धि मुझे इस दुनिया में आगे बढ़ाते हैं। नास्तिक अपने सामने दुनिया को देखता है और शीशे में खुद को। जो देखता है, उस पर वो यकीन करता है। वहीं आस्तिक मानता है कि कोई शक्ति है, जो इस दुनिया में मेरी मदद करती है। इसी ईश्वरीय सहायता को कृपा या ग्रेस कहा जाता है। अपने जीवन में सफलता के लिये किये गए विभिन्न प्रयासों में, वो ईश्वरीय सहायता की प्रार्थना करता है।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

आस्तिक

आस्तिक = अस्ति + कारण

आस्तिकता के मूल में है कि कुछ है जो मनुष्यों से भी ज्यादा उन्नत है, शुद्ध है, स्पष्ट है, नित्य है, शाश्वत है, आत्मकेन्द्रित है, प्रेमी है, दयावान है, शरण देने वाला है। जिसकी सहायता से व्यक्ति खुद को बेहतर बना सकता है, सुधार सकता है। जो सर्वस्व उपस्थित है और जानने योग्य है। जिसकी तरफ आशा भरी निगाहों से देखा जा सकता है। जो पाने योग्य है। कोई है जो कारणों का भी कारण है, पिताओं का भी पिता है। जिसके आगे झुका जा सकता है। जिससे बेझिझक अपनी बात कही जा सकती है। जिसके पास मेरे लिये समय है। जो मुझे सुनने से इन्कार नहीं करता। जो व्यक्ति का अपना व्यक्तिगत गंतव्य है। जो अज्ञात तो है लेकिन परे नहीं। जो दुगुर्णों से मुक्त है और अस्थिर या चंचल नहीं है। जो भेद नहीं करता और न ही उससे मेरा कोई मतभेद है।

कृपा, कृति, कृतार्थ व कीर्तन

ईश्वर की शक्ति को ही 'कृ' के रूप में अभिव्यक्त किया जाता है। जीवन में इसी कृ को पाना ही कृपा को पाना है। इसी 'कृ' रूपी शक्ति के माध्यम से कुछ रचनात्मक करना ही 'कृति' कहलाता है। इसी 'कृ' रूपी शक्ति के माध्यम से जीवन को अर्थपूर्ण बनाना ही, जीवन को कृतार्थ करना है।

कीर्तन में चेतन मन शब्दों में तल्लीन हो जाता है व अवचेतन मन संगीत व राग में और ...ने भीतर उपस्थित 'कृ' के आवरण में स्थित होकर निश्चिंतता व प्रेम का अनुभव

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100119/2021
Date 05/03/2021

करता है। मनुष्य सबसे बुद्धिमान प्राणी है लेकिन शक्ति बुद्धि के लिये समर्पित नहीं है। इसी कारण 'कृ', जो पाने के लिये व्यक्ति को अस्तित्व की ओर मुड़ना पड़ता है। इसी 'कृ' के माध्यम से जो स्वतः ही अभिव्यक्त हो जाता है, उसे कृति कहते हैं।

विरेचन

विरेचन = विजातिय का रेचन

शरीर के लिये विजातिय है अतिरिक्त ऊर्जा जो शरीर में उपस्थित है लेकिन शरीर की अपनी आवश्यकता से ज्यादा है। परिसंचरण तंत्र या सर्कुलेटरी सिस्टम के लिये विजातिय है, वह द्रव जो उत्सर्जन के लिये तैयार पदार्थों से भरा है और शरीर के लिये आवश्यक नहीं है। पाचन तंत्र या डाइजेस्टिव सिस्टम के लिये अनुपयोगी है मल। जो पचे हुए भोजन, अनुपयोगी बैक्टीरिया और उन तत्वों से भरा है जिनकी अब शरीर को आवश्यकता नहीं।

मल और मूत्रद्वार पर दबाव बनाकर शरीर मस्तिष्क को यह सूचना दे देता है कि मल और मूत्र को बाहर निकालना अब आवश्यक है। यदि किसी वजह से मल-मूत्र बाहर न निकल पाए तो शरीर को समस्या होने लगती है। अनावश्यक को शरीर से बाहर निकालना ही विरेचन कहलाता है। ताकि शरीर के तंत्रों में प्रवाह बना रहे।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

अराधना

अर के अधीन होना अर्थात् प्रकाश के अधीन होना ।

अर से बनता है अरुण। जो सूर्य का एक नाम है। अराधना अर्थात् स्वयं को प्रकाश के लिये समर्पित करना। साधना का तात्पर्य है अपनी दिनचर्या को इस प्रकार ढालना कि खुद को उपलब्ध ऊर्जा को बेहतर तरीके से साधा जा सके। वहीं परम् के प्रेम में पड़ना अराधना है। जो परम् के प्रेम में पड़ गया, उसका ध्यान दुनिया की ओर से हट जाता है और स्वयं या स्व तक सीमित होने लगता है। प्रेम के पास ध्यान को संघनित कर देने की जादुई क्षमता है। अराधना भाव में उतरने का माध्यम बन जाती है। भाव में उतरना 'भा' अथवा प्रकाश की ओर उठा कदम है। अराधना वो प्रयास है, जो प्रकाश की ओर रास्ता बनाता है। ये अपनी यात्रा के लिये, खुद अपना मार्ग प्रशस्त करने जैसा है।

कर्तव्य

कर्तव्य = कर्त + व्यय

मन द्वारा पाला गया कर्तापन का भाव ही सुख का व्यय करता है। यदि मन कर्तापन का भाव न रखे तो भी सारे कार्य वैसे ही सम्पन्न होंगे क्योंकि सभी कार्यों की कर्ता है प्रकृति। इस दशा में कर्म भी होते रहेंगे और उन कर्मों को करने का बोझ भी न ढोना होगा। शक्ति, गुण, ऊर्जा और बल सभी प्रकृति से ही आते हैं। कर्तापन के भाव को खोकर, व्यक्ति जान जाता है कि स्वाभाविक कर्म तो स्वतः ही हो जाया करते हैं। उसके लिये बस स्वयं को ाली कर लेना होता है। स्वाभाविक कर्म से इतर काम जैसे नौकरी, रोजगार, एक

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

समान गति से होते रहते हैं। बाकी वे काम जो न तो स्वाभाविक हैं, न यांत्रिक हैं, उन्हें करना व्यर्थ में विचारों की एक श्रृंखला को जन्म देना है।

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

आख्यान व व्याख्यान

आख्यान = अ (प्राप्त होना) + अख्या (स्पष्टीकरण)

व्याख्यान = व्य (देना) + अख्या (स्पष्टीकरण)

इसे एक पाइप के माध्यम से समझा जा सकता है। पाइप को एक तरफ से पानी प्राप्त होता है और दूसरी ओर से वह पानी को निकाल देती है। इसी प्रकार आख्यान अर्थात् स्वयं को स्पष्टीकरण प्राप्त होना और व्याख्यान अर्थात् उस स्पष्टीकरण को औरों तक पहुँचा देना। बातचीत और व्याख्यान में अंतर ये है कि बातचीत टू-वे ट्रैफिक है अर्थात् बातचीत में दोनों श्रोता भी हैं और वक्ता भी। वहीं व्याख्यान वन-वे ट्रैफिक है अर्थात् एक पक्ष वक्ता है तो दूसरा पक्ष सुनने वाला और उसे स्वयं में उतारने वाला है। वक्ता सूचनाएँ प्रदान करता है और श्रोता इन सूचनाओं को एकत्र करता है।

सांख्य

सांख्य = सम + अख्य (स्पष्टता)

स्पष्टता की प्राप्ति ही सांख्य अथवा सन्यास है। जहाँ सम्भव है, वहाँ प्रयास नहीं कुछ भी व्यय नहीं हो रहा। प्रयास नहीं है तो बुद्धि की आवश्यकता भी नहीं है

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

और मन की भी नहीं है। न ऊर्जा व्यय हो रही है, न शक्ति। जहाँ स्पष्टता है, वहाँ भ्रम के बादल नहीं हैं। आसमान साफ और रोशनी से भरा है। इसी कारण सब कुछ ठीक वैसा ही दिखता है, जैसा कि वो है। समत्व व स्पष्टता में स्थिति ही प्रज्ञा में स्थित है। स्थितप्रज्ञता अर्थात् दृश्य जो दिख रहा है, सूचनाएँ जो मिल रही हैं, वो सभी शुद्ध एवं अपने मूल स्वरूप में है। जो भी देखा और सुना जाए, भीतर वो भावनाएँ व भाव उत्पन्न करता है। इससे भीतर बदलाव होते हैं जिससे भीतरी अस्थिरता आती है। लेकिन सांख्य, सन्यास या योग भीतरी स्थिरता का नाम है क्यूँकि सन्यासी देखते हुए भी नहीं देखता और सुनते हुए भी नहीं सुनता क्यूँकि वह परम् के सौन्दर्य में डूबा रहता है।

यज्ञ व अज्ञ

यज्ञ : यम को जानना व उसके अनुसार बरतना ही यज्ञ है ।

अज्ञ अर्थात् अक्षर को जानना ।

यज्ञ और हवन में अंतर है। हवन कर्मकाण्ड है और यज्ञ जीवन को जीवने का वो तरीका है जिससे आत्मिक उन्नति होती है। यम के पाँच स्तम्भों को आधार बनाकर जिया गया जीवन यज्ञ है। यज्ञ खेती जैसा है। इसमें व्यक्ति खेत में उन्हीं बीजों को बोता है, जिनकी फसल उसे चाहिए। यज्ञ का फल है, आत्म या स्व में नियत स्थिति। अर्थात् स्वयं को जानना। जो स्वयं को जानता है वो बाहर स्थित मन को और भीतर स्थित परम् को भी जानता है। अब धर्म उसके लिये मान्यता नहीं बल्कि योगरुढ़ होने का मार्ग है। यज्ञ उसके लिये अक्षर या अक्षरण हो जानने का मार्ग है। जीवन यज्ञ का अवसर है और यज्ञ महाजीवन का साधन

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

मुक्ष

मुक्ष अर्थात् मुक्ति का इच्छुक ।

स्वतंत्रता हमारा मूल स्वभाव है। इस कारण जहाँ कहीं भी बँधन है, वहाँ पर मुक्ति के प्रयास प्रारंभ हो जाते हैं। जीवन चारे और जाल के समान है। जब तक चारा दिखता है, तब तक वह रोचक है। जब जाल दिखायी देने लगता है और बेड़ियों से बँधन के कारण स्वतंत्रता जाती रहती है और दुख घेर लेते हैं, तब जीवन की वास्तविकता समझ में आती है। तब प्रयास प्रारंभ होता है, चारे और जाल दोनों से मुक्ति का। तब व्यक्ति का जीवन दर्शन उसका औजार बनता है और स्वभाव मार्ग। उसका स्वाभाविक कर्म वो प्रयास बनता है, जो दर्शन के औजार से मार्ग प्रशस्त करता है। ये सारा प्रयास इस हेतु है कि जो भी यहाँ से लिया, उसे यहीं छोड़ कर अपने मूल स्वरूप के दर्शन कर। मूल स्वरूप के साथ उससे जुड़ी शक्ति होती है, जो माया के बँधन से ऊपर उठने में सहायता करती है।

लिया और दिया

दोनों में एकसमान रूप से उपस्थित है 'या'। 'या' अर्थात् यामिनी अथवा अंधकार। लेन और देन पदार्थ का ही हो सकता है। प्रेम का लेन-देन संभव नहीं क्यूँकि प्रेम तो बस उपस्थित है, उपलब्ध है। लेन-देन, बस मन के तल तक ही संभव है। लेन और देन दोनों ही प्रयास हैं और जब प्रयास की समाप्ति है, तभी प्रेम की उपस्थिति है। मनुष्य के तल पर न संभव है परंतु चेतना के तल पर नहीं। क्यूँकि चेतना को शक्ति प्राप्त होती है,

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

प्रकृति से और यह शक्ति ही प्रेम है। लेन और देन से सम्बन्धित है, लाभ और हानि। लाभ हानि से सम्बन्धित है भावनाएँ। भावनाओं से सम्बन्धित है अस्थिरता। भावनाएँ न स्थिर हैं, न शाश्वत। भावनाएँ अनित्य हैं, इसी कारण भावनाओं से उठते विचार अनित्यता की सूचना देते हैं। चूँकि व्यक्ति इन्हीं सूचनाओं से घिरा रहता है अतः इन्हें सत्य मान बैठता है।

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

मूढ़ या मूर्ख

मूढ़ता अर्थात् अपनी मूल स्थिति से नीचे की ओर गिरना या अधोगति करना। मूढ़ शब्द के उपयोग से बना मूढ़ा। मूढ़ा एक कम ऊँचाई का बैठने वाला साधन है, जो जमीन से थोड़ा ही ऊपर होता है। मूढ़े पर बैठने पर, कुर्सी पर बैठा आदमी भी खुद से ऊपर दिखता है। व्यक्ति अपने चेतन मन की बातों में आकर, कामनाओं के पीछे दौड़ता हुआ अपनी शक्ति को खोता रहता है, जिससे दुखों का सृजन होता है। कामनाओं के परिणाम स्वरूप प्राप्त होते हैं 'काम-फल'। जो क्रोध, लोभ, मोह और भय के रूप में व्यक्ति को परेशान करते हैं। कामिनी दिखती तो बहुत सुंदर है और जब ध्यान कामिनी पर होता है तो उसके साथी नहीं दिखते। कामना को व्यक्ति की शक्ति चाहिए। जैसे ही व्यक्ति शक्ति से चूकता है एक-एक कर 'काम-फल' व्यक्ति को परेशान करना प्रारंभ करते हैं।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

आज

आज अर्थात् आजन्म

आजन्म अर्थात् जीवन भर। व्यक्ति चित्रकार जैसा है और आज कैनवास जैसा। जीवनभर व्यक्ति जिस कैनवास पर चित्र बनाता है, वो कैनवस आज ही है। आज ही अवसर है। सारे कर्म व क्रियान्वयन आज में ही होते हैं। शरीर की उपस्थिति जीवनभर आज में ही रहती है। मन स्मृतियों अर्थात् अतीत और कामनाओं और योजनाओं अर्थात् भविष्य की ओर दौड़ सकता है। शरीर यंत्र है तो आज है प्रयोगशाला। आज अवसर है व्यक्तित्व निर्माण का और आज ही अवसर है योग प्राप्ति के प्रयास का भी। जन्म हमें जो उपहार देता है वो 'आज' ही है। जिसे हम जीवन कहते हैं, वो 'आज' ही है। सारा संवाद, बातचीत, मिलना-जुलना इसी 'आज' की परिधि में ही होता है। आज वो मैदान है, जिससे व्यक्ति रूपी खिलाड़ी अपना खेल खेलता है। जीवन आज में है लेकिन जीव आज की परिधि के बाहर भी गमन कर सकता है।

चिद

उद, चिद व चिन नामक ये तीन अवस्थाएँ हैं। उद यदि धरती है तो चिर आकाश व चिन है अंतरिक्ष या अनंत। उद से बना उदासीन, चिद से चिदाकाश व चिन से चिन्मय। उद है आज, चिद है वर्तमान व चिन है समयहीनता। उदासीनता धरती पर स्थित होकर धरती के आकर्षण व मोह से ऊपर उठने की तैयारी है तो चिद धरती व अनंत के बीच की स्थिति है। इस अवस्था में कभी अनंत के प्रेम और भयहीनता की झलक मिलती है, तो कभी दुख भी सताते हैं। इसमें व्यक्ति अपना स्वाभाविक कर्म करते हुए कभी सुख की

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

अनुभूति करता है तो कभी दुखों के प्रभाव को महसूस करता है। यही वह अवस्था है, जहाँ पहली बार व्यक्ति का सुख से परिचय होता है।

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

समय

सब कुछ जो दृष्टिगोचर है, वह जिसकी परिधि में है, वह है समय। समय गणना है। पदार्थ में परिवर्तन होता है और समय इसी परिवर्तन की माप है। हमारा वह भाग जो इस परिवर्तन के प्रति संवेदनशील है, वो है मन। नींद में हम समय के प्रति असंवेदनशील हो जाते हैं। इस दौरान बाहर हुए किसी परिवर्तन के प्रति हम चौकन्ने नहीं होते अर्थात् स्मृति उसे दर्ज नहीं करती।

परिवर्तन प्रकृति में भी घटित होते हैं और मनुष्यों की दुनिया में भी। प्रकृति के परिवर्तन सतत् और नियमित हैं और मनुष्यों की दुनिया में परिवर्तन अनपेक्षित व अनियमित हैं। प्रकृति के परिवर्तन एक चक्र के परिणामस्वरूप हैं और वर्तमान की परिधि में आते हैं। वहीं मनुष्यों की विकासशील दुनिया के परिवर्तन योजना के परिणाम स्वरूप हैं और भविष्य को ध्यान में रखकर किये जाते हैं। प्रकृति को भविष्य से सरोकार नहीं और मनुष्यों के मन को वर्तमान से सरोकार नहीं।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

ओज

मन को ओज प्राप्त हो जाए तो वह मनुष्य मनोज (कामदेव) बन जाता है। वहीं स्व को ओज प्राप्त होने पर व्यक्ति ओजस्वी हो जाता है।

मन और स्व दोनों के बीच समान 'ओज' ही है। ओज के उपभोग से मन प्रबल होता है तो ओज के माध्यम से स्व का पौधा विकसित होता है। मनोज और ओजस्वी दोनों का ही भोजन 'ओज' ही है। मन यदि 'ओज' को पा ले, तो स्व 'ओज' से चूक जाता है। वहीं मन नियंत्रित होने लगता है, यदि स्व ओज को पा ले। ओज वह नदी है, जो जिस क्षेत्र में बहती है, उसे ही उर्वरा कर देती है। स्व ओज के माध्यम से ही सुख का स्वाद चखता है तो ओज को पाकर ही मन खुश होता है। ओज यदि नदी है तो 'स्व' दिया है, जो ओज के साथ बहता हुआ परमात्मा रूपी सागर तक पहुँचता है।

आकाश

आकाश अर्थात् वह आवरण जहाँ कामनाओं की उपस्थिति नहीं ।

जहाँ धरती की सीमा समाप्त होती है, वहाँ आकाश की सीमा प्रारंभ होती है। शरीर भी धरती से ही बना है। पैर से लेकर सिर तक ये धरती का ही भाग है। इसी कारण जब हमें आसमान की ओर देखना होता है तो सदैव ऊपर की ओर देखते हैं। जहाँ हमारे सिर की सीमा समाप्त होती है, हमारा आकाश वहीं से प्रारंभ हो जाता है। सामने देखने पर या तो धरती दिखती है या कोई इंसान। और ऊपर देखने पर न इंसान, न धरती, मात्र खुलापन। धरती पर पैर और जमीन के बीच घर्षण है। आकाश में शरीर और हवा के बीच घर्षण है। में घर्षण धरती से कम है। इसलिये मुक्त रूप से गति करने के लिये आकाश

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

धरती से कहीं बेहतर विकल्प है। आकाश धरती से ज्यादा स्वतंत्रता देता है। शरीर जब आकाश में रहता है तो भय का अनुभव होता है परंतु चेतना जब आंतरिक आकाश में उठती है तो वो एक अद्वितीय अनुभव होता है।

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

प्रसाद

प्रसाद = प्र + स्वाद = (सत्य का स्वाद)

मंदिर में प्रसाद मिलता है, का तात्पर्य है, मन के भीतर जाने पर सत्य का स्वाद मिलता है। मंदिर में प्रसाद मिलने के पीछे यही संकेत छिपा है। मंदिर का प्रसाद जीभ को भाता है तो सत्य का स्वाद चेतना को भाता है। इससे यह सिद्ध होता है कि हमारी पाँचवीं इन्द्रिय से परे, वह छठी इन्द्रिय है। जीभ मिठाई का स्वाद तो ले सकती है लेकिन सत्य या प्रकाश का स्वाद नहीं। जिसे आंतरिक प्रसाद मिला, फिर वह ब्राह्मण हुआ। जिसे ये प्रसाद मिला वो जीभ के स्वाद से आगे निकल जाता है। ये प्रेम का प्रसाद है, जो परम प्रेमी द्वारा दिया गया है। प्रेम वो शक्ति है, जो रुपांतरित करती है। रुपांतरित होना अपना निर्णय है, इसी कारण रुपांतरण संभव हो पाता है। प्रेम कहता है कि तुम तक पहुँचने के लिये, तुम जैसा होना होगा तो मैं तैयार हूँ।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

कुंदन

कुंदन अर्थात् जो कुंद नहीं है ।

कुंद कर देने का कारण है अशुद्धियाँ। कुंदन शुद्ध सोना है। मनुष्यों में कुंदन की उपमा उसे दी जाती है, जो मन द्वारा दी गई अशुद्धियों से मुक्त है। मन अपने लाभ के लिये कुंदन में अशुद्धियाँ मिलाता है। वह चाहता है कि सोने के साथ खोट भी बिक जाए तो लाभ ज्यादा हो। वह जानता है कि खोट खुद से तो बिकने से रहा लेकिन सोने के नाम पर खोट भी बेचा जा सकता है। सोना खुद अशुद्धि नहीं चाहता। अशुद्धि चाहता है, उस पर नियंत्रण करने वाला मन। मन को शुद्धता से मतलब नहीं। उसे मतलब है, खुद को मिलने वाले लाभ से। जो कुंद है, वो भेद नहीं सकता। भेदने के लिये उसे तीक्ष्ण होना होगा। बोध वह कुंदन है जो अस्पष्टता को भेद देता है। इच्छाशक्ति वह कुंदन है, जो लोभ को भेद देती है। कुंदन की एक और खासियत है, उसकी चमक। चमक आती है परावर्तित या रिफ्लेक्ट करने की क्षमता के कारण। अर्थात् जो भी बाहर से आया, उसे मूल स्वरूप में लौटा देने की क्षमता, बिना कुछ भी सोखे।

वार्तालाप

वार्तालाप = वात + आलाप

वात अर्थात् हवा। वार्ता अर्थात् दो पक्षों के बीच ध्वनि का आदान-प्रदान और आलाप अर्थात् लम्बाई। ध्वनि ऊर्जा की वह तरंग है, जो हवा के माध्यम से आगे बढ़ती है। आकाश में ऊपर की ओर उठने पर जैसे-जैसे वायु विरल होती जाती है, बातें करना होता जाता है और अंतरिक्ष में हवा न होने पर बातचीत संभव नहीं। धरती पर

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100011/2021
Date 05/03/2021

रहते हुए अपने आसपास के माहौल में आसक्त होने से, बातचीत की आवृत्ति काफी बढ़ जाती है। वहीं आंतरिक आकाश में चेतना के ऊपर उठने पर आसक्तियाँ गिरती जाती हैं। इसलिये बातचीत की संभावनाएँ कम होती जाती हैं, मौन प्रबल होता जाता है। ध्वनि कामनापूर्ति का साधन भी हो जाती है। इसलिये कामनाएँ जितनी ज्यादा होंगी, ध्वनि का उपयोग भी उतना ही ज्यादा होगा। कामनाहीन व्यक्ति मौन को सदा प्राथमिकता देगा।

क्षमा

क्षमा = क्षय + नहीं

क्षमा के साथ शील शब्द का प्रायः उपयोग किया जाता है। शील अर्थात् शीतलता। अर्थात् क्षमा से आंतरिक शीतलता मिलती है। क्षमा के साथ विशेषता ये है कि न ये उसे नुकसान पहुँचाती है, जिसे दी जाती है और न ही देने वाले को कोई नुकसान पहुँचाती है। क्रोध के साथ अग्नि शब्द जुड़ा है तो क्षमा के साथ शीतलता। अर्थात् क्रोध सामने वाले को भी जलाता है और स्वयं को भी। क्रोध दुधारी तलवार जैसा है। वहीं क्षमा वो फूल है, जो देने और लेने वाले, दोनों को महकाता है। क्षमा ये बतलाती है कि व्यक्ति के भीतर प्रतिक्रिया की भावना को रोकने की शक्ति है। प्रतिशोध की अग्नि को बुझा देने लायक जल है। हिंसा के बीज की सिंचाई न करने का विवेक है। सहनशक्ति है, सौम्य स्वभाव है। क्षमा मन सम्बन्धित तप है। ऐसे व्यक्ति जहाँ भी होते हैं, आसपास के लोग उनका अनुसरण करते हैं व प्रतिक्रिया से सभी बचना चाहते हैं।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

योगी

युद्ध के मैदान के मध्य कृष्ण अर्जुन को कहते हैं कि हे अर्जुन, तू योगी हो। कृष्ण अर्जुन को योद्ध होने को नहीं कह रहे जबकि युद्ध सामने है। कृष्ण कहते हैं कि युद्ध इसलिये मत करो कि तुम्हें इसे जीतना है या इसके माध्यम से कुछ पाना है बल्कि इसलिये होने दो कि तुम्हारा स्वभाव क्षत्रिय है। मोह के वास्ते अपने स्वभाव को मत दबाओ। अभी सामने वाले पक्ष के मोह से बँधे होकर युद्ध से मना करते हो। कल को जब पांडवों के पक्ष से लोगों को गिरते हुए देखोगे तो उनसे मोह जाग उठेगा और तब तुम युद्ध में लौटोगे। क्रोध और बदले की भावना के साथ। अतः अपने भीतर की प्रकृति को उसका कार्य करने दो। इस प्रकार तुम युद्ध में रहते हुए भी इससे निर्लिप्त रहोगे और यही तो योगी करता है। वह अपने स्वभाव को स्वतंत्रता देता है और इससे वह जगत् में रहते हुए भी इससे निर्लिप्त रहता है।

विचलित

विचलित अर्थात् विजातिय के कारण चालित ।

व्यक्ति अपने स्वभाव से चलित और मन द्वारा विचलित होता है। मन व्यक्ति को उसके मूल रास्ते से भटकाव देता है। विचलन को प्रकृति के माध्यम से समझा जा सकता है। व्यक्ति का शरीर प्रकृति के तत्वों से ही बना हुआ है और प्रकृति की शक्ति से ही चालित होता है लेकिन प्रकृति के मूल रस प्रेम और शांति ही व्यक्ति में अनुपस्थित होते हैं। कारण है विचलन या भटकाव, जो हमारा मन हमें देता है। चेतना प्रकृति की शक्ति को उसके मूल हसूस कर सकती है, जिसे शरीर की आवश्यकता नहीं है। लेकिन मन को प्रकृति

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

की शक्ति को महसूस करने के लिये, शरीर की आवश्यकता है। मन शक्ति को इन्द्रियों के माध्यम से अनुभव करता है, जिसे काम या कामना कहते हैं। चेतना को जो स्वतः ही प्राप्य है, मन उसी को शरीर के माध्यम से पाना चाहता है। यही चेतना के लिये विचलन है।

पूनम

पूनम = पूर्णम = पूर्णिमा

पूर्णिमा चन्द्रमा से जुड़ी है और पूर्णिमा का चाँद शीतलता से जुड़ा है। पूर्णिमा पर चाँद अपने पूर्ण स्वरूप को प्राप्त करता है। महात्मा बुद्ध ने जिस दिन अपनी पूर्णता को प्राप्त किया था, चन्द्रमा उस दिन अपनी पूर्णता में चमक रहा था अर्थात् उस दिन पूर्णिमा थी।

भारतीय दंत कथाओं में शरद पूर्णिमा की रात्रि को अमृत वर्षा से जोड़ा गया है। शरद पूर्णिमा पर अपनी छतों पर खीर रखने का रिवाज है और सुबह उस खीर को खाया जाता है ताकि अमृत वर्षा का लाभ लिया जा सके। संदेश ये है कि पूर्णता अमरता से भी जुड़ी है। भारतीय सभ्यता में इस प्रकार प्राकृतिक घटनाओं का उपयोग जीवन के रहस्यों की ओर संकेत करने में किया गया है। शरद पूर्णिमा प्रकृति की अमरता की ओर संकेत करती है, तो आंतरिक पूर्णता चेतना की अमरता की ओर।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

मंजर

मंजर = मन + दृश्य

मनचाहा या अनचाना दृश्य ही मंजर है। जो मनचाहा है, वो पहले चित्त में उभरता है और फिर मन उसको आँखों के सामने साकार होते देखना चाहता है। ये सपने के सच होने जैसा है। मंजर वह है, जिसका प्रभाव मन पर पड़े। उस दृश्य को देखकर मन में तरह-तरह की भावनाएँ उठें। मंजर को देखकर मन हर्षित या दुःखी हो सकता है। मंजर में चित्त और आँख की जुगलबंदी होती है। ये ढोल और हाथ की जुगलबन्दी जैसा है। ढोल और हाथ के साथ आने से ध्वनि निकलती है, तो चित्त और आँख के साथ आने से भावनाएँ। खंजर शरीर पर प्रभाव डाल सकता है तो मंजर मन पर। मनचाहा अर्थात् मन की चाहत, चाहत अर्थात् कामना। कामनाओं से जुड़े हैं खुशी, दुख और उत्तेजना। कामनाएँ पूरी हों तो खुशी और न हों तो दुख तथा जब तक पूरी न हो, तब तक उत्तेजना।

प्रभा

प्रभा = प्र (सत्य) + भा (प्रकाश) = अर्थात् सत्य का प्रकाश ।

परमात्मा के पास प्रकाश है। प्रकृति के पास दिन और रात हैं और मन के पास है अज्ञान। अज्ञान अर्थात् जानकारी की अनुपस्थिति। ये एक विचित्र स्थिति है, जब हमारा एक भाग अपनी मूल जानकारी की खोज में लगा रहता है और एक भाग कामनाओं की पूर्ति की खोज में। ये दो दिशाओं में एक साथ चलने जैसा है। एक कदम उत्तर की ओर तो एक कदम दक्षिण की ओर। मन प्रकृति की शक्ति का ही अनुभव करना चाहता है परंतु उसके में नहीं, पदार्थ के माध्यम से अभिव्यक्त होने वाले रूप में। मन के माध्यम से

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

चेतना शरीर में शरण लेती है। अपने मूल स्वरूप में चेतना पराशक्ति या प्रेम में शरण लेती है और आत्मा के रूप में प्रभा में शरण लेती है।

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

संस्कृति

संस्कृति = सम + कृति

संस्कृति अर्थात् सम को केन्द्र में रखकर बनाई गई व्यवस्था। सभ्यता अर्थात् व्यक्ति को समाज में या धरती पर स्वयं को कैसे संचालित करना है और संस्कृति अर्थात् अपनी आंतरिक यात्रा में खुद को कैसे संचालित करना है। आंतरिक यात्रा में स्वयं को संचालित किया जा सकता है – प्रेम, ज्ञान, भक्ति, योग, सेवा के माध्यम से।

सभ्यता शिक्षा से सम्बन्धित है तो संस्कृति दीक्षा से। सभ्यता व्यक्तित्व का विकास करने में मदद करती है तो संस्कृति चेतना का। सभ्यता मन और शरीर पर कार्य करती है तो संस्कृति और गहराई में उतरकर चेतना पर कार्य करती है। विश्व में अलग-अलग भौगोलिक स्थलों पर अलग-अलग सभ्यताएँ पनपीं। जिसने व्यक्ति को समाज के साथ तारतम्य बिठाने में सहायता की। वहीं पूरब में सभ्यता के साथ-साथ संस्कृति भी पनपी। क्यूँकि पूरब में लोगों ने जान लिया था कि व्यक्ति की खोज संसार तक सीमित नहीं है। उसकी खोज संसार से आगे, खुद तक जाती है।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

अनादि

अनादि = अन + आदि = अनुपस्थित है जिसका प्रारंभ ।

अनादि अर्थात् जो गणना या गिनती से परे है। गिनती से परे होने का तात्पर्य है, वो जो मन के आरंभ के कहीं पहले से उपस्थित है। बुद्धि का विकास मन के विकसित होने के बाद हुआ। अनादि वह है जिससे मन और बुद्धि जैसे आयामों की रचना हुई और वो अनादि है प्रकृति। इस तरह जीवन के रहस्यों को ढूँढना हो तो मन और बुद्धि के परे जाना होगा। जीवन की गहराई को खोजते हुए, इसकी जड़ तक उतरना होगा। आदि से अनादि का जन्म हुआ। अनादि से अतीत का और अतीत से आधुनिक का। अनादि का रास्ता अतीत से होकर जाता है। यही कारण है कि धर्म से सम्बन्धित किताबों में अतीत से सम्बन्धित बहुत सी सूचनाएँ व कहानियाँ दर्ज होती हैं। वहीं महत्वाकांक्षा भविष्य की ओर जाती है। रहस्यों के खोजी को अतीत में संभावनाएँ दिखती हैं क्यूँकि अतीत में रहस्यों पर काम हुआ है।

आदित्य

आदित्य = आदि + त्य = (जो आदिकाल से त्याग में रत है ।)

विज्ञान सूर्य के अनुमानित जन्म का समय जानता है। परंतु प्रकृति सूर्य की रचना के पहले से उपस्थित है। सूर्य हर पल, हर क्षण ऊर्जा का त्याग करता है और ये काम वह अपनी रचना के समय से करता चला आ रहा है। सूर्य ही आकाशगंगा को अग्नि या ताप देता है। सूर्य यदि ऊर्जा का त्याग कर रहा है तो उसे ग्रहण कौन कर रहा है? उत्तर है जीव। जैसे के चारों ओर परा शक्ति है वैसे ही जीव के चारों ओर ऊर्जा उपस्थित रहती है।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

यही ऊर्जा संघनित होकर शरीर की रचना करती है और जीव इसी शरीर रूपी अभिव्यक्ति के माध्यम से जीवन को प्राप्त करता है। सूर्य को इसी कारण जीवन का दाता कहा गया है। सूर्य उस व्यवस्था का एक भाग है, जो जीवन का संचालन करती है। सूर्य व्यक्ति के होने का कारण नहीं है, परंतु सूर्य व्यक्ति के शरीर के होने का कारण अवश्य है।

'इन्द्रिय संयम अर्थात् इन्द्रिय संग यम'

इन्द्रिय संग जुड़ी हैं इच्छाएँ और आदतें। फिर इन्द्रिय संग यम या, इन्द्रिय संयम की क्या आवश्यकता है? उत्तर है रिसाव को रोकने के लिये। ये रिसाव है शक्ति का। इन्द्रियों की आसक्तियाँ, शक्ति का ह्रास करती हैं। शक्ति के स्तम्भन से जुड़े हैं शांति, सुख और ध्यान। संयम से शक्ति मिलती है और शक्ति से आंतरिक यात्रा को गति मिलती है। शक्ति ही चेतना का ईंधन है। चेतना अपने सभी लक्ष्यों और प्रयोजनों को शक्ति के माध्यम से ही पूरा करती है। इच्छाएँ शक्ति का ह्रास करती हैं और खुद को आवश्यकताओं की पूर्ति पर रोक लेने से शक्ति का अपव्यय रुकता है। जीवन को शक्ति भी चाहिए और ऊर्जा भी। वहीं चेतना के लिये मात्र शक्ति ही पर्याप्त है।

'प्यार भावना है और प्रेम भाव'

भावना मन से सम्बन्धित है और भाव चेतना से। मन द्वारा किये गए कई चयनों में एक र भी है। प्यार काफी कुछ इन्द्रियों द्वारा दी गई सूचनाओं पर निर्भर करता है। जो

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

आँखों को देखने में और कानों को सुनने में अच्छा लगे, उसके मन को भा जाने की संभावना ज्यादा होती है। जो आँखों और कान की परीक्षा में पास न हो सका, उसके मन को भाने की संभावना कम है। प्यार में दो पक्ष होते हैं। ये पूरा तब तक नहीं माना जाता, जब तक दोनों पक्ष राजी नहीं हो जाते। यदि एक पक्ष तैयार है और दूसरा नहीं, तो ये अधूरा प्यार है। वहीं प्रेम को चेतना को खुद ही तैयार करना होता है। किसी और के लिये करने को इसमें कुछ भी नहीं है। प्रेम हाथ में जलते दीये की तरह है, जिसके हाथ में है, उसका अंधकार तो दूर करता है, आस-पास के लोगों तक भी इसकी कुछ किरणें जरूर पहुँचती हैं।

'तीसरी आँख वह है, जो तीसरे आयाम में देख सके'

हमारी पहली दो आँखें मन और बुद्धि। चेहरे पर लगी दो आँखों को बस कैमरे की तरह जानिये। मन की आँख आकर्षण, सौन्दय व कामनाओं को देखती हैं। वहीं हमारी बुद्धि की आँख लाभ को देखती है, संपत्ति, व्यापार, योजना को देखती है। ये दोनों आँखें मिलकर जीवन की लम्बाई-चौड़ाई को देख सकती हैं परंतु गहराई को नहीं देख सकतीं। शिव के माथे पर दर्शायी गई तीसरी आँख जीवन की उसी गहराई में देखती है। मनुष्य की अपनी जड़ों की खोज, इसी तीसरे नेत्र द्वारा की जाती है। जीवन के तीसरे आयाम में देखना ही ध्यान है। ध्यान इसी तीसरे नेत्र को विकसित करता है। जीवन उस पौधे के सामन है, जो सतह पर अभिव्यक्त होता है, विकसित होता है व मेलजोल करता है। लेकिन जिसे बाहरी दुनिया से ज्यादा भीतरी दुनिया में उत्कंठा है, उसे तीसरी आँख की ओर जाना होता है।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

‘भूख का समाधान भू के पास है’

शरीर अन्न से बना है और अन्न से बने इस शरीर की भूख मिटाने के लिये भी धरती की शरण में जाना पड़ता है। शरीर धरती का, रहना धरती पर, खाना धरती पर, पानी धरती द्वारा, अधिकार भी उसी धरती पर। जब पेट की जमीन खाली हो जाती है तो उसे भूख कहते हैं। इस खाली जमीन में धरती का भाग भोजन के रूप में भरा जाता है।

भूख तड़प देती है और भोजन संतुष्टि देता है। फसल के रूप में जीवन ही भोजन पैदा करता है और मनुष्य के रूप में जीवन ही उस भोजन को पाकर संतुष्ट होता है। धरती वह आधार है, जिसमें जीवन उत्पादन और उपभोक्ता दोनों रूपों में अभिव्यक्त होता है। पौधे अपना शरीर भोजन के रूप में न दें तो जंतुओं का शरीर नहीं चल सकता। भूख एक प्रश्न है और धरती के पास इस प्रश्न का उत्तर है। फसलों का जीवन महीनों का, जंतुओं का सालों का। ये कुछ महीने ही सालों की इमारत में लगी ईंटे हैं।

वशिष्ठ

वशिष्ठ = वश + अष्ट

वशिष्ठ वह है जो आठ जड़ तत्वों के वश से बाहर है। जिसने स्वयं को विजातिय के बँधन से मुक्त करने में सफलता प्राप्त की। जो मन, बुद्धि, अहंकार और प्रकृति के बंधनों से छूटा हुआ है। महर्षि वशिष्ठ राम और शेष भाइयों के गुरु हुए। वशिष्ठ ने अपने जीवन की तपस्या के फलस्वरूप जो बोध एकत्र किया, उसे श्रीराम को उन्होंने विस्तार के साथ दोनों के बीच हुआ यह संवाद ‘योग वशिष्ठ’ नामक ग्रंथ के रूप में उपलब्ध है।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100116/2021
Date 05/03/2021

वशिष्ठ राम को महत्वाकांक्षा से दूर, तत्व ज्ञान की ओर ले जाते हैं। वशिष्ठ राम को बताते हैं पाने योग्य धरती का राज्य नहीं, अपितु स्वयं को प्रकृति के बंधन से मुक्त करना लक्ष्य है। पाना है खुद को और खोना है मन को। व्यक्ति राज्य के नाम से न जाना जाए बल्कि राज्य व्यक्ति के नाम से जाना जाए।

‘कर्ता को प्राप्य है अनुभव’ ‘दृष्टा को प्राप्य है बोध’

कर्ता जो भी सूचनाएँ प्राप्त करता है, उन्हें स्मृति में एकत्र करता है। वहीं बोध को स्मृति में नहीं दर्ज किया जा सकता। स्मृति वह गठरी है, जिसमें अतीत एकत्र है। इसे ढोते हुए चलने से गति धीमी होती है और यात्रा कठिन होती है। बोध वे सूचनाएँ हैं, जो मार्ग में मिलती रहती हैं। दृष्टा बोध को खोजता नहीं, ये उसे अनायास ही मिल जाता है। वहीं कर्ता स्मृतियों को सोचता है, उनकी बातें करता है, उनकी खोज करता है, उन्हें संजोता है और खाली समय में उन्हीं स्मृतियों के पन्ने पलटता है। वहीं बोध पंख के समान हैं, जो हल्केपन का अनुभव देते हैं। कर्ता व्यक्ति को देखता है और व्यक्तित्व को देखता है। दृष्टा भावना, भाव और प्रकाश को व्यक्ति के माध्यम से अभिव्यक्त होते देखता है। कर्ता व्यक्ति की वजह से भावना और भाव को रूप लेते देखता है। दृष्टा भावना और भाव की वजह से व्यक्ति की उपस्थिति देखता है।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

शूद्र

शूद्र = क्षुद्र

जो अपने भीतर की क्षुद्रता के साथ है। जो क्षय या क्षरण को ऊर्जा देने में रुचि रखता हो। क्षुद्र के लिये क्षय, क्षरण या नुकसान को ऊर्जा देना सामान्य है। इस प्रकार से जीवन जीने में उसे कोई कठिनाई नहीं। जहाँ क्षुद्रता है, वहाँ कामनाएँ हैं, क्रोध है, अपराध है। जहाँ पर ये सभी हैं, वहाँ व्यक्ति अपनी स्थिति से नीचे गिरता है। बुरी आदतें स्वयं को नुकसान पहुँचाने में संकोच नहीं करतीं। वहीं क्षुद्रता अपने लाभ के लिये, औरों को नुकसान पहुँचाने में संकोच नहीं करतीं। क्षुद्रता व्यक्ति पर इस प्रकार नियंत्रण करती हैं कि व्यक्ति अपनी महत्वाकांक्षा के लिये, किसी भी निचले स्तर तक उतरने को तैयार हो जाता है। इतिहास ने ऐसे कई तानाशाहों और अत्याचारियों को देखा है, जो अपने वर्ण, जाति की श्रेष्ठता को सिद्ध करने के लिये, दूसरे वर्णों, जातियों को प्रताड़ित करने और उनका समूल नाश करने की हद तक उतर गए।

प्रयोजन

प्रयोजन = प्र + योजन

व्यक्ति के भीतर उपस्थित सत्य की वह योजना जो व्यक्ति के माध्यम से पूर्ण होती है, प्रयोजन कहलाती है। योजन का एक अर्थ दूरी भी होता है। व्यक्ति अपने और सत्य के बीच की दूरी को तय करने के लिये जिस मार्ग पर कार्य करता है, उसे प्रयोजन कहते हैं। प्रयोजन ईश्वर की प्राप्ति के लिये, ईश्वर के कार्य को करने जैसा है। यह किसी दूसरे शहर के लिये, उस शहर तक मार्ग बनाने जैसा है। यह मुलाकात से पहले, चाहत

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

जैसा है। यह प्राप्ति से पहले प्रयास जैसा है। मिलन से पहले शृंगार जैसा है। मैच से पहले तैयारी जैसा है। ये स्वयं को समेटने जैसा है और विकसित करने जैसा है। कपूर अशुद्ध हो तो नहीं जलता, वहीं शुद्ध कपूर अग्नि के सम्पर्क में आते ही जल उठता है। ये तपस्या द्वारा स्वयं को शुद्ध करने जैसा है।

उद्विग्न

उद्विग्न = उत् + द्व + ग्न = उत् के माध्यम से द्वैत में रमना।

उद्विग्न का तात्पर्य है बेचैनी। बेचैनी स्वाभाविक है उस जीव में, जो जिस रस्सी से बँधा है, उसका एक सिरा खूँटे से बँधा है और दूसरा सिरा उसे गले में। द्वैत का तात्पर्य है दो ध्रुओं के बीच, सीमित कर दिया जाना। मन को अपनी सीमितता से प्यार है। मन विस्तार तो चाहता है परंतु अक्ष में रहते हुए। वहीं चेतना बस स्वतंत्रता चाहती है। उसकी स्वतंत्रता ही उसका विस्तार है। उत्तेजना मन का एक गुण है, वहीं मग्नता चेतना का स्वभाव है। उद्विग्नता एक बंद बक्से के भीतर खटपट होने जैसा है। बक्सा राज्य है, मन राजा है और चेतना बस अपनी मूल स्थिति चाहती है, जो है स्वतंत्रता। उसका मन से कोई बैर नहीं, वह बस मन के दिखाये रास्ते पर नहीं चलना चाहती और मन का खुद पर नियंत्रण नहीं चाहती। मन हिंसा और अतिवाद में भरोसा करता है, तो चेतना स्वतंत्रता और प्रेम में।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

संपन्न व विपन्न

संपन्न अर्थात् समता और समत्व से भरा होना तथा विपन्न का तात्पर्य है विषमता, भ्रम और द्वंद से भरा होना। सिर्फ पैसों से भरा होना संपन्नता नहीं और सिर्फ पैसे का न होना विपन्नता नहीं। अमीरी संसाधनों से झलकती है। अमीर को अमीर दिखने के लिये कोशिश करनी पड़ती है। महंगे कपड़े और गाड़ियाँ खरीदनी पड़ती हैं। महंगे इलाकों में रहना पड़ता है। वहीं गरीब को गरीबी छिपाने को मेहनत करनी पड़ती है। संपन्नता स्वाभाविक स्थिरता और प्रसन्नता से झलक जाती है और विपन्नता क्रोध, झल्लाहट और अस्थिरता से प्रदर्शित हो जाती है। संपन्न और विपन्न दोनों ही शब्द आंतरिक जगत् से लिये गए और उपयोग किये जाते हैं, बाहरी जगत् में। जिसके पास जितने अधिकार, उसे उतना ही संपन्न माना जाता है परंतु वास्तविकता में, जिसके पास जितना प्रेम हो, वो उतना संपन्न है।

सत्व

सत्व = सत् = Extract

सत्व वनस्पतियों में पाए जाने वाले वे तत्व हैं, जिनका प्रयोग औषधि के रूप में शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के लिये बुढ़ापे और उससे सम्बन्धित समस्याओं से लड़ने के लिये होता है। सत्व वनस्पतियों से विशेष प्रक्रिया द्वारा निकाले जाते हैं। टमाटर में पाए जाने वाले लाइकोपीन और हल्दी में पाए जाने वाले करक्यूमिन का उपयोग बहुतायत में आधुनिक चिकित्सा में होता है। सत्व गुणों से भरे होते हैं और शरीर में विभिन्न कमियों को हैं। विटामिन्स भी वनस्पतियों में उपस्थित सत्व का ही उदाहरण है। सत्व गुण है

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

और सत गुणों से भरे तत्व हैं। संक्षेप में इन्हें ‘गुणी तत्व’ कहा जा सकता है। प्रकृति भूख के साथ-साथ शरीर की कमियों को भी पूरा करती है। सत्व वनस्पति जगत् और जंतु जगत् के बीच के सम्बन्ध को प्रदर्शित करते हैं कि किस प्रकार जीवन का सतत् विकास हुआ और एक के बाद एक नई प्रजातियाँ अस्तित्व में आईं। भोजन के रूप में प्रकृति माँ का और सत्व के रूप में, वैद्य की भूमिका निभाती है।

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

प्रतिभा

प्रतिभा = प्रति (प्रकृति) + भा (पदार्थ)

प्रतिभा पदार्थ का वो रूप है, जिसमें से शक्ति या प्रकृति की झलक प्राप्त हो। प्रतिभा प्रतिकृति का उदाहरण है तो फोटो और जिराक्स छायाप्रति का। प्रतिभा कला की अभिव्यक्ति है, जो कलाकार के द्वारा मूर्त रूप लेती है। प्रतिभा की प्रशंसा, कला की प्रशंसा है और कला आती है प्रकृति जन्य गुणों से। प्रतिभा की पूजा उस शक्ति की पूजा है, जो देवताओं से लेकर मनुष्यों तक से अभिव्यक्त होती है। ये शक्ति ही है, जिससे दुनिया साकार होती है और यही शक्ति ही उस साकार दुनिया को चलाती भी है और उसके माध्यम से अभिव्यक्त भी होती है। प्रतिभा पूजन बतलाता है कि प्रेम स्पर्श का मोहताज नहीं है। भा अर्थात् प्रकृति की अपराशक्ति। प्रतिभा में उसी अपराशक्ति को मूर्त रूप दिया जाता है।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

बहन

बहन = वहन, बहना

बहन के भीतर एक नए जीवन को वहन करने की संभावना है। जीवनरूपी अवसर उसी के माध्यम से संभव है। बहने का स्वभाव उसे प्रकृति से मिला है। इसी कारण मायका छोड़ ससुराल चले जाना उसके लिये स्वाभाविक है। बहन अपने शरीर में एक नए जीवन को विकसित कर सकती है तो जन्म देने के पश्चात् उसका लालन-पालन का दायित्व भी उठाती है। प्रकृति हर एक जीवन का वहन करती है तो स्त्री में उपस्थित प्रकृति उन जीवनों का वहन करती है, जिसे उसने जन्म दिया। स्त्री के संसाधन और ध्यान का बहाव, उसके बच्चों की तरफ रहता है। स्त्री अपने प्रेमी या पति से कह सकती है कि मुझे 'ग्रान्टेड' मत लो लेकिन अपने बच्चों से उसे यह बात कहते नहीं सुना जाता। अपनी पूरी शक्ति लगाकर वह अपने बच्चे को ऊपर उठाना चाहती है। यही उसका सुख है।

अपरा

प्रकृति की वह शक्ति जो मन के प्रयोगों के लिये उपलब्ध हो, अपरा कहलाती है। प्रकृति का वह भाग, जो हमारे संवेदांगों की पकड़ में आ सके, अपरा कहलाता है। अपरा ऊर्जा और पदार्थ से मिलकर बना है। आइंसटीन के सिद्धांत $E = mc^2$ ने बतलाया कि ऊर्जा और द्रव्यमान परस्पर रुपांतरित होते हैं। ऊर्जा अदृश्य है, पदार्थ दृश्य है। अर्थात् दृश्य, अदृश्य में और अदृश्य, दृश्य में परिवर्तित हो सकता है। पदार्थ में भी ऊर्जा ही उपस्थित है परंतु प में। गीता ने अपरा के आठ भेद बतलाए हैं। पृथ्वी, अग्नि, जल, वायु,

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

आकाश, मन, बुद्धि और अहंकार। प्रकृति जनित सारे गुण व अवगुण इसी अपरा शक्ति में विद्यमान हैं। गुणों में आसक्ति और दुर्गुणों से घृणा का कारण यही 'अपरा' है। अपरा में ही सारे विभक्तिकरण, प्रकार, अन्तर उपस्थित हैं। सभी जीवों को अलग-अलग योनि व स्वरूप प्रदान करना अपरा की विशेषता है।

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

परा

परा = शक्ति

जैसे एक पेड़ पर कई पत्तियाँ हैं। एक ही माँ के कई बच्चे हैं, वैसे ही अपरा का जन्म परा से होता है। 'परा' ईश्वर की वह शक्ति है, जो मन और बुद्धि के दायरे से बाहर है। इसे प्रेम और समर्पण से ही पाया जा सकता है। इसे व्यक्ति की चेतना ही पा सकती है। यही चेतना का भोजन व आश्रय है। परा मन से परे है, इसी कारण इसे परेम या प्रेम कहते हैं। मन प्यार के लिये संस्कारित है। प्रेम मन की परिधि से आगे है। सारी विभिन्नताएँ जो अपरा में है, उनके मूल में परा है ओर परा में वे सारी विभिन्नताएँ सिमट भी आती हैं। यह पराशक्ति ही जीवों के भीतर रहने वाली इच्छाशक्ति, जीवनी शक्ति व हीलिंग पॉवर है। जीवनी शक्ति के रूप में, यह जीव को शरीर से जोड़कर रखती है। इच्छाशक्ति के रूप में, यह इच्छाओं और विकल्पों को दूर रखती है और हीलिंग पॉवर के रूप में, यह शरीर को सक्रिय व स्फूर्तिवान बनाए रखती है।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

द्विज

द्विज = द्वितीय जन्म

द्विज अथवा ब्राह्मणत्व वास्तव में द्वितीय जन्म के बाद ही उपलब्ध होता है। द्वितीय जन्म एक शरीर में रहते हुए ही होता है। पहले जन्म में शरीर, समय की परिधि में उत्पन्न होता है। दूसरे जन्म में चेतना, वर्तमान की परिधि में प्रवेश करती है। पहले जन्म में माँ का शरीर पीछे छूटता है तो दूसरे जन्म में अहंकार पीछे छूटता है। पहले जन्म के पश्चात् व्यक्ति मन द्वारा नियंत्रित होता है। दूसरे जन्म के पश्चात् व्यक्ति के माध्यम से प्रकृति अभिव्यक्त होती है। पहला जन्म पहचान मिलने से जुड़ा है तो दूसरा जन्म पहचान खो देने से। पहले जन्म में व्यक्ति प्रयोगशील होता है और दूसरे जन्म में योगशील। पहले जन्म के पश्चात् व्यक्ति को सूचनाएँ ज्ञानेन्द्रियों के माध्यम से उपलब्ध होती हैं और दूसरे जन्म में सूचनाएँ बोध एवं चेतना के माध्यम से।

अभिमान

अभिमान = अभिन्न मान

अभिमान मत करो अर्थात् 'मानने' को अपना सनातन भाग मत मानों। मानना उस डिब्बे के जैसा है, जिसे गाड़ी से काटकर अलग किया जा सकता है। मानना अभिन्न नहीं, जानना अभिन्न है। जो मानने के क्षेत्र से, जानने के क्षेत्र में पहुँचा हो, वह औरों को यह सूचना दे सकता है कि मानने पर इतना भरोसा ठीक नहीं कि वह जीवन का केन्द्र बिन्दु बन जाए। हमारे कर्म, हमारी मान्यता पर आधारित न हो जाएँ। मानना इतना मजबूत न हो जाए कि [illegible] पीछे छूट जाए। मानना सामाजिक धर्म को ही, अपना पहचान बना लेता है।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

मानने में यदि लचीलापन न रहे, तो वो अभिमान बन जाता है। अभिमान खुद के साथ भी अन्याय करता है और दूसरों के साथ भी। अभिमान यदि समय रहते टूट जाए तो गलती सुधारने का मौका मिल जाता है। अभिमान विनम्रता को लील जाता है व अस्थिरता व चिंताओं को जन्म देता है।

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

मैहर

मैहर = मै + हर

मैं अर्थात् अहंकार। मैं अर्थात् मन। मैं अर्थात् मन द्वारा दी गई पहचान। मैं अर्थात् वो बाधा जो प्रकृति से व्यक्ति को अलग करती है। मैं अर्थात् व्यक्ति के भीतर की अशुद्धियाँ। मैं अर्थात् आंतरिक प्रवाह में रुकावट। मैं अर्थात् दुनिया से मिली हुई पहचान से खुद को अभिन्न मानना। मैं अर्थात् सफलता और प्रतियोगिता की ओर दौड़। मन को दुनिया से मिलने वाली प्रशंसा प्रिय है। वहीं चेतना को अस्तित्व से जो मिलता है, उसे शब्दों में नहीं ढाला जा सकता। रावण रूपी मन ने, सीता रूपी शक्ति का हरण किया। वहीं मैहर वह शक्ति है जो मन का हरण करती है। यह लंका को रावण विहीन कर देने जैसा है। मन प्रेमिका जैसा है और शक्ति माँ जैसी। मन दृश्य जगत् है तो शक्ति अदृश्य जगत् है। दृश्य जगत् में कामनाएँ प्रधान हैं और चेतना गौण। अदृश्य जगत् में चेतना प्रधान है और कामना शून्य।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

मानना, समझना व जानना

मानना – चेतन मन से ।

समझना – बुद्धि से ।

जानना – चेतना से ।

मानने से जानने की यात्रा मन से चेतना की यात्रा है। मन जिस तथ्य को मान लेता है बुद्धि उस तथ्य को मजबूत करने में लग जाती है। मन जो भी मानता है, बुद्धि अपनी समझ से, उसके लिये रक्षा पंक्ति विकसित करने में लग जाती है। मन राजा है, तो बुद्धि उसकी संगी। मन के पास अपनी दुनिया का एक खाका है तो बुद्धि आर्किटेक्ट, ठेकेदार व मजदूर बन के उस दुनिया को मूर्त रूप देती है। मन अधिकार चाहता है और बुद्धि बतलाती है कि अधिकार करना कैसे है और उसे बनाए कैसे रखना है।

वहीं जानना सूक्ष्म है। जानना चेतना के माध्यम से है। सूक्ष्म जगत् चेतना का जगत् है। यह खुद से सम्बन्धित सूचना का जगत् है।

Mundane = Worldly = सांसारिक

मंडेन मतलब सांसारिक और सांसारिकता मन की ही देन है। धरती पर उपस्थित हर मनुष्य का मन अपना एक संसार बसाना चाहता है। इसी कारण मनुष्य, मनुष्य के बीच घर्षण है और प्रतियोगिता है। एक मन दूसरे मन को जीतना चाहता है ताकि दो मन प्रतियोगी न रहकर सहयोगी हो जाएँ। मन सम्बन्ध बनाना चाहता है क्यूँकि सम्बन्ध उस ल्यूब्रिकेंट का काम करता है जो आपसी घर्षण को कम करता है। ये बात दो इंसानों से लेकर देशों पर होती है। घर्षण से घाव उत्पन्न होता है, जिसे भरने के लिये शक्ति की आवश्यकता

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

होती है। घर्षण का प्रभाव मन पर भी पड़ता है, जिससे कड़वाहट, अविश्वास और दुश्मनी पैदा होती है। दुश्मनी असुरक्षा को जन्म देती है और असुरक्षा शक्ति और संसाधनों को स्वभाव से हटा, बुद्धि की ओर मोड़ देती है।

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

पखेरू व हंस

पखेरू को आकाश चाहिए व प्राण वायु और हंस को चाहिये प्रेम सरोवर। पखेरू है जीव और हंस है चेतना।

पखेरू उड़ता है दिन में परंतु रात में वापस धरती और पेड़ पर आकर आश्रय लेता है। पखेरू दिन में बैठना नहीं चाहता और रात में उड़ना नहीं चाहता। यदि लगातार अंधेरा रहे तो पखेरू के लिये उड़ना दुष्कर हो जाएगा और लगातार दिन रहे, तो बैठना दुष्कर हो जाए। पखेरू को धरती भी चाहिए और आकाश भी। वहीं चेतना रूपी हंस को चाहिये, बस प्रेम सरोवर। वह सरोवर में सहज है। पखेरू के लिये दिन में उड़ना, भोजन प्राप्ति की खोज हेतु है। रात्रि में वह अपने नियत आश्रय में लौट जाता है। जीव के लिये शरीर से बाहर रहना और शरीर में रहना, दिन और रात जैसा है।

उपजा

'उपजा' अर्थात् अशुद्धियों के पार जाए, ऊपर की ओर जाए।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

'अच्छे व बुरे संस्कार'

अच्छे संस्कार अर्थात् तपस्या के गुण + स्वतंत्रता

बुरे संस्कार अर्थात् विचारधारा + बंधन

तपस्या अर्थात् मन, वाणी और शरीर पर नियंत्रण। संस्कार अर्थात् सिखाना। स्वतंत्रता अर्थात् मन के प्रयोग करने व आत्मा को विकसित करने की छूट देना। ऋषियों द्वारा दिया गया बोध संस्कृति है, जो पुरानी पीढ़ी नई पीढ़ी को देती है। स्वतंत्रता अर्थात् पुरानी पीढ़ी के द्वारा नई पीढ़ी को, अपनी महत्वाकांक्षा पूरी करने का साधन न बनाना। स्वतंत्रता कहती है कि तुम्हारा जीवन, तुम्हारा चयन। स्वतंत्रता कहती है कि आगे बढ़ो, बस संस्कृति को साथ लेते चलो। संस्कृति पहचान को महत्व नहीं देती, करुणा व विनम्रता को महत्व देती है। बुरे संस्कार अर्थात् अपनी पहचान और विचारधारा को जीवन स्तंभ बनाना। बोध को जीवन से दूर कर देना। तपस्या को छोड़ महत्वाकांक्षा को अपनाना।

'आंतरिक दुनिया का उद्देश्य व प्रयोजन'

आंतरिक दुनिया का उद्देश्य व प्रयोजन, बाहरी दुनिया में संतोष को जन्म देता है। बाहरी दुनिया में खर्चा चले और भीतरी दुनिया का चर्खा चले। संतोष अर्थात् अपनी आवश्यकताओं को पूरा कर लेने की क्षमता से संतुष्ट होना। उद्देश्य व प्रयोजन स्वयं से सम्बन्धित है। अपनी भीतरी दुनिया से सम्बन्धित है। इन पर व्यक्ति तब काम करता है, जब उसका ध्यान अपनी चारों ओर की दुनिया से सिमट कर खुद तक आता है। अब भीतरी पानी मिलने लगता है, शक्ति मिलने लगती है। जब जीवन कुछ उपयोगी पैदा

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

करने लगता है, तब संतोष का जन्म होता है। धरती तब संतुष्ट रहती है, जब उसकी शक्ति पौधों तक पहुँच रही हो। शक्ति द्वारा कुछ फलित होते हुए देखना ही संतोष का कारण बनता है। जब अंतस व्यस्त हो, तब बाहर संतोष रूपी सामान्यता रहती है। कारखाना और धरती दोनों ही कुछ पैदा कर रहे हैं। कारखाना शोर व प्रदूषण के साथ व धरती शांति व ताजगी के साथ।

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

साधु आपसे भोजन नहीं, आपकी परीक्षा लेता है। साथ ही बोधगम्य बातें करने का अवसर देता है।

रोजमर्रा के जीवन में ऐसे व्यक्ति बहुत कम मिलते हैं जो बोध को अपनी बातों में स्थान दें। बोध वह फसल है जो तब पैदा होती है, जब व्यक्ति खुद को समेटने लगता है। किसी दूसरे का दिया गया बोध संस्कृति है। बोध, बोध तब होता है जब वह अंतस में पनपे। बुद्ध के विषय में एक कथा प्रसिद्ध है कि जब एक व्यापारी ने उनसे पूछा कि आप समर्थ हैं, कुछ काम क्यूँ नहीं करते? तब बुद्ध ने कहा कि मैं एक किसान हूँ, अपने अंतस में खेती करता हूँ और बोध उपजाता हूँ। लोग मुझे भिक्षा देते हैं और मैं उन्हें वह बोध देता हूँ। जो मेरे पास है, वो उन्हें मैं दे देता हूँ। इस खेती को करना ही मेरा काम है।

बेकार की बात

बेकार की बात अर्थात् बात में संदेश, जानकारी, अनुभव या बोध की बातें नगण्य, बातें बहुत ज्यादा। अलग-अलग व्यक्तियों के लिये अलग-अलग बातें प्रासंगिक

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

हैं। हर व्यक्ति के लिये प्रासंगिक वो है, जो उसकी रुचि के अनुसार हो। एक साधुमना और सन्यासी के लिये जो बाते प्रासंगिक हैं, किसी महत्वाकांक्षी के लिये वे बेकार की बाते हैं। वहीं किसी महत्वाकांक्षी की बातों में, किसी अंतर्मुखी व्यक्ति को कोई रुचि नहीं। एक गृहणी की बातों में, उसके पति को कोई रुचि नहीं भी हो सकती है। वहीं पति की व्यापार संबंधी बातों में, गृहणी को कोई रुचि नहीं। उसकी रुचि और व्यापार दूसरे तल पर है। एक सहज व्यक्ति को हल्की-फुल्की व विनोद की बातें पसंद हैं तो एक बुद्धिजीवी बौद्धिक परिचर्चा में इस कारण रुचि लेता है कि अपने मत को वो जीतते देखना चाहता है।

दोज़ख

दोज़ख = दो ज़ख्म = अर्थात् द्वैत ।

दोज़ख अर्थात् नर्क। परमात्मा अद्वैत हैं तो जीव तथा जीवन, दोनों ही द्वैत की परिधि में हैं। जीवन व्यक्ति का सुख ले लेता है और बदले में उसे खुशी की खोज में लगा देता है। जीवन से अपना सुख वापस ले लेना ही, जीवन की सफलता है। खुशी पाने का हर प्रयास व्यक्ति को और दुखों की ओर ले जाता है। खुशी पाने के हर प्रयास के साथ व्यक्ति और उत्तेजना उत्पन्न करता है, जो सुख को उससे दूर करता है। यदि खुशी मिल भी जाए तो वो आसक्ति पैदा कर देती है। जो अंततः दुखों को जन्म देती है। यही वे दो ज़ख्म हैं। यही नर्क या अंधकार की स्थिति है। इसी कारण सिद्ध पुरुषों ने, जीवन को दुखों का घर कहा है।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

अध्यात्म की सीढ़ी

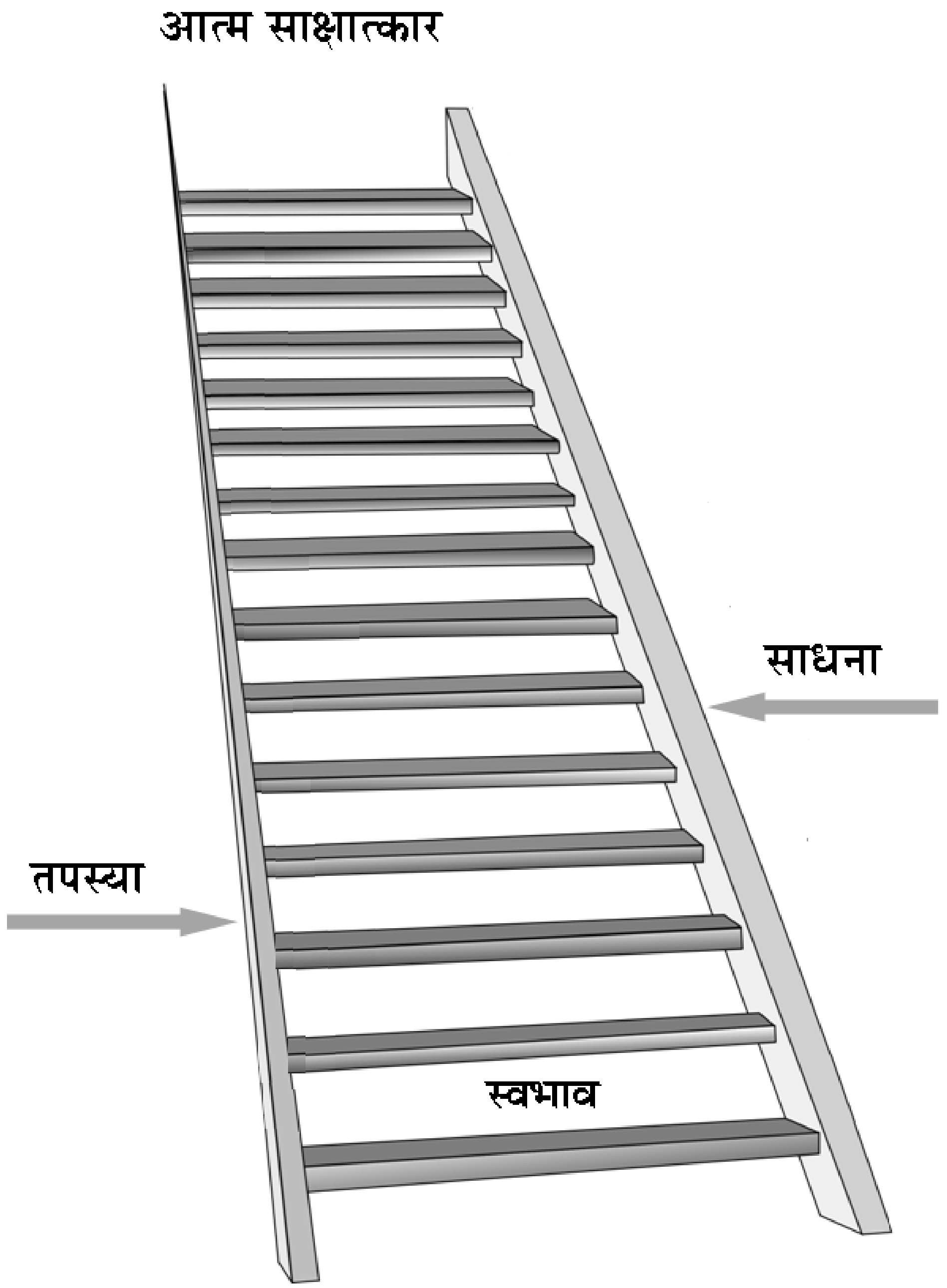

अध्यात्म की सीढ़ी के दो ऊर्ध्व स्तंभ हैं - तपस्या और साधना। तपस्या में ापने मन, वाणी और शरीर के नियंत्रण पर काम करता है। मन, वाणी

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. -L-100111/2021
Date 05/03/2021

और शरीर, ये सभी व्यक्ति की आंतरिक शक्ति के मुख्य चूषक हैं। तपस्या शक्ति के अनावश्यक व्यय को रोकती है। इससे अध्यात्म की सीढ़ी का एक स्तम्भ तैयार होता जाता है।

साधना व्यक्ति के जीवन जीने के तरीके पर काम करती है। साधना जीवन के फूल में से काँटे चुनकर उन्हें अलग करने हेतु है। वह जीवन के एक-एक अवगुण पर काम कर उन्हें जीवन से हटा देने का माध्यम है। यह अपने आंतरिक सॉफ्टवेयर पर काम कर उसे उन्नत बनाने हेतु है, ताकि जीवन का प्रोग्राम ज्यादा उत्पादक व तेज हो सके। साधना का मुख्य उद्देश्य जीवन में शक्ति के अपव्यय को रोककर, उसे अपने भीतर आत्मसात करने की क्षमता को विकसित करना है। यह ऊर्जा प्रधान जीवन से शक्ति प्रधान जीवन की ओर बढ़ने जैसा है। यह कामनाओं से उपयोगिता की ओर बढ़ने जैसा है। यह डाउनलोडर से अपलोडर की ओर जाने जैसा है। जैसे खारे पानी को प्रॉसेस कर, उसे मीठे पानी में बदलकर उपयोगी बनाया जाता है। वैसे ही तपस्या और साधना दोनों ही सतत् स्वभाव को निर्मल व दोषरहित बनाने पर काम करते हैं। निर्मल स्वभाव ही प्रेम को पैदा करता है और प्रेम ही वह रस है, जो जीवन को पूर्णतः रुपांतरित करता है। यह प्रकृति का रस है। अद्वैत का रस है।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

पहचान की आवश्यकता

काम, क्रोध, लोभ व मोह को छुपाने के लिये एक पहचान की आवश्यकता है। इन चारों की अनुपस्थिति में किसी पहचान की आवश्यकता नहीं।

वनस्पति जगत् को पहचान की जरूरत नहीं क्यूँकि वह काम, क्रोध, लोभ व मोह जैसी समस्याओं से मुक्त है। यदि हमें गर्मी का मौसम पसंद है तो भी हमें पंखे, कूलर और एसी की जरूरत है। हमें बारिश बहुत पसंद होते हुए भी, रेनकोट और छतरी की जरूरत पड़ती है। ठंड कितनी ही अच्छी क्यूँ न लगे, फिर भी गरम कपड़े की जरूरत पड़ती है। इसीलिये कामनाओं की दुनिया में मोल पहचान का है। हमारी लैंगिक, शारीरिक, सामाजिक, बौद्धिक व व्यवसायिक, इन सभी पहचानों से कुछ न कुछ कामनाएँ जुड़ी हैं। कामना अकेले नहीं आती, अपने पूरे समूह के साथ आती है। समूह के नकारात्मक प्रभाव से बचने के लिये, हम अपनी किसी पहचान को ही, अपनी ढाल बनाते हैं।

'भ्रम है तभी तो विकल्प है। जहाँ भ्रम नहीं, वहाँ प्रयोजन है।'

भ्रम है तो अस्पष्टता है। अस्पष्टता है तो अनिर्णय है। अनिर्णय है तो अनुपयोगिता है। विकल्प मन से जुड़े हैं तो प्रयोजन स्वाभाविकता से जुड़ा है। मन दुनिया से तो हमें जोड़ देता है लेकिन हमारी अपनी उपयोगिता कहीं खो जाती है। प्रयोजन पर किया गया काम ही जीवन को उपयोगी बनाता है। वनस्पति जगत् क्यूँकि अपने स्वभाव से नियंत्रित है इस [illegible]योगी है। मनुष्य जगत् क्यूँकि अपने मन द्वारा नियंत्रित है, इस कारण उपभोगी

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

है। हम भ्रमित हैं, वनस्पति जगत् नहीं। हम चंचल हैं, वनस्पति जगत् नहीं। मनुष्य जब अपनी स्पष्टता को पा लेता है तो वो अपने प्रयोजन को भी पा लेता है।

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

मन अपना व अपनों का आवलम्बन लेगा। बुद्धि विचारधारा का आवलम्बन लेगी। स्वभाव जीवन का आवलम्बन लेगा।

व्यक्ति के भीतर मन, बुद्धि और स्वभाव तीनों ही उपस्थित हैं। बात अब इस पर आकर ठहर जाती है कि व्यक्ति किसके द्वारा नियंत्रित है। व्यक्ति पर किसका प्रभाव ज्यादा है। मन को अपनी एक अलग दुनिया चाहिए, जिसका नियंत्रक वो खुद बनना चाहता है। इस कारण मन, अपना व अपनों को अपने आसपास एकत्र करता है। बुद्धि अपनी विचारधारा को प्रमुख मानती है। इस कारण अपना जीवन वह बुद्धि और इससे सम्बन्धित क्रिया कलापों में व्यतीत करती है। बुद्धि विचारधारा के माध्यम से जगत् को प्रभावित करना चाहती है और अपनी विचारधारा का परचम, वो हर जगह लहराते देखना चाहती है। बुद्धि विचारधारा को जीवन पर प्राथमिकता देती है। वहीं स्वभाव जीवन को पनपने देना चाहता है।

भावनाएँ और पीड़ा

भावनाओं के विषय में बात करना पीड़ादायक है क्यूँकि भावनाएँ अपेक्षा, उपेक्षा व उनसे भावों से सम्बन्धित हैं। वहीं भाव दोनों से ही मुक्त हैं। इसी कारण पीड़ा से भी मुक्त

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

है। यही कारण है कि व्यक्ति अपने स्वभाव के साथ जीवनभर रह लेता है लेकिन भावनाओं से अपेक्षाकृत जल्दी ही अधा जाता है। मन भावनाओं का जनक है। स्वभाव समेटता चलता है, स्वीकारता चलता है और जब अभिव्यक्त होता है तो प्रसन्नता और विनोद के रूप में होता है। भावनाएँ अपना सहारा ढूँढती हैं, अपेक्षा करती हैं और मनचाही प्रतिक्रिया न मिलने पर, पीड़ा के रूप में उमड़ पड़ती हैं। मन जिनका चुनाव करता है, उनसे अपने प्रति पूर्ण समर्पित होने की अपेक्षा करता है। चुनाव यदि भावनाओं को केन्द्र में रखकर किया गया हो तो अपेक्षित परिणाम न मिलने पर पीड़ा मिलती है।

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100141/2021
Date 05/03/2021

'माताजी राम राम कहिये।'

राम-राम कहिये अर्थात् अपने ध्यान को दुनिया, परिवार और मोह से हटाइये। मन को जपने का काम देकर, अपने ध्यान को स्वयं तक सीमित कीजिए।

बुढ़ापे में किसी से मोह छोड़ने को कहना, उससे अपने जीवनभर की संपत्ति को छोड़ने के लिये कहने जैसा है। और यदि ये बात वे लोग कहें, जो खुद मोह में जकड़े हुए हैं तो सुनने वाले का खीझ से भर उठना स्वाभाविक है। सुनने वाले को यह सुनाई देगा कि मैं तो अपनी पकड़ ढीली न करुंगा लेकिन आप छोड़ दीजिये। ये किसी से खुद को रूपांतरित कर लेने के लिये कहने जैसा है। शारीरिक रूपांतरण तो समय पर निर्भर है लेकिन आंतरिक रूपांतरण सिर्फ इसलिये न हो सकेगा कि अवस्था हो गई। आंतरिक रूपांतरण तब संभव है जब इच्छा खो जाए और भाव हो जाए। कोई खिलाड़ी सिर्फ इसलिये खेलना बंद न करेगा कि कोई उसे ऐसी सलाह दे रहा है। ये उसका स्वयं का निर्णय है।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

दया और दिया

दया अर्थात् शक्ति से भरना ।

दिया अर्थात् आंतरिक ज्योति का जलना ।

दया भावना नहीं है। दया ये बोध है कि जीवन की आवश्यकताएँ पूरी होनी चाहिए। दया यह बोध भी है कि निर्बल को प्रताड़ित नहीं किया जाना चाहिए। जीवन जीव को मिला अधिकार नहीं बल्कि प्रकृति प्रदत्त उपहार है। इस जीवन रूपी उपहार के अतिक्रमण का किसी अन्य को अधिकार नहीं। इस उपहार को सहेजने में किसी की मदद करना 'दया' है। दया की रुचि अतिक्रमण करने वाले को दंड देने में नहीं है। बस जीवनरूपी उपहार की रक्षा करने में है। आंतरिक शक्ति भीतर है जो स्थिरता और प्रेम के रूप में रहती है। भीतरी दिया भी इसी शक्ति के माध्यम से प्रकाश प्राप्त करता है। इसी कारण बुद्ध ने करुणा और महावीर ने शाकाहार को जीवन जीने का तरीका माना है।

मनीष

मनीष = मन + ईश = अर्थात् मन का ईश

जो अपने मन का ईश या स्वामी है, वही स्वतंत्र है, मुक्त है और प्रसन्न है। मन पर नियंत्रण करने की प्रक्रिया में बोध जन्म लेता है और मन पर पूर्ण नियंत्रण की स्थिति में प्रकाश उत्पन्न होता है। मनीष ही शास्त्रों का रचनाकार है। मनीष अपने आंतरिक युद्ध को लड़ने वाला योद्धा है। जो अपने कुरुक्षेत्र को धर्मक्षेत्र में बदलने का युद्ध लड़ता है। उसका [illegible] कुरुओं को जीतना नहीं, बस अपने क्षेत्र का शुद्धिकरण है। वह अपने क्षेत्र पर

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

स्वयं भी राज्य नहीं करना चाहता। बस अपने क्षेत्र को सभी प्रकार के राज्यों से मुक्त करना चाहता है। जहाँ कोई राज्य नहीं करता, वह प्रकृति का क्षेत्र है और वह क्षेत्र ही धर्म क्षेत्र हो जाता है। प्रकृति का एक भाग बंधन का हेतु है तो उसी प्रकृति का एक भाग स्वतंत्रता का हेतु भी है।

❀ ❀ ❀

विरोध

विरोध = विजातिय + रोध = अर्थात् विजातिय द्वारा उत्पन्न किया गया रोध ।

विरोध गति को कम करना चाहता है या गति को रोकना चाहता है। विरोध दुश्मनी नहीं है। दुश्मनी क्षति पहुँचाना चाहती है। विरोध कृत्य का है, विचारधारा का है। दुश्मनी व्यक्ति से है। विचारधारा विरोध करती है, महत्वाकांक्षा षडयंत्र करती है। विचारधारा की जीत, अपनी बौद्धिकता की जीत है। विचारधारा बौद्धिकता की देन है। अपनी बौद्धिक पहचान को बनाए रखने के लिये, बौद्धिक संघर्ष ही कर्म हो जाता है। विचार से कई मत निकलते हैं और जहाँ विभिन्नता होती है, वहाँ मतभेद होते हैं। अपनी विचारधारा को बनाए रखने के दो मार्ग हैं। पहला इसका प्रचार-प्रसार और दूसरा है अन्य विचार धाराओं का विरोध। असुरक्षा की भावना राजनीति को जन्म देती है और राजनीति अधिकारों को ही प्राथमिक मानती है।

❀ ❀ ❀

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

चतुर

चतुर = चतुर्थ

जो कि जीवन के चौथे आयाम अर्थात् ईश्वर को ध्यान में रखकर जीवन व्यतीत करे। न कि बुद्धि व लाभ को। चतुरता दूरदृष्टि नहीं, बल्कि स्पष्ट दृष्टि है। दूरदृष्टि दीर्घकालीन लाभ की बात करती है, वहीं स्पष्टदृष्टि लाभ को एक तरफ रखकर, अपने स्वाभाविक मार्ग को थाम लेती है। स्वाभाविक मार्ग सहजता प्रदान करता है और सहजता ही प्राकृतिक श्रृंगार है। दूरदर्शिता व्यक्ति को भविष्य में भी प्रासंगिक बनाए रखने के लिये है। वहीं स्पष्टदर्शिता वर्तमान में दीप जलाने की तैयारी है। कुटिलता लाभ की हेतु है और चतुरता प्रकाश की। चतुर अपनी शक्ति रूपी धन को जगत् के प्रलोभनों पर खर्च करने को तैयार नहीं। इसी शक्ति को ईंधन के रूप में उपयोग कर, वह जीवन को प्रकाशवान बनाना चाहता है। स्पष्ट दृष्टि जानती है कि वास्तविक धन क्या है और सहेजना किसे है।

उरोज़

उरोज़ = उर + ओज

उरोज अर्थात् हृदय क्षेत्र में ओज का उपस्थित होना। स्तनों को उरोज कहा जाता है। बच्चे के जन्म के साथ स्तनों में ओज की मात्रा बढ़ जाती है, जिससे उनमें दुग्ध ग्रंथियाँ सक्रिय हो जाती हैं। इस प्रकार बच्चे के भोजन की व्यवस्था भी, माँ के शरीर में हो जाती है। इस व्यवस्था के मूल में प्रकृति ही है और बच्चे के बड़े हो जाने पर प्रकृति ही खेतों में उसके की व्यवस्था भी करती है। बस अंतर यह है कि पहले आहार माँ के माध्यम से

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

मिलता है और बाद में धरती माँ से। हृदय में उतरे ओज से स्त्री शरीर आकर्षक भी बनता है और यही गर्भधारण के लिये शरीर की तैयारी का एक भाग भी है। मन उरोजों का उपयोग कामनाओं को जगाने के लिये करता है तो प्रकृति आहार के उत्पादन हेतु। आहार के रूप में बच्चे के लिये माँ का दूध, ऊर्जा और शक्ति दोनों से भरा है।

यम व योग्य

यम के पालन से व्यक्ति में शक्ति की प्रधानता होने लगती है और इसी शक्ति के माध्यम से अंततः योग प्राप्ति संभव है। यम के पालन का प्रयोजन अपनी संभावनाओं के पूर्ण उपयोग के लिये, ईंधन की व्यवस्था करना है। योग्य होना अर्थात् तैयार होना। यम और योग का बहुत घनिष्ठ रिश्ता है। यम का पालन तभी संभव है, जब व्यक्ति आत्म रूपांतरण के लिये तैयार हो जाए। यम किसी पर भी थोपा नहीं जा सकता। यह पूर्णतः अपना चुनाव है। अपने चुनाव के पीछे व्यक्ति अपनी शक्ति लगा देता है। योग्यता अपनी धुन में मस्त हो जाना है। न कि अपनी धुन पर किसी और को नचाने का प्रयास करना। अपने भीतर उस धुन को ढूँढ लेना, जिसमें व्यक्ति स्वयं ही मस्त हो जाए, यही जीवन में से संगीत को ढूँढ लेना है। किसी और की धुन पर नाचना सिर्फ निर्भरता ही दे सकता है।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

'न काहू से दोस्ती, न काहू से बैर'

न किसी से निकटता और न किसी से दूरी। न अपेक्षा, न उपेक्षा सिर्फ उपलब्धता। सिर्फ उपस्थिति, निर्लिप्तता के साथ।

न किसी से अपनी इच्छाओं को पूर्ण कराने की अपेक्षा और न किसी की इच्छाओं में लिप्त होने की प्रतिबद्धता। जो हुआ अपनी धुन में मग्न, वो माँगता सबकी खैर। इसीलिये कबीर खड़ा बाजार में माँगे सबकी खैर। जब तक कामनाएँ बलवती होंगी, तब तक परमात्मा न होगा, होगी तो बस खोज। कामनाओं के विलीन होते जाने के साथ, खोज भी विलीन होती जाती है और परमात्मा उभरने लगता है। तब स्थिति बनती है, न किसी से जुड़ाव की और न किसी से दुराव की। अपनी धुन में मग्न होने पर बोध उभरने लगता है। कबीर के दोहे उसी धुन से निकले हैं।

हालचाल

हाल अर्थात् जीवन का आप पर प्रभाव । चाल अर्थात् जीवन मन की इच्छानुसार चल रहा है या कोई समस्या है ।

सामाजिक बातचीत की शुरुआत होती है 'अभिवादन' से और बात आगे बढ़ती है एक दूसरे का हालचाल लेने से। हालचाल का तात्पर्य है कि आप कैसे हैं और यात्रा कैसी चल रही है? हाल बतलाता है कि जीवन में कैसी परिस्थितियाँ आती हैं और जीवन पर उनका क्या प्रभाव पड़ता है। चाल बतलाती है कि व्यक्ति किस प्रकार अपने चुने रास्ते पर आगे बढ़ता है और परिस्थितयों के कठिन होने पर, वह किस प्रकार उनसे बाहर निकलने का रास्ता है। हालचाल आपसी अनुभवों की अदला-बदली है। अनुभव प्रयोग से निकलते हैं

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

और प्रयोगों में समय लगता है। अनुभव उन सभी प्रयोगों का सार है। ये बात और है कि व्यक्ति को सामने वाले के अनुभवों में रुचि है या नहीं।

सिद्धि या प्रसिद्धि

मन प्रसिद्धि चाहता है, इसी कारण वह जीवन को सफलता व महत्वाकांक्षा की ओर अग्रसर करता है। मन की अपेक्षाएँ जगत् से जुड़ी हैं, इसी कारण जगत् से वह अपनी प्रसिद्धि की अपेक्षा करता है। सिद्धि जुड़ी है व्यक्ति की भीतरी दुनिया से और प्रसिद्धि जुड़ी है, बाहरी दुनिया से। सिद्धि चेतना को भीतरी जगत् में आगे बढ़ाती है और प्रसिद्धि व्यक्तित्व को बाहरी जगत् में आगे बढ़ाती है। प्रसिद्धि पहचान से जुड़ी है और सिद्धि चेतना से। सिद्धि अभ्यास से मिलती है और प्रसिद्धि प्रयास से। प्रसिद्धि व्यक्ति को इतिहास में स्थान दिलाती है तो सिद्धि वर्तमान में। सिद्धि अंतर्मन से जुड़ी है तो प्रसिद्धि बहिर्मन से। प्रसिद्धि से प्रशंसा मिलती है तो सिद्धि से सुख। प्रसिद्धि मसरूफ़ियत को बढ़ाती है तो सिद्धि एकांत को। प्रसिद्धि सरस है तो सिद्धि शुद्ध रस है।

अहं राष्ट्री

राष्ट्री का यह कथन है कि मैं ही अपरा के आठ भेदों से रक्षा करती हूँ। ये आठ भेद हैं पृथ्वी, अग्नि, जल, वायु, आकाश, मन, बुद्धि, अहंकार। जैसे लक्ष्मण रेखा सीता की रक्षा थी। जिसे रावण पार नहीं कर सकता था, सिर्फ सीता ही कर सकती थी। यह रेखा

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

सीता को स्वतंत्रता देती थी, रावण को नहीं। यह शक्ति ही उस दुर्ग की रचना करती है जो अपरा के अपरा भेदों को चेतना से दूर रखता है। शक्ति कहती है कि असंयमित होकर तुम मेरा ही व्यय करते हो और संयमित होकर तुम मुझे ही संचित करते हो। इस प्रकार मैं ही तुम्हें स्वतंत्रता देती हूँ और रक्षा भी। मैं ही तुम्हारे लिये समर्पित हूँ। राष्ट्र की संकल्पना भी शक्ति द्वारा प्रदत्त सुरक्षा और स्वतंत्रता के आधार पर की गई। व्यक्ति की भी राष्ट्र से यही अपेक्षा होती है कि मुझे सुरक्षा दो और स्वतंत्रता दो ताकि अपने लक्ष्यों पर मैं सतत् रूप से कार्य कर सकूँ।

सम्पूर्णता

सम्पूर्णता अर्थात्

पुरुष व शक्ति एक साथ,

दया व दिया एक साथ,

प्रेम व ज्ञान एक साथ,

मौन व धारा प्रवाह एकसाथ,

करुणा व किरण एक साथ,

चेतना व शून्यता एक साथ,

विनम्रता व दृढ़ता एक साथ,

चेतना व प्रयोजन एकसाथ,

स्पष्टता व स्वाभाविक कर्म एक साथ।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. -L-100111/2021
Date 05/03/2021

शिव का अर्द्धनारीश्वर स्वरूप व चीनी यिन यांग इसी सम्पूर्णता की अभिव्यक्ति हैं। एक होने के लिये पहले आधा होना होता है। और फिर आधे और आधे मिलकर एक हो जाते हैं।

ढोल, गंवार, शुद्र, पशु, नारी

ढोल, गंवार, शुद्र, पशु, नारी

सकल ताड़न के अधिकारी।

ढोल- विश्वास रखकर बताई गई बातों को अन्य लोगों को बताने और अफ़वाहें फैलाने का स्वभाव।

गंवार- असभ्य व्यक्ति

शूद्र- क्षुद्रता और लोभी स्वभाव का व्यक्ति

पशु- हिंसक व्यक्ति

नारी- वाणी तथा मन से अनियंत्रित, असहनशील तथा अहंकारी

ताड़न के अधिकारी का तात्पर्य है कि यदि इनके साथ संगति की जाए तो इनके कर्म व्यक्ति को कष्ट पहुँचाते हैं। व्यक्ति अनजाने में ही इन्हें अपनी प्रताड़ना का अधिकार दे देता है। नारी और स्त्री में भेद है। नारी मन से चालित होती है और स्त्री मृदु और प्रेमपूर्ण स्वभाव से।

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

सारणी

बेरुखी	=	बेरुचि	जय	=	Joy
माँग	=	डिमाण्ड	रैदास (प्रकाश का दास)	=	Ray
स्तेय	=	Steal	बूचड़	=	Butcher
मिश्रित	=	Mixy	शैतान	=	Satanic
मिश्रण	=	Mixture	शर्म	=	Shame
मिश्र	=	Mix	अग्रसर	=	Aggression
वाह	=	Wow	चर्बी	=	Chubby
अपेक्षा	=	Expect	दान	=	Donate
लुप्त	=	Elope	सेवा	=	Save
क्रिया	=	Create	बज	=	Buzzer
चर्म	=	Derm	भीख	=	Beg
टंकी	=	Tank	फेंकना	=	Fake
अवश्य	=	Sure	लोक	=	Look
श्रेष्ठ	=	Best	बेहतर	=	Better
उल्लू	=	Owl	पैर	=	Paraplegia
रट	=	Rant	ऊपर	=	Upper
सृजन	=	Surgeon	विवेक	=	Wake
प्रयोजन	=	Purpose	अंतर	=	Inter
पूर्ण	=	Full	गुंडा	=	Goon
सर्वेक्षण	=	Survey	मूक	=	Meek
महत्तम	=	Maximum	प्रदूषण	=	Pollution
सुन	=	Listen	बेर	=	Berry
लायक	=	Like	दीवाल	=	Wall
वार	=	War	बरबरीक	=	Barbaric

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

भोंक	=	Poke	कूप	=	Scoop
परमानंद	=	Permanent	नया	=	New
चुलबुली	=	Bubbly	शौकीन	=	Keen
स्वेद	=	Sweat	काट	=	Cut
हल्ला	=	Hello	सम	=	Same
वर्तिका	=	Vertical	वमन	=	Vomit
नट	=	Not	गाढ़ा वक्त	=	Thick Soup
हट	=	Hate	मन	=	Man
पथ	=	Path	आयन	=	Ion
मित्र	=	Mate	वाचन	=	Watch
माध्यम	=	Medium	कोयला	=	Coal
लो (दोनों ही कमीं को दर्शाते हैं)	=	Low	क्यूँ	=	Curiosity
लड़की	=	Lady			
नाविक	=	Navy			
वर्जित	=	Virgin			
संत	=	Saint			
राकेश	=	Rock			

उप पंजीयन अधिकारी प्रतिलिप्याधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI
Reg. No. - L-100111/2021
Date 05/03/2021

भाषा के अध्यात्मिक रहस्य

भाषाएं भावनाओं और भावों को व्यक्त करने का साधन तो हैं ही। साथ ही वे खुद में अध्यात्मिक जगत के अनेक रहस्यों को भी समेटे हुए हैं। अर्थात इनके माध्यम से दो संदेश जाते हैं। एक तो स्वयं व्यक्ति का और दूसरा भाषा का अपना संदेश। यह भाषाओं के उद्गम के समय, ऋषियों और मुनियों की अध्यात्मिक चेतनता की समृद्धि को दर्शाता है। भाषाएं एक दूसरे से प्रेरणा लेती रही हैं। इस प्रेरणा के साथ ही अध्यात्मिक तत्व भी एक भाषा से दूसरी भाषा में स्थानांतरित होते रहे हैं। जाने अनजाने हम जिन शब्दों का उपयोग करते रहते हैं, उनमें अनेक गूढ़ अध्यात्मिक संदेश छिपे हुए हैं। यह पुस्तक उन शब्दों और उनके संदेशों के रहस्यों को स्पष्ट करती है।

उप पंजीयक अधिकारी प्रतिलिप्यधिकार
DEPUTY REGISTRAR OF COPYRIGHT